अनुक्रम

संत विनोबा की
आनन्द-यात्रा

सुरेश रामभाई

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, काशी

प्रकाशक :
अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ,
वर्धा (म० प्र०)

पहली बार : १५०००
दिसम्बर, १९५५
मूल्य : डेढ़ रुपया

मुद्रक :
विश्वनाथ भार्गव,
मनोहर प्रेस,
जतनबर, बनारस

विहार के चिरपीड़ित

किसान

को

जिसका विशाल हृदय

इस देश के ऊँचे से ऊँचे आदर्शों के

फलने-फूलने के लिए

युग-युग से

उपजाऊ भूमि रहा है ।

अपनी बात

सामूहिक सत्याग्रह-शक्ति के सूर्योदय का पहला दर्शन हमारे देश में १८ अप्रैल, १९१७ को बिहार के चम्पारन जिले में हुआ और कुछ दिन बाद तीन-कठिया का काला कानून हटाने में महात्मा गांधी को जो सफलता मिली, उससे भारत में विदेशी राज्य की जड़ें हिल गयीं। कैसे आश्चर्य की बात है कि ठीक चौंतीस साल बाद, १८ अप्रैल को ही इस सूर्योदय का दूसरा दर्शन तेलंगाना में भूदान-यज्ञ के रूप में हुआ। देश के आर्थिक व सामाजिक स्वराज्य का रास्ता खुल गया। इस भूदान-यज्ञ को संत विनोबा ने कसौटी पर कसने के लिए बिहार प्रान्त चुना और जिस बिहार में उन्होंने 'जमीन दो, जमीन दो' कहते १४ सितम्बर, १९५२ को प्रवेश किया था, उससे १ जनवरी, १९५५ को 'जमीन लो, जमीन लो' सुनते हुए बिदा हुए।

पर इस पुस्तक में बिहार में भूदान-यज्ञ के विकास और प्रगति का इतिहास नहीं है। तब फिर यह पुस्तक क्या है और इसको लिखने का मेरा अधिकार क्या है? इस पुस्तक को बाबा की चिट्ठी कहना ज्यादा मुनासिब होगा और मेरा काम बाबा और पाठक के बीच एक डाकिये का ही है। पर मुझमें डाकिये जैसी निर्भयता, निष्कपटता, कृतिशून्यता कहाँ? लेकिन इस अनमोल चिट्ठी को अपने तक ही रख लेना मुझसे बर्दाश्त न हो सका और इसलिए जैसी भी है, उसे प्रस्तुत कर रहा हूँ। फिर भी इसे तैयार कर लेना मेरे बूते का काम नहीं था। बिहार में बाबा के साथ चलनेवाले कुल पद-यात्री-दल को ही इसका श्रेय मिलना चाहिए। जून १९५४ के आखिरी हफ्ते में श्री वल्लभस्वामी के प्रेमभरे आदेश पर मैं इसमें शामिल हुआ। सब साथियों के तो नाम भी गिनाना नामुमकिन होगा। पर कुछ का उल्लेख किये बिना नहीं रहा जा सकता, जो एक मिशनरी की भाँति इसमें लगे रहे। श्री महादेवी ताई, बाबा की अनन्यचरण-सेविका, इस

दल की माता ही थीं। यात्रा-दल के संयोजक, श्री रामदेव बाबू तो इस अरसे में बाबारूपी पताका के दंड-समान आधार ही बन गये। श्री महादेवी ताई के साथ-साथ भाई जयदेव और निमाईचरन बाबा की सेवा में अपने को भूल ही गये थे। भाई वैद्यनाथ झा और गोविन्दन वारियर हिन्दी व अंग्रेजी टाइपराइटर पर लगातार डटे रहते। इन दोनों का अचूक सहारा अगर न मिलता, तो न यह पुस्तक और न इसका अंग्रेजी संस्करण ही—'प्रॉग्रेस ऑफ ए पिलग्रिमेज'—निकल सकते थे। भाई नन्दकिशोर शर्मा पद-यात्री-दलरूपी डेरे के कोठारी और साहित्य-संयोजक थे और भाई राजेन्द्र कार्यी हिसाबनवीस। दिसम्बर के तीसरे हफ्ते में बहन निर्मला देशपांडे और बहन कुसुम देशपांडे—जो अस्वस्थता के कारण चली गयी थीं—यात्री-दल में लौट आयीं। पद-यात्री-दल में आने के पहले ही, बिहार की सभी रचनात्मक प्रवृत्तियों के प्राण, श्री लक्ष्मी बाबू ने मुझे अपने प्रान्त में काम करने की दावत दी थी और सारन, चम्पारन, मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिलों में १९५३ के नवम्बर, दिसम्बर और १९५४ के जनवरी में घुमवाया भी था। उन दिनों दरिद्रनारायण का जो दर्शन मुझे मिला, उसने ही मुझे भूदान-यज्ञ की दीक्षा दी। बाद में पद-यात्री-दल में आ जाने पर तो लक्ष्मी बाबू का मार्ग-दर्शन मिलता ही रहा। मैं इन सबका आभारी हूँ। पर इतना जरूर अर्ज करूँगा कि इस पुस्तक में जो लिखा गया है, उसकी जिम्मेदारी मेरी है। इसलिए इस पुस्तक के सब दोषों का जवाबदार केवल मैं ही हूँ और जो अच्छाई या सरसता इसमें आयी हो, उसका श्रेय इन मित्रों व साथियों को ही है।

आशा है कि भूदान-यज्ञ-मूलक ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति के सारे साथी-सेवक इस पुस्तक को अपनायेंगे। उनसे प्रार्थना है कि इसके सुधार के लिए और इसे ज्यादा उपयोगी बनाने की दृष्टि से अपने सुझाव मेरे पास भेजने की कृपा करें।

—सुरेश रामभाई

आ मु ख

बापू की बिदाई और भूदान-यज्ञ की शुरुआत के बीच के अर्से में हमारा देश बहुत दुविधा और असमंजस में रहा। ऐसा लगता था, मानो उनकी अस्थि-विसर्जन के साथ-साथ हमने उनके सिद्धान्तों का भी विसर्जन कर दिया। लेकिन बापू की उपासना का प्रदर्शन बहुत खूबी के साथ, सुव्यवस्थित ढंग से चल रहा था और देशभर में बापू-नाम का संकीर्तन तो बड़े जोर-शोर से जारी था। इस नक्कारखाने में उनके सिद्धान्त के तूती की आवाज कहीं भी सुनाई नहीं पड़ती थी।

मगर अचानक ही एक घटना घट गयी। एक ज्योति चमक उठी। उसने उनके सजीव सिद्धान्त में फिर से जान डाल दी और दिखा दिया कि यह सिद्धान्त बगुला-भक्ति के लिए नहीं, जीवन में अमल करने के लिए है। वह घटना क्या थी—एक प्रेरणा। उस प्रेरणा के पीछे कोई योजना नहीं थी। लेकिन उस प्रेरणा के कारण पोचमपल्ली नामक गाँव में—दुःखी, बेजमीन हरिजनों की माँग पर—भाई रामचंद्र रेड्डी ने अपनी जमीन के एक हिस्से का दान दिया। ज्योति उस घटना में नहीं थी; बल्कि इसमें थी कि इस समर्पण में ईश्वर के एक परम भक्त ने बिजली की चमक की तरह नर में नारायण का साक्षात्कार किया।

पोचमपल्ली में जिस ब्रह्मरूप का संत विनोबा ने एक क्षण में दर्शन किया, उसे वे सतत आत्मसात् कर रहे हैं। वे जमीन माँगते हैं और लोग उन्हें देते भी हैं। यह जमीन हजारों-लाखों बेजमीनों को मिल रही है। लेकिन विनोबा का काम जमीन के बँटवारे के मुकाबले कहीं ज्यादा ऊँचा और गहरा है। गाँव-गाँव के लोगों के मानस में इस सनातन सत्य का, जो पुराना होते हुए भी सदा ताजा बना रहता है, संचार कर देना चाहते हैं कि मनुष्य केवल वह शरीर नहीं है, जो नाशवान् है; बल्कि वह आत्मा है, जो अमर है। इसलिए इस पावन धरती पर जन-जन की भीतरी सफाई—हृदय-शुद्धि—के लिए अपील करते हुए विनोबा अथक गति से चले जा रहे हैं। वे चले ही जा रहे हैं, ताकि मनुष्य के ऊपर से मोह का पर्दा हटे, उसके स्वार्थ का बंधन टूटे।

लेकिन इस भीतरी सफाई की दरकार केवल बड़े-बड़े जमींदारों और सम्पन्न श्रीमानों को ही नहीं है, दुःखी दरिद्र का दिल भी कुछ कम खोखला नहीं है। विनोबा इन खोखले दिलों को—चाहे अमीर का हो, चाहे गरीब का—ऐसी शानदार उदारता से भर देना चाहते हैं कि राजाओं के मुँह में भी पानी आ जाय! इस तरह बेजमीनों के लिए जमीन माँगते हुए अपनी निराली नम्रता और अथाह भक्ति-भावना के साथ वे बढ़ते ही जाते हैं।

विनोबा जो चीज चाहते हैं, वह जमीन से कहीं ज्यादा बढ़ी-चढ़ी है। उनकी कोशिश यह है कि गाँव खुद खड़ा हो जाय और अपनी मूल-भूत एकता को महसूस करे। आज शहरों का सम्पर्क गाँव की अपनी आन को मिटा दे रहा है। जमीन की मालकियत के कारण एक-दूसरे के बीच तरह-तरह की दीवारें खड़ी हो गयी हैं। विनोबा इन दीवारों को जड़ से गिराकर गाँव की हस्ती को उभारना चाहते हैं। बेजमीनों को जमीन देकर वे ऐसी सामाजिक प्रक्रिया जारी कर देने की आशा रखते हैं, जिससे प्रेम और सहकार के बल पर गाँव-गाँव की आत्मा जाग उठेगी। हर गाँव एक परिवार का रूप लेगा और हमारा समाज परिवार के जैसा एकरस और मजबूत बनेगा। इस नयी समाज-रचना में शहर को अपनी जगह फिर से तलाश करनी होगी।

एक सुनहरा मौका ऐसा आया कि मुझे यह वाणी सुनने को मिली—ऐसी अनोखी वाणी, जो कमजोर इन्सान को उसकी ताकत और कर्तव्य का भान कराती है। मैंने यह वाणी उसी बेचैनी के साथ सुनी है, जिसके साथ जेठ-बैसाख में तपी बिहार की धरती आषाढ़ के पहले पानी का इन्तजार करती है।

इस वाणी को जिन्होंने एक बार भी सुना है, वह उसे शेर की दहाड़ की तरह कभी भूल नहीं सकते। पर जिन्होंने नहीं सुना है, उनके लिए इस सिंहनाद की कुछ प्रतिध्वनि यहाँ प्रस्तुत की जा रही है। उन्हें पता चलेगा कि यह देवदूत जमीनें ही नहीं प्राप्त करता, दिल के घाव भी भरता है, मन का मैल भी धोता है। संत विनोबा की यह 'आनन्द-यात्रा' सबको आनन्द दे!

ज्ञान का सजग प्रहरी

सन्त विनोबा की आनन्द-यात्रा

बिहार में प्रवेश : १ :

जमीन का सवाल तो किसी-न-किसी तरीके से सारी दुनिया में हल होनेवाला है। मुझे इस वात की कोई चिंता नहीं कि मुझे कितनी जमीन मिलती है। मेरा ध्यान तो सदा इस वात पर रहता है कि लोगों के दिल में सद्विचार कितनी गहराई तक पहुँचता है।

बिहार में संत विनोवा ने सत्ताईस महीने सत्रह दिन तक प्रवास किया। उनकी पदयात्रा के आरम्भ के दो चिर-स्मरणीय प्रसंग ये हैं :

१. वैद्यनाथधाम मंदिर के पंडों ने ईश्वर के इस भक्त पर हमला किया और मारपीट की। वावा किसी मंदिर में कम ही जाते हैं, लेकिन जव वहाँ के पंडों ने निमंत्रण भेजा, तो सहज स्वीकार कर लिया। वावा के साथ कुछ हरिजन भी भगवान् के दर्शन को चले। पर जैसे ही अपने साथियों के साथ वावा मंदिर में घुसे, वैसे ही पंडे उनके ऊपर टूट पड़े। यात्रा-दल की वहनों तक को उन धर्म के ठेकेदारों ने नहीं छोड़ा। वावा के भी चोट लगी—उन पंडों के प्राचीन धर्म की प्रतिष्ठा के नाम पर यह सारा काम हुआ।

२. विहार के सवसे वड़े धनी-मानी जमींदार, दरभंगा के महाराजाधिराज—जो एक ऊँचे कुल के ब्राह्मण हैं—वावा से पूर्णिया जिले के कुरसेला गाँव में मिलने आये और एक लाख अठारह हजार एकड़ जमीन का दान दिया।

× × ×

१४ सितम्बर, १९५२ को वावा ने कर्मनासा नदी पार की और उत्तर-प्रदेश की पदयात्रा पूरी करके विहार में दाखिल हुए। १९५५ की पहली

जनवरी को भोर में उन्होंने बिहार से विदा ली। उनकी यात्रा का एक नक्शा किताब के आखीर में दिया हुआ है।

बिहार से अपील

बिहार की पावन भूमि पर पैर रखते ही बाबा ने बिहारवासियों से यह अपील की :

"बिहार में मैंने पहली किस्त के तौर पर चार लाख एकड़ की माँग की थी। मेरी वह माँग तो कायम है। लेकिन उतने से आज मेरा समाधान नहीं है। मैं अब उससे बहुत आगे बढ़ गया हूँ। मेरी यह इच्छा है कि मेरे इस प्रदेश में रहते बिहार की सारी भूमि-समस्या ही हल हो जाय। एक-एक प्रदेश में थोड़ी-थोड़ी भूमि इकट्ठी करता हुआ मैं अगर सारे भारत में पाँव-पाँव घूमता रहूँ, तो कब बेड़ा पार होगा ? एक भी प्रदेश में अगर हम पूरा काम करते हैं, तो सारे देश का सवाल वैसे ही हल हो जायगा। हमारे पुरखाओं ने कहा ही है, 'एकहिं साधे सब सधे।' इसलिए मुझे प्रेरणा हुई है कि अगर आप लोग चाहें और सब मुझे मदद करें, तो हम बिहार की क्रान्ति पूरी करके ही आगे बढ़ें।

इसके लिए क्या करना पड़ेगा, उसका हिसाब सीधा-सादा है। हरएक को अपनी जमीन का छठा हिस्सा देना होगा। छोटे-बड़े काश्तकार और जमींदार, सब अगर अपना षष्ठांश दरिद्रनारायण के लिए अर्पण करें, तो काम पूरा हो जाता है। मैंने देखा कि लोगों में इसके लिए बहुत उत्सुकता है। लेकिन आवश्यकता है कार्यकर्ताओं की, जो कि लोगों के पास पहुँचें, प्रेम से उन्हें समझायें, हर गाँव से और हर घर से इस यज्ञ में दरिद्रनारायण का हिस्सा प्राप्त करें।

मैंने भूमि-समस्या के हल की बात की। लेकिन इससे भी बड़ी बात है, अहिंसा का तरीका चलाने की। शांति और प्रेम से अगर हम भूमि-समस्या हल करते हैं, तो अहिंसा प्रतिष्ठित होती है।

आर्थिक क्रांति का काम अगर अहिंसा कर दिखाती है, तो और कौन

सा काम वह नहीं कर सकेगी ? मुझे अहिंसा की शक्ति में पूर्ण विश्वास है। आइये, गांधीजी का स्मरण करके हम अहिंसा का फिर से आवाहन करें, जिसका प्रथम आविष्कार हिन्दुस्तान में, बिहार प्रदेश में हुआ था, और जिसे गांधीजी के जाने के बाद इन दिनों हम भूल-से गये थे।"

सम्पत्तिदान-यज्ञ

२३ अक्तूबर को बाबा पटना पहुँचे। वहाँ उन्होंने एलान किया कि जब तक बिहार की भूमि-समस्या हल नहीं होती है, वे बिहार नहीं छोड़ेंगे। दूसरे दिन उन्होंने सम्पत्तिदान-यज्ञ का विचार पेश किया। उन्होंने कहा :

"भूमिदान-यज्ञ का काम जैसे-जैसे आगे बढ़ा, वैसे-वैसे यह बात भी साफ होती गयी कि सम्पत्ति का हिस्सा माँगे बगैर विचार की पूर्ति नहीं होती है। आखिर मेरे मन का निश्चय हो गया कि सम्पत्ति का भी एक हिस्सा मैं लोगों से माँगूँ। मैं चाहता तो हूँ कम-से-कम छठा हिस्सा, फिर लोग सोच-कर जो भी दें.........समय-समय पर भिन्न-भिन्न कामों के लिए इकट्ठा की जानेवाली उपयोगी निधियों में और इस सम्पत्तिदान-यज्ञ में महत्त्व का भेद है और वह यह कि सम्पत्ति का हिस्सा इस यज्ञ में हर साल देना होगा। इसलिए मैंने यह सोचा है कि दाता के पास ही वह सम्पत्ति रहेगी, उसका विनियोग हमारे निर्देश के अनुसार वही करेगा और उसका हिसाब हर साल हमारे पास भेजेगा.........। मैं मानता हूँ कि अगर भक्तजन इस काम में योग देंगे, तो एक जीवन-विचार के तौर पर यह कल्पना देश में फैलेगी और साम्ययोग को सहज गति मिलेगी।"

चांडिल-सम्मेलन

१३ दिसम्बर, १९५२ को बाबा ने जब मानभूमि जिले में प्रवेश किया, तब उनका स्वास्थ्य बहुत खराब था। १४ तारीख को वह चांडिल पहुँचे। पर तबीयत इतनी बिगड़ चुकी थी कि आगे चलना नामुमकिन था। इस-

लिए पदयात्रा रोककर उन्हें कई महीने चांडिल में कयाम करना पड़ा। चांडिल में ही ५, ६, ७ मार्च को सर्वोदय-समाज का पाँचवाँ वार्षिक सम्मेलन हुआ। इसके सभापति श्री धीरेन्द्र मजूमदार थे। इस सम्मेलन की एक विशेष घटना यह है कि देश के सर्वप्रिय और सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने एलान किया कि वह अपना ज्यादा-से-ज्यादा समय भूदान-आन्दोलन में ही लगायेंगे। जयप्रकाश बाबू ने कहा :

"स्वराज्य के बाद हमारे दिलों में ऐसी निराशा पैदा हो गयी थी कि अहिंसा के रास्ते से समाज का रूप नहीं बदलने जा रहा है, क्योंकि अहिंसा के पुजारी सत्तारूढ़ हैं और समाज को बदलने का कोई नक्शा, कोई भी कार्यक्रम उनके सामने नहीं है—अहिंसा का अर्थ इतना ही समझा जाता था कि हम हिंसा न करें। उस हथियार से और कोई कार्य हम नहीं कर सकते हैं। ऐसी जो निराशा थी, वह विनोबाजी के इस यज्ञ ने दूर कर दी। देश में अँधेरा छाया हुआ था और वह फैल रहा था। इतने में ही इस यज्ञ का प्रकाश सामने आया। जैसे-जैसे प्रकाश बढ़ता गया, वैसे-वैसे शंकाओं के बादल छँटते गये। आज सबने मान लिया है कि धरती सबकी माता है और उस पर सबका समान अधिकार है। धरती से जो जीविका पैदा करता है, उसका उस पर पहला अधिकार है। यह एक मानसिक क्रान्ति पिछले दो बरस में हुई है। इस मानसिक क्रान्ति को अमल में लाना, उसे वास्तविक रूप देना, इस काम को पूरा करना, यह सब हमारे सामने है।"

जनशक्ति की आवश्यकता

बाबा ने इस सम्मेलन के सामने कुछ बहुत ही बुनियादी विचार रखे। उन्होंने स्वतंत्र जनशक्ति के निर्माण की आवश्यकता बतलाते हुए कहा :

"हमें स्वतन्त्र लोक-शक्ति निर्माण करनी चाहिए। मेरा अर्थ यह है कि हिंसाशक्ति की विरोधी और दण्डशक्ति से भिन्न ऐसी लोकशक्ति हमें प्रकट करनी चाहिए। आज की हमारी जो सरकार है, उसके हाथ में हमने दण्ड-शक्ति सौंप दी है। उस दण्डशक्ति में हिंसा का एक अंश जरूर है, फिर

भी हम उसे हिंसा नहीं कहना चाहते हैं। हिंसा से उसे अलग वर्ग में रखना चाहते हैं। हम उसे हिंसाशक्ति से भिन्न दण्डशक्ति कहना चाहते हैं, क्योंकि वह शक्ति उनके हाथ में सारे समुदाय ने दी है। इसलिए वह हिंसाशक्ति नहीं, निरी हिंसाशक्ति नहीं, पर दण्डशक्ति है। उस दंडशक्ति का भी उपयोग करने का मौका न आये, ऐसी परिस्थिति देश में निर्माण करना हमारा काम होगा।"

इसका स्पष्टीकरण करते हुए बाबा ने कहा :

"दण्डशक्ति के आधार पर सेवा के कार्य हो सकते हैं। सेवा तो वह जरूर होगी, पर वह सेवा नहीं होगी, जिससे कि दण्डशक्ति का उपयोग ही न करना पड़े, ऐसी परिस्थिति निर्माण हो। एक मिसाल—लड़ाई चल रही है। सिपाही जख्मी हो रहे हैं। उन सिपाहियों की सेवा में जो लग गये हैं, वे भूतदया से परिपूर्ण होते हैं। वे शत्रु-मित्र तक नहीं देखते हैं और अपनी जान खतरे में डालकर युद्धक्षेत्र में पहुँचते हैं। और ऐसी सेवा करते हैं, जो केवल माता ही अपने बच्चों की कर सकती है। इसलिए वे दयालु होते हैं, इसमें कोई शक नहीं। वह सेवा कीमती है, यह हर कोई जानता है। लेकिन युद्ध के रोकने का काम वे नहीं कर सकते। उनकी दया युद्ध को मान्य करनेवाले समाज का एक हिस्सा है।

"जैसे एक यंत्र में अनेक छोटे-बड़े चक्र होते हैं, वे एक-दूसरे से भिन्न दिशा में भी काम करते होंगे, फिर भी वे उस यंत्र के अंग ही हैं। तो एक ही युद्ध-यंत्र का एक अंग है—सिपाहियों को कत्ल किया जाय और उसी युद्ध-यंत्र का दूसरा अंग है—जख्मी सिपाहियों की सेवा की जाय। उनकी परस्पर विरोधी गतियाँ स्पष्ट हैं। एक क्रूर कार्य है, एक दया-कार्य है, यह हर कोई जानता है। पर उस दयालु हृदय की वह दया और उस क्रूर हृदय की वह क्रूरता, दोनों मिलकर युद्ध बनता है। ये दोनों युद्ध बनाये रखने-वाले दो हिस्से हैं। कठोर वैज्ञानिक भाषा में बोलना हो, तो युद्ध को जब तक हमने कबूल किया है, तब तक चाहे हमने उसमें जख्मी सिपाही की सेवा

का पेशा लिया हो, चाहे सिपाही का पेशा लिया हो, हम दोनों युद्ध के गुनहगार हैं।

"यह मिसाल इसलिए दी कि हम सिर्फ दया का कार्य करते हैं, इसलिए यह नहीं समझना चाहिए कि हम दया का राज्य बना सकेंगे। राज्य तो निठुरता का है। उसके अन्दर दया, रोटी के अन्दर नमक जैसी रुचि पैदा करने का काम करती है। जख्मी सिपाहियों की उस सेवा से हिंसा में लज्जत पैदा होती है, युद्ध में रुचि पैदा होती है, परंतु युद्ध की समाप्ति उस दया से नहीं हो सकती। अगर हम लोग इस तरह की दया का काम करें कि निठुरता के राज्य में दया प्रजा के नाते रहे, निर्दयता की हुकूमत में दया चले, तो हमने अपना असली काम नहीं किया। इस तरह जो काम दया के दीख पड़ते हैं, जो काम रचनात्मक भी दीख पड़ते हैं, उन्हें हम दया और रचना के लोभ से व्यापक दृष्टि के बिना ही उठा लें, तो कुछ तो सेवा हमसे बनेगी। पर वह सेवा नहीं बनेगी, जिसकी जिम्मेवारी हम पर है और जिसे हमने अपना स्वधर्म माना है।.........

"इसलिए दण्डशक्ति से भिन्न मैं जनशक्ति निर्माण करना चाहता हूँ। और हमें वह निर्माण करनी चाहिए। यह जो जनशक्ति हम निर्माण करना चाहते हैं, वह दण्डशक्ति की विरोधी है, ऐसा मैं नहीं कहता। वह हिंसा की विरोधी है। लेकिन मैं इतना ही कहता हूँ कि वह दंडशक्ति से भिन्न है।

जनशक्ति-निर्माण के दो साधन

"इस दृष्टि से यदि सोचेंगे तो सहज ही ध्यान में आयेगा कि हमारी कार्य-पद्धति के दो अंश होंगे। एक अंश होगा, विचार-शासन और दूसरा अंश होगा, कर्तृत्व-विभाजन।

"विचार-शासन यानी विचार समझाना और विचार समझना—बिना विचार समझे किसी बात को कबूल न करना, बिना विचार समझे अगर कोई हमारी बात कबूल कर लेता है तो दुःखी होना, अपनी इच्छा दूसरों पर न लादना, बल्कि केवल विचार समझाकर ही संतुष्ट रहना। हमारी

सर्वोदय-समाज की योजना में हमने जो रचना की है, उसको कुछ लोग 'लूज ऑर्गेनाइजेशन' यानी 'शिथिल रचना' कहते हैं। रचना को अगर हम शिथिल करें, तो कोई काम नहीं बनेगा। इस वास्ते रचना शिथिल नहीं होनी चाहिए। पर यह 'शिथिल रचना' भी न होकर 'अरचना' है, यानी केवल विचार के आधार पर हम खड़े रहना चाहते हैं।

"और दूसरा औजार है, कर्तृत्व-विभाजन। सारा कर्तृत्व, सारी कर्म-शक्ति एक केन्द्र में केन्द्रित नहीं होनी चाहिए। इसलिए हम चाहते हैं कि हरएक गाँव को यह हक हो कि वहाँ कौन-सी चीज आये और कौन-सी चीज न आये, जिसका निर्णय वह खुद कर सके। अगर कोई गाँव चाहता है कि हमारे यहाँ कोल्हू चले और मिल का तेल न आये यानी मिल का तेल आने से रोकें, तो उसे रोकने का हक होना चाहिए।..........जैसा परमेश्वर ने किया है, वैसा हमको करना चाहिए। परमेश्वर ने अक्ल का विभाजन कर दिया। हरएक को अक्ल दे दी—बिच्छू को भी दी, साँप को भी दी, शेर को भी दी, मनुष्य को भी दी। कम-बेशी सही, लेकिन हरएक को अक्ल दे दी और कहा कि अपने जीवन का काम अपनी इच्छा के आधार से करो। और तब सारी दुनिया इतनी उत्तम चलने लगी कि वह विश्रांति ले सकता है और यहाँ तक कि लोगों को शंका भी होती है कि परमेश्वर है या नहीं। हमको राज्य ऐसा ही चलाना होगा, जिससे शंका हो जाय कि कोई राज्य-सत्ता है या नहीं। हिन्दुस्तान में शायद राज्य-सत्ता नहीं है ऐसा भी लोग कहें, तब हमारा राज्यशासन अहिंसक होगा। इसलिए हम ग्राम-राज का उद्घोष करते हैं और चाहते हैं कि ग्राम में नियंत्रण की सत्ता हो। अर्थात् ग्रामवाले नियंत्रण की सत्ता अपने हाथ में लें।"

इस जनशक्ति के निर्माण के लिए बाबा ने चार पहलूवाला एक कार्य-क्रम पेश किया : (१) रचनात्मक काम करनेवाली सारी संस्थाओं का एक सूत्र में विलीनीकरण, (२) १९५७ तक भूदान-यज्ञ में पाँच करोड़ एकड़ जमीन की प्राप्ति, (३) सम्पत्तिदान यज्ञ और (४) सूतांजलि।

मिट्टी का सोना बनाते चलो

१२ मार्च, १९५३ को बाबा ने फिर से अपनी बिहार-पदयात्रा शुरू कर दी। तीन महीने बाद, जून में उन्होंने अपने दैनिक कार्यक्रम में श्रम-दान-यज्ञ भी शामिल किया। पहले दिन उन्होंने सत्रह मिनट तक परती जमीन तोड़ी। रोजाना एक-एक मिनट बढ़ाते चले गये और एक घंटे तक पहुँचे। इसके बाद से वह इसमें रोजाना एक घंटा समय देते रहे। उनके इस कार्यक्रम में गाँव के सभी लोग, गरीब और अमीर, छोटे और बड़े, सैकड़ों की तादाद में शरीक होते थे। जब यह जनसमूह कुदाल चलाता था, तो एक स्वर से सब यह भजन गाते—

भाई कुदाली चलाते चलो, मिट्टी का सोना बनाते चलो।

लेकिन इस दैनिक श्रमकार्य का परिणाम बाबा के स्वास्थ्य पर अच्छा नहीं पड़ा और सितम्बर में उन्हें उसे छोड़ देना पड़ा।

१८ सितम्बर, १९५३ को बाबा का पड़ाव सन्थाल परगना जिले में वैद्यनाथ-धाम में था। यह बिहार का सबसे प्रसिद्ध और महान् तीर्थस्थान है। बाबा वैद्यनाथ-धाम में १९ तारीख को भी ठहरे, क्योंकि उस दिन बिहार भर के भूदान-कार्यकर्ता सलाह-मशविरे के लिए उनके पास जमा हुए थे। १८ तारीख की शाम को वैद्यनाथ-धाम के बड़े पंडा ने बाबा को मंदिर में आने का निमंत्रण भेजा। उन्हें सूचना दे दी गयी कि बाबा किसी मंदिर में तभी जाते हैं, जब हरिजनों को भी दर्शनों की इजाजत हो। यह सुनकर पंडा ने हरिजनों को बाबा के साथ आने की छूट दे दी।

देवघर के पंडों की भूल

इस प्रकार १९ तारीख की शाम को पदयात्रा-दल के साथियों और कुछ हरिजनों के साथ बाबा मंदिर की ओर बढ़े। मंदिर में उन्होंने मुश्किल से दो-चार कदम ही रखे होंगे कि पंडा लोग—जो मानो इंतजार में ही बैठे थे—लाठी लेकर बाबा और उनके साथियों पर जोरों से टूट पड़े। धर्म

की जय हो! अधर्म का नाश हो! नारों से वह मंदिर गूँज उठा। साथी लोगों ने बाबा के चारों ओर बाड़ा-सा बना लिया और अपने-आप मार खाते रहे। फिर भी बाबा के कान पर कुछ चोट आ ही गयी। लेकिन साथियों में से दो जनों पर—जिनमें एक तो अठारह वर्ष की नौजवान महिला कार्यकर्ता थी—बहुत भयानक मार पड़ी और उन्हें अस्पताल भेजना पड़ा। बाबा शांतिपूर्वक चुपचाप वापस लौट आये।

दूसरे दिन उनका पड़ाव भागलपुर जिले में था। वहाँ पहुँचकर उन्होंने प्रेस को एक बयान दिया, जिसके दौरान में उन्होंने कहा:

"कल वैद्यनाथ-धाम में मैं हरिजनों और अपने कुछ साथियों के साथ महादेवजी के दर्शन करने के लिए गया था। हम लोग महादेवजी के दर्शन तो नहीं कर सके, लेकिन उनके भक्तों के हाथ की मार आशीर्वाद के रूप में हमें मिली।

"शुरू में ही मैं यह कह देना चाहता हूँ कि जिन लोगों ने हम पर हमला किया, उन्होंने अज्ञानवश ही ऐसा किया। इसलिए मैं नहीं चाहता कि इसके लिए उन्हें कोई सजा दी जाय। बल्कि मुझे यह जानकर खुशी होती है कि मेरे साथ जो सैकड़ों लोग थे, वे इस हमले के दरमियान बिल्कुल शांत रहे। इतना ही नहीं, मेरे जिन साथियों पर बुरी तरह मार पड़ी, उन्होंने मुझसे कहा कि मार खाते समय भी उनके मन में क्रोध नहीं था। मुझे लगता है कि भारत पर ईश्वर की यह असीम कृपा है कि उसके पास ऐसे सेवक हैं, जो किसी मनुष्य के प्रति मन में दुर्भावना या वैर नहीं रखते।

"मैं न तो जबरदस्ती से मंदिर में घुसने का इरादा रखता था, न कानून के बल पर मंदिर में प्रवेश करना चाहता था। इसके विपरीत, मेरा यह रिवाज रहा है कि जो मंदिर हरिजनों के लिए खुला न हो उसमें न जाया जाय। लेकिन पूछने पर मुझे बताया गया था कि इस मन्दिर में हरिजनों को जाने की पूरी छूट है। इसलिए शाम की प्रार्थना के बाद हम भक्ति-

भाव में पगे दर्शन के लिए गये। हम लोग रास्ते भर मौन रहे, और मैं महादेव की स्तुति में गाये गये वैदिक मंत्र का ध्यान कर रहा था। जब ऐसी स्थिति में अचानक हम पर हमला हुआ, तो मैंने आनन्द का ही अनुभव किया। मैं सुख का अनुभव करते हुए लौट पड़ा; लेकिन जब हम लौट रहे थे, हम पर हमला करनेवालों का जोश और बढ़ गया। मेरे साथ के लोगों ने मेरे आसपास घेरा बना लिया और सीधे मुझ पर किये गये प्रहार खुद झेल लिये। फिर भी मुझे यज्ञ की पूर्णाहुति के रूप में थोड़ी प्रसादी मिली। मुझे पुरानी घटना का स्मरण हो आया—जब इसी तीर्थधाम में बापू को भी ऐसे ही हमले का शिकार होना पड़ा था। वैसा ही आशीर्वाद पाकर मुझे गौरव का अनुभव हुआ।

"मैं कह चुका हूँ कि मैं किसीको सजा दिलाना नहीं चाहता। लेकिन इस घटना में स्वतंत्र भारत के संविधान का स्पष्ट भंग हुआ है। छोटी-मोटी सजा से इस क्षति की पूर्ति नहीं हो सकती। जरूरत यह देखने की है कि भविष्य में ऐसी घटनाएँ फिर न घटें।

"यह विज्ञान का युग है। आज हरएक धर्म बुद्धि की कसौटी पर कसा जा रहा है। अगर हमारा समाज यह बात ध्यान में रखे और उसके अनुसार बरते, तो हर काम सुचारु रूप से चलता रहेगा।"

१६ नवम्बर, १९५३ को बाबा कोसी नदी पार करके पूर्णिया जिले में दाखिल हुए। पहला पड़ाव कुरसेला में था। उसी दिन महाराजाधिराज दरभंगा वहाँ पहुँचे और बाबा से मिले। वहीं पर उन्होंने एक लाख अठारह हजार एकड़ जमीन भूदान-यज्ञ में भेंट की। पूर्णिया, सहरसा, दरभंगा और मुजफ्फरपुर जिलों में होते हुए बाबा १० जनवरी, १९५४ को पटना पहुँचे।

साम्ययोगी समाज का आधार

पटना के नागरिकों से शाम के प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने कहा :

"जमीन का सवाल तो किसी-न-किसी तरीके से सारी दुनिया में हल

होनेवाला है। मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं कि मुझे कितनी जमीन मिलती है। मेरा ध्यान तो सदा इस बात पर रहता है कि लोगों के दिल में सद्विचार कितनी गहराई तक पहुँचता है।"

आगे चलकर बाबा ने कहा कि "भूदान के द्वारा हम सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में समत्व स्थापित करना चाहते हैं। हर गाँव में तालीम का उसका अपना इंतजाम हो, उसके अपने उद्योग-धंधे हों, उसकी अपनी दूकान हो। जमीन बाँटने का काम, गाँव के झगड़े तय करने का काम, गाँव की चौकीदारी और रक्षा का काम गाँव के लोग खुद ही कर लें। गाँव-गाँव में एक मंडल होना चाहिए जो यह तय करे कि बाहर से कौन चीजें खरीदी जायँ और गाँव की कौन चीजें बाहर बेची जायँ। गाँव के सारे फैसले पंचायत एकमत से तय करे। इसीको सर्वोदय कहते हैं। यही साम्ययोगी समाज का आधार भी है।"

पटना में ही बिहार के प्रमुख जमींदारों की एक बड़ी सभा हुई, जिसमें उन्होंने पाँच लाख एकड़ जमीन बाबा को दी। अपने प्रवचन में बाबा ने उनसे अपील की कि समय की गति को पहचानें और सेवा और त्याग का जीवन बितायें।

० ० ०

भगवान् बुद्ध के चरण-पथ पर : २ :

"मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि जो काम भगवान् बुद्ध के द्वारा परमेश्वर करवाना चाहता था, वह काम इन कमजोर कंधों से भगवान् लेना चाहता है। और मैं मानता हूँ कि यह काम भी धर्म-चक्र-प्रवर्तन का काम है, जो कि भगवान् बुद्ध ने शुरू किया था।

भूदान-यज्ञ की सिंहगर्जना करते हुए बाबा ने बिहार में ८३९ दिन बिताये। इनमें उन्होंने सबसे ज्यादा समय गया जिले को दिया, जहाँ वे १४४ दिन तक रहे। उनकी गया-यात्रा में जो दो सबसे बड़ी चीजें हुईं वे ये हैं :

(१) भूदान-यज्ञ रूपी वटवृक्ष से जीवनदान-यज्ञ की शाखा का फूटना।

(२) बोधगया में समन्वय आश्रम की स्थापना—जो वेदांत और अहिंसा के समन्वय के प्रतीक के तौर पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में रहेगा।

× × ×

जब बाबा उत्तरप्रदेश का दौरा कर रहे थे, तब ६ मई, १९५२ को लखनऊ पहुँचे। उस दिन वैशाख-पूर्णिमा थी, बुद्ध-जयन्ती का पावन पर्व। वहाँ शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा :

बुद्ध-युग का आरम्भ

"आज बुद्ध भगवान् की ख्याति सारे संसार में फैल गयी है और दुनिया के बहुत-से लोगों का आकर्षण उनके जीवन और उद्देश्यों की तरफ जा रहा है। खासकर जिस पद्धति से उन्होंने काम किया, उस पद्धति की तरफ

लोग आकर्षित हुए हैं। लेकिन हम देखते हैं कि जिस जमाने में बुद्ध थे, उस जमाने में लोग उनका नाम भी नहीं लेते थे। किन्तु आज उन्हींका जन्म-दिन मनाया जाता है। बुद्ध-युग मानों अब आरंभ हो रहा है। मिट्टी से जैसे बीज ढँक जाता है और फिर उसमें से अंकुर निकलता है, उसी तरह बीच के जमाने में बुद्ध की शिक्षा का बीज कुछ ढँका-सा रहा और अब वह अंकुरित होता दिखायी दे रहा है।

"अब जब एक राज्य जाकर दूसरा राज्य आया है, तब यह सोचने का समय है कि हमें किस प्रकार अपनी समाज-रचना करनी है। यानी यह संध्या का समय है, ध्यान का समय है। हमारे सामने आज पचासों रास्ते खुले हैं। कौन-सा रास्ता लें, यह हमें तय करना है। आज हम एक बड़ी भारी सल्तनत का बोझ उठा रहे हैं। इसलिए हम सबके सामने यह एक बड़ा भारी सवाल है कि अपनी आर्थिक और सामाजिक रचना करने में हम कौन-सा तरीका स्वीकार करें।

"इसलिए आज ये सब बातें ध्यान में रखकर तय करना होगा कि जो महत्त्व के मसले हमारे सामने आज हैं, उनको हल करने के लिए कौन-से तरीके जायज हैं और कौन-से नाजायज। अगर हम अच्छे लक्ष्य के वास्ते बुरे साधन इस्तेमाल करते हैं, तो हिन्दुस्तान के सामने मसले पैदा ही होते रहनेवाले हैं। लेकिन अगर हम अहिंसक तरीके से अपने मसले तय करेंगे, तो दुनिया में मसले रहेंगे ही नहीं। यही वजह है कि हम भूमि की समस्या शांति के साथ हल करना चाहते हैं। भूमि की समस्या छोटी समस्या नहीं है। मैं लोगों से दान में भूमि माँग रहा हूँ। भीख नहीं माँग रहा हूँ। एक ब्राह्मण के नाते मैं भीख माँगने का अधिकारी तो हूँ। लेकिन यह भीख मैं व्यक्तिगत रूप से माँग सकता हूँ। जहाँ दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि के तौर पर माँगना होता है, वहाँ मुझे भिक्षा नहीं माँगनी है, दीक्षा देनी है।"

भूदान से धर्म-चक्र-प्रवर्तन

आगे चलकर बाबा ने कहा कि "मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि भगवान् जो काम बुद्ध के जरिये कराना चाहते थे, वह काम मेरे इन कमजोर कंधों पर डाला है। और मैं मानता हूँ कि यह काम भी धर्म-चक्र-प्रवर्तन का कार्य है जो कि भगवान् बुद्ध ने शुरू किया था।

"यह मेरी सिंह-गर्जना है। जमीन तो मेरे पास कब की पहुँच चुकी है। आप जिस तरीके से चाहें, उस तरीके से यह समस्या हल कर सकते हैं।"

गया में गहरा काम

भगवान् बुद्ध की तपोभूमि, गया जिले में, २८ अक्तूबर, १९५२ को बाबा ने प्रवेश किया। उस दिन उनका पड़ाव जहानाबाद में था। अगले दो पड़ाव छोटे-छोटे गाँवों में थे। लेकिन बाबा के मन में जबरदस्त चिन्तन चल रहा था। इसकी झलक उन्होंने अपने एक प्रवचन में कुछ अर्से के बाद दी। उन्होंने कहा :

"गया जिले में प्रवेश हुआ है, तो मुझे लगा कि यह तो बुद्ध भगवान् की तपस्या का जिला है। अलावा इसके करोड़ों हिन्दू यहाँ श्राद्ध के लिए आते हैं, तो यह श्रद्धा का स्थान है। सारे हिन्दूधर्म की श्रद्धा का और बौद्धधर्म के उद्गम का यह स्थान है। यह कोई छोटी बात नहीं है। इसलिए यहाँ पहली किस्त के तौर पर एक लाख एकड़ का संकल्प करो, यह मुझे सूझा। दो-चार साथी थे। गाँव पहुँचने पर उनके सामने यह बात रखी और उन्होंने उसको उठा लिया।"

गया नगर में बाबा २ नवम्बर को पहुँचे। उसके दूसरे दिन बोधगया की पावन भूमि पर निवास किया। सारे दिन वह मानो भगवान् बुद्ध का ही स्मरण करते रहे। प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने उस दिन कहा भी कि आज मुझे यहाँ पर भगवान् बुद्ध के सामीप्य के आनन्द का अनुभव हुआ।

इस प्रकार गया जिले में भूदान-यज्ञ-कार्य ने एक नयी दिशा पकड़ी। इस गहरे काम के लिए बाबा ने अपनी पद-यात्रा टोली में से अपने निजी मंत्री, श्री दामोदरदास मूँदड़ा को मुक्त कर दिया और गया जिले के काम की जिम्मेदारी उनके सिपुर्द की। साथ-ही-साथ गया जिले में काम को विशेष गति देने के लिए 'गया जिला भूदान-प्राप्ति समिति' भी बाबा ने बनायी, जिसके सभापति श्री गौरीशंकरशरण सिंह हैं।

बेदखली का उपाय

बिहार की भूमि-समस्या हल करने की दृष्टि से, बिहार के कार्यकर्ताओं की सलाह से बाबा ने बिहार का कोटा बत्तीस लाख एकड़ अच्छी जमीन का रखा। इनमें से तीन लाख गया जिले के हिस्से में पड़े। इस आधार पर वहाँ लगभग अठारह महीने तक गहरा काम किया गया। यात्रा के दौरान में जब बाबा के सामने कुछ बेदखल किसानों का सवाल आया, तो उन्होंने बहुत सरलता से उसे सुलझाया। वह उन जमींदार से मिले जिन्होंने उन किसानों को बेदखल किया था। प्रेम से बाबा ने उनको राजी कर लिया और उन्होंने बेदखल की हुई सारी जमीन भूदान में दे दी। वह जमीन फिर उन किसानों को दे दी गयी, जो उस पर मेहनत करते आये थे। यहाँ यह बताना मुनासिब होगा कि जब से बाबा को बेदखलियों का पता चला (उस समय वह उत्तर प्रदेश में थे) तब से उन्होंने किसानों को यही सलाह दी है कि वह बेदखल होने से इनकार कर दें और अपनी जमीन पर डटे रहें। उन्होंने उत्तर-प्रदेश की सरकार से भी कहा था कि वह इस अत्याचार की तरफ ध्यान दे और इसे मिटा दे। आशा की जाती है कि अगर भूदान-कार्यकर्ता (या चाहे कोई और भी क्यों न हो) नम्रता, दृढ़ता और सद्भावना से बेदखली के मामले में हाथ डालेगा, तो वह उसे रोकने में जरूर समर्थ हो सकेगा। इसी आधार पर काम करते हुए गया जिले में एक कार्यकर्ता, गोविन्दराव, कई बेदखल किसानों की जमीन उनको वापस लौटवाने में सफल हो सके।

बाबा की गया जिले की पद-यात्रा का नक्शा इस किताब के आखीर में दिया गया है। गया जिले में उन्होंने कई बार यात्रा की। इस जिले में चौथा और आखिरी प्रवेश ३० जनवरी, १९५४ को हुआ। पड़ाव किंजर नाम के गाँव में था। वहाँ पहुँचकर बाबा ने बापू के मंत्र 'करो या मरो' की चेतावनी देते हुए भूदान के लिए देशव्यापी अपील की। उन्होंने कहा :

न देनेवाला अभागा है

"आज गया जिले में हमारा प्रवेश हो रहा है। स्वागत के लिए जो लोग आये थे, वे हमें कुछ मालाएँ पहनाना चाहते थे। वे मालाएँ हमने उन्हींके गले में पहना दीं। मानो, उन लोगों ने क्रांति का झण्डा उठा लिया और प्रतिज्ञा कर ली कि हम इस काम को पूरा करेंगे। या तो जैसा कि बापू ने कहा था, मरेंगे।

"आज बापू का प्रयाण-दिन है। 'करेंगे या मरेंगे' यह वचन उन्होंने सिखाया और उसके अनुसार अपना सारा जीवन बिताकर चले गये। आखिरी क्षण तक वे सेवा करते रहे। उसमें स्वार्थ का जरा भी अंश नहीं था। ईश्वर की भक्ति और प्रार्थना में उत्कट श्रद्धा रखते हुए प्रार्थना-स्थल पर वे पहुँचे थे। उनको नीचे बैठना भी नहीं पड़ा—खड़े-खड़े चले गये।

"आज उस घटना को छह साल हो रहे हैं। उनके पीछे उनका नाम लेनेवाले, जिन्होंने उनसे भर-भरके प्रेम पाया, ऐसे हमारे-जैसे लोग अब भी कसौटी पर हैं।

"हम ज्यादा नहीं कह सकते। कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो वाणी में प्रकट नहीं होती हैं। इतना ही कह देना चाहते हैं कि हमारा गया जिले में अब चौथी बार प्रवेश हो रहा है। भगवान् का नाम लेकर हमने संकल्प किया है। संकल्प यह है कि गया जिले का भूदान-प्राप्ति का काम जब

तक पूरा नहीं होता है, तब तक हम यह जिला नहीं छोड़ेंगे। बहुत गंभीर बात है। सारे हिन्दुस्तान की आँखें गया जिले पर लगी हैं। जो भाई हमारे विचार के प्रति सहानुभूति रखते हैं, उन सबकी निगाहें अब इस जिले पर लगी हुई हैं। हम चाहते हैं कि इस जिम्मेवारी का भान हमारे कार्यकर्ताओं को हो। वे किसी पक्ष के हों, चाहे न हों। वे इसमें लग जायँ तो महीने भर में काम हो सकता है। यह काम कितने दिन में पूरा होगा—इसकी हमने अपने मन में कोई चिन्ता नहीं रखी है। आज हमने मजाक में कह दिया, वह तो हृदय की भावना है कि इस काम को करते-करते हम यहाँ समाप्त हो जायँ, तो हमें तो कोई हर्ज नहीं मालूम होता। बल्कि गया एक श्राद्ध का स्थान ही माना जाता है, तो दूसरे लोगों को भी सहूलियत होगी। हमारे लिए तो श्राद्ध का स्थान वही होगा, जहाँ संकल्प पूरा हो जाय। जो महत्त्व इस स्थान को प्राप्त है, वह दूसरे स्थान को नहीं है, यह हम नहीं मानते। फिर भी भावना तो है ही, क्योंकि हम हिन्दुस्तानी हैं। लेकिन हमारे मन में शान्ति का कोई सवाल नहीं है। हमें तो सब प्रकार से शान्ति हासिल है। चाहे हमारा यह काम सफल होता है, चाहे हम मिटते हैं। दोनों हालतों में हमें शान्ति है, और दोनों दृष्टियों से हमारी तैयारी है।

"हम कहते हैं कि इस यज्ञ में हरएक को देना है, क्योंकि यह यज्ञ है। यज्ञ में घी नहीं जलाना है। उसमें तो स्वार्थ, मोह और लोभ जलाना होता है। तो, इस यज्ञ में आपको स्वार्थ, मोह और लोभ जलाना है। इसीलिए तो सबको देना है।

"यह हमारा प्रेम का संदेश है। आज का दिन भी बड़ा पवित्र है। एकादशी का चन्द्र आपके सामने है। उसीकी साक्षी में हम बोल रहे हैं। हम चाहते हैं कि आपके गाँव में ऐसा अभागा कोई न रहे, जो छठा हिस्सा न दे।"

(३० जनवरी को गया जिले के किंजर पड़ाव पर पहुँचते ही किये गये प्रवचन में से)

बोधगया-सम्मेलन

सर्वोदय समाज का छठा अधिवेशन भी गया जिले में ही १८, १६ और २० अप्रैल, १६५४ को हुआ। बोधगया से दो फर्लांग की दूरी पर सर्वोदयपुरी में यह सम्मेलन रखा गया। सभापति के आसन पर श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् थीं। देश के विभिन्न भागों से, पाँच हजार से ऊपर प्रतिनिधि इसमें जमा हुए थे। देश के गण्यमान्य नेता भी वहाँ मौजूद थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद और डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् भी वहाँ थे। समाजवादी नेताओं में आचार्य कृपलानी और श्री जयप्रकाश बाबू थे।

इस सम्मेलन की सबसे अधिक स्मरणीय घटना वह व्याख्यान है, जो जयप्रकाश बाबू ने १६ तारीख के तीसरे पहर को दिया। उन्होंने अपना कलेजा खोलकर रख दिया।

दर्द-भरी भाषा में उन्होंने कहा :

"बिहारवासी होने के नाते मैं अत्यंत लज्जित होकर आपके सामने आया हूँ। बिहार ने बत्तीस लाख एकड़ भूमि प्राप्त करने का संकल्प किया था। हम लोगों ने बाबा को अठारह महीने तक कष्ट दिया, बिहार के गाँव-गाँव में उन्हें घुमाया, जब कि वे दूसरी जगह बड़े-बड़े काम कर सकते थे। यह हमारा सौभाग्य है कि उनके साथ रहने का हमें मौका मिला। परंतु जिस कारण यह हुआ है, उस पर हम गौरव कदापि महसूस नहीं कर सकते। यह बत्तीस लाख एकड़ का जो संकल्प था, वह ऐसा कौन-सा बड़ा संकल्प था, जो पूरा नहीं हो सकता था? यहाँ की प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी ने संकल्प करके उसे अपना भी लिया था और यहाँ की प्रजा-समाजवादी-पार्टी ने इस आन्दोलन का समर्थन भी किया था। इन दोनों पक्षों के पास कार्यकर्ताओं का अपार बल है। कार्यकर्ताओं की कोई कमी नहीं है। पर इतना होने पर भी क्या कारण है कि हम यह

संकल्प पूरा नहीं कर सके ?......इस पर सोचना चाहिए। बिहार का ही नहीं, सारे देश का यह प्रश्न है।"

"हमारा अंतिम ध्येय यह है कि गाँव की सारी भूमि सबकी बने। उस पर सारे गाँव का स्वामित्व रहे। सारा गाँव उसका मालिक बने। क्या यह सारा कानून से हो सकता है ? किस दल में यह शक्ति है कि वह कानून से यह सब करा ले ?"

"कानून बनानेवाले में एक शक्ति तलवार की भी होती है; परंतु तलवार से एक समस्या हल होती दिखायी देती हो, तो दूसरी दस समस्याएँ खड़ी होती हैं। अतः तलवार का भी काम यहाँ पर चलनेवाला नहीं है। उससे यह काम हरगिज नहीं हो सकता। यह काम तो उसी पद्धति से हो सकता है, जैसे आज हो रहा है। दूसरी किसी भी पद्धति से वह नहीं हो सकता।"

जयप्रकाश का आवाहन

कार्यकर्ताओं की कमी को पूरा करने के विषय पर बोलते हुए जयप्रकाशजी ने आगे कहा :

"कार्यकर्ताओं की संख्या कैसे बढ़े, इस प्रश्न पर हमें सोचना है। किस तरीके से नये कार्यकर्ता इस तरफ खींचे जा सकते हैं, इस पर सोचना है। जिस आन्दोलन में नये कार्यकर्ता खींचने की शक्ति नहीं होती, उसमें आंतरिक शक्ति नहीं है, ऐसा कहना पड़ेगा। परन्तु हम कहते हैं कि इस आंदोलन में तो बड़ी शक्ति है। इसलिए भविष्य में हजारों नये कार्यकर्ता मिलेंगे।"

आखिर में जयप्रकाश बाबू ने यह ऐतिहासिक घोषणा की :

"पिछले साल चांडिल में सर्वोदय-सम्मेलन में जो प्रस्ताव पेश किया गया था, उसमें तरुणों से और खासकर विद्यार्थियों से अपील की गयी थी कि कम-से-कम एक साल का समय भूदान-यज्ञ के लिए दीजिये। अब हमें सोचना है कि इस तरह एक साल या पाँच साल देने की भाषा नहीं

बोलनी चाहिए। यह एक ऐसा आन्दोलन है, जिसमें एक साल या पाँच साल देने से ही काम नहीं चलेगा। इसमें तो 'जीवन-दान' ही देना होगा। ऐसे जीवनदानी कार्यकर्ताओं का आवाहन इस सम्मेलन से होना चाहिए। मैं ऐसे कार्यकर्ताओं को आवाहन करता हूँ, यद्यपि आज मेरी वाणी बहुत शिथिल है। चांडिल-सम्मेलन के बाद अखबारों में रिपोर्ट आयी थी कि जयप्रकाश ने पार्टी छोड़कर एक साल तक भूदान का काम करने का निश्चय किया है। उस समय मैंने वैसा कुछ नहीं कहा था। एक साल, दो साल देने की मैंने कोई बात नहीं कही थी। लेकिन आज मैं यह कह रहा हूँ कि मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त है कि मेरा नाम उन जीवनदानी कार्यकर्ताओं में शामिल है।"

रुक्मिणी-पत्रिका

यह वाणी सुनकर सम्मेलन का वातावरण ही बदल गया। एक अनोखी सनसनी छा गयी। उस समय बाबा ने भी एक अत्यंत मार्मिक प्रवचन किया। उन्होंने कहा :

"अभी हमने एक व्याख्यान सुना जिसमें हृदय बोल रहा था। मुझे रुक्मिणी की पत्रिका का स्मरण हुआ। रुक्मिणी ने भगवान् श्रीकृष्ण को एक पत्रिका लिखी थी। उसमें रुक्मिणी भगवान् को लिखती है : 'चाहे मुझे सौ जन्म लेना पड़े, तो भी मैं लूँगी और प्राणों का परित्याग करती रहूँगी, शरीर को कृश करती हुई; लेकिन तुझको ही वरूँगी।' हृदय को बहुत सुख होता है, ऐसे मंगल निश्चय का वाक्य सुनकर। मैंने तो माना है कि यह यज्ञ सफल होते-होते हमारे जीवनों को ही सफल बनायेगा।

दीर्घ दृष्टि से सोचें

"मैंने भिन्न-भिन्न पक्षों के नेताओं को और सेवकों को बहुत समझाने की कोशिश की है कि छोटी नजर से मत देखियेगा, कुछ दीर्घ दृष्टि से

सोचियेगा और इस काम में अपने लिये या अपना जो माना हुआ पक्ष है, उसके लिए कोई लाभ उठाने की नीयत मत रखियेगा। इस तरह समझाने की मैंने बहुत कोशिश की है।

"पर जब मैं देखता हूँ कि हमारे जो रचनात्मक काम करनेवाले कार्यकर्ता हैं, उनके बीच भी छोटे-छोटे अहंकार काम करते हैं, एक-दूसरे के विषय में शंकाशीलता बनी रहती है, दूरीभाव होता है, तब मुझे उसका दुःख होता है। मैं मानता हूँ कि हम लोग, जो गांधीजी के नाम पर काम करते हैं, रचनात्मक काम को जिन्होंने अपना स्वधर्म माना है, वे अगर सब अहंकार छोड़कर परिशुद्ध भाव से काम करें, तो जिन्हें हर चीज में कोई-न-कोई लाभ उठाने की आदत हो गयी है, वे लोग भी धीरे-धीरे अपनी आदत को छोड़ेंगे और शुद्ध भावना से काम करेंगे। इसलिए इस विषय में मैं निराश नहीं हूँ। हमें शुभ संकल्प करना चाहिए।

दृढ़ संकल्पी बनें

"मैं कहा करता हूँ कि मुझे मालूम नहीं कि भूदान-यज्ञ हमें कहाँ से कहाँ ले जायगा। किन-किन कामों की प्रेरणा देगा, कितना विशाल उद्योग यह हमसे करायेगा, इसकी कल्पना आज नहीं की जा सकती। परंतु मैं फिर से परमेश्वर को साक्षी रखकर आप सब लोगों के सामने अपने हृदय की प्रतिज्ञा दुहराता हूँ। इस काम में हमें काया, वाचा, मन और बुद्धि, सब लगा देनी है। कार्यकर्ता भी हमें बहुत-बहुत मिलनेवाले हैं। आज एक छोटा-सा संकल्प सिद्ध हुआ है। उस कारण जो भान हुआ है—आत्मा की शक्ति का, वह हमारे लिए बड़ी भारी थाती है। एक बड़ी कमाई हासिल हुई है। दीख पड़ेगा कि जवानों को गये साल जो आवाहन किया गया था, उसका परिणाम इसके आगे बहुत वेग से सामने आयेगा। वह परिणाम प्रत्यक्ष दीखेगा। मैं चाहता हूँ कि हम सब लोग ऐसे ही दृढ़ संकल्पी बनें, जैसे जयप्रकाश बाबू हुए हैं।"

तीसरे दिन २० तारीख को सम्मेलन में अभूतपूर्व घटना हुई। सुबह के सूत्र-यज्ञ के बाद आशा बहन ने एलान किया कि जयप्रकाश बाबू ने मेरे पास दो पत्र भेजे हैं। एक उनका अपना है और दूसरा बाबा का। आशा बहन ने यह दोनों पत्र पढ़कर सुनाये।

दो ऐतिहासिक पत्र

श्री जयप्रकाश बाबू का पत्र यह था :—

प्रिय आशा बहन,

बाबा का एक पत्र आया है, जो साथ भेज रहा हूँ। जिन्होंने हम सबको प्रेरित किया है, वही मुझ-जैसे नाचीज को जीवन-दान करें, इस पर कुछ कहा नहीं जाता। इतना ही कहूँगा कि इस अमूल्य दान को स्वीकार कर सकूँ, इसके लिए सर्वथा अयोग्य हूँ। हमें तो जीवन-दान, भगवान् के नाम पर, बाबा को ही करना है।

आपका विनीत
जयप्रकाश

सर्वोदयपुरी (बोधगया)
२०-४-'५४

बाबा के जिस पत्र का जयप्रकाश बाबू ने हवाला दिया, वह पत्र यह है :—

श्री जयप्रकाश,

कल आपने जो आवाहन किया था, उसके जवाब में—

भूदान-मूलक, ग्रामोद्योग प्रधान
भूदान-यज्ञ-मूलक क्रांति के लिए
मेरा जीवन-समर्पण

—विनोबा

सर्वोदयपुरी (बोधगया)
२०-४-'५४

जीवनदान की गंगा

इन पत्रों को सुनकर मानो सम्मेलन में बिजली दौड़ गयी। नया जीवन, नया उत्साह नजर आने लगा। बहुत शांत स्वर में सम्मेलन की अध्यक्षा

आशा बहन ने प्रकट किया कि मैं एकान्त नम्रता के साथ भाई जयप्रकाश के पास अपना नाम जीवनदान में देती हूँ। इसके बाद धीरेन्द्र भाई मंच पर आकर बोले कि "ईश्वर की प्रेरणा से भाई जयप्रकाश ने जीवनदान का जो आवाहन किया है, उस आवाहन के जवाब में मैं भी अपना नाम लिखा रहा हूँ। मैंने काफी घबराहट के साथ अपना नाम लिखाया है, क्योंकि इस आवाहन की जो मूल प्रेरणा है और उस प्रेरणा के पीछे नाम देनेवालों की जो जिम्मेदारी है, उसका मुझे भान है। समाज में साम्ययोग की स्थापना के लिए, शोषणहीन समाज की पूर्णता के लिए, शासन-मुक्ति तक जानेवाली यह क्रान्ति है। जिन जीवन-मूल्यों को हम बदलना चाहते हैं और जो नये मूल्य हम कायम करना चाहते हैं, वे नये मूल्य हमारे जीवन में दाखिल होने चाहिए और पुराने मूल्य निकल जाने चाहिए। नाम देने से पहले इस बात का विचार कर लेना चाहिए, क्रान्ति के सभी मूल्यों का ध्यान रखना चाहिए। पुरानी क्रान्तियों से यह क्रान्ति कहीं अधिक क्रांतिकारी है। यहाँ तो सर में कफन बाँधकर आना है।"

सभापति के आग्रह पर जीवनदान के सम्बन्ध में आये हुए प्रतिज्ञा-पत्र श्री जयप्रकाश बाबू ने पढ़कर सुनाये। उनको सुनाने के पहले जयप्रकाश बाबू ने कहा कि इस जीवनदान-यज्ञ का होता मैं बनूँ, यह तो मजाक की बात होगी। मैं पूज्य विनोबा के चरणों में यह सारे संकल्प-पत्र समर्पित करता हूँ।

इस सभा में लगभग साढ़े पाँच सौ भाई और बहनों ने जीवनदान का संकल्प जाहिर किया। बोधगया-सर्वोदय-सम्मेलन की यह सबसे अनोखी देन मानी जायगी। इससे फिर एक बार साफ जाहिर हो गया कि भारतीय हृदय प्रेम की पुकार पर अब भी अपनी बलि देने को तैयार है। इससे यह भी सिद्ध हो गया कि आत्मशक्ति की महानता और सफलता में भारत का विश्वास अभी तक दृढ़ है और इसके द्वारा जीवन की सभी चुनौतियों का खूबी के साथ मुकाबला किया जा सकता है। और सबसे बड़ी बात यह है

कि यह सम्मेलन भगवान् बुद्ध की अमर आत्मा के प्रति एक श्रद्धांजलि जैसा हो गया। उसने यह दिखा दिया कि वह महान् आत्मा इस पावन भूमि में आज भी मौजूद है और मानवमात्र को सच्चाई और ईमान की राह दिखा रही है।

गया-यात्रा में ही बाबा को यह कल्पना सूझी कि वेदान्त और अहिंसा के समन्वय के आधार पर एक सांस्कृतिक केन्द्र इस जिले में चलाया जाय। ईश्वर की दया से इस काम के लिए महाबोधि वृक्ष के पास ही कुछ जमीन भी मिल गयी। यह जमीन वहाँ के शांकर-सम्प्रदायी मठ की तरफ से बड़ी प्रसन्नता से दान में मिली।

समन्वय-आश्रम

इस समन्वय-आश्रम के बारे में बाबा ने एक प्रवचन में रोशनी डाली। उन्होंने कहा :

"दीखने में तो ऐसा दीखेगा कि यह कोई नया आरम्भ मैं करने जा रहा हूँ। पर नया आरंभ करने की वृत्ति मुझमें कुछ वर्षों पहले थी, इन दिनों वह वृत्ति नहीं रही है। यह जो आरंभ हो रहा है, वह अत्यन्त स्वाभाविक प्रवाह में आया है।

"नौ साल पहले जब हम सिवनी जेल में थे, तब गीता के स्थितप्रज्ञ के श्लोकों पर कुछ कहने का मौका आया था। वे व्याख्यान पुस्तकाकार निकल गये हैं। 'स्थितप्रज्ञ-दर्शन' उस पुस्तक का नाम है। उसके अंत में 'ब्रह्म-निर्वाण' शब्द की व्याख्या करनी पड़ी है। उसके सिलसिले में बौद्धों का 'निर्वाण' और वेदांत के 'ब्रह्म-निर्वाण' इन दो शब्दों का समन्वय करने की जरूरत महसूस हुई और वैसा समन्वय वहाँ पर किया गया है।

वेदांत और अहिंसा

वेदांत और अहिंसा के बारे में स्पष्टीकरण करते हुए बाबा ने कहा :

"थोड़े में इतना कह दूँ कि वेदांत और अहिंसा, ये दो चीजें परस्पर अविरुद्ध

हैं। ये दोनों एक-दूसरे के कार्यकारण हैं। वेदांत में से सीधी अहिंसा प्रतिफलित होती है और अहिंसा के लिए बिना वेदांत के कोई पक्की मजबूत बुनियाद नहीं हासिल होती। वेदांत का आधार छोड़कर अहिंसा का बचाव कितना भी करें, तो भी वह मामला ढीला ही रह जायगा। वह पक्का तभी बनता है, जब उसको वेदांत का आधार मिलता है। यही सारी प्रक्रिया गीता के एक श्लोक में बहुत ही संक्षेप में कही गयी है :

समं पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्॥

जो मनुष्य सर्वत्र परमेश्वर के अस्तित्व को समान रूप में देखता है, यह हुआ वेदांत। और उसके परिणामस्वरूप जो हिंसा ही नहीं कर सकता, क्योंकि हिंसा के लिए जो भी हथियार उठाया जायगा, वह अपने खुद के खिलाफ उठाने जैसा ही होता है, इस वास्ते आत्महिंसा जो नहीं करेगा, वह परमगति पायेगा। मूल बुनियाद समान परमेश्वर के दर्शन की, अर्थात् वेदांत की है। उस पर से जीवन-निष्ठा अहिंसा की, और उसका अन्तिम परिणाम परमगति; इस तरह एक श्लोक में सारे विश्व के लिए जो जरूरी समन्वय है—आदि से अंत तक, बुनियाद से शिखर तक; उसे गीता के इस अद्भुत श्लोक में बता दिया गया।

"बापू वेदांत के बदले 'सत्य' का नाम लेते थे और उसके साथ अहिंसा जोड़ देते थे। वे कहते थे कि सत्य और अहिंसा, ये एक ही द्विदल तत्त्व हैं। दोनों मिलकर एक ही तत्त्व होता है। इस तरह 'सत्य' शब्द को वे पसंद करते थे। मैंने सोचा कि सत्य का संशोधन जितनी प्रखरता से वेदांत में होता है, उतनी प्रखरता से और किसी प्रक्रिया में नहीं होता। इस वास्ते 'सत्य' शब्द का अर्थ वेदांत ही हो जाता है। वेदांत याने वेदसार, तत्त्वज्ञान का सर्वसार, जो कि सत्य है। और यह भी वस्तु वेदान्त में बतायी गयी कि वह अन्तिम शब्द सत्य ही है और उस शब्द के अंदर बाकी का सारा जीवन-विचार निहित है। तो जिसको बापू

'सत्य' कहते थे, वही हिन्दुस्तान की भाषा में, आम समाज की भाषा में वेदांत होता है।

'सत्य' शब्द परमतत्त्व का सूचक है और वेदांत शब्द समन्वय का। याने सत्य के दर्शन के अनेक पहलू होते हैं। वे सारे अनेक पहलू जहाँ इकट्ठा होते हैं, वहाँ किसी एक विचार के अंग का आग्रह मिट जाता है। उसीको वेदांत कहते हैं, जिसका उल्लेख काकासाहब ने आचार्य गौड़पाद के नाम से किया था। जहाँ गौड़पाद ने कह दिया कि :

स्व सिद्धान्तव्यवस्थासु द्वैतिनो निश्चितो दृढम्।
परस्परं विरुद्धयन्ते तैरयं न विरुद्धयते॥

"चाहे आपस-आपस में लड़ते रहियेगा, लेकिन आप हमसे नहीं लड़ सकते। हम आपसे नहीं लड़ सकते। आप सारे हमारे पेट में हैं।"

तो, यह जो दर्शन है, इसको वेदांत कहते हैं। अर्थात् सर्वांगीण समग्र सत्यदर्शन और उसके साथ अहिंसा। इन दो तत्त्वों का समन्वय हमारे जीवन में और दर्शन में हमको करना होगा। अभी तक जो समन्वय करने की कोशिश की गयी, उसमें हमको एक दिशा मिल गयी, लेकिन परिपूर्णता उसमें नहीं होती है। परिपूर्णता शायद कभी होगी भी नहीं। आज हमारे लिए भी भगवान् ने समन्वय करने का बड़ा भारी कार्यक्रम रचा है और भूदान-यज्ञ न मालूम हमको इस तरह कहाँ ले जायगा, इसका कोई अन्दाज अभी नहीं लग रहा है। लेकिन एक-एक कदम, एक-एक कदम हमको उठाना पड़ता है। उस सिलसिले में यह सांस्कृतिक केन्द्र की कल्पना, जिसको समन्वय-आश्रम या समन्वय-मंदिर जो भी नाम दिया जाय, हम देना चाहते हैं, प्राप्त होती है।

इस प्रकार बोधगया में समन्वय-आश्रम का जन्म हुआ।

गया में काम की योजना

सर्वोदय-सम्मेलन के बाद बाबा गया जिले में कुछ रोज रहकर ५ मई

को उत्तर विहार के लिए विदा हुए। गया जिले में उन्होंने काम करने की जो योजना बनायी, उसको उन्होंने अपने एक प्रवचन में पेश किया। उन्होंने कहा कि जहाँ तक गया जिले का ताल्लुक है, योजना इस प्रकार सोची गयी है :

(१) जयप्रकाश बाबू कौआकोल थाने में स्वयं एक आश्रम की स्थापना करेंगे, जिसमें कार्यकर्ताओं के शिक्षण की व्यवस्था होगी। ये कार्यकर्ता भूदान-यज्ञ के प्रचार-कार्य में और उसके आधार पर ग्रामोदय के काम में लग जायँगे।

(२) कौआकोल थाने में ग्रामराज्य का गहरा प्रयोग हो।

(३) बोधगया में समन्वयाश्रम बनेगा, जहाँ विश्व-संस्कृति के समन्वय की कोशिश होगी। उसीके साथ-साथ कार्यकर्ताओं के शिक्षण की भी व्यवस्था होगी।

(४) समन्वय-आश्रम के मार्गदर्शन में बोधगया थाने में ग्रामोदय का कार्य स्थानिक समिति के जरिये चले।

(५) जिले भर के उन सब गाँवों में, जहाँ काफी अधिक जमीन मिली हो और जहाँ के लोग ग्रामोदय के कार्य को उठाने को उद्यत हों, सर्व-सेवा-संघ के मार्गदर्शन में ग्रामराज्य की नींव डाली जाय।

(६) सर्वोदय-विचार का प्रचार जिले भर में सतत जारी रहे, ऐसी योजना हो। उसमें भूदान-यज्ञ-विहार यथासम्भव हर गाँव में पढ़कर सुनाने की योजना शामिल हो।

क्योंकि गया जिले में वितरण के लिए पर्याप्त जमीन मिल गयी है; बोधगया-सम्मेलन की आज्ञा के अनुसार अब मुख्य ध्यान भूमि-वितरण पर देना होगा। वितरण के नियमानुसार इसका यथाशीघ्र आयोजन किया जाय। साथ-साथ जो भूमि सहज ही प्राप्त हो सके, वह हासिल की जाय।

(७) इसके मानी यह नहीं कि हम तीन लाख एकड़ भूमि और दो लाख दानपत्र प्राप्त करने का लक्ष्य छोड़ देते हैं। लेकिन वितरण के

और रचनात्मक काम के जरिये उस लक्ष्य की पूर्ति सहज क्रम से होनी चाहिए। हाँ, जिन बड़े जमीनवालों के पास हम अभी तक नहीं पहुँच सके हैं, उनके पास पहुँचने का क्रम जारी रखा जाय।

(८) भूमि-वितरण के साथ-साथ किसी गाँव में कोई भूमिहीन न रहे, ऐसी कोशिश की जाय। लक्ष्यप्राप्ति का यह सबसे श्रेष्ठ और कारगर तरीका होगा।

गया से प्रस्थान

गया जिले से विदा होते वक्त बाबा ने कार्यकर्ताओं के बीच जो एक महत्त्वपूर्ण प्रवचन दिया, उसका मुख्य अंश यह है :

"ता० ३० जनवरी को मैंने गया जिले में प्रवेश किया था। तब सोचा था और जाहिर किया था कि काम पूरा करके ही हम आगे बढ़ेंगे।

"कोटे की पूर्ति के तीन प्रकार हमने रखे हैं। अगर इन तीनों प्रकारों में से कोई भी एक प्रकार, किसी भी एक थाने में पूरा हो जाय, तो हम उसे पूरा हुआ मानेंगे। कोटे के तीन प्रकार ये हैं : एक तो एकड़ की निर्धारित संख्या पूरी हो जाय, दूसरा, दानपत्रों की संख्या पूरी हो, तीसरा, गाँव में जितने भूमिहीन हों उन्हें भूमि मिल जाय। अगर इन तीनों में से एक भी प्रकार पूरा हो जाय तो अपेक्षित काम पूरा हुआ है, ऐसा समझा जायगा। तीन महीने लगातार इस जिले में काम होता रहा। काफी ताकत से गहरा काम हुआ है। शायद ही कहीं इसके पहले के आन्दोलन में इस तरह का काम हुआ हो। फिर भी काम तो बाकी ही है।

"मैं गया जिला क्यों छोड़ रहा हूँ, इसकी दृष्टि आप लोगों को समझाता हूँ। इस सम्मेलन में सर्व-सेवा-संघ ने एक बड़ा आदेश दे दिया, जो प्रस्ताव के रूप में देखने को मिलेगा। उसने यह जाहिर किया कि जहाँ पर्याप्त जमीन मिले, वहाँ फौरन वितरण का काम शुरू होना चाहिए। प्राप्ति और वितरण के काम में अन्तर रह जाता है, तो मुश्किलें पैदा होती हैं। बहुत-सी बातें हवा में रह जाती हैं और काम नहीं हो पाता।

इसलिए जमीन का फैसला जल्दी होना चाहिए। झाँसी के पास ढाई साल पहले जमीन मिली थी। उसका वितरण अब हुआ है। अगर फंड पड़ा रहता है, तो दोष होता है, मगर जमीन के मामले में ऐसा नहीं है। क्योंकि जमीन तो वितरण होने तक मालिक के पास ही रहती है और वही उस पर फसल पैदा करता है। इस प्रकार राष्ट्र की हानि नहीं होती। सर्व-सेवा-संघ ने सारे भारत का कोटा जाहिर किया था और उस संकल्प को पूरा करना निश्चित हुआ था। अभी तक दो-तीन प्रदेशों में थोड़ा-थोड़ा बँटवारा हुआ है। करीब एक लाख एकड़ जमीन बँट चुकी है, जब कि सारे देश में बत्तीस लाख एकड़ जमीन की प्राप्ति हुई है। काकासाहब ने मुझे लिखा था कि उन्हें शंका होती थी कि वितरण का काम कैसे होगा। मगर अब उन्होंने मुझे लिखा कि आपका यानी मेरा रुख ठीक था। संकल्प-सिद्धि हुई और वितरण के काम में लगेंगे। अब सब ठीक हो जायगा। निश्चित कार्य की पूर्ति होनी चाहिए। इसलिए वितरण के कार्य को टाला गया था। मगर प्राप्ति को बढ़ायेंगे, तो लोभ होगा। वितरण जाग्रति लाने का तरीका है। आज तक किसीको मुफ्त में जमीन नहीं मिली है। अब भूमि का यथाशीघ्र बँटवारा करना है। ग्रामराज्य का काम भी प्रारम्भ करना है। उससे लोगों में आशा उत्पन्न होगी, उत्साह बढ़ेगा और पाँच करोड़ का कोटा मिलेगा, तो लोगों को उसका सही ख्याल आयेगा। आगे से गाँव-गाँव में वितरण का काम होना चाहिए, तब यह समाजव्यापी काम बढ़ेगा।

"पहले संकल्प किया था, अब वह पूरा होगा। इस दृष्टि से वितरण का काम शुरू हो जाना चाहिए। यह शांति का काम है, इसे गौर से करना होगा। मगर इसमें समय लगेगा। इसके लिए ट्रेनिंग भी देनी होगी। भूमिहीनों की माँग की पूर्ति से भावना पैदा होगी और उससे काफी जमीन मिल सकेगी। इस प्रकार वितरण का कार्य प्राप्ति में मदद करेगा। केवल अक्षरार्थ के लिए मैं गया जिले में रुक जाऊँ, यह ठीक

नहीं है। मुझे अपने आपको एक जिले में कैद करने की जरूरत नहीं। निश्चय-पूर्ति अक्षरार्थ में नहीं है। अब वितरण की योजना पूरी करके बिहार के गाँवों में और अन्य जिलों में जाना चाहिए। इसके अलावा इस बार एक ऐसी घटना घटी है, जिसका महत्त्व लोगों ने नहीं समझा है। उसकी शक्ति मालूम होगी, तो वे इसका महत्त्व समझेंगे। पुराणों के जमाने में लोग यज्ञ करते थे। जब एक निष्ठा से उसकी पूर्ति होती थी, तो देवता का आविर्भाव होता था। तीन साल तक हम लोगों ने लगातार काम किया, तो देवता का आविर्भाव हुआ। यह देवता 'जीवनदान-यज्ञ' के रूप में प्रकट हुआ। अब मेरा ध्यान इस शस्त्र को अधिक शक्तिशाली और प्रभावशाली बनाने की ओर है। इसके लिए एक जिले में, एक सूबे में कैद होना अच्छा न होगा—न बिहार के लिए और न हिन्दुस्तान के लिए। मैंने भूदान के लिए जीवन-समर्पण किया था और उस पर कायम हूँ। मगर बीच के संकल्पों की एक मर्यादा होती है और दूसरे रास्ते ढूँढ़ने पड़ते हैं।"

गया जिले से चलकर बाबा ने २८ दिन शाहाबाद जिले में बिताये और फिर १२ रोज छपरा जिले में। इसके बाद उनका प्रवेश चम्पारन की पुण्यभूमि में हुआ, जहाँ बापू को अहिंसादेवी का साक्षात्कार हुआ था।

● ● ●

क्रान्ति का दृष्टिकोण : ३ :

मेरा काम यह नहीं है कि भूखे को रोटी दूँ, बल्कि यह है कि जो खा रहा है, उसके अन्दर दूसरों को खिलाने की प्रेरणा पैदा करूँ। लेने के इस युग में मैं देने का वातावरण पैदा करना चाहता हूँ। जरूरत इस बात की है कि मालकियत और मुकाबले के बजाय जीवन का आधार असंग्रह और सहयोग पर हो।

तपोभूमि चम्पारन की पद-यात्रा की दो घटनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं :

(१) शाम को कार्यकर्त्ताओं की सभा में एक दिन जमींदार कांग्रेसी भाई ने बाबा का हक कबूल किया। उनके तीन बेटे थे। बाबा को चौथा माना और अपनी जमीन का चौथा हिस्सा दान में दे दिया। उन्होंने अपना जीवन-दान भी किया। इसका बहुत अच्छा असर दूसरे कार्यकर्त्ताओं पर पड़ा और उन्होंने भी अपने-अपने हिस्से का भूदान किया।

(२) एक चीनी-मिल के योरोपियन मैनेजर बाबा से मिलने आये। उन्होंने मिल के फारम की छह सौ एकड़ जमीन में से पचास एकड़ का दान किया। बाबा ने छठे हिस्से की माँग पेश की। इस पर मैनेजर कहने लगे कि इसको पहली किस्त समझा जाय। बाबा ने मुस्कराते हुए कहा, अच्छी बात है, मुझे उम्मीद है कि आपसे बाद में और मिलेगा। लेकिन हम यह भी चाहते हैं कि आपके फारम और मिल, दोनों में मजदूरों का साझा होना चाहिए और आप और वह सब जने बराबर के शरीक की तरह, मिलकर काम करें।

× × ×

चम्पारन बिहार का वह संसारप्रसिद्ध जिला है, जहाँ महात्मा गांधी ने अहिंसादेवी का भारत की भूमि में पहली बार साक्षात्कार किया। बाबा ने सितम्बर, १९५२ में बिहार में प्रवेश किया। तब से वे बिहार में लगातार एक जिले के बाद दूसरे जिले में घूम ही रहे हैं। लेकिन अब तक वे चम्पारन नहीं आये थे। क्योंकि उन्हें विश्वास था कि यहाँ की पुण्य-भूमि में जमीन मानो बिना माँगे ही मिलेगी और उनका यह विचार बिल्कुल सही है। कारण यह है कि कुछ अर्सा पहले चम्पारन के कुछ हिस्से में भूदान के काम से मुझे घूमने का अनुभव हुआ। उसमें लगभग एक दर्जन गाँव से मैं सम्पर्क स्थापित कर सका। वहाँ की एहसान-मन्द जनता ने सहज ही नब्बे एकड़ जमीन दान में दी। लेकिन यहाँ की भोली-भाली जनता को इस बात पर अचरज होता था—और ठीक ही अचरज होता था—कि बाबा हमारे जिले में क्यों नहीं आ रहे हैं। उधर बिहार से विदायगी का समय भी नजदीक आ रहा था। चम्पारनवासियों की आवाज तेज होती गयी। आखिर बाबा ने चम्पारन जिले को एक महीना देना तय किया। १४ जून, १९५४ को उन्होंने इस तपोभूमि में कदम रखा।

चम्पारन जिले में बड़े-बड़े फारम हैं और चीनी की मिलें हैं। यहाँ पर आम कहावत है कि 'निलहा गये और मिलहा आये'। यहाँ पर हजारों एकड़ जमीन पर ईख बोयी जाती है, जो सीधी मिलों में चली जाती है। ईख बोनेवालों की जो मुसीबतें हैं, उसकी चर्चा हम यहाँ नहीं करेंगे। बस इतना कहना काफी है कि गोरखपुर और दूसरे जिलों की तरह यहाँ के किसान भी बहुत दुःखी हैं और फाकेमस्त हैं। लेकिन उनके हृदय में भावना है, सत्कार है और प्रेम है। यही कारण है कि बरसात का मौसम होने पर भी हजारों की तादाद में वे बाबा की प्रार्थना-सभा में जाते थे और शान्तिपूर्वक सुनते थे।

२६ जून को बाबा वृन्दावन-आश्रम पहुँचे, जो कुमारबाग रेलवे स्टेशन के पास है। कुमारबाग उत्तर-पूरब रेलवे की मुजफ्फरपुर नरकटियागंज

शाखा पर है। वृन्दावन-आश्रम बिहार का एक प्रसिद्ध शिक्षा-केन्द्र है। इसके अलावा १९३९ में यहीं पर गांधी-सेवा-संघ का पाँचवाँ सालाना जलसा हुआ था, जिसमें बापू भी आये थे।

उस दिन शाम की प्रार्थना के बाद अपने प्रवचन में बाबा ने आचार्य नरेन्द्रदेव के व्याख्यान का हवाला दिया, जिसमें आचार्यजी ने भूदान पर टीका की थी।

बाबा ने कहा : "हमने अखबार में पढ़ा कि आचार्य नरेन्द्रदेवजी बोले हैं कि भूदान का काम तो अच्छा है, लेकिन उसके पीछे कोई खास तत्त्वज्ञान नहीं दीखता। इसका उत्तर मैं क्या दूँ ? मैं इतना ही कहूँगा कि अगर इसके पीछे तत्त्वज्ञान नहीं होता, तो मेरे पाँव तीन साल में ढीले पड़ जाते। लेकिन मेरे पाँव ढीले नहीं हुए, बल्कि उनमें जोर ही आ रहा है। नित्य नयी स्फूर्ति मिलती है। नये-नये पल्लव फूटते हैं। आप देखते हैं कि भूदान-यज्ञ से सम्पत्तिदान निकला, श्रमदान निकला और अब जीवन-दान भी निकला। यह सब नहीं होता, अगर इसकी जड़ में कोई मजबूत तत्त्वज्ञान न रहा होता।

क्रांति का त्रिकोण

"आचार्य नरेन्द्रदेव ने यह तो नहीं कहा कि हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया निकम्मी है। लेकिन उन्होंने कहा कि वह वर्ग-संघर्ष को माननेवाले हैं और केवल हृदय-परिवर्तन से यह काम होगा, ऐसा नहीं मानते। इसके माने क्या हैं ? यही कि एक शख्स अपना निश्चय करके बैठ गया है। अगर ऐसा निश्चय हुआ हो, तो किसी विचार या अनुभव से ही वह हुआ होगा। लेकिन सृष्टि में नित्य नये-नये अनुभव आते हैं। क्रांति की नयी-नयी प्रक्रियाएँ होती हैं। क्रांति तो वह चीज है, जिसकी नयी-नयी प्रक्रियाएँ होती ही हैं। क्रांति की प्रक्रिया अगर तयशुदा होगी, तो वह क्रांति नहीं रहेगी।

"हम कहते हैं कि विचार से जिसने मान लिया हो कि वर्ग-संघर्ष से ही क्रांति हो सकती है, वह अगर अनुभव के लिए गुंजाइश रखता है, तो

यह भी अनुभव आ सकता है कि हृदय-परिवर्तन और विचार-परिवर्तन से क्रांति हो सकती है। हृदय-परिवर्तन मोह-ग्रस्तों का करना होता है और विचार-परिवर्तन सज्जनों का करना होता है। दोनों मिलकर क्रांति की प्रक्रिया होती है। यही हमारा कार्य-क्रम है। एक तरफ से हम विचार समझाते हैं और दूसरी तरफ से हमारा तप चलता है। समझाने से विचार-परिवर्तन होता है और तप से हृदय-परिवर्तन होता है। इन दोनों के साथ और इन्हींके परिणामस्वरूप एक बात और भी आ जाती है, परिस्थिति-परिवर्तन। इस तरह क्रांति का एक त्रिकोण बन जाता है।

"परिस्थिति-परिवर्तन के लिए क्या करना चाहिए? कुछ लोगों का खयाल है कि कानून से परिवर्तन होगा। कानून के लिए क्या करना होगा? सत्ता हाथ में लेनी होगी। सत्ता हाथ में कैसे लेंगे? यही न कि हम लोगों को समझाकर उनका विचार-परिवर्तन करेंगे और उसके जरिये सत्ता हाथ में लेंगे? लोकशाही में इसका यही उत्तर हो सकता है। आखिर में केवल विचार-परिवर्तन का रास्ता ही रह जाता है।

"हमारे पास तो विचार-परिवर्तन के साथ हृदय-परिवर्तन यानी तपस्या का रास्ता भी है। तपस्या के कई प्रकार हो सकते हैं। गाँव-गाँव पैदल घूमना तपस्या का एक प्रकार है। उसके जरिये हम जनता को इतना समझा सकते हैं कि वह पाप में हिस्सेदार न बने। आज जगह-जगह बेदखलियाँ चल रही हैं। जमींदारों को बेदखली का अन्याय हम जता सकते हैं। अगर वह नहीं समझते तो असहयोग आता है। जनता उनके कामों में सहयोग नहीं देती, तो वह दूर जाते हैं। हम कहते हैं कि हमारी प्रक्रिया में असहयोग और सत्याग्रह आ ही सकता है। हमारी प्रक्रिया से कानून भी बन सकता है। हम कबूल करते हैं कि जन-समूह अगर निराश हुआ तो खूनी क्रांति भी हो सकती है। लेकिन चौथी बात भी बन सकती है, यानी भूदान से ही समस्या हल हो सकती है। शर्त यह है कि कार्यकर्ता चारों ओर से इसमें लग जायँ और ठीक ढंग से लोगों को विचार समझा

दें। जनता का हमें जो परिचय हुआ है, उस पर से हम कह सकते हैं कि यह बात बिल्कुल नामुमकिन जैसी नहीं है। हम तो उसी आशा से काम करते हैं।

"लेकिन मान लीजिये कि यह आशा सफल नहीं होती है, तो तीन मार्ग रह जाते हैं। उनमें से खूनी क्रांति का मार्ग तो कोई मार्ग ही नहीं है; न वह क्रांति ही है। तब सोचने के लिए दो ही उपाय बचे। एक कानून का, दूसरा असहयोग का। कानून को हमने रोका नहीं है। कानून बने, लेकिन कानून का ढोंग न बने। कानून कारगर बने। हम किसी पार्टी को सत्ता हासिल करने से या कानून बनाने से रोकते नहीं है। हरएक पार्टी कबूल करेगी कि इस आन्दोलन से कानून बनाने को बल ही मिला है।

"कानून की बात चलती है, तो 'सीलिंग' का और दूसरे न जाने क्या-क्या पचड़े निकलते हैं। उसीमें समय चला जाता है। तब तक लोग अपनी जमीन बाँट लेते हैं। अभी हैदराबाद में कानून बना है। उसके अनुसार सौ या सवा सौ एकड़ खुश्क जमीन लोग रख सकते हैं। तीन साल पहले हम तेलंगाना में थे। तब से कानून की बात चल रही थी। लोगों ने तभी से आपस में बँटवारा कर लिया है। धनी लोग प्रत्युत्पन्नमति होते हैं। जिनके पास दौलत और जमीन है, उनके पास अकल भी होती है। इसलिए कानून बनाइये, लेकिन ऐसा कि जिससे आप बेवकूफ न बनें।

"अब रहा असहयोग और सत्याग्रह। यह रास्ता न्याय और धर्म का है। इसमें किसी तरह का द्वेष नहीं है। लोग कहते हैं कि सत्याग्रह और असहयोग की शक्ति द्वेष से घटती है। दोषयुक्त असहयोग तो गीली बारूद है। कारगर बारूद प्रेम ही है। सत्याग्रह की ताकत प्रेम में ही है। जितना प्रेम, उतना सत्याग्रह का हक। हम तो कहते हैं, जिस चीज से द्वेष पैदा होता है, उसमें सत्याग्रह नहीं है। कुछ लोग सत्याग्रह को धमकी समझते हैं, तो हम कहते हैं कि फिर प्रेम को ही धमकी समझना होगा।

"पिस्तौल और पैसों की एवज में प्रेम की शक्ति सामान्यतया सहयोग के रूप में और विशेष प्रसंगों में असहयोग के रूप में प्रकट होती है। माँ क्या करती है? कभी बच्चे को खिलाती है और खुद नहीं खाती। तो यह क्या द्वेष है? यह माँ का प्रेम बच्चे को सन्मार्ग पर लाने के लिए काम कर रहा है। कभी माँ उसको तमाचा भी मारे तो बच्चा जानता है कि वह प्रेम का तमाचा है। यह तमाचे की बात निकलती है, तो हम कहते हैं कि नाजायज तरीके से किसीका गल्ला किसीके घर में रखा गया हो, तो उसको लूटना भी अहिंसा में आ सकता है। इतना प्रेम प्रकट करने के लिए घर-घर जाना चाहिए, समझाना चाहिए। यह सब होगा, तो बहुत से जमीन दे ही देंगे। नहीं देंगे, तो दूसरे शस्त्र अभी हमारे पास पड़े हैं। हाँ, हमारे शस्त्र ऐसे हैं कि सामनेवाले को तकलीफ नहीं देते, उसकी हृदय-शुद्धि करते हैं।

"हमारे कार्यकर्ताओं को आत्मवादी होना चाहिए। अगर हम आत्मवादी नहीं हैं, तो हमारा भूदान का तत्त्वज्ञान टूट जाता है। आत्मवादी यानी इस बात पर विश्वास कि हरएक के हृदय में आत्मा है, इसलिए हरएक का हृदय-परिवर्तन हो सकता है, और मनुष्यों के हृदय में एक-दूसरे के लिए सहानुभूति पड़ी है। यह जो मानता नहीं, उसके लिए हृदय-परिवर्तन भी बेकार है और भूदान भी बेकार है। यदि हम मानते हैं कि हरएक में आत्मा है तो हृदय-परिवर्तन, विचार-परिवर्तन और दोनों के बल पर परिस्थिति का परिवर्तन, यह त्रिकोणात्मक प्रक्रिया टिकेगी। भूदान-यज्ञ के मूल में यह सारा विचार भरा है।"

तीन दिन बाद हम लोग सुगौली पहुँचे, जहाँ १८१८ में अंग्रेजों और गोरखों के बीच संधि हुई थी। सुगौली से रक्सौल को ट्रेन जाती है और रक्सौल से ही नेपाल की राजधानी काठमाण्डू को मोटर जाती है। उस दिन तीसरे पहर जिला ग्राम-पंचायत के लोगों ने कुछ कसरतों और खेलों का प्रदर्शन किया। उन्हें देखकर महादेवी ताई कहने लगीं कि दक्षिण की

तरफ तो ऐसे प्रदर्शन स्त्रियाँ करती हैं। पंचायतवालों की तरफ मुखातिब होकर, बाबा ने मुस्कराकर कहा कि इससे ज्यादा टीका इस पर क्या की जा सकती है ? लेकिन आपके विचारने के लिए मैं कुछ सुझाव रखूँगा। बाबा ने यह सुझाव पेश किये :

पंचायतों के लिए कार्यक्रम

(१) जगह-जगह अध्ययन-मंडल होना चाहिए, जिसमें आधुनिक विचार बताया जाय और सर्वोदय तथा गांधी-साहित्य और कुछ धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन चलना चाहिए। खासकर जवानों के लिए अध्ययनवर्ग और आम जनता के लिए श्रवण वर्ग चलाना होगा।

(२) पंचायतों को देश का उत्पादन बढ़ाना चाहिए। जब तक देश में उत्पादन नहीं बढ़ता और गाँव की बेकारी हटाने की योजना नहीं की जाती, तब तक लोगों को उत्साह नहीं आयेगा। हम सुनते हैं कि यहाँ की पंचायतवाले सड़कें बनाने में लगे हैं, जिसमें लोगों को उत्साह नहीं है। सड़कों का परिणाम यही निकलता है कि शहरवाले गाँववालों को लूटें।

(३) ग्राम-पंचायतवालों को गाँव की बेकारी हटानी चाहिए। जैसे स्वराज्य के लिए परदेशी माल का बहिष्कार किया, उसी तरह गाँव में स्वराज्य लाने के लिए शहर के यांत्रिक माल का बहिष्कार करना होगा।

(४) उत्पादन का आधार जमीन है। इस वास्ते कुल जमीन गाँव की होनी चाहिए। गाँव की जमीन का दुबारा बँटवारा हो और गाँव में कोई भी भूमिहीन न रहे। यह काम पंचायतवाले जोर-शोर से कर सकते हैं।

(५) ग्राम-पंचायतों की ताकत लोकशक्ति ही है। पंचायतें गाँववालों के इच्छानुसार और गाँववालों के नियंत्रण में चलनी चाहिए। सरकारी मान्यता मिले या न मिले, इसकी चिन्ता नहीं। लोग अपनी ताकत से काम करें। फिर सरकार की जो मदद मिलेगी, सो मिलेगी।

बुद्धि पर ग्रहण

३० जून को सूर्यग्रहण था। उस दिन अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने समझाया कि आज के दिन लोग कुरुक्षेत्र क्यों जाते हैं? इस वास्ते कि वहाँ भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन की बुद्धि को ग्रहण से मुक्त किया था। उसकी बुद्धि को स्वजन-परिजन के मोह ने ढँक लिया था। जैसे सूर्य भगवान् का प्रकाश ग्रहण से ढँक जाता है, इसी प्रकार हमारी बुद्धि को भी लोभ और मोह ने ग्रस लिया है। यही ग्रहण है। शास्त्र बताता है, स्नान करो और दान करो। इसलिए आज का दिन सन्देश दे रहा है कि मनुष्य के जीवन का सार परोपकार और दान-धर्म है।

ईश्वर धन क्यों देता है?

पहली जुलाई को हम लोग अरेराज में थे, जो श्री वैद्यनाथधाम के बाद बिहार का सबसे महत्त्वपूर्ण तीर्थ माना जाता है। शाम की प्रार्थना में बाबा ने कहा कि बहुत खुशी की बात है कि बिहार में बड़े-बड़े परिवार होते हैं। यह प्रेम की निशानी है। लेकिन थोड़े दिन से लोग अलग-अलग नाम पर जमीनें लिखाने लगे हैं। उससे कानून भले ही बेकार बन जाय, लेकिन परिवार टूटनेवाला है और जो प्रेमभाव है, वह नहीं रहेगा। अगर अमीर लोग नहीं जागते हैं और प्रेम से गरीबों को अपनाते नहीं हैं, तो वे उखड़ जायेंगे। भगवान् जिसे ज्यादा देता है, उसे इसलिए ज्यादा देता है ताकि वह देखे कि गरीबों के वास्ते वह कितना करता है? उसका इम्तिहान है कि वह किसीकी मदद करता है या सताता है—वह हनुमान बनता है या रावण! रावण कम मजबूत और पराक्रमी नहीं था। मगर तुलसीदासजी ने रावण-चालीसा न लिखकर हनुमान-चालीसा लिखा। कारण यही है कि रावण की ताकत लोगों को सताने में लगती थी और हनुमान की ताकत सेवा करने में। इसी तरह जो कुछ किसीके पास है, वह सेवा के लिए है।

मनुष्य की आजादी और ईश्वर

शनिवार तीसरी जुलाई को हमारा पड़ाव तुरकौलिया में था, जो मोतिहारी नगर से छह मील की दूरी पर है। तीसरे पहर को एक सरकारी पदाधिकारी बाबा से मिलने आये। वह कहने लगे, जब ईश्वर की इच्छा से दुनिया में सब कुछ हो रहा है, तब मनुष्य के पास सोचने को और करने को क्या रह जाता है? बाबा ने विस्तार के साथ इस सवाल पर अपने प्रार्थना-प्रवचन में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ईश्वर ने क्या खेल चला रखा है, उसका पूरा-पूरा हाल अपनी टूटी-फूटी भाषा में बयान करना अपनी शक्ति के बाहर है। इसलिए ऋषियों ने जो स्तुति की है, उसे भगवान् ने सहन कर लिया है। यह मत समझिये कि उसने किसीको ठीक मान लिया। वह क्षमाशील है, उसने सहन कर लिया। ईश्वर ने हमारे हाथ में कुछ स्वतंत्रता नहीं रखी, ऐसी बात नहीं है। बाबा ने मिसाल देते हुए कहा कि लोग बैल को रस्सी से खूँटे में बाँधते हैं। बैल को रस्सी की मर्यादा है। वह इसके बाहर नहीं जा सकता। लेकिन रस्सी की लम्बाई के अन्दर वह आजाद है कि वह चाहे उठे-बैठे, चाहे घूमे-फिरे, जागे या सोये। इसी तरह ईश्वर ने मनुष्य पर रस्सी बाँध रखी है। उस रस्सी की मर्यादा क्या है? उसकी कुछ मिसालें बाबा ने दीं। उन्होंने बताया कि ईश्वर ने हमें ऐसी देह दी है कि हम बिना हवा के नहीं जी सकते। ईश्वर ने मर्यादा बनायी कि हवा लेनी पड़ेगी। लेकिन यह आजादी हमें दी है कि हम अच्छी हवा में रहें या बुरी हवा में, अपने घर को साफ रखें या गन्दा। दूसरी मिसाल : उसने एक कैद बना दी है कि अगर आम चाहते हो, तो आम बोना पड़ेगा और बबूल चाहते हो, तो बबूल। बबूल बोकर आम मिले, यह सत्ता तुम्हारे हाथ में नहीं। उसने कानून बना दिया कि जैसा करोगे, वैसा भरोगे। कानून बनाने के बाद ईश्वर बीच में जरा भी दखल नहीं देता। अग्नि से आप चूल्हा सुलगायें या घर में आग लगा लें, यह आपके हाथ में है, आप आजाद

हैं। अग्नि उठकर घर में आग लगाने नहीं जाती। आपकी असावधानी से घर का कोई हिस्सा आग पकड़ लेता है, जिससे घर जलने लगता है। ईश्वर की मर्जी कहकर आप छूट नहीं सकते। वह चाहता है कि हम भले काम करें; क्योंकि भले काम का फल उसने भला रखा है।

आगे चलकर बाबा ने कहा कि आजकल लोग ईश्वर का नाम स्टेटस (चालू परिस्थिति) के बचाव के लिए लेते हैं। अगर किसीके पास धन है और वह इसे ईश्वर की मर्जी बताता है, तो फिर डाका पड़ने पर पुलिस या अदालत में क्यों जाता है? ईश्वर की मर्जी मानकर चुप क्यों नहीं रहता? इसी प्रकार मनुष्य मरा तो ईश्वर की कृपा से और दुरुस्त हुआ तो डाक्टर की दवा से! इस तरह का बँटवारा गलत है। यह ईश्वर का एकांगी उपयोग है। इसलिए चालू परिस्थिति में, जहाँ सुधार की गुंजाइश हो, वहाँ सुधार करना चाहिए और बुराई के बचाव में परमेश्वर को नहीं खड़ा करना चाहिए, यह नास्तिकता होगी। अन्त में बाबा ने अपील की कि भगवान् की इच्छा के अनुकूल हमें इन्द्रिय-दमन और धर्माचरण करना चाहिए। आज की दुःखभरी हालत बताती है कि आप ईश्वर के विरुद्ध चल रहे हैं। इस स्थिति को बदलना होगा। ईश्वर के इच्छानुकूल आप चलिये तो सुख बढ़ेगा। दुनिया बदल जायगी और नया समाज बनेगा।

इतवार को प्रातःकाल लगभग सात बजे सुबह हम सब मोतिहारी पहुँच गये। मोतिहारी चम्पारन जिले का सदर मुकाम है। ज्यों-ज्यों हम नगर के निकट पहुँचे, "चम्पारन जिले में बिना जमीन कोई न रहेगा! कोई न रहेगा!!" के नारों से आसमान गूँज उठा।

उस दिन आनेवालों की भीड़ लगातार बनी रही। तीसरे पहर प्रेस के प्रतिनिधि बाबा से मिलने आये। इनके अलावा नगर के बुद्धिजीवी और दूसरे प्रतिष्ठित लोग भी थे। प्रेसवालों ने पूछा कि क्या आपका विचार सत्याग्रह करने का भी है? बाबा ने जवाब दिया कि कुछ लोग

यह नहीं जानते कि हम जो कर रहे हैं, वह सत्याग्रह ही है और इसमें असफलता का प्रश्न उठता ही नहीं। वैसे, हम इस तरह नहीं सोचते कि अगला कदम क्या होगा? कोई आदमी रोगी पिता की सेवा करता है, तो अगले कदम को नहीं सोचता और निष्ठापूर्वक सेवा करता है। वैसे ही हम भी अपने काम में लगे हैं और सन् १९५७ तक यह क्रान्ति करनी है। हाँ, असहयोग और सत्याग्रह भूदान-प्रक्रिया के ही अंग हैं। एक भाई ने पूछा कि चम्पारन में आपको जो कम जमीन मिल रही है, इसका कारण क्या है? बाबा ने मुस्कराते हुए कहा कि लोग जमीन नहीं देते हैं, सो बात तो नहीं है। सच यह है कि कार्यकर्ता पहुँच नहीं रहे हैं। जिसने आज नहीं दिया, वह कल जरूर देगा।

एकता और विकेन्द्रीकरण

शाम की प्रार्थना में दस हजार से ऊपर की भीड़ थी। स्त्रियाँ भी काफी तादाद में थीं। प्रार्थना के बाद अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि हाल ही में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एलान किया है कि हम दूसरे देशों से भीख माँगकर अपने देश को बनाना नहीं चाहते, बल्कि अपने बल पर खड़े होकर अपनी भीतरी ताकत से देश को मजबूत बनाना चाहते हैं। यह निश्चय उन्होंने ठीक ही किया और समय पर किया। यह निश्चय हमारे शास्त्रों के अनुकूल है। देश को आत्मनिर्भर होने की सख्त जरूरत है। मंशा केवल यही है कि जीवन की जो प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं, उनमें हमें दूसरों के आसरे पर नहीं रहना चाहिए। बाबा ने कहा कि सवाल यह है कि यह स्वावलम्बन कैसे आये? लेकिन यह कठिन सवाल नहीं है। हमारे देश में कमी किसी बात की नहीं। जनसंख्या काफी है, याने श्रमशक्ति भरपूर है। हमारे यहाँ बुद्धि की भी कमी नहीं। और सृष्टि-सम्पत्ति की दृष्टि से भी भगवान् की बड़ी कृपा है। अगर हम आत्मावलम्बी बनने का संकल्प करते हैं, तो हमें दो बातें जरूर करनी होंगी। पहली चीज है, देश में एकता स्थापित करना।

इस एकता को बनाने के लिए हमें अपने चुनाव की पद्धति में फर्क करना पड़ेगा। हम लोग सत्य को भूल गये हैं और सत्य की जगह सत्ता ने ले ली है। जहाँ पहले से ही सैकड़ों भेद हों, वहाँ पक्ष-भेद और बढ़ जाने पर हमारी शक्ति छिन्न-भिन्न हो जायगी और हमारे देश की विशालता ही कमजोरी साबित होगी। विचारों-आदर्शों का भेद भले हो, पर आचार और व्यवहार के लिए समान कार्यक्रम होना चाहिए। दूसरी जरूरी चीज है विकेन्द्रीकरण। यह नहीं हो सकता कि दिल्ली में बैठे-बैठे आप पाँच लाख गाँवों का नियोजन कर डालें। यह बात हरगिज नहीं चलेगी। हर गाँव को स्वावलम्बी इकाई बनाना होगा। जिस चीज की जरूरत है और जिसका कच्चा माल उस गाँव में पैदा होता है, उसे गाँव में ही तैयार करना होगा। हर गाँव में ग्रामोद्योग के आधार पर ग्रामराज खड़ा करना होगा। उस ग्रामराज की बुनियाद भूदान-यज्ञ पर होगी। अन्त में उन्होंने कहा कि आपके सामने देश का जो चित्र हमने रखा है, उसके वास्ते जीवन-समर्पण की प्रेरणा हमारे देश के नौजवानों को होनी चाहिए। हमें आशा है कि उससे जो चीज बन सकती है, उसे किये बगैर वह नहीं रहेगा।

उस दिन गीता-प्रवचन की लगभग दो सौ प्रतियाँ बिकीं। उन पर अपना हस्ताक्षर देने में बाबा को एक घंटे से ज्यादा समय लगा। रात को कुछ कार्यकर्ता बाबा से मिले और दूसरे दिन सुबह को हमलोग मरौलिया के लिए रवाना हो गये। इतवार को हमारे साथ एक तरुण जैन साधु, श्री हस्तीमल साधक, हो लिये। वह कुछ समय से गया जिले में भूदान का काम कर रहे हैं।

फारमवालों का कर्तव्य

मरौलिया में हम लोग एक फारम में ठहरे। चम्पारन में बहुत से फारम हैं, जिनमें ईख पैदा होती है, जो मिलों को चली जाती है। अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि फारमवालों को कई काम करने हैं।

पहला यह कि सारा-का-सारा फारम साझीदारी बने। किसी एक की मालिकी न हो। आज जो मालिक है, वह एक साझीदार हो और उसीकी तरह साझीदार वह सब मजदूर हों, जो उस फारम पर काम करते हैं। दूसरी चीज अपने उनके करने की यह है कि फारम पर केवल पैसा देनेवाली फसलें पैदा नहीं करेंगे, बल्कि जीवन के लिए जो तमाम चीजें जरूरी हैं, उन्हें पैदा करके अपने फारम को आदर्श बनायेंगे। तीसरे यह कि फारम के मालिकों को चाहिए कि वे अपने लड़कों को किसानों के लड़कों के साथ काम पर भेजें। इन फारमों पर ट्रैक्टर आदि साधारण जुताई के लिए नहीं चलने चाहिए। अपने देश में जो मनुष्य-शक्ति और पशु-शक्ति है, उनका पूरा उपयोग लेनेवाली योजना चलनी चाहिए। बाबा ने चेतावनी दी कि हिन्दुस्तान में भूमिहीनों में जमीन बँटे बिना हरगिज नहीं रहेगी। सबको इसे छोड़ना ही होगा।

छह तारीख को हम लोग मधुवनी-आश्रम में थे। यह आश्रम श्री मथुरादास भाई ने जुलाई १६३४ में स्थापित किया। सुबह को चलते समय एक कार्यकर्ता से चर्चा के दौरान में बाबा ने कहा कि वेतन चाहे कितना ही कम हो, केन्द्रीय संस्था पर भार हो जाता है। लेकिन भिक्षा में शरीर-श्रम नहीं होता। इसलिए जो लोग भिक्षा के आश्रित हैं, उन्हें नित्य शरीर-श्रम करना चाहिए। महीने में पचीस दिन घूमें और पाँच दिन विश्राम के लिए रखें। उन्हें अन्दर से संन्यास की वृत्ति रखनी चाहिए और बाहर से योगी की तरह व्यवहार करना चाहिए। आज रास्ते में हमारे साथ देहली जानेवाले एक विद्यार्थी भाई भी थे, जो निकट भविष्य में परदेश जानेवाले हैं। बाबा ने उनको भूदान का रहस्य समझाते हुए कहा कि बुनियादी तौर पर यह आन्दोलन नैतिक है। मेरा काम यह नहीं है कि भूखे को रोटी दूँ, बल्कि यह है कि जो खा रहा है, उसके अन्दर दूसरों को खिलाने की प्रेरणा पैदा करूँ। लेने के इस युग में मैं देने का वातावरण पैदा करना चाहता हूँ। जरूरत इस बात की है कि मालकियत और प्रतियोगिता के बजाय

जीवन का आधार असंग्रह और सहयोग पर हो। फिर बाबा ने उन भाई से पूछा कि विदेश में आप किस भाषा का प्रयोग करेंगे ? उन्होंने जवाब दिया कि अंग्रेजी का। बाबा ने कहा कि दुःख की बात है, होना तो यह चाहिए कि जिस भाषा के बोलनेवाले पाँच करोड़ से ज्यादा हैं, उसको हर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पूरा स्थान मिलना चाहिए। इस प्रकार बारह भाषाओं को, छह एशिया की—हिन्दी, उर्दू, बँगला, चीनी, जापानी और अरबी—और छह यूरोप की—अंग्रेजी, फ्रेञ्च, स्पेनी, रूसी, इटालियन और जर्मन—को बराबर का दर्जा मिलना चाहिए।

आश्रमों की जिम्मेदारी

मधुबनी-आश्रम में प्रार्थना के बाद अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि यहाँ के आसपास के लोगों को यह संकल्प लेना चाहिए कि बाहर का बना कपड़ा नहीं लेंगे। सब भाई-बहन प्रण करें कि हम गाँव का कपड़ा, गुड़, तेल, दवा आदि इस्तेमाल करेंगे। अपने स्कूल खुद चलायेंगे और हम अपने झगड़े भी अपने आप सुलझा लेंगे। कुल मिलाकर हमारे गाँव में हमारा राज चले, यह नमूना दिखायेंगे। इस तरह आपके गाँव गोकुल बन सकते हैं। प्रार्थना के बाद आश्रम के कार्यकर्ता बाबा से मिले। बाबा ने कहा कि आजकल हममें एक बड़ा दोष यह पैदा हो रहा है कि नैतिक मूल्य पर उतना जोर नहीं देते, जितना बापू दिया करते थे। बाबा ने बापू के जीवन के कुछ बहुत ही मार्मिक संस्मरण सुनाये और कहा कि हमको भी अपना परिवार व्यापक बनाकर सारे समाज को अपना कुनबा समझना चाहिए।

ता० ७ जुलाई को हम लोग ढाका पहुँचे। तीसरे पहर को निकट के एक सर्वोदय-गुरुकुल के ब्रह्मचारी बालक बाबा से मिले। बाबा ने उनसे कहा कि शिक्षा के साथ क्रिया शामिल होनी चाहिए। हम आशा करेंगे कि जो कपड़ा और तरकारी आपके गुरुकुल में चाहिए, वह पूरे-के-पूरे गुरुकुल में ही पैदा हों। व्यायाम के सम्बन्ध में हमारा विचार है कि यह जहाँ

तक हो सके उत्पादक हो और उसका एक हिस्सा खेत में हो। धर्मशिक्षा में सब धर्मों का सार बताना चाहिए। वैदिक-धर्म के साथ-साथ दूसरे धर्मों की भी शिक्षा दी जाय। सब सत्पुरुषों ने एक ही सद्भावना सिखायी, इसका भी ज्ञान मिलना चाहिए। धर्म-शिक्षण से नम्र और निष्ठावान् बनना चाहिए। बाबा ने यह भी कहा कि मातृ-भाषा के अलावा एक भाषा और भी सीख लें। तब बुद्धि उदार बनेगी और ज्ञान व्यापक बनेगा। अन्त में बाबा ने उनसे कहा कि हम खुद विद्यार्थी हैं। विद्यार्थी में स्वतंत्र रीति से अध्ययन करने की शक्ति आनी चाहिए। उसे अपना अध्ययन नित्य चलाना चाहिए। उससे जीवन में कभी निराशा नहीं आती और ताजगी बनी रहती है।

अच्छाई की छूत

हमारा अगला पड़ाव पताही थाने के बखरी गाँव में हुआ। शाम को ४॥ बजे यहाँ पर कार्यकर्ताओं की जो बैठक हुई, वह बहुत अनोखी थी। सबसे पहले थाना कांग्रेस के प्रधान श्री कपिलदेवनारायण सिंह उठ खड़े हुए और बाबा को अपने परिवार का चौथा सदस्य मानकर उन्होंने अपनी कुल जमीन का चौथा हिस्सा दान में दिया। फिर एक समाजवादी कार्यकर्ता ने पाँचवें हिस्से का एलान किया। इसका बहुत विलक्षण असर सब पर पड़ा और लगभग चौदह कार्यकर्ताओं ने—जिनमें कांग्रेसी, प्रजा-समाजवादी और दूसरे भी थे—अपने-अपने दान की घोषणा की। बाबा ने विश्वास जाहिर किया कि यह लोग क्रांति का झंडा सफलता के साथ अपने थाने और जिले में उठा लेंगे।

शाम को प्रार्थना के बाद अपने प्रवचन में बाबा ने इस घटना की चर्चा करते हुए कहा कि अच्छाई की भी छूत लगती है और बुराई से ज्यादा जोर के साथ अच्छाई की छूत लगती है, क्योंकि हमारी आत्मा में अच्छाई है। बाबा ने कहा कि हमें दिलचस्पी जमीन पाने में इतनी नहीं

है, जितनी इस बात में कि अपना जीवन बदलकर कितने लोग इस काम में जुट जाते हैं। हमें विश्वास है कि आप लोग जोरों से इस काम में लगेंगे। बाबा के प्रवचन के बाद श्री कपिलदेवनारायण सिंह ने अपने जीवनदान की घोषणा की। इसके अलावा एक प्रजा-समाजवादी कार्यकर्ता, श्री प्रसिद्धनारायण वर्मा ने भी जीवन-दान किया।

नया राम-रावण युद्ध

तारीख ६ को हम लोग चैता पहुँचे, जो पताही थाने का ही एक गाँव है। वहाँ कार्यकर्ताओं की बैठक में पिछले दिन के जैसा उत्साह नहीं दिखायी पड़ा। उन्होंने कहा कि यह आन्दोलन ठीक तो जरूर लगता है, लेकिन अभी हमारा मोह हमें नहीं छोड़ता। बाबा ने शाम को प्रार्थना-प्रवचन में कहा कि हम सबको साफ-साफ बता देना चाहते हैं कि या तो फारम में काम करनेवाला हर मजदूर मालिक के जैसा साझी होगा या फारम टूटेंगे। आखिर हिन्दुस्तान का मालिक कौन है? जनता ही तो है। इसी जनता को जगाने के लिए, अपने कर्तव्य का बोध कराने के लिए हम घूम रहे हैं। एक दिन वह आनेवाला है, जब जमीन आपके हाथ में नहीं रहेगी। मालिक लोग सफेदपोश होते हैं। सफेदपोश तो बगला भी होता है। बड़प्पन सफेदपोशी में नहीं, बड़ा काम करने में है। हमसे पूछा जाता है कि अगर एक हजार एकड़ में से किसीने सौ एकड़ ही दिया हो, तो बाकी नौ सौ एकड़ कैसे मिलेंगे? हम कहते हैं कि उसकी कोई चिन्ता मत करो। वह बिना दानपत्र भरे ही मिल जायेंगे। बस, गरीब का संगठन होने की देर है। वह तभी होगा जब छोटे-छोटे लोग भी मालकियत छोड़ेंगे। आज अगर बड़ा अपने चार हजार एकड़ से चिपका है, तो छोटा अपने चार कट्ठे से वैसा ही चिपका है। हम कहते हैं कि तुम अपने चार कट्ठे की मालकियत छोड़ दो। उससे ऐसी हवा तैयार होगी कि चन्द बड़े-बड़े टिक नहीं सकेंगे। हम कहते हैं कि ये बड़े-बड़े,

कम्यूनिस्ट के हाथ से नहीं मरेंगे, कानून से नहीं मरेंगे, पर इनका मरना रामजी के बन्दरों के हाथ से होनेवाला है। इसलिए गरीबो! बन्दर बन जाओ, तुमको हनुमान की तरह रामजी का सेवक बन जाना चाहिए। इसीलिए हम कहते हैं कि हिम्मत मत छोड़िये। इस सेना में भरती हो जाइये। देर मत कीजिये। ईश्वर बोल चुका है।

धर्मविचार बनाम सद्‌विचार

अगले रोज, मधुबन में शाम की प्रार्थना सभा में बाबा ने कहा कि एक विचार तो मनुष्य ठीक समझता है, फिर भी उस पर अमल नहीं करता, कभी-कभी जीवन भर अमल नहीं करता है। इसलिए केवल विचार समझना काफी नहीं है। लेकिन जब आदमी यह जान लेता है कि अमुक विचार पर अमल न करने से खतरा है तो वह केवल विचार नहीं रहता, धर्म बन जाता है। और मनुष्य की निष्ठा हो जाती है कि उसे वह करना लाजमी है। इस तरह सद्‌विचार धर्मविचार का रूप लेता है। हम चाहते हैं कि हमारे कार्यकर्ता सद्‌विचार और धर्मविचार का भेद समझ लें। अगर धर्मविचार पर अमल नहीं होता, तो आदमी के दिल की तसल्ली नहीं होती और ऐसा लगता है कि वह अधर्म का आचरण कर रहा है। भूदान-यज्ञ एक धर्मविचार है। बिहारवालों से हम कहना चाहते हैं कि नया धर्मविचार कबूल करो और पुराना छोड़ो मत। चेत जाओ, फौरन चेतो, छठा हिस्सा दे दो। परिवार कायम रहेगा और भूमिहीन तुम्हारे मित्र बनेंगे। मित्र का नाता भाई से भी बढ़कर है। रक्त-सम्बन्ध से ऊँचा सम्बन्ध मैत्री का है। सम्बन्धी के साथ अगर एक भी बुराई का काम हो जाय तो वह हमेशा याद रखता है। और भलाई के कितने ही काम हो जायँ तो वह उस पर ध्यान ही नहीं देता। मित्र की हालत इससे विपरीत है। उसके साथ एक भी भलाई हो जाय, तो जीवन भर याद रखता है। मित्र का नाता निष्काम होता है और रक्त-सम्बन्ध में आसक्ति होती है। बाबा ने कहा कि हम जमीन के टुकड़े करने का

काम नहीं करते। हम दिल जोड़ने का काम करते हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि इस काम में सुस्ती नहीं करना है। जमाने की माँग तीव्र है। इधर से कालपुरुष भी पीछा कर रहा है। इसलिए कार्यकर्ता के अन्दर तीव्रता और छटपटाहट होनी चाहिए। साम्ययोग की उत्कट भावना चाहिए।

चंपारन जिले में सत्ताईस दिन बिताने के बाद ११ जुलाई को बाबा चकिया पहुँचे। चम्पारन में एक महीने का कार्यक्रम था। १४ जुलाई को बाबा चम्पारन से विदा होनेवाले थे। इसलिए जिले भर के कार्यकर्ता, कांग्रेसी, प्रजा-समाजवादी, रचनात्मक तथा अन्य सभी कार्यकर्ता, ११ ता० को चकिया में जमा हुए और जिले में भूदान-काम फैलाने पर विचार किया। चकिया रेलवे स्टेशन है और यहाँ पर चीनी की एक मिल भी है। उस मिल के मैनेजर तीसरे पहर को बाबा से मिलने आये। वह एक यूरोपियन हैं। जब बाबा को यह मालूम हुआ कि उस मिल की छह सौ एकड़ में से ५० एकड़ जमीन दान में मिली है तो उन्होंने मैनेजर की तरफ देखा और कहा कि मुझे तो छठा हिस्सा चाहिए। मैनेजर ने कहा कि इसे पहली किस्त समझी जाय। बाबा हँस पड़े और थोड़ी देर चुप रहे और कहा कि मुझे उम्मीद है कि आपसे बाद में और मिलेगा। लेकिन हम यह भी चाहते हैं कि आपके फारम और मिल, दोनों में, मजदूरों को भी साझा होना चाहिए। और आप और वह, सब जने बराबर के शरीक की तरह मिलकर काम करें।

कार्यकर्ताओं का कर्तव्य

कार्यकर्ताओं की बैठक चार बजे हुई। बाबा ने उनसे कहा कि अगर आप अपने परिवार का छठा हिस्सा दे देते हैं तो आप इस जिले में क्रान्ति का झंडा उठा सकेंगे। यह आप मानेंगे कि जहाँ-जहाँ गरीबी है और उसका हल नहीं निकला, तो हिंसक शक्तियों को प्रेरणा मिलेगी। इसलिए आप वह करें जो हम कर रहे हैं। हमारा दावा है कि आज भी जो हिंसक ताकतें रुकी हैं तो इस आन्दोलन के कारण। इस पर एक प्रमुख कांग्रेसी

भाई ने (जो पार्लियामेंट के भी सदस्य हैं) कहा कि यह तो ठीक है। लेकिन आप तो बालब्रह्मचारी हैं, ब्रह्मचारी विनोबा की आँच हममें नहीं हो सकती। हमारे ऊपर घर की भी जिम्मेवारियाँ हैं। फिर भी आपकी बात पर हम लगातार सोच रहे हैं। बाबा ने हँसते हुए जवाब दिया कि आपके पास ब्रह्मचारी विनोबा नहीं, पाँच करोड़ परिवारवाला गृहस्थ विनोबा आया है। सारे कार्यकर्ता यह सुनकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये। बाबा ने फिर कहा, हमने तो सिर्फ छठे हिस्से की बात कही है। आप बूढ़े हैं, हम आपको तकलीफ नहीं देना चाहते। आप ही सोचिये कि दुनिया में भूमि के वास्ते अब तक कोई भी क्रान्ति इतने सस्ते सौदे में हुई है?

शाम की प्रार्थना-सभा में काफी तादाद में लोग आये थे। स्त्रियाँ भी काफी थीं। अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि जिनके जीवन में सेवा और त्याग के मौके आये हैं उनसे समाज आशा रखता है कि बुढ़ापे में भी वे त्याग के कार्यक्रम में हिचकेंगे नहीं। जिसने जवानी भर सेवा की और अन्तिम अवसान के समय वह आराम में लग जाय या वासना की कमजोरी में फँस जाय, तो उसके बारे में क्या कहा जाय? मान लीजिये कि कोई आदमी नदी में तैर रहा है, सत्तर-अस्सी हाथ तैर गया और दो चार ही हाथ बाकी हैं। लेकिन उन्हीं हाथों में वह डूब गया, तो उसके बारे में क्या कहा जायगा? अस्सी हाथ की तैराई के बावजूद उसे डूबा हुआ ही माना जायगा। इसलिए आदमी जो चीज साथ लेकर जाय उसीका संग्रह करना चाहिए। जो उसने धर्माचरण या सदाचरण किया वही उसके साथ जायगा। उसीका संग्रह होना चाहिए। इसलिए हम अमीरों को अमीरी से मुक्त करना चाहते हैं और गरीबों को गरीबी से। इसके लिए हमने 'मालकियत छोड़ दो' का मंत्र निकाला है। हम बड़े भाग्यशाली हैं कि हमारा जीना ऐसे जमाने में हो रहा है, जब हम सब मिलकर अच्छी बुनियाद पर समाज को बना सकते हैं। लेकिन प्रेम-शक्ति से समाज के

मसले हल होंगे, यह विश्वास अभी लोगों को नहीं हुआ है। जिस प्रेम-शक्ति ने कुटुंब को मजबूत रखा है, उससे समाज-रचना मजबूत बन सकेगी, उस पर इन्हें पूरा विश्वास नहीं होता। वे समझते हैं कि प्रेम ना-काफी है और संगठन करना पड़ेगा। हम कहते हैं कि यह गलत विचार है। संगठन में जो शक्ति आती है, वह प्रेम से ही आती है। द्वेष से जो संगठन बनते हैं, वे ताकतवर नहीं बनते और अपने वजन से टूट जाते हैं। जापान अपनी सेना के संगठन के बोझ से टूट गया। जर्मनी ने द्वेष पर संगठन किया और चूर-चूर हो गया। इसलिए द्वेष से जो समाज बनाया जाता है, वह खुद ही गिर जाता है। कल्याणकारी और तारिणी शक्ति तो प्रेम से ही आती है। इसी आधार पर यह भूदान-यज्ञ-आन्दोलन है।

१२ जुलाई को हम लोग केसरिया थाने के बाकरपुर गाँव में थे। कार्यकर्ताओं की बैठक में बाबा ने कहा कि अगर स्वराज्य के बाद लोग भूखे रहें, उनमें उदासीनता रही, तो स्वराज्य कैसे टिकेगा ? अंग्रेज आये, मुसलमान आये, दूसरे आये, क्षत्री राजा जब हार गये, तो राज्य बदल गया। नीचे की जनता उदासीन रही, उसने कोई हिस्सा नहीं लिया। स्वराज्य में ऐसा नहीं चलना चाहिए। इसी वजह से वह जो छोटे या गरीब माने जाते हैं उनसे भी हम जमीन माँगते हैं। बड़ों की हमें कोई चिंता नहीं है, अगर बड़े नहीं देते हैं तो टिकेंगे नहीं। या तो उन्हें छोटों के नैतिक बल के आगे झुकना होगा या उनके गले कटेंगे या किसान-मजदूर उनका बहिष्कार कर देंगे या फिर सरकार उनसे जमीन छीन लेगी। कोई पाँचवाँ रास्ता नहीं है। हम चाहते हैं कि वे नैतिक बल के परिणाम से दें।

तीन रास्ते

अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आज आप सबके सामने तीन रास्ते हैं। या तो पूँजीवादी रास्ता है या साम्यवादी यानी कम्यूनिस्ट

रास्ता और तीसरा सर्वोदय। अगर आप पूँजीवादी जमात में नहीं आते हैं तो बेहतर यह है कि आप दान नहीं दें और अदाता संघ खोल दें और उसका तत्त्वज्ञान भी बना सकते हैं। आप कह सकते हैं कि कम-से-कम पाँच सौ एकड़ का फार्म हो और जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े नहीं होने चाहिए और न लाखों आदमी के हाथ में जमीन होनी चाहिए। बड़े-बड़े फारम हों, जिन पर छोटे लोग मजदूर की तरह काम करें, जिससे निपुणता यानी एफीशिएन्सी आयेगी। इस तरह आप जो लोग जमीन नहीं देना चाहते हैं, वे अदाता पक्ष खड़ा कर सकते हैं और यह बात समझ में आ सकती है। अगर आपको साम्यवादी जमात पसंद हो, तो कुल जमीन स्टेट के हवाले कर दी जायगी और काश्तकारी भी सामूहिक तौर पर स्टेट की तरफ से होगी। सारे अधिकार स्टेट के रहेंगे। सर्वोदय विचार वह है, जो मैं आपको समझा रहा हूँ। अगर वह आपको पसंद हो, तो उसमें आ सकते हैं और फिर जोरों से दान देकर भूमि का बँटवारा कीजिये। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता दान देना नहीं चलेगा। आजकल विज्ञान का युग है। इसलिए जो काम होना चाहिए वह सामूहिक तौर पर और तीव्रता से होना चाहिए। हम कहते हैं कि अगर आप अपनी जोत की जमीन का छठा हिस्सा दे दें, डेढ़ लाख एकड़ यहाँ से पूरा हो जाय और बाकी सब जिलों से भी मिल जाय, तो यह बाबा की जिम्मेवारी है कि कानून नहीं बनेगा, क्योंकि फिर कानून की जरूरत ही नहीं रहेगी। पर अगर कहो कि आहिस्ता-आहिस्ता देंगे और कानून भी न बने, तो इस विज्ञान के युग में यह देशद्रोह होगा। लेकिन अगर आपको न पूँजीवाद पसंद है, न साम्यवाद, न सर्वोदय से मतलब है और आप केवल अपने बाल-बच्चों की फिक्र करते हैं यानी कुल-कबीलेवादी हैं, तो भगवान् ही आपको बचायेगा।

कार्यकर्ताओं को निर्देश

तारीख १३ जुलाई—चंपारन जिले में आखिरी दिन। हमारा पड़ाव

क्सिरिया में था। कार्यकर्ताओं की, बैठक में बाबा ने बताया कि आपके जिले में जो वातावरण बना है उसे गरम बनाये रखें। आपके जिले में पंचायतवाले भी कई हज़ार आदमी हैं। उनसे बहुत मदद मिल सकती है और कोटा पूरा हो सकता है। यहाँ कई आश्रम भी हैं। लोकमत की जो शक्ति जाग्रत हुई है उसे आप ठंडा न होने देवें। हमें विश्वास है कि यह जिला किसी दूसरे जिले से पीछे नहीं रहेगा। प्रार्थना-सभा में बाबा ने कार्यकर्ताओं को निर्देश करते हुए कुछ शब्द कहे। उनको ध्यान रखना चाहिए कि कुछ भी हो, किसीका दिल न दुखायें और अपना काम सौम्यता और नरमी से होना चाहिए। किसीकी निंदा उसके पीछे नहीं करेंगे, यह व्रत लेना चाहिए। दूसरी बात यह कि जो काम आप करते हैं, वह सतत करते रहें। काम में ढील नहीं होनी चाहिए। तीसरी बात यह कि हमें सबके साथ मैत्री बनानी है। हमारा काम केवल जमीन माँगना नहीं है, बल्कि सर्वोदय-विचार को समझाना है, जो बहुत व्यापक है। अगर कोई आदमी जमीन न दे, तो वह खद्दर पहन सकता है, ग्रामोद्योग शुरू कर सकता है, गाँव-सफाई में लग सकता है। इस प्रकार किसी-न-किसी काम में मदद कर सकता है। गांधी महाराज ने हमें इतने जाल दिये हैं कि हर मछली किसी-न-किसी जाल में फँस ही जायगी। आखिर में बाबा ने कहा कि अपना काम जनता की सेवा करना है। कार्यकर्ता किसी-न-किसी प्रकार सेवा जरूर करे। एकांगी न बनकर व्यापक विचार-प्रचार से काम होता है। भूदान केवल निमित्तमात्र है। इससे हमको आपकी सेवा करने का मौका मिलता है। हमें विश्वास है कि इस जिले के हमारे मित्र इस काम को बढ़ावा देंगे।

दूसरे दिन हमारा प्रवेश मुजफ्फरपुर जिले में था। नित्य की तरह सुबह ४-१० पर बाबा निकल पड़े। मुश्किल से पाँच मिनट चले होंगे कि पानी बरसने लगा। जैसे-जैसे चलते गये, पानी जोर पकड़ता गया। लेकिन बाबा चुपचाप शांतिपूर्वक आगे बढ़ते जाते थे। उन्होंने कहा कि

यह तो बड़े आनन्द का अवसर है, क्योंकि धरती और आकाश का मधुर मिलन हो रहा है। रास्ता कच्चा और फिसलन होने के कारण हम धीरे-धीरे चल रहे थे, लेकिन वर्षा घनघोर हो गयी। सारा दल शांति से चला जा रहा था। इस गंभीर वेला में श्री रामविलास शर्मा ने (जो उस समय चंपारन जिले में भूदान-कार्य के संयोजक थे) रामायण की वह अमर चौपाइयाँ "सौरज धीरज तेहि रथ चाका" गाना शुरू कर दीं। सब लोग मुग्ध हो गये। मन में यही ध्यान आता था कि गरीबी, अन्याय और बीमारी के खिलाफ अपने इस भीषण युद्ध में बाबा कहाँ तक इन शर्तों को पूरा करते हैं। उनकी जैसी श्रद्धा और लगन, फिर यह अखंड तपस्या! इसके आगे कौन टिक सकता है? और हम सब इस बात का गौरव अनुभव कर रहे थे कि इस महान् यात्रा में हम उनके अनुगामी हैं।

⊙ ⊙ ⊙

जीवन के नये मूल्य

मैं मानता हूँ कि दो हजार साल के बाद हमको मौका मिला है कि हम अपने देश को अपनी इच्छानुसार बना सकते हैं। लोकशक्ति का हम संगठन कर सकें, ऐसी सहूलियत पिछले दो हजार साल में कभी प्रकट नहीं हुई थी। इस तरह मैं स्वराज्य का गौरव गाता हूँ। तिस पर भी मैं कहता हूँ कि स्वराज्य में क्रान्ति नहीं हुई। अभी होनी है। समाज में जो मूल्य आज स्थापित है उसे ही हम बदल देना चाहते हैं। नये मूल्य स्थापित करने की सख्त जरूरत है। समाज का पूरा ढाँचा बदलकर नया ढाँचा बनाने की जरूरत है।

मुजफ्फरपुर पद-यात्रा की सबसे प्रधान घटना जीवन-दान कार्यकर्ताओं का शिविर है। यह शिविर मुजफ्फरपुर नगर के पास सर्वोदय-ग्राम में हुआ।

दूसरा अद्भुत प्रसंग—बाबा का प्रार्थना-प्रवचन हो चुका था। बाबा मंच पर से चले गये थे। मैंने देखा कि एक धनी-मानी जमींदार अपने एक मित्र से बड़े गुस्से में बातचीत कर रहे हैं। वह कहते थे कि आज जो व्याख्यान विनोबाजी ने दिया, क्या सन्त लोग इसी तरह आग उगला करते हैं? मंच से काफी दूर पर एक कोने में चार गरीब किसान बैठे थे। उनके हाव-भाव से जाहिर था कि वे बहुत दुःखी हैं। उनमें से एक आदमी ने संतोष की ठंढी साँस ली और धीमी आवाज में अपने साथियों से कहा, "यह बाबा बिना बटौने ना रहतन।"

मुजफ्फरपुर जिले की हद में बाबा ने जैसे ही पैर रखा, पानी जोरों

से बरस रहा था। फिर भी एक विशाल जन-समूह उनके स्वागत के लिए मौजूद था। उस समूह के चेहरे पर आनंद की लहरें उमड़ रही थीं। एक बड़ी मुद्दत से जिस पानी की चाह थी, वह आज बाबा के साथ आया। हमारा पड़ाव मुजफ्फरपुर में था। तीसरे पहर को कम्यूनिस्ट कार्यकर्ताओं का एक डेपुटेशन बाबा से मिलने आया। उन्होंने कुछ सवालों पर बाबा के विचार जानने चाहे। बाबा ने जवाब देते हुए कहा कि मेरा असली सहारा स्वतंत्र जनशक्ति पर है। इसी शक्ति के नाते हम अपनी समस्याओं का हल करना चाहते हैं। उनके प्रश्नों के लिए बाबा ने कम्यूनिस्ट भाइयों को धन्यवाद दिया और विशेषकर एक प्रश्न के लिए, जिस पर उन्होंने प्रार्थना-प्रवचन में विस्तार से रोशनी डाली।

विश्व-शांति और भूदान

कम्यूनिस्ट साथियों का सवाल यह था कि दुनिया से युद्ध टले, इस वास्ते भूदानवाले क्या कोशिश करते हैं या क्या करना चाहते हैं? बाबा ने कहा कि दुनिया के विचारवान लोग यह कल्पना करते हैं कि अमेरिका और रूस, दोनों में से किसी गुट में शामिल न हों और तीसरी शक्ति का निर्माण हो। हमारी सरकार की भी यही कोशिशें हैं। भूदान भी अपनी तीसरी शक्ति बनाना चाहता है। मगर प्रश्न यह है कि यह तीसरी शक्ति किन दो शक्तियों से भिन्न प्रकार की होगी? इस सम्बन्ध में सर्वोदय-विचार का अपना स्वतंत्र दर्शन है। वह कहता है कि दुनिया की लड़ाइयाँ और अशांति तब तक जारी रहेगी जब तक हिंसा-शक्ति से मसले हल करने की आदत लोग नहीं छोड़ते। हल करने के वास्ते हिंसा-शक्ति पर आधार रखने से मसले हल नहीं होते, बल्कि नये-नये पचासों मसले खड़े हो जाते हैं। इसलिए हिंसा-शक्ति पर आधार रखकर कोई मसला हल करने की आशा छोड़ देनी चाहिए। सर्वोदय का यह एक विचार है।

दूसरा विचार यह है कि आज दुनिया की सरकारें जो दंड-शक्ति पर

आश्रित हैं, अपने को खुद खतम नहीं कर सकतीं। जनता जिस हद तक अपनी सरकारों को खतम करेगी, उसी हद तक युद्ध टाला जा सकता है और शांति कायम रह सकती है। सरकारें ज्यादा-से-ज्यादा यह कर सकती हैं कि शक्तियों का संतुलन (बॅलन्स ऑफ पावर) बना रहे। इसी कारण से एक-दूसरे को देखकर फौजें बढ़ती चली जाती हैं। कोई यह नहीं कहता कि सेना छोड़ दो। मुझ जैसा कोई पागल भले ही इस तरह का विचार रखे। लेकिन दंड-शक्ति का आधार रखनेवाली कोई सरकार शस्त्र छोड़ने की हिम्मत नहीं करेगी।

बाबा ने आगे चलकर कहा कि इस तीसरी शक्ति को हम रचनात्मक शक्ति, विधायक शक्ति, प्रेमशक्ति आदि कई नामों से पुकार सकते हैं। इसलिए अगर हम चाहते हैं कि दुनिया के हर देश में शांति, समृद्धि और आजादी स्थापित हो और हरएक व्यक्ति का दिमाग आजाद हो तो यह जरूरी है कि जनता अपनी लोकशक्ति से काम करना सीखे और सरकारी शक्ति का क्षेत्र उत्तरोत्तर कम होता जाय। इसी वजह से हमने माँग की है कि आर्थिक और राजनैतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण होना चाहिए और हर गाँव अपनी बुनियादी आवश्यकताओं में स्वावलंबी हो। इस प्रकार तीसरी शक्ति का अर्थ हुआ, वह शक्ति, जो दंड-शक्ति से भिन्न हो और हिंसा-शक्ति से विपरीत हो। सार यह है कि विज्ञान से तो मनुष्य का दिमाग आजाद होना चाहिए, लेकिन आज गुलामी बढ़ रही है। हमारा मानना है कि केवल विज्ञान हमें आजाद नहीं बना सकता। उसके लिए आत्म-ज्ञान की जरूरत है। ज्ञान से ताकत मिलती है, पर ताकत का उपयोग कैसे हो, इसका बोध आत्मज्ञान से ही होता है। आज अमेरिका कैसा संपन्न और शक्तिशाली है, पर कितना भयभीत ? दूसरे देशों में भी इसी तरह की हालत है। ऐसी सूरत में शांति का उपाय केवल यही है कि जनता के मसले जनशक्ति के द्वारा हल किये जायँ। इसी राह को दिखलाने के लिए भूदान-यज्ञ एक नम्र प्रयास है।

मुजफ्फरपुर जिले में हमारा दूसरा पड़ाव मनाइन गाँव में था। उस दिन भी कम्यूनिस्ट भाई बाबा से मिले और एक मानपत्र भेंट किया। शाम को प्रार्थना के बाद बाबा ने अपने प्रवचन में कहा कि अब तक हमें देश भर में सवा तीन लाख दाताओं से चौंतीस लाख एकड़ के करीब जमीन प्राप्त हुई है और लगभग हजार-बारह सौ कार्यकर्ता इसमें लगे हैं। लेकिन हम कहते हैं कि जिस तरह आप लोग अठारह करोड़ मतदाताओं के साथ चार महीने के अन्दर चुनाव के समय पहुँच गये, वैसे ही सारे देश के तीन सौ जिले में यदि तीन महीने सतत पैदल यात्रा करें, तो यह काम तीन महीने के अन्दर ही हो सकता है। हमने सारे देश से पाँच करोड़ एकड़ की माँग की है। सब पार्टीवाले इसमें जुट जायँ, तो यह सहज में पूरा हो सकता है।

मोह-पाश तोड़िये

सोलह तारीख को बाबा त्रिरहिमां बाजार पहुँचे। उस दिन एक कार्यकर्ता ने उनसे कहा कि आपके आन्दोलन में हमें पूरा विश्वास है, लेकिन मोह नहीं छूटता। बाबा ने उस दिन प्रार्थना के बाद तुलसीदासजी का एक भजन गाया :

"माधो मोहपाश क्यों टूटे ?
तुलसिदास हरि गुरु करुणा बिनु सदविवेक न होई,
बिनु विवेक संसार छोड़, सिन्धु पार न पावे कोई।"

बाबा ने कहा कि असली सवाल मोह तोड़ने का ही है। बल्कि यदि मोह नहीं होता, तो भूदान के काम में हमें कोई लज्जत ही नहीं मालूम होती। दुनिया में जो मोह है उसे तोड़ने के लिए धर्म-विचार पैदा होता है और उस धर्म-विचार को फैलाने के लिए उत्साह आता है। अर्जुन के सामने भी तो मोह खड़ा था। मोह तोड़ने के लिए भगवान् ने गीता सुनायी। आपका मोह तोड़ने में मदद करने के लिए हम आये हैं। विवेक पैदा

होने से ही मोह जाता है। विवेक याने पहचान। मोह रखकर आसक्ति बढ़ाने में लाभ नहीं है। इसका ज्ञान सबको नहीं होता। लेकिन बुढ़ापे में जब शरीर में कई तकलीफें पैदा होती हैं तब लाचार होकर शरीर का मोह छोड़ना होता है। तुलसीदासजी ने कहा है कि "अन्तहिं तोहि तजेंगे पामर, तू न तजे अबहींते।" तू न छोड़ेगा, तो ये छोड़कर जानेवाले हैं। ठीक यही बात जमीन के लिए लागू है। जिस दिन लोग पहचानेंगे कि जमीन रखना गलत है, तो उस रोज जमीन लेनेवाले को ढूँढ़ने के लिए निकलेंगे। कलियुग में यह सब हो रहा है, वह ज्ञान की किरण का ही प्रताप है। बाबा ने चेतावनी देते हुए कहा कि "ऐ भूमिवानो! समझ लो कि जमीन देनी ही होगी। और ऐ भूमिहीनो! जमीन लेना तुम्हारा अधिकार है, दीन होकर नहीं, पुत्र बनकर। हमारा यह सन्देश गाँव-गाँव पहुँचा दीजिये। मुख्य-मुख्य कार्यकर्ता अपनी मोह की गाँठ छोड़ दें और ज्ञान-प्रचार में लग जायँ, तो इष्ट परिणाम आयेगा।

१८ जुलाई को बाबा मोतीपुर पहुँचे। यह मुजफ्फरपुर-मोतीहारी रेल-मार्ग पर एक स्टेशन है। आसमान में घने बादल छाये हुए थे; पर रास्ते भर बारिश नहीं हुई। पड़ाव पर पहुँचे, तो स्वागत के लिए भीड़ जमा थी। बाबा ने सबको प्रणाम किया और आसमान की तरफ हाथ उठाकर कहा कि चारों तरफ बादल हैं, पानी की बहुत जरूरत है। अगर पानी बरसे, तो कितना सुख होगा? यह वचन सुनकर सबके चेहरे खिल उठे और ऊपर की तरफ सब लोग देखने लगे। बाबा ने उनसे अपील की कि जिस तरह भगवान् उदारतापूर्वक पानी बरसाता है, उसी तरह आप सबको अपनी भूमि का छठा हिस्सा देना चाहिए। गाँव में जितने छोटे-बड़े भूमिवान हैं उतने दान-पत्र हमें मिलने चाहिए और गाँव में कोई भी बेजमीन नहीं रहना चाहिए।

करीब साढ़े दस बजे स्थानीय चीनी मिल के मैनेजर बाबा से मिलने आये। उनकी मिल में तीन सौ मजदूर काम करते हैं और पाँच हजार

एकड़ पर ईख की खेती होती है। बाबा ने सुझाया कि हरएक मजदूर को तीन-तीन एकड़ जमीन दीजिये और इन सबको मिल का ट्रस्टी बना लीजिये। मैनेजर ने प्रस्ताव का स्वागत करते हुए कहा कि बिना मालिकों की राय के अगला कदम उठाना मुश्किल है। तब बाबा ने उनसे कहा कि अच्छी बात है, आप हमारी तरफ से वकालत कीजियेगा। जैसे-जैसे शाम होती गयी, भीड़ बढ़ती चली गयी। ठीक साढ़े पाँच बजे बाबा प्रार्थना के लिए मंच पर पहुँच गये। थोड़ी-थोड़ी बूँदें पड़ रही थीं। "हमार गाँव में बिना जमीन, कोई न रहेगा! कोई न रहेगा!!" के नारों से आकाश गूँज रहा था। बाबा ने भी दोनों हाथ उठाकर जनता के संकल्प में सहयोग दिया। बड़ी-बड़ी बूँदें पड़ने लगीं। बाबा ने तख्त पर बिछा खादी का कपड़ा हटा दिया और बोले कि परमेश्वर की कृपा से आज बारिश आयी है। हम सब मिलकर प्रार्थना करेंगे। कितनी भी जोर की बारिश हो, किसी को चूँ नहीं करना है। कोई छाता नहीं खोले, कोई अपनी जगह नहीं छोड़े। सब खुले बदन खड़े हो जायँ। औरतें भी खड़ी हो जायँ।

बादलों से पाठ

बड़ा ही रमणीय दृश्य था। करीब पाँच हजार स्त्री-पुरुष आँख मूँदे खुले आसमान के तले खड़े हुए बरसते पानी में प्रार्थना कर रहे थे। बाबा स्वयं प्रार्थना-पद बोल रहे थे। जब उन्होंने हरिकीर्तन—राजाराम राम राम, सीताराम राम राम—शुरू किया तो सारा वातावरण गूँज उठा और एक अजीब मस्ती छा गयी। प्रार्थना के बाद बाबा ने और कहा कि आज की यह सभा आप लोगों को जिन्दगी भर याद रहेगी। स्वजनों का इस तरह इकट्ठा होकर भगवान् की प्रार्थना का मौका, आपके जीवन में पहला ही होगा। परमेश्वर की इच्छा होगी, तो जोरों की वर्षा होगी और सब को आनन्द आयगा। बादलों की ओर हाथ उठाकर वे बोले, ये बादल हमें क्या सिखाते हैं? सबकी समान सेवा, सबकी समान चाकरी। भगवान्

के सेवक की भी यही पहचान है। वह सब पर समान प्यार करता है। सूर्यनारायण भी वैसे ही परमेश्वर का दूत है। हरिजन ब्राह्मण सबके घर में समान रूप से जाता है। चाँद की चाँदनी, राजा हो या रंक, सबको एक-सी मिलती है। गंगा के किनारे पानी पीने गाय जाय या खूँखार शेर जाय, वह दोनों को समान मधुर पानी पिलाती है। हवा भी सबको समान रूप से परमेश्वर ने दी है। वैसे ही जमीन भी परमेश्वर ने सबके लिए दी है। सब कोई उस पर काम कर सकता है। उसका कोई मालिक नहीं हो सकता'। इस तरह बाबा की वाणी सुनकर उस घनघोर वृष्टि में सारे लोग शान्त खड़े रहे। बाबा के सामने आगे की तरफ बच्चे खड़े थे। बाबा ने कहा कि बच्चों के मुँह से परमेश्वर बोलता है। इसलिए बच्चो! तुम सब एक साथ बोलो कि "हमारे गाँव में बिना जमीन कोई न रहेगा।" बच्चों ने और उनके साथ बड़ों ने, सबने जोर से नारा लगाया और प्रार्थना समाप्त हुई।

२१ जुलाई को बाबा सिरसिया पहुँचे। उस दिन यात्रादल के सभी साथियों ने साधारण हस्ती के, एक खादी कार्यकर्ता के यहाँ भोजन किया। उसने अपनी छह बीघा जमीन में से एक बीघा एक कट्ठा जमीन दान में दी और अपने तथा अपनी स्त्री के हाथ के कते सूत की पाँच गुंडियाँ भेंट कीं। उसकी स्त्री ने अपना कुछ आभूषण भी दान दिया। तीसरे पहर को कुछ महिला विद्यार्थिनी अपनी शिक्षिकाओं के साथ मिलने आयीं। उन्होंने सार्वजनिक सेवा में लगने के लिए आशीर्वाद माँगा। बाबा ने उन्हें बताया कि बिहार में तो स्त्री-समाज काफी पिछड़ा हुआ है, उसमें काम करने की काफी गुंजाइश है।

सामूहिक संकल्प का युग

अगले दिन गुरुवार को हमारा पड़ाव बैरिया में था, जो मुजफ्फरपुर शहर से छह मील की दूरी पर है। उस दिन चार भाई गया से पैदल यात्रा करते हुए वहाँ पहुँचे। उन चारों ने जीवन-दान दिया है। वे

मुजफ्फरपुर में होनेवाले जीवनदान-शिविर में भाग लेने आये थे। अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आज अखबारों में बड़ी खुशी की खबर पढ़ने को मिली, वह यह कि इण्डोचीन की लड़ाई बन्द हो गयी। बाबा बोले कि इस शान्ति का अधिक-से-अधिक श्रेय किसीको देना है, तो फ्रान्स के प्रधान मन्त्री को, जिसने एक तारीख मुकर्रर कर दी और कहा कि उस तारीख तक या तो शान्ति की स्थापना होगी या मैं अपने पद से इस्तीफा दे दूँगा। यह कोई छोटी घटना नहीं है। मनुष्य को जब अन्दर से प्रेरणा होती है और उसके अनुसार वह कोई संकल्प करता है, तो वह अवश्य पूरा होता है। ऐसी सुप्रेरणाओं के लिए ईश्वर की प्रथम अनुकूलता होती है, बाद को और सब की भी। हमें लगता है कि दुनिया में आगे बहुत से ऐसे काम होंगे, जो सामूहिक संकल्प के नतीजे होंगे। आगे का जमाना सामूहिक साधना का है। अब तक व्यक्तिगत साधनाओं से कुछ अनुभव आया, कुछ आध्यात्मिक शोधें हुईं। अब इन शोधों का व्यापक प्रयोग होना है। विज्ञान की दुनियाँ में जो काम बनेगा वह छोटा नहीं, बड़ा और व्यापक, विश्वरूप ही बनेगा। इसलिए जो भी सोचना या चिन्तन करना होगा, वह विश्वरूप का होगा।

परमेश्वर की प्रेरणा से हमने भी एक शुभ संकल्प किया है। वह यह कि शान्ति और प्रेम के तरीके से भूमि की मालकियत मिटानी है और भूमि सबकी करनी है। जमीन सबकी है, यह बात किसीकी बनायी हुई बनावटी बात नहीं। अगर बनावटी बात होती, तो लाख तकलीफ उठानी पड़ती; पर कोई न मानता। यह तो शुभ विचार है और ईश्वर की योजना के अनुकूल है। कोई कहता है कि १९५७ में पूरा होगा। मैं कहता हूँ कि इसके पहले भी हो जाय, तो कोई ताज्जुब नहीं। अगर संकल्प किया है, तो पूरा होता ही है। इस तरह फ्रान्स के प्रधान मंत्री ने भी संकल्प किया। यह राजनीतिक वेष में एक आध्यात्मिक मिसाल है।

हिंसा से परहेज रखें

इसके बाद बाबा ने इन्दौर में जो गोली चली है, उसकी दुःखपूर्वक चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमको सोचना होगा कि हम दुनिया भर में तो शान्ति की बातें करें; लेकिन अपने घर में यह हालत हो। हमें अपना घर सँभालना चाहिए। जब शान्ति की बातें करते हैं, तो लाठी या बन्दूक से सवाल हल करने की बात मूर्खता है और न इसमें लज्जत ही है। इस वास्ते जो भी हम सेवक हैं और जो अपने-अपने आन्दोलन चलाते हैं, उन्हें फिक्र होनी चाहिए कि इन आन्दोलनों में किसी तरह हिंसा को न आने दें। जैसे आन्दोलनवालों का संकल्प, वैसा सरकार का भी संकल्प होना चाहिए। सरकार की तरफ से संकल्प हो कि हिन्दुस्तान में गोली नहीं चलेगी और आपस के सारे मसले शान्ति से हल किये जायँगे। भूदान-यज्ञ की यही विशेषता है। भूमि का मसला तो हल होगा ही। पर इसकी विशेषता यह है कि हमने प्रतिज्ञा की है कि इस काम को प्रेम से, शान्ति से, जन-शक्ति के बल पर, लोक-शक्ति, विचार-शक्ति से करेंगे और इस निमित्त धर्मचक्र-प्रवर्तन करेंगे। इससे लोगों को अहिंसा की शक्ति का भान होगा। अन्त में बाबा ने कहा कि बिहार में हमारा काम पूरा हो चुका, ऐसा हम कह सकते हैं। कोई हिस्सा इस प्रान्त में ऐसा नहीं है, जहाँ लोग जमीन देने से इनकार करें। हमारा काम पूरा होता है और आपका काम शुरू। जोर लगाओ तो चन्द महीने में यह पूरा हो जायगा।

शान्तिमय क्रान्ति का मार्ग

२३ तारीख को हम लोगों ने मुजफ्फरपुर शहर में प्रवेश किया और शहर से दो मील की दूरी पर कन्हौली नाम के ग्राम में, जिसे सर्वोदय-ग्राम नाम दिया गया है, मुकाम किया। यह बिहार की रचनात्मक प्रवृत्तियों का—खादी, ग्रामोद्योग, प्राकृतिक चिकित्सा का—केन्द्र-स्थान है। यहीं पर जीवन-दान-शिविर तारीख २४ से २८ तक होनेवाला था।

शाम की प्रार्थना जिला स्कूल में हुई। बाबा ने अपने प्रवचन में कहा कि गुलामी के जमाने में दिमाग को तकलीफ देने का कोई काम नहीं करना पड़ता था। मन और बुद्धि को चिन्तन की जरूरत नहीं रहती थी। हम पर कोई जिम्मेवारी नहीं रहती थी। जब हम जेल में थे तब अखबार में पढ़ा कि बंगाल में पच्चीस, तीस लाख लोग भूखों मर गये। तब हमारा काम इतना ही था कि अँगरेजों को गाली दें। लेकिन अब अगर एक आदमी भूख से मरता है, तो सरकार फौरन प्रतिवाद करती है—कहती है, बीमारी से मरा। चाहे वह बीमारी खाना न खाने से ही पैदा हुई हो। इसलिए अब हमें सोच-समझकर काम करना होगा। एक बाजू से हमारी यह चिन्ता होनी चाहिए कि पाँच लाख देहात के लोग सम्पन्न कैसे बनें? दूसरी बाजू यह जिम्मेवारी आती है कि जो काम करें वह विश्वव्यापी दृष्टि से करें। कोई पूछेगा कि क्या इस युग में तेलघानी चलेगी? अरे मूर्ख, हिन्दुस्तान में तेलघानी नहीं चली, तो तिलहन के बदले यहाँ मजदूर ही पेरे जायँगे। कोल्हू चलाना होगा, यह हिन्दुस्तान है। और कोल्हू चलाते समय चिन्तन सारी दुनिया का करना होगा। बाबा पैदल घूमता है, पर चिन्तन सारी दुनिया का करता है। इसलिए उसे भूदान-यज्ञ सूझता है, नहीं तो न सूझता। भगवान् ने मनुष्य को दो पैर दिये हैं, चार नहीं। पैर जमीन पर, तो मुँह आसमान की तरफ, सिर और दिमाग ऊँचा। चार पैरवाले का मुख हमेशा जमीन की तरफ रहता है। इसलिए हमें रहना जमीन पर है और चिन्तन आसमान तक का करना है, सारे विश्व का करना है।

इस दृष्टि से आप हिन्दुस्तान के एक-एक मसले को देखिये और काम भी हम इस ढंग से करने जा रहे हैं कि क्रान्ति भी हो जाय और शान्ति भी रहे। बिना शान्ति के हिन्दुस्तान टिक नहीं सकता और बिना क्रान्ति के गरीबों के दुःख टल नहीं सकते। अगर शान्ति का यह अर्थ है कि चालू हालत न बदले, तो शान्ति किसी काम की नहीं। अगर क्रान्ति का यह

अर्थ है कि खून-खराबी करे, तो यह देश ऐटम और हाइड्रोजन बम जैसे शस्त्रों के आगे टिक नहीं सकता। और जो शक्ति प्रवीण हो उसे अपना गुरु मानना पड़ेगा, जैसे पाकिस्तान ने अमेरिका को माना। इसलिए देश के कुल मसले जल्दी-जल्दी लेने होंगे और शान्तिमय क्रान्ति की तरह हल करने होंगे। इस दृष्टि से देखेंगे, तो पता चलेगा कि भूदान-यज्ञ में विशेष देवता, विशेष ताकत प्रकट हुई है।

जीवनदानियों की सभा स्वर्ग में

शनिवार तारीख २४ जुलाई से बिहार के जीवन-दान कार्यकर्ताओं का शिविर शुरू हुआ। इसका उद्घाटन बाबा ने सुबह के समय किया। उन्होंने कहा कि जीवनदानी की कोई जमात नहीं है। फलाना जीवनदानी है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। फलाना जीवनदानी होगा, ऐसा तो कोई अन्तर्यामी ही कह सकता है। इसलिए यही कहा जा सकता है कि फलाना जीवनदानी था। मरने के बाद निर्णय होगा कि उसने जीवन-समर्पण किया था या नहीं? "मैं जीवनदानी हूँ" कहने में "हूँ" खतम हो जायगा और "मैं, मैं" रहेगा। इसलिए यह न कहें कि हम जीवन-दानी हैं। जीवनदानियों की सभा स्वर्ग में ही हो सकती है। पृथ्वी पर तो हम सामान्य मनुष्यों की ही सभा होगी। सम्मेलन वहीं बाद में। यह सब मरने के बाद, उसके पहले नहीं।

आगे चलकर बाबा ने कहा कि जीवनदान-यज्ञ में दाखिल होनेवाले एक-दूसरे के मददगार होंगे, सलाहकार होंगे, एक-दूसरे की फिक्र करने-वाले होंगे। ये भेड़-जमात नहीं है, जिसके लिए गड़ेरिये की जरूरत हो। यह शेरों की जमात है, जिसमें हरएक अपनी याने ईश्वर की ताकत से काम करेगा। किसीके मन में यह न आये कि फलाने के हाथ में अपना जीवन सौंप दिया। यह पाणिग्रहण नहीं, मैत्री है। इसमें हरएक की कसौटी होगी। जो टिका सो टिका, जो न टिका सो न टिका। जो हमारे साथ आना चाहेगा उसके साथ हम हैं। जिसने साथ छोड़ा उसे

छोड़ने का हक और हमें आगे बढ़ने का हक है। अन्त में बाबा बोले, "हमारा सारा भरोसा उस परमेश्वर पर है, जिसके आगे जीवन समर्पण किया। यह बिल्कुल भक्ति-मार्ग है। अगर अहंकार रहा तो जीवन-दान नहीं चलेगा। प्रतिज्ञा है तो भक्ति की। बाकी जितनी शक्ति होगी, उतना काम होगा। काम करते-करते शक्ति भी बढ़ेगी। इसी तरह युक्ति का भी विकास होगा। जीवनदानी में शक्ति या युक्ति की कमी हो सकती है, पर भक्ति की नहीं।"

ईश्वर बनाम शोषण

उस दिन तीसरे पहर को कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने अनुभव सामने रखे और कठिनाइयाँ भी पेश कीं। उनमें से एक प्रश्न पर बाबा ने अपने प्रार्थना-प्रवचन में रोशनी डाली। एक भाई ने सवाल यह पूछा था कि हम भूदानवाले भी उसी परमेश्वर का नाम ले रहे हैं, जिसके नाम से शोषणकारी जमात ने सारा शोषण चलाया है और सतत अन्याय जारी रखा है। तो क्या हमारे उस नाम के लेने से भी समाज में शोषण होने की प्रक्रिया जारी नहीं रहेगी? बाबा ने कहा कि "यह एक बहुत बुनियादी सवाल है, क्योंकि यह प्रार्थना पर मूल आघात ही है। शोषण-कार्य और नाम का सम्बन्ध क्या है? इसलिए सोचना यह चाहिए कि कुछ लोगों ने नाम का दुरुपयोग किया, तो वह नाम क्या उन्हींको सौंप दिया जाय? अगर शोषक के साथ ईश्वर का निस्तार करना चाहो, तो हरगिज नहीं हो सकता। ईश्वर बहुत जबरदस्त है। जो शस्त्र वास्तव में हमारा है, उसको अगर हम उन्हें सौंप दें जो उसका इस्तेमाल नहीं जानते, या उसका ढोंग ही कर सकते हैं, तो हम नाहक निःशस्त्र बन जाते हैं। अपना शस्त्र हम छोड़ दें, यह प्रक्रिया ही गलत है।"

बाबा ने बताया कि "दूसरी बात यह सोचने की है कि जिस ईश्वर से तंग आकर नवीन विचारकों ने उसका नाम लेना छोड़ दिया है, वह ईश्वर पश्चिम के भक्तिमार्गी लोगों का बताया हुआ, कोई स्वर्ग का रहनेवाला है। वह

ईश्वर हमारे यहाँ की तरह घट-घटवासी है, सर्वव्यापी है, अन्तःसूत्री है, सबके अन्दर विराजमान है—ऐसी कल्पना नहीं। अंग्रेजी में अगर कहें तो हमारा ईश्वर ऑब्जक्टिव ट्रूथ याने वास्तविक सत्य है। उसे टाल नहीं सकते। उसकी हस्ती का इनकार करने के माने हैं, अपनी हस्ती का इनकार करना, अपनी शक्ति का इनकार करना। हमने जिस ईश्वर का आवाहन किया है, वह किसी गोशे में छिपा हुआ नहीं, रोम-रोम व्यापी है। हम उससे खाली हों या वह यहाँ नहीं है—इस तरह के माननेवाले आत्मावलम्बी नहीं हो सकते, परावलम्बी होंगे। हम जिसे मानते हैं, उससे हम आत्मावलम्बी बनते हैं। निर्भयता प्राप्त होती है। किसी और की शरण में जाना नहीं पड़ता। जहाँ गोशे का विचार रहता है, वहाँ जड़ता और कई तरह की दुर्बलता आ जाती है। ऐसा समाधान ब्रह्मसूत्र में स्पष्ट किया गया है।"

तारीख २५ की सुबह को बाबा शिविर के भाइयों के साथ श्रमदान-यज्ञ के कार्यक्रम में थोड़ी देर के लिए शरीक हुए। उनके बायें कन्धे में उन दिनों दर्द रहता था। फिर भी इस कार्यक्रम से अछूते रहना नामुमकिन था। श्रमदान-यज्ञ के कार्यक्रम से लौटते समय, मुजफ्फरपुर शहर के प्रजा समाजवादी कार्यकर्ताओं ने बाबा को अपने दफ्तर में कुछ देर के लिए रुकने की प्रार्थना की। उन्होंने कुछ भूमि के दान-पत्र भेंट किये और बाबा से आशीर्वाद माँगा। बाबा ने कहा कि "बिहार में ३५ लाख के लगभग भूमिवान लोग हैं। हम हरएक से दानपत्र या कम-से-कम ३० लाख दानपत्र जरूर चाहते हैं। बाबा ने दुःख जाहिर किया कि आजकल देश भर में आलस्य और उत्साहहीनता नजर आती है और हम लोग डटकर कोई काम नहीं कर पाते।" बाबा ने आशा प्रकट की कि हम लोग कृत-निश्चयी बनेंगे और स्वराज्य-प्राप्ति के बाद देश के अन्दर आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता कायम करने के लिए अहिंसात्मक क्रान्ति में अपना कदम सतत बढ़ायेंगे।

नौ बजे दिन में मुजफ्फरपुर के व्यापारी भाइयों ने बाबा से भेंट की। बाबा ने उन्हें चालीस मिनट के प्रवचन में विस्तार के साथ समझाया कि किस तरह से भूदान-यज्ञ से सम्पत्तिदान-यज्ञ की कल्पना निकली। उन्होंने बताया कि "सम्पत्तिदान को आप सब अपना नित्य कर्तव्य समझें। इसमें कोई एकमुश्त रकम नहीं, बल्कि अपनी आमदनी या खर्च का एक निश्चित हिस्सा हर माह निकाल कर रखना होता है। उसे दाता खुद ही हमारे (विनोबा जी के) निर्देश के मुताबिक खर्च करता है।"

ग्रामोद्योग और भूदान

तीसरे पहर को आधे घंटे तक, ग्रामोद्योग में दिलचस्पी रखनेवाले कार्यकर्ताओं की सभा में बाबा का प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि "जमीन के बँटवारे के साथ ग्रामोद्योग खड़े करना भूदान के कार्यक्रम का अंग है। आज हमारे शहर देहातों का शोषण कर रहे हैं। जो चीजें देहातों में बननी चाहिए थीं, वे शहर में बन रही हैं और जो शहर में बननी चाहिए थीं, वे विदेशों से आ रही हैं। यह सिलसिला पलट देना होगा और गाँव के लोगों को संकल्प करना होगा कि जिन चीजों का कच्चा माल वे गाँव में पैदा कर लेते और जिन्हें गाँव में ही पक्का किया जा सकता है, वे चीजें बाहर से अपने गाँव में नहीं आने देंगे। तभी हमारे गाँव गोकुल बनेंगे और देश से बेरोजगारी और गरीबी मिटेगी।"

शाम को सवा पाँच बजे मुजफ्फरपुर जिले के कुछ जमींदार बाबा के पास आये। भूदान के प्रारम्भ से लेकर अब तक का इस आन्दोलन का विकास समझाते हुए बाबा ने इसके आर्थिक, सामाजिक और नैतिक पहलुओं पर रोशनी डाली और कहा कि भूदान का कार्य आप लोगों को—जो बड़े बड़े जमींदार हैं—अपना कार्य समझकर उठा लेना चाहिए। उन्होंने बेदखलियाँ बन्द करने के लिए भी अपील की और कहा कि भूदान जितना गरीबों के हित में है, उससे कम हित अमीरों का इसमें नहीं होने वाला है।

भू-स्नातकों का स्नान

शाम की प्रार्थना के समय बहुत जोरों की बारिश हो रही थी। बाबा ने खड़े-खड़े प्रार्थना की। दूसरे सब लोग भी खड़े रहे। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि "यह मेघ प्रभु का रूप ही है। सचमुच ही आकाश के धनुष से शर बरसा रहा है। इन शरों से काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग आदि सबका छेदन होता है। बाबा ने बताया कि यह मेघ नहीं है, शावर-बाथ या फुहारे का स्नान है। पुराने जमाने में विद्यार्थी की शिक्षा पूरी होने पर गुरु उसे दीक्षा देकर अपने हाथ से स्नान कराते थे, जिससे वह स्नातक बन जाता था। उसी तरह हमने आज आपको स्नान कराया है, आप हमारे स्नातक हो गये। और अब जाकर हमारा काम कीजिये।" यह सुनकर सब लोग हँसते-हँसते लोटपोट हो गये।

खादी का भविष्य

दूसरे दिन सोमवार की सुबह को आठ बजे बिहार खादी-समिति के लगभग डेढ़ सौ कार्यकर्ताओं के बीच बाबा ने प्रवचन किया। उन्होंने कहा कि "खादी के पीछे जो त्याग, तपस्या हुई है, आज की हालत को देखते हुए कह सकते हैं कि यह बेकार नहीं गयी है। अब दीख रहा है कि खादी की कदर फिर से होने लगी है। लेकिन इतने से मेरा समाधान नहीं होगा। मैंने कब का हिसाब लगा रखा है कि हर हालत में, बिल्कुल गिरी हालत में भी, देश में कम-से-कम दस प्रतिशत कपड़ा तो खादी का खपना ही चाहिए। देश में आज लगभग चार सौ करोड़ गज कपड़े की खपत है। लेकिन आज शायद खादी केवल एक करोड़ गज खप रही है। याने सौ रुपये में चार आने। अगर हम पुरुषार्थ करें और उत्पादन करें और बिक्री के लिए घूमें, तब चालीस करोड़ पर आ सकते हैं। फिर भी उससे हमारा समाधान नहीं होगा; क्योंकि इससे अहिंसा की सिद्धि नहीं होती। दस प्रतिशत वाली खादी की अहिंसा तो हिंसा के ही आश्रित है। इतनी खादी चल गयी तो वह युद्ध से मुक्ति नहीं दिला सकती। हमें तो समाज को शासन से मुक्त कराना

है और शोषण रहित समाज बनाना है। उस दिशा में अब सबक सीखना होगा। बाबा ने बताया कि खादी के कार्यकर्ताओं को नयी तालीम की जरूरत है और सर्वोदय-विचार की पूरी जानकारी उन्हें रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी समझ में नहीं आता कि सूतांजलि का काम क्यों आगे नहीं बढ़ता! चाहे कोई खादी या सर्वोदय-विचार को माने या न माने, लेकिन अगर वह परिश्रम को मानता है तो आप उससे सूतांजलि में एक गुण्डी सूत ले सकते हैं। कार्यकर्ताओं को साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। उनकी सुव्यवस्थित परीक्षा भी ली जाय। वेतन के बारे में बाबा ने सुझाया कि जिन कार्यकर्ताओं को हम उम्मीदवार के तौर पर लेते हैं, उन्हें वजीफे के रूप में कुछ दिया जाय। जब उनका मन काम में लग जाय और वह उसे करने को राजी हों, तो उन्हें कार्यकर्ता माना जाय और पचास से सौ रुपये के बीच में जैसी उनकी जरूरत हो, उन्हें मासिक सहायता दी जाय।

अब जो थोड़े से भाई सौ के ऊपर लेनेवाले बचें, उन्हें पेन्शन के तौर पर थोड़ा-सा दिया जाय। वे अपने को संस्था की जिम्मेवारी से अलग रखें और अपना पूरा समय जन-सेवा के व्यापक कार्यों में लगायें। काम उनसे लिया जायगा पर मुक्त रूप से। इस तरह विषमता का पैमाना कम-से-कम रह जायगा। आखिर में बाबा ने खादी-कार्यकर्ताओं से कहा कि अभी हम करीब पाँच महीने इस प्रान्त में हैं। आठ लाख दान-पत्र और ३२ लाख एकड़ जमीन की हमारी माँग है। यह गणित की बात नहीं है कि अब तक जब २१ लाख एकड़ जमीन मिली है, तब पाँच महीने में ३२ लाख कैसे पूरी होगी? अगर सब लोग जोर लगायेंगे, तो यह काम बन सकता है।

प्राकृतिक चिकित्सा और भूदान

तीसरे पहर प्राकृतिक चिकित्सा में दिलचस्पी रखनेवाले बिहार के चिकित्सक और सेवकगण बाबा से मिले। बाबा ने कहा "अभी

तक हम लोगों में ऐसा कोई नहीं है, जो यह कह सकेगा कि प्राकृतिक चिकित्सा के अलावा उसने कोई दूसरी चिकित्सा नहीं की। जैसे मैं यह कह सकता हूँ कि १९२० से लेकर अब तक खादी के अलावा किसी दूसरे कपड़े का मैंने इस्तेमाल नहीं किया, इसी तरह प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में नहीं कह सकता और न ऐसे किसी शख्स को मैं जानता ही हूँ।" बड़े रोचक ढंग से और महापुरुषों के दृष्टान्त देते हुए बाबा ने बताया कि "प्रकृति माने परम शान्ति। हमको शरीर-श्रम करके प्रकृति के साथ एक-रूप होना चाहिए। हमारे आहार में सबसे ज्यादा जरूरत आकाश की है। आकाश-सेवन से बुद्धि व्यापक बनती है और संकुचितता खतम होती है। आकाश के बाद दूसरे नम्बर पर हवा और प्रकाश है। इसके बाद पानी। इस तरह अन्न की जरूरत सबसे कम है। लेकिन आज मामला एकदम उल्टा चला है और सारा दारोमदार अन्न पर ही माना जाता है। अन्न माने हम जिसे खायें और जो हमें खाये। इसलिए सूक्ष्म देवता जैसे आकाश, पानी, हवा, प्रकाश का सेवन ज्यादा हो और स्थूल देवता जैसे अनाज आदि का कम हो। तब अपने पास नाहक ज्यादा जमीन लोगों को नहीं रखनी पड़ेगी और हमको जमीन भी मिल जायगी।" यह सुनकर सब लोग खिलखिलाकर हँस पड़े और बाबा वहीं से सीधे जीवनदान शिविर में चले गये।

आनेवाली परीक्षा

वहाँ साढ़े तीन बजे से लेकर एक घंटे तक उनका प्रवचन हुआ। बाबा ने कहा कि "जीवनदान का काम ऐसी समाज-रचना करना है, जिसमें शासन और शोषण, दोनों न हो। हम चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के हर गाँव में ऐसे दो-दो चार-चार मनुष्य निकलें जो जीवनदान दें और नव निर्माण के काम में योग दें। ऐसी दृष्टि रखकर हमको सोचना चाहिए।" बाबा ने शिविरवालों को चेतावनी दी कि आप सबकी परीक्षा होनेवाली है। मैं परीक्षा नहीं लूँगा पर परीक्षा आप से आप होगी और कठोर होगी। जैसे

जैसे हमारा काम वास्तविक रूप में प्रकट होगा, वह चुभे बिना नहीं रहेगा। हिंसा, अहिंसा को सहन नहीं कर सकेगी। यही नहीं, वह डटकर अहिंसा का विरोध करेगी। अगर समाज पर हमारे काम का असर होता है, तो कड़ा विरोध होगा। जो आज हमारे मित्र हैं और जिनकी मित्रता हम चाहते भी हैं, वे मित्र नहीं रहेंगे। बाबा ने आखिर में आशा प्रकट की कि इस शिविर में एक साथ रहने से परस्पर स्नेह बढ़ेगा और विचारों की सफाई होगी। हमें सहनशील, उदार और स्नेहमय बनना चाहिए।

शाम के प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने एक सुझाव पेश किया कि हर जिले के अन्दर कुछ खास केन्द्र चुने जायँ। वहाँ पर सर्वोदय का असली स्वरूप पेश किया जाय। अगर हर जिले में ऐसा न हो सके, तो प्रान्त-प्रान्त में ऐसे कुछ केन्द्र जरूर बनने चाहिए, जहाँ ग्राम-राज्य और सर्वोदय राज्य का दर्शन हो सके।

विज्ञान और अहिंसा

इसी दिन रात को पश्चिमी जर्मनी की रहनेवाली एक समाजवादी महिला बाबा से मिली। उन्होंने पूछा कि क्या आपके आन्दोलन से हिंसात्मक शक्तियों के उभरने की आशा नहीं है? बाबा ने उन्हें बताया कि हम भूदान के जरिये केवल जमीन का बँटवारा ही नहीं, समाज के अन्दर एक नयी वृत्ति पैदा करना चाहते हैं और परिवार की कल्पना, जो अपने घर तक सीमित है, उसे सारे गाँव पर व्यापक करना चाहते हैं। इस प्रकार सारे सवालों को, चाहे वे सामाजिक हों, चाहे आर्थिक, हम नैतिक शक्ति से ही हल करना चाहते हैं। इससे एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन मनुष्य के अन्दर आयगा और वह ऊपर उठेगा। मेरी धारणा है कि विज्ञान की प्रगति से अहिंसा के लिए रास्ता साफ होगा। विज्ञान और हिंसा मिलकर मानव समाज को नष्ट कर देगी। विज्ञान और अहिंसा मिलकर पृथ्वी को स्वर्ग बना देंगे। उस महिला ने फिर यह पूछा कि सरकार के प्रति आपका क्या रुख रहेगा? बाबा ने कहा कि सरकार जनता की भावना

की उपज है। जैसे-जैसे यह अन्दोलन बढ़ेगा, सरकार का ध्यान भी इस ओर खिंचता जायगा। और जब हम उसके जरिये सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति कर लेते हैं, तो इसका राजनैतिक स्वरूप भी जैसा चाहेंगे, वैसा बना लेंगे।

तारीख २७ को बाबा का ज्यादातर समय व्यक्तिगत मुलाकातों में गया। आज शिविर में कोई व्याख्यान नहीं हुआ। शाम की प्रार्थना में बाबा ने छोटा-सा प्रवचन किया, जिसमें उन्होंने कहा कि दिन भर के काम के बाद हमें आधा घंटा या पंद्रह मिनट का समय अन्तर-परीक्षण के लिए जरूर निकालना चाहिए। प्रार्थना में सन्त-समागम का अनुभव होता है और सन्मार्ग या सदाचार के लिए प्रेरणा मिलती है। पर आत्म-निरीक्षण के बिना उसमें सार नहीं। हर साधक को प्राथमिक अवस्था में इसके लिए अलग समय निकालना जरूरी है और लिखने का सहारा भी वह ले सकता है।

सूतांजलि और सम्पत्ति-दान

२८ जुलाई, बुधवार को शिविर का आखिरी दिन था। सुबह के नौ बजे जिले-जिले के प्रमुख कार्यकर्ता बाबा के पास जमा हुए। उन्होंने अपने-अपने जिले में काम की योजना पढ़कर सुनायी। इसके बाद बाबा ने कहा कि कुछ चीजों पर आप सबको विशेष ध्यान देना है। पहली चीज यह है कि भूमि-वितरण के बारे में हमने जो नियम बनाये हैं, उनका पालन सच्चाई के साथ और पूरा-पूरा होना चाहिए। वितरण के काम में यह आक्षेप कभी नहीं आये कि जमीन गलत ढंग से दी गयी या गलत आदमी को दे दी गयी और पक्षपात किया गया। दूसरी चीज सूतांजलि है। यह केवल सूत की एक लच्छी नहीं है, बल्कि यंत्रोद्योग के आधार पर सम्पत्ति बटोरने का जो आज क्रम चल रहा है उसके खिलाफ़, विरोध की प्रतिनिधि है। सूतांजलि का बहुत व्यापक प्रचार होना चाहिए और छह करोड़ सूतांजलि के लिए हम पहले ही कह चुके हैं। बिहार का कोटा तीस लाख का पड़ता है।

तीसरी चीज यह कि अहिंसक क्रान्ति के आन्दोलन में हम नगरों की उपेक्षा नहीं कर सकते। इसलिए वहाँ के लिए स्वतंत्र योजना होनी चाहिए और खादी, ग्रामोद्योग, तेल, गुड़ आदि और भूदान या सर्वोदय साहित्य लेकर घर-घर पहुँचना चाहिए। शहरों के अन्दर हम सम्पत्ति-दान का कार्य-क्रम भी चला सकते हैं। इस यज्ञ में छोटा या बड़ा, गरीब या अमीर, हरएक भाग ले सकता है।

सुबह को टहलते हुए, पानी में भींगते हुए बाबा तिरहुत एकेडमी गये, जो सर्वोदयग्राम से दो मील की दूरी पर है। वहाँ विद्यार्थियों और शिक्षकों ने कुछ श्रम-दान और सम्पत्ति-दान का संकल्प जाहिर किया। सम्पत्ति-दान के सिलसिले में उन लोगों ने हर विद्यार्थी से हर महीने एक पैसा लेने का तय किया था। बाबा ने इसे बहुत गलत और बेतुकी चीज बताया और कहा कि विद्यार्थी से हम तो केवल उत्पादक श्रम की आशा करते हैं, ताकि वह कांचन-मुक्ति के लिए अपने आगे के जीवन में तैयार हो सके। सम्पत्ति-दान में हम पैसा नहीं, घर के खर्च का हिस्सा लेते हैं। अव्यक्त दरिद्र-नारायण का हिस्सा लेते हैं। इसलिए सम्पत्ति-दान एक धर्म-विचार है। इसे हम जीवन-निष्ठा के तौर पर सिखाना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि चार वर्ष से ऊपर हर बालक से हम सूतांजलि में एक लच्छी की आशा करते हैं। वह उनकी तरफ से श्रम-समर्पण होगा और उनमें श्रम-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आखिर में उन्होंने सर्वोदय साहित्य के अध्ययन और मनन के लिए अपील की।

जीवन में अध्यात्म का स्थान

तीसरे पहर को बाबा जीवन-दान शिविर की आखिरी बैठक में शरीक हुए। इसमें उनका बहुत ही मार्मिक प्रवचन हुआ। उन्होंने शिविर पर समाधान प्रकट करते हुए कहा कि हमें उम्मीद है कि यहाँ से आप सब उत्तम श्रद्धा लेकर जा रहे हैं और दृढ़तापूर्वक अपने काम में लगेंगे, तीव्रता के साथ व्यापक दृष्टि से अपने काम में लगेंगे। उन्होंने कहा

कि इस प्रदेश से पाँच महीने के बाद हम चले जायेंगे। लेकिन हमारा मन इसे छोड़कर कहीं नहीं जा सकता। हमने दो प्रकार की अपेक्षा रखी है, जमीन का कोटा पूरा हो और दानपत्रों की संख्या पूरी हो। आपके यहाँ लगभग पैंतीस लाख भूमिवान हैं। इसलिए हम पैंतीस नहीं तो तीस लाख दानपत्र आपके प्रदेश से चाहते हैं। अगर यह संख्या सुनकर आपके दिल में उत्साह बढ़ता है, तब तो हम कहेंगे कि आप सचमुच जीवन-दानी हैं। और अगर यह लगता है कि यह कैसे होगा, तो हम समझेंगे कि आप जीवन-दानी तो हैं, मगर आप में जीवन नहीं है। बेदखलियाँ दूर करने के लिए और सम्पत्ति-दान का सन्देश लोगों के पास पहुँचाने के लिए भी बाबा ने कहा।

इसके बाद वे बोले—आज समाज के अन्दर जो कारोबार चलते हैं, उनमें कुछ अंश कानूनी है, कुछ सामाजिक और बाकी सब आध्यात्मिक है। कानून वाला हिस्सा तो बहुत थोड़ा है। उससे कहीं बड़ा हिस्सा सामाजिक असर का है। समाज की जो कल्पनाएँ हैं, जो लोकलज्जा और लोकनीति है, उसका विशेष प्रभाव हमारे काम पर पड़ता है। लेकिन सब से ज्यादा स्थान आध्यात्मिक विचारों और कल्पनाओं का है। मनुष्य जो कुछ करता है, उसमें ज्यादा-से-ज्यादा असर आध्यात्मिकता का ही है। इसी कारण वह त्याग भी करता है। हिमालय को देखकर बापू का यह वाक्य याद आ जाता है कि यह पत्थरों से नहीं, बल्कि ऋषियों की तपस्या से बना है। इतना कहकर बाबा दो मिनट के लिए मौन हो गये। फिर कहा कि हजारों-लाखों लोग जो कुम्भ में जाते हैं, तो इसी भावना से कि गंगा के किनारे असंख्य लोगों ने तपस्या की है। इतना कहकर बाबा दुबारा शान्त हो गए। फिर उन्होंने कहा कि शादी में हर मुसलमान को कुरान शरीफ भेंट में दी जाती है, सो क्यों? यह कहकर उनका गला रुँध गया। थोड़ी देर के बाद टाल्सटाय और रमण महर्षि के जीवन के दृष्टान्त देकर वे भरे गले के साथ बोले कि ऐसी कहानियाँ सुनाने

बैठूँ तो कोई सीमा नहीं है। दिल पर किस चीज का असर पड़ता है? झंडा कपड़े का होता है, लेकिन उसके लिए लोग मर मिटते हैं। क्या जरूरत है कि मनुष्य कपड़े के उस टुकड़े को सीधा रखे? भावनाएं हैं। भावना से अध्यात्म बनता है। अपने काम में हम ज्यादा से ज्यादा परिणाम ला सकते हैं, अगर उस अध्यात्म के पास हम जरा श्रद्धा से पहुँच जायँ। इतना कहकर बाबा का गला रुँध गया। उन्होंने बोलने की कोशिश भी की, मगर गला भर आया। तब हाथ जोड़ कर प्रणाम किया और लाउड स्पीकर को अपने सामने से हटा दिया। इस अद्भुत गम्भीर वातावरण में इस शिविर का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सतत पद-यात्राएँ चलें

तारीख २९ से लेकर ३१ तक सर्व-सेवा-संघ की कार्यकारिणी समिति की बैठक सर्वोदयग्राम में थी। बाबा इनमें से अधिकांश में २९ और ३० तारीख को शामिल हुए। २९ की शाम को प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने कहा कि "हमने बिहार को श्रद्धा और विश्वास के साथ, एक प्रयोग केन्द्र समझ कर लिया था। ऐसा दीख पड़ता है कि अक्सर बहुत-से प्रदेशों में यहाँ की जैसी जाग्रति नहीं आयी है। इसका एक ही उत्तर निःसंशय रूप से दिया जा सकता है। वह यह कि अहिंसा का असर उस ढंग से नहीं फैलता, जिस ढंग से हिंसा का फैलता है। हाँ, आलस्य नहीं होना चाहिए। लेकिन जो भी काम हो वह सही विचार को, शुद्ध विचार को दृष्टि में रखकर, तीव्र ढंग से हो और नैतिक मूल्यों को जरा भी नजर अन्दाज न किया जाय। अगर अप्राकृतिक रूप से वेग पैदा किया जायगा तो वह काम, क्रोध आदि से वातावरण को खराब कर देगा। सन् १९५७ तक पूरी कोशिश करना है, ताकि पाँच करोड़ एकड़ जमीन हासिल हो और देश में कोई भूमिहीन न रहे। हदबन्दी के कारण यह नहीं लगना चाहिए कि अभी तो काफी समय बाकी है, देखा जायगा। और न यही लगना चाहिए कि चूँकि हदबन्दी की गयी है, इसलिए उतावले तरीके सोचें। हद में

दोष भी है, गुण भी है। गुण यह है कि सतत प्रेरणा से काम होता है। और हानि यह है कि उसकी पूर्ति के लिए दूसरे साधनों की सूझती है। होते-होते सर्वोत्तम सज्जन और अहिंसक पुरुष भी दूसरे साधन, यहाँ तक कि हिंसा कबूल कर लेते हैं। हमारे मन में यह निश्चय है कि प्रत्यक्ष पद-यात्रा से बेहतर कोई साधन है ही नहीं। पद-यात्रा में निरन्तर चलते रहना चाहिए। आज जब हम मन में पूछते हैं कि इस समय हिन्दुस्तान भर में कितनी यात्राएँ चलती होंगी, तो उत्तर मिलता है कि मुश्किल से दस-पाँच। इस वास्ते मन्दता दीख पड़ती है। लेकिन कार्यकर्ताओं को यात्रा लगातार जारी रखनी चाहिए, जैसे बारिश में हर नाले से, हर जगह से पानी बहने लगता है। ऐसा करने पर जो नैतिक शक्ति हममें हैं, उससे हजार गुनी अधिक पैदा होगी। थोड़े ही दिन में आप देखेंगे कि परिस्थिति एकदम बदल गयी। हम समझते हैं कि काम की यह गति अन्दर ही अन्दर बढ़ रही है। जैसे-जैसे १६५७ आ रहा है, जनता की भावना जोर पकड़ रही है। कानूनवाले भी इसी फिक्र में हैं कि जो कुछ होना चाहिए, वह १६५७ के पहले हो। सारी जनता में जबरदस्त आकांक्षा उत्पन्न हो गयी है और होगी। इसके माने यह नहीं कि हम मन्द बुद्धि बन जायँ। काम पूरी ताकत लगाने पर ही बनेगा। पत्थर टूटेगा तो आखिरी चोट से ही, पर चोट सतत पड़ती रहे। इसलिए हमारे मन में किसी तरह की शंका नहीं है। हमें एकाग्रता के साथ काम में लगा रहना चाहिए। उपाय-संशोधन लगातार चलना चाहिए। हमारा विश्वास है कि बिहार के छोटे-छोटे लोग बुद्ध के अनुयायी साबित होंगे। और जो काम बड़े-बड़े ज्ञानी नहीं कर सकते थे, वह यह कर दिखायेंगे। जीवन-दान शिविर में हमने जो देखा, उससे हमारी यह श्रद्धा बनी है।"

कांग्रेस का कर्तव्य

तीस तारीख सर्वोदयग्राम में हमारा आखिरी दिन था। उस दिन तीसरे पहर मुजफ्फरपुर जिले के कांग्रेस-कार्यकर्ता बाबा के पास जमा हुए।

जिला कांग्रेस कमेटी के सभापति जी ने कहा कि मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मेरे जिला कांग्रेस कमेटी वाले आपके विचार से सहमत हैं, यथासाध्य परिश्रम कर रहे हैं और आगे भी कसर नहीं करेंगे। हाँ, आप की माँग के मुताबिक नहीं पहुँचे हैं। लेकिन जितना प्रयास होगा, उसमें बाज नहीं आयेंगे। बाबा ने कहा कि "एक सद्विचार को केवल स्वीकार करना काफी नहीं होता। उसको अमल में लाना बहुत जरूरी है और यह तभी होता है, जब यह मालूम हो जाय कि उसके बिना खतरा है। आजकल बरसात है। लेकिन इसके पहले क्या मौसम था? शादी का मौसम, तब भी फुरसत नहीं थी। इस तरह अच्छा काम होते हुए भी उसको टालते जाते हैं। यह हमारे अन्दर की सुस्ती है। हमारे एक मित्र कई पहाड़ लाँघ गये और कई घाट उतर गये। हमने पूछा कि सबसे बीहड़ घाट कौन सा है? वह बोले, देहली काट, वही घर की देहली वाला! जहाँ एक दफा इसको लाँघा कि हिमालय भी पार कर सकते हो। इसलिए सोचने की बात यह है कि अगर हम विचार को ठीक समझते हैं, तो उस पर अमल के लिए निकल पड़ो। बिहार की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने ३२ लाख एकड़ जमीन के लिए सुव्यवस्थित प्रस्ताव पास किया है, उसे दुहराया है। अगर प्रस्ताव के अनुसार उसे पूरा कर देते हैं, तो कांग्रेस की इज्जत बढ़ती है और आपको भी जीवन का आनन्द आयगा। अगर आप सब भिन्न-भिन्न पक्षवाले जोड़ लगाते हैं, तो १९५७ की जरूरत नहीं है, दो-तीन मास में यह काम खतम हो सकता है।

सब घट साहेब दीठा

शाम को प्रार्थना के बाद बाबा कबीर का यह भजन बहुत देर तक धीमे स्वर में गाते रहे :

"ये साईं की गति नहिं जानी, गुड़-गुड़ दिया मीठा।
कहे कबीर मैं पूरा पाया, सब घट साहेब दीठा॥"

बाबा ने कहा कि जिसने ईश्वर को कहीं देखा नहीं है, उसके लिए तो

अदर्शन है ही। पर जिसने ईश्वर को कुछ जगह में गैर-दीठा देखा, उसको भी पूरा दर्शन नहीं है। कबीर कहता है कि मुझे पूरा दर्शन हुआ—'सब घट साहेब दीठा'। यह है सर्वोदय। सर्वोदय के सामने सब घट साहेब दीठा। अगर यह दर्शन हमें सर्वोदय का हो जाय, तो विजय ही विजय है। अगर आप सब लोग उस काम में लग जायँ, तो मीठा ही मीठा गुड़ खाने को मिलेगा और पूरा दर्शन प्राप्त होगा।

आगे चलकर बाबा ने कहा कि भूमि के साथ एक बड़ा भारी सवाल बेदखली का जुड़ा हुआ है। मैं चाहता हूँ कि आप में से जो भी अपनी शक्ति लगा सकते हैं, इसमें लगा दें। जहाँ जिसका वजन पड़े, भूदान-यज्ञ के साथ बेदखली में ध्यान दे। इस बात की एहतियात रहना चाहिए कि जिन्होंने बेदखल किया है, उनकी जरा भी निन्दा न की जाय। उन्होंने ऐसा जो किया, वह भय या लोभ के कारण या परिस्थिति से मजबूर होकर किया। इसलिए जो भूदान में लगे हैं या लगना चाहते हैं और वह भी जो नहीं लग सकते हैं पर उनके हाथ से बेदखलियाँ हुई होंगी, उनके साथ जाकर वे इस काम को कर सकते हैं। जितनी सद्भावना जहाँ से बटोर सकते हैं, बटोरनी चाहिए। उसका पूर्ण निर्माण होगा। वह ऐसा पुण्य होगा, जिसके आगे कोई पाप टिक नहीं सकेगा।

सर्वोदयग्राम में आठ रोज के प्रवास के बाद ३१ तारीख की सुबह को बाबा तुरकी के लिए निकल पड़े, जो मुजफ्फरपुर से आठ मील की दूरी पर है। रास्ते में मुजफ्फरपुर के रामदयालु कालेज में चन्द मिनट के लिए ठहरे। उन्होंने कहा कि जिस तरह पिंजड़े का पक्षी पिंजड़ा खोल देने पर भी उसके बाहर नहीं उड़ता है, उसी तरह देश के आजाद होने पर भी हमारे यहाँ की शिक्षा-पद्धति—जिसके खिलाफ सरकारी अधिकारी भी काफी बोल चुके हैं—अभी तक नहीं बदल पायी है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की कि अध्ययन के साथ उन गरीबों का ध्यान रक्खें, जिनकी सेवा और

मेहनत के बल पर उनकी यह शिक्षा चल रही है और जिसका कोई लाभ उनको नहीं पहुँचता।

गुणों का सिक्का

बिहार में बुनियादी शिक्षा के प्रमुख केन्द्रों में तुरकी का विशेष स्थान है। इसलिए वहाँ पर काफी शिक्षक और विद्यार्थी उनसे मिले। बाबा ने तीसरे पहर को करीब पौने दो घंटे तक उनका क्लास लिया। और अपनी लोक-नागरी लिपि विस्तार के साथ समझायी। सबको अचम्भा हो रहा था कि यह दर-दर भूदान माँगनेवाला भिखारी उत्तम शिक्षक भी है। शायद वे नहीं जानते थे कि बाबा को अगर किसी चीज से दिलचस्पी है तो वह है ज्ञान-प्रचार से या विद्यार्थियों को पढ़ाने से। आज उनके बीसियों विद्यार्थी सार्वजनिक केन्द्र में उच्च से उच्च कोटि की सेवा कर रहे हैं। पाँच बजे के करीब बाबा ने तुरकी-वैशाली-शिक्षा-मंडल का उद्घाटन किया। बिहार का प्रसिद्ध सांस्कृतिक स्थान वैशाली तुरकी से थोड़ी दूर पर ही है।

बाबा ने अपने प्रार्थना-प्रवचन में कहा कि "वैशाली का स्मरण याने महावीर स्वामी का स्मरण, जिन्होंने हिन्दुस्तान को अहिंसा का पाठ पढ़ाया। बिना आसक्ति रखे विचार का संशोधन, अहिंसा का शोधन और मध्यस्थ दृष्टि रखने का बोध उन्होंने दिया। भूदान-यज्ञ भी अहिंसा के जरिये मसले हल करने का नया प्रयास है। हम आशा करते हैं कि वैशाली के क्षेत्र से जीवन-शिक्षा फैलेगी और दिल की संकुचितता न रहेगी, हरेक का खुला दिल होगा और भू-दान तो मिलेगा ही। साथ में सम्पत्ति-दान भी, श्रम-दान भी देते ही रहना चाहिए। इस वास्ते इस केन्द्र में जहाँ इतना प्राचीन इतिहास है, यह काम फैलना चाहिए। गाँव-गाँव में यह बात फैलनी चाहिए कि हमारे पास जो जमीन है वह गाँव की है, हमारे पास जो सम्पत्ति है वह समाज की है। जो पहले परिवार को युनिट या इकाई मानकर किया जाता था, वह अब सारे गाँव को इकाई मानकर करना

होगा। इससे धर्म-विचार की उन्नति होगी और हमारे पूर्वजों को बड़ी भारी खुशी होगी।" बाबा ने आगे चलकर कहा कि "हम सारे समाज में, आजकल की भाषा में पैसे की करेन्सी की जगह, गुणों की करेन्सी, गुणों का सिक्का चलाना चाहते हैं। अगर लड़के ने घी गिरा दिया तो आप कहेगा कि पाँच-सात रुपये का नुकसान हो गया। हम कहेंगे कि अगर तू बाहर से दिखनेवाली चीज नहीं सँभाल सकता, तो अन्दर की न दिखनेवाली चीज कैसे सँभालेगा? तेरा गुण खतरे में है, आत्मा का गुण खतरे में है। गुणों का प्रचलन करना चाहिए। यह सारा ज्ञान-प्रचार आपको करना है। भू-दान-यज्ञ मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान, अहिंसक क्रान्ति का विचार आप फैला दीजिये।

उत्तर बिहार में भयंकर बाढ़ आयी हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि इन्सान की याद में ऐसी बाढ़ पहले कभी नहीं आयी। चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सहर्षा और पूर्णिया के जिलों में इसने गजब ढाया है। ३१ जुलाई को जब हम मुजफ्फरपुर से विदा हो रहे थे, तो हमने देखा कि शहर के अन्दर बाढ़ का पानी धीरे-धीरे प्रवेश कर रहा था। अगस्त के पहले हफ्ते में बाबा ने मुजफ्फरपुर जिले के हाजीपुर सबडिविजन में अपनी यात्रा की।

लोकमान्य का स्मरण

पहली अगस्त, तिलक पुण्य-तिथि के दिन हम लोग कुढ़नी गाँव में थे। बारिश के कारण प्रार्थना खड़े-खड़े हुई। देश के इतिहास में लोकमान्य का अमर स्थान बताते हुए बाबा ने कहा कि "तिलक महाराज के स्मरण का लाभ हमें यह मिल सकता है कि जो काम हमारे सामने है, उसे पूरा करें। ऐसा करने पर ही उनका सच्चा श्राद्ध होगा। उनको तो सद्गति मिल चुकी। उनके स्मरण से हमारे काम को गति मिलती है। जैसे लोकमान्य ने बताया कि स्वराज्य मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है, उसी तरह मेहनत करनेवाले के लिए जमीन पाने का भी जन्म-सिद्ध अधिकार है। इसलिए जब तक हमारे देश में कोई भी बे-जमीन रहता है, हमें चैन नहीं

लेनी चाहिए। यह युग-धर्म है। ज्यादा सुनने-बोलने की बात नहीं, करने की बात है।" सभा के बाद एक अध्यापिका ने अपने मासिक वेतन का बारहवाँ हिस्सा सम्पत्ति-दान में देने का एलान किया।

तीसरी तारीख को सोधी से महुआ जाते वक्त एक कांग्रेसी कार्यकर्ता बाबा से मिले और कांग्रेस की मौजूदा हालत पर चर्चा की। बाबा ने पूछा कि क्या बात है कि बिहार के कांग्रेसी अपनी प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी के आदेश का पालन नहीं करते? अगर उनमें कुछ भी सूझ-बूझ होती, तो बत्तीस लाख का कोटा पूरा करके अपनी लोकप्रियता बढ़ा लेते और अगले चुनाव में इससे कुछ सहूलियत भी हो जाती। वह कार्यकर्ता चुप रहे। बाबा ने कहा कि आपकी चुप्पी यह बताती है कि आपके सोचने का ढंग कुछ और ही है। आप सोचते हैं कि हम काम क्यों करें? इसमें घाटा क्या है? दूसरे भी तो कोई नहीं कर रहे हैं। उसने कबूल किया कि यही सोलह आने सच्ची बात है। बाबा बोले कि यह मनोवृत्ति आपकी संस्था के विनाश की सूचिका है।

स्वराज्य की माँग

शाम के प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने बताया कि आज के युग में हमारा धर्म क्या है? उन्होंने कहा कि स्वराज्य के बाद होना यह चाहिए था कि गरीबों की उम्मीदें पूरी की जातीं। गाँव-गाँव के मन्दिर और कुएँ सबके लिए खुलते, सबको रोजगार मिलता। लेकिन यह सब कौन करे? कानून तो बना दिया—कागज पर लिख दिया, लेकिन उससे क्या होता है? हमारे पूर्वजों ने कागज पर जो अच्छी-अच्छी चीजें लिख रखी हैं—वेद, उपनिषद्, गीता वगैरह, उनसे बढ़कर क्या लिखा जा सकता है? यह कागज की बात नहीं, अमल की बात है। गांधीजी ने स्वराज्य के साथ रचनात्मक काम जोड़ दिये थे, हम उन्हें झख मारकर करते थे। लेकिन जहाँ स्वराज्य हाथ में आ गया, उनकी बात को मानना बन्द कर दिया। उनको कहना पड़ा कि मेरी आवाज अब कोई नहीं सुनता। लेकिन अब जो नयी

आवश्यकता है उसके लिए गाँव-गाँव के लोगों को उठ खड़े होना चाहिए। देहात में अपना राज्य कायम करना है। ग्राम-राज की आवश्यकता है। गाँववालों को प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि जो माल हम खुद पैदा कर सकते हैं, शहर के उस माल का बहिष्कार करेंगे और उसके साथ-साथ जमीन की मालिकी भी नहीं रहने देंगे।

पर आजकल होता क्या है? यह समझा जाता है कि लोग भेड़ हैं और ये वोट लेनेवाले गड़रिये हैं। तो क्या आप सब लोग भेड़ बनना चाहते हैं? और वोट का क्या यह अर्थ है कि वह गड़रिया पसन्द है कि यह? सच्चा स्वराज्य तभी होगा, जब हम हर आदमी को सच्चा और स्वतंत्र बनायेंगे। यही स्वराज्य या ग्राम-राज्य है। इसीको गांधी महाराज राम-राज्य कहते थे। इस काम को करने के लिए नये-नये मनुष्यों को नये जोश से आना होगा। भगवान् नये लोगों को जन्म क्यों देता है? ताकि नये विचार अमल में लायें, नये काम करें। नयी पीढ़ी, नया काम। इसी वास्ते भूदान से जीवन-दान की माँग निकल पड़ी। सिर्फ जवान नहीं, जिनके दिल में जवानी हो, ऐसे लोग चाहिए। गांधी महाराज आखिरी समय तक जवान रहे। उनका आखिरी संग्राम तो नोआखाली का दिव्य संग्राम था। दिल्ली में १५ अगस्त को रोशनी होती थी, पर बापू नोआखाली में पैदल घूमते थे। कहते थे कि मेरा स्वराज्य आना अभी बाकी है। वे सनातन जवान थे। चाहे शरीर बूढ़ा हो गया हो, पर हृदय में जवानी हो, ऐसे सब लोगों को हम आवाहन देते हैं।

चौथी तारीख को हमारा पड़ाव चकउमर नाम के छोटे-से गाँव में था। इन दिनों हमारी यात्रा बिहार के क्या, उत्तरी भारत के सबसे उपजाऊ इलाके में हो रही है। लेकिन बदकिस्मती से पैसे के फेर में आकर खेतों में तम्बाकू बोयी जाती है। रास्ते में ताड़ के पेड़ भी दिखलायी पड़े, लेकिन कुछ तो एकदम सूखे। उनको देखकर बाबा को जैन साधुओं की याद आ गयी, जिन्होंने यहाँ तक कह डाला कि अहिंसा के अन्दर ऐसे

खाद्य पदार्थ मना हैं, जिनमें बीज होता है। साथ ही साथ बाबा ने बताया कि इन नीरस पेड़ों को देखकर टाल्सटाय की प्रसिद्ध कहानी "तीन मौतें" की याद आ जाती है।

शाम को प्रार्थना के बाद एक कोने में कुछ शोर मचा। मालूम हुआ कि नौ अमरीकी जवान (जिनमें चार लड़कियाँ भी थीं) आ पहुँचे हैं। इनमें से ज्यादातर विद्यार्थी थे। नौ में सात गोरे थे और एक भाई, एक बहन नीग्रो। ये सब अमेरिका के अडल्ट यूथ कौन्सिल की तरफ से सिंगापुर में होनेवाली वर्ल्ड असेम्बली ऑफ यूथ में सम्मिलित होने जा रहे थे। दूसरे दिन सुबह उन्होंने हमारे साथ जनदाहा तक दस मील की पैदल यात्रा की।

छठा भाई

जनदाहा जाते समय रास्ते में हम लोग लोमा गाँव में आधे घंटे के लिए ठहरे। लोमा में गाँव के लड़के-लड़कियों ने सूत-कताई का सुन्दर प्रदर्शन किया। इसके बाद सभा हुई, जिसमें बहुत भीड़ थी। श्री दुखायल ने अपना प्रसिद्ध भजन "हाल रे कौआ हाल" सुनाया। इसके बाद बाबा ने कुछ शब्द कहे और बताया कि अपने छठे भाई का छठा हिस्सा हमें दीजिये। इस छठे भाई को भूलना नहीं है। वरना यह देश के लिए उतना ही घातक होगा, जितना कि महाभारत हुआ, जिसका कारण यह था कि पाँच पाण्डव अपने छठे भाई कर्ण को भूल गये थे। रास्ते भर गाँव के नर-नारियों ने "सन्त विनोबा अमर हों" और "हमारे गाँव में बिना जमीन, कोई न रहेगा, कोई न रहेगा" के नारों से आसमान गुँजा दिया। हमारे अमरीकी मित्र इस स्वागत को देखकर, सो भी सुबह चार-पाँच बजे, हैरान रह गये।

मंत्र की शक्ति

हम लोग जनदाहा पौने आठ बजे पहुँचे। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने बेदखलियाँ बन्द करने की अपील की। उन्होंने कहा कि मिट्टी की

कीमत पैसे से नहीं आँकी जा सकती। पैसा तो नासिक के छापखाने में छपता है। जहाँ जमीन का मूल्य पैसे में खतम, वहाँ आज का सारा अर्थशास्त्र ही खतम। इस तरह के पुराने सारे विचार मरने को हैं। यह विचार नहीं, अविचार है। यह तिलक व दहेजवाली प्रथा भूदान के सामने नहीं टिक सकती और न यह हरिजन-परिजन भेद चलेगा। आप क्या समझते हैं कि वेदखलियाँ चलेंगी? अरे मजदूरों, जिस जमीन पर हमेशा से काम करते चले आये हो उस पर डटे रहो। कहो कि हम नहीं हटेंगे। ये वेदखल करनेवाले तुम्हारा क्या कर सकते हैं? हाँ, मारेंगे-पीटेंगे। लेकिन इससे इनके हाथ थकनेवाले हैं। आजकल छीननेवाले बहुत-से हाथ दीखते हैं। पर क्या यह दुःशासन की बराबरी कर सकते हैं? जमीन पर अड़े रहो, तो क्या मजाल है कि कोई वेदखल कर सके। भूदान का काम जोरों से चलने दो, वेदखलियाँ आप-से-आप खतम। जमीन का मालिक अब कोई नहीं। मालिक तो सिर्फ वही एक। हम सिर्फ उसी एक मालिक को पहचानते हैं। राजा राम राम राम। अंग्रेज कैसे गये? मंत्र का परिणाम। उसी तरह जहाँ नया मंत्र चला, वहाँ इनकी भी मालकियत खतम।

बाबा ने आगे चलकर कहा कि भूदान में जब जमीन ली जायगी, तब क्या सम्पत्तिवालों की सम्पत्ति सुरक्षित रहेगी? यह आन्दोलन सर्वांगी है। हरएक को देना ही है। आगे सब मिलकर काम करेंगे, खायेंगे, खेलेंगे और गायेंगे। बराबरी का नाता होगा, दर्जों का फरक नहीं चलेगा। आपकी तरफ से हम भूमि का हक माँगते हैं। दुर्योधन ने हक के तौर पर सूई की नोक भर भी जमीन न दी। इसके कारण महाभारत हुआ। तो हमें जमीन क्यों मिलती है? हम कहते हैं कि वह जमाना बालकृष्ण का था और यह कालकृष्ण का है। इसके आगे कौन टिकेगा? इस वास्ते हम जमीनवालों से कहते हैं कि आप भी निमित्त बन जाइये। जमीन तो जानेवाली है। इस नाटक में ईश्वर का औजार बनकर हिस्सा लीजिये

और पुण्य मुफ्त में हासिल कीजिये। जो लोग उदारता से जमीन देंगे उनकी इज्जत होगी, रौनक बढ़ेगी। सरकार ने मरने पर टैक्स (डेथ ड्यूटी) लगाया है। अरे भाई, मरने के बाद जब सम्पत्ति जानेवाली है, तो पहले ही क्यों न दे दो ? अगर जीते-जी नहीं देते, तो गरीब लोग तुम्हारे मरने की वासना करेंगे। भूदान-यज्ञ से जीवन का परिवर्तन होनेवाला है। आखिर में हम आपसे कहना चाहते हैं कि बेदखली में झुकना नहीं चाहिए। हिम्मत के साथ खड़े रहना, न पीठ दिखाना है, न उल्टा जवाब देना है। जीत तुम्हारी है, क्योंकि भगवान् तुम्हारे साथ है।

बाबा के इस प्रवचन से श्रीमानों में तहलका मच गया। हमने देखा कि एक बड़े जमींदार साहब अपने मित्र से कहते थे, "यह क्या सन्त का भाषण है, क्या सन्त ऐसे बोला करते हैं ?" दूसरी तरफ चार मजदूर कहीं बैठे हुए बात कर रहे थे। उन्हें अचम्भा हो रहा था कि यह सब क्या है ? उनमें से एक ने ठंडी साँस लेकर और गहरे विश्वास के साथ अपने साथियों से कहा, "बाबा बिना बटौने ना रहतन"।

क्रांति के नये मूल्य

६ अगस्त, मुजफ्फरपुर जिले में हमारी इस यात्रा का आखिरी पड़ाव है। हम लोग चमरहरा गाँव में ठहरे। रास्ते में एक गाँव में जब कुछ लोगों ने बाबा से रुकने को कहा, तो बाबा ठहर गये और उन्हें चेतावनी दी कि पैसे के लालच में आकर तम्बाकू जैसी हानिकारक फसल पैदा करके आप सब बड़ा पाप कर रहे हैं। तीसरे पहर कार्यकर्ताओं की सभा में किसी मनचले ने कह दिया कि आजादी के साथ क्रान्ति तो हिन्दुस्तान में हो ही गयी, अब और क्रांति की क्या जरूरत है ? शायद वह बेचारा खुद नहीं समझ रहा था कि क्या कह रहा है ? लेकिन बाबा को तो वह मानो जले घाव पर नमक छिड़कने जैसा लगा। वे उस समय तो चुप रहे, लेकिन प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने अपना दिल खोलकर रख दिया।

बाबा ने कहा कि कुछ लोग समझते हैं कि जहाँ स्वराज्य हासिल हुआ, उसके बाद क्रान्ति का काम खत्म हुआ, अब सुधार का ही काम रह जाता है। मेरा इसमें विश्वास नहीं है। मैं समझता हूँ, क्रान्ति अभी हुई ही नहीं है। स्वराज्य मिला, उससे क्रान्ति नहीं, राज्यान्तर हुआ है। हाँ, राज्य हमारा है और उसमें विकास के लिए बहुत अनुकूलता है। पर वह क्रान्ति नहीं है। क्रान्ति होती तो देश की शक्ल दूसरी होती। आज जो सुस्ती और निराशा दिखायी देती है वह तब नजर न आती और कार्यकर्ता लोग सतत लोक-सम्पर्क के काम में लगे होते। मैं स्वराज्य की कीमत कम नहीं कर रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि दो हजार साल के बाद हमें मौका मिला है कि अपने इच्छानुसार हम अपने देश को बना सकते हैं। लोक-शक्ति का हम संगठन कर सकें, ऐसी सहूलियत पिछले दो हजार साल में कभी प्रकट नहीं हुई थी। दो हजार साल पहले जो मौका था वह फिर से आया है। लेकिन उसके मुकाबले कहीं ज्यादा ताकत आज बन सकती है। युधिष्ठिर के जमाने में जो यात्री लोग धर्म का सन्देश लेकर रामेश्वर से काशी आते-जाते थे, उन्हें वह मदद हासिल नहीं थी, जो विज्ञान से आज हमें मिल सकती है। उनके सामने सीमित कार्य था, आज असीमित है। ऐसा बड़ा अवसर हमारे देश के इतिहास में कभी नहीं आया था। इस तरह मैं स्वराज्य का गौरव गाता हूँ। तिस पर भी मैं कहता हूँ कि स्वराज्य में क्रान्ति नहीं हुई, अभी होनी है।

बाबा ने फिर कहा कि कल तक जो क्रान्ति की बातें करते थे वह भी आज विकास की बातें करते हैं। विकास-योजनाओं की हम कदर करते हैं। पर हम पूछते हैं कि ये किस बुनियाद पर खड़ी की जा रही हैं। अगर सरकारी सत्ता के आधार पर लोग भरोसा करते चले जायँ और उसी आधार पर विकास हो, तो क्या इससे हिन्दुस्तान की समस्या हल करने की आशा हो सकती है? हम नहीं सोचते कि विकास-योजनाएँ यह काम कैसे कर सकेंगी? हम क्रान्ति चाहते हैं, तो कुछ

लोग समझते हैं कि क्रान्ति माने, राज्य-व्यवस्था बदलना। अरे, राज्य-व्यवस्था को तो हम शून्य बना देना चाहते हैं। समाज में आज जो मूल्य स्थापित हैं उन्हें ही हम बदल देना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि मेहतर से मंत्री तक की सेवा का दर्जा समान माना जाय। पैसे की कीमत मैं नहीं मानता। उसे छोड़ ही देता हूँ। लेकिन दोनों की प्रामाणिक सेवा का नैतिक दर्जा एक समान माना जाय। मैं पूछता हूँ कि जिन मेहतरों को स्वराज्य में प्रतिष्ठा हासिल नहीं है उनके लिए स्वराज्य की क्या कीमत है? दूसरा सवाल मैं यह पूछता हूँ कि हम जैसों की क्या कीमत है, जो स्वराज्य में मेहतरों से इस तरह गुलाम बनाकर काम लेते हैं? वह भी गिरे, हम भी गिरे। दोनों की नैतिक कीमत नहीं जैसी है। हम नहीं समझते कि ऐसे स्वराज्य की कोई नैतिक कीमत या प्रतिष्ठा है। यह हम कठोर बात कह रहे हैं, लेकिन सत्य है। हमें हरिजनों को मुक्ति दिलानी होगी। आपके बिहार में बहनों को जड़ वस्तु माना जाता है। इसके बजाय उनको पेटी में बन्द करके रखते तो ज्यादा कीमत हो जाती। क्या यही स्वराज्य की प्रतिष्ठा है? कानून में वोट तो सबको मिला है, पर व्यवहार में इतना फर्क क्यों है? ये सारे फर्क कैसे दूर होंगे, इनको कौन मिटायेगा? यह सब काम लोकशक्ति के द्वारा ही हो सकते हैं। पूरा राज्य घास के तिनके के समान छोड़कर हमारे यहाँ के राजा लोग चले जाते थे। यह जो तोड़ने-पटकने की शक्ति है, यही मनुष्य को चाहिए। इस काम के लिए अपना सर्वस्व देनेवाले लाखों-करोड़ों लोगों को तैयार होना चाहिए। क्रान्ति के काम फुरसत से नहीं होते।

० ० ०

हमारे देश पर जो बड़ी आपत्ति है वह यह नहीं कि यहाँ बाढ़ आती है या कम बारिश होती है, बल्कि यह कि हमारे ग्रामोद्योग टूट रहे हैं। हालत यह है कि बाढ़पीड़ित प्रदेशों में कोई काम है ही नहीं। खेतों में भी कोई काम ऐसे मौकों पर नहीं रहता। जैसा कि गांधीजी ने बताया था, देहात में लोग सूत कातते होते, तो इस मुसीबत में सूत के बदले अनाज ले लेते। हिन्दुस्तान के किसान केवल खेती के सहारे नहीं टिक सकते, ग्रामोद्योग चाहिए ही।

बाढ़पीड़ित दक्षिण दरभंगा में जो हमारी यात्रा हुई उसकी याद सदा बनी रहती है। अनेक संस्मरणों की अमिट छाप दिल पर बनी रहती है। उनमें से दो ये हैं :

(१) एक गाँव बाढ़ से तबाह हो चुका है। चारों तरफ पानी-ही-पानी। गाँव क्या, एक टापू। एक हरिजन बुढ़िया अपने दरवाजे पर बैठी रो रही है। जोर-जोर से हिचकियाँ ले रही है। नजदीक में ही एक पक्का मकान है। एक सुन्दर नौजवान उसमें से बाहर निकला। बाबा उससे पूछने लगे कि क्यों भाई, इस गरीब बुढ़िया का घर खड़ा करने में आप कुछ मदद नहीं कर सकते ?

नौजवान ने छूटते ही जवाब दिया कि हमारी हालत खुद ही इतनी खराब है, हम क्या कर सकते हैं।

बाबा ने कहा कि लेकिन उसकी और आपकी हालत में जमीन-आसमान का फर्क है।

बहुत से और लोग जमा हो गये।.........। उन सबने बाबा

से वादा किया कि हम इस बुढ़िया की जितनी मदद हो सकेगी, करेंगे।

(२) गाँववालों का एक डेपुटेशन बाबा से मिला। अपने स्मरण-पत्र में उन्होंने लिखा कि हम इन दिनों बिलकुल बेकार हैं, हमें मुफ्त राशन या खैरात नहीं चाहिए। हम काम चाहते हैं और चर्खा चलाने को तैयार हैं।

× × ×

"पानी-पानी सब कहीं, पर पीने को एक बूँद नहीं"—इस अर्थ की अंग्रेजी में एक मशहूर कहावत है। दरभंगा जिले के बाढ़-पीड़ित क्षेत्र की हालत सचमुच वैसी ही है। अगस्त की ११ तारीख से लेकर २६ तक सन्त विनोबा ने अपनी भूदान-यात्रा के सिलसिले में इस जिले के समस्तीपुर सब-डिवीजन का दौरा पैदल और नाव पर किया। इस इलाके के लोगों का दुखड़ा बयान के बाहर है। यहाँ के रोसड़ा और सींगिया थाना शायद हिन्दुस्तान के सबसे ज्यादा बेहाल और मुसीबतजदा हिस्सों में हैं। पिछले जनवरी महीने में जब भूदान-प्राप्ति के लिए मैं यहाँ आया था, तो यह देखकर दंग रह गया कि अगहन-पूस के उन दिनों में भी वहाँ के गरीबों को अनाज देखने को नहीं मिलता था और घोंघा नाम के कीड़ों पर ही सन्तोष करना पड़ता था। बाढ़ ने उनकी आफत को और भी ज्यादा भयानक बना दिया है। सच तो यह है कि देश भर की यात्रा के दौरान में मुझे कहीं भी ऐसे चेहरे देखने को नहीं मिले, जैसे यहाँ पर। ये चेहरे एकदम पीले, नीरस और फिक्र से सताये हुए। शब्दों में उनकी तस्वीर खींचना नामुमकिन ही है। उनके साथ इन्साफ करते हुए अगर कुछ कहा भी जाय, तो अत्युक्ति मालूम होगी। यहाँ के गरीबों और अमीरों के बीच की जो खाई है वह धरती और आसमान के बीच के फर्क से ज्यादा है। यह कहना मुश्किल है कि उनके लिए स्वराज्य भी कोई माने रखता है।

मालकियत मिटानी है

शनिवार, सात अगस्त को हमने दरभंगा जिले में प्रवेश किया। मोहद्दीनगर थाना के शाहपुर पटोरी गाँव में पड़ाव डाला। उस दिन दो घंटे तक समाजवादी नेता श्री अशोक मेहता बाबा से मिले। शाम की प्रार्थना में अपार भीड़ थी। उनको देखकर बाबा ने कहा कि आप इतनी बड़ी संख्या में मौजूद हैं, सो हम सब वानर हैं, जो रावण के मुकाबले के लिए तैयार हुए हैं। रावण कौन है? तुलसीदासजी ने समझाया है, 'महा मोह रावण' याने रावण वही है, जो हृदय के अन्दर बड़ा मोह है। यह रावण दशमुखी है। एक मुँह से बोलता है कि यह खेत मेरा, दूसरे मुँह से कहता है कि यह घर मेरा, तीसरे से कहता है कि यह धन मेरा,......। इस तरह एक-एक मुँह से मालकियत पुकार रहा है। यह जो मालकियतवाली बात है उसीको मिटाना है। जो मालिकी का दावा करते हैं वे ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध खड़े होते हैं। इसलिए छठा हिस्सा दे दो और मालकियत मिटा दो।

वेदखलियाँ बन्द कीजिये

इसके वाद बाबा ने वेदखलियाँ बन्द करने की अपील की। वेदखल करनेवालों से कहा कि हमें वेदखलवाली जमीन दान में दीजिये और उसके पीछे लिख दीजिये कि फलाने काश्तकार को देनी है, जो पहले से इस पर काम करता था। आपका दान होगा और अन्याय भी मिटेगा। जो वेदखल होते हैं उनसे हम कहना चाहते हैं कि ईश्वर का नाम लेकर डटे रहिये, हटिये मत। कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि हमारी यात्रा के दौरान में अगर ऐसे मौके पड़ें, तो ऐसे मामले हमारे सामने लायें। जहाँ हम नहीं जा सके वहाँ कार्यकर्ताओं को खुद प्रेम से पहुँचना चाहिए।

अगले दिन जब हम मोहद्दीनगर पहुँचे, तो आसपास के थानों के कार्यकर्ता भी मौजूद थे। उन्होंने कहा कि बाढ़ की जो भयानक हालत हो रही है उसमें बाबा की यात्रा होना नामुमकिन है। कहा यह गया कि दलसिंग-

सराय में कम-से-कम दस रोज ठहर जायँ और फिर यात्रा शुरू करें। बाबा बहुत शान्ति के साथ उनकी दलीलें सुनते रहे। जब सारी चर्चा पूरी हो गयी, तो बाबा ने अत्यन्त नम्र भाव से कहा कि अगर मुसीबत के समय में ही हम अपने भाइयों से मिलने नहीं जाते, तो हमारी यात्रा का प्रयोजन ही क्या है ? इस समय जब उनके ऊपर महान् विपत्ति आयी हुई है, तो मेरा धर्म है कि उनसे मिलूँ, उनके दुख-दर्द में हाथ बँटाऊँ और जो कुछ बन पड़े, करूँ। यह सुनकर वे सब दंग रह गये और कहने लगे कि बाबा नहीं माननेवाले हैं। इतनी देर में लक्ष्मी बाबू भी आ पहुँचे। जिला संयोजक श्री गजानन बाबू को इससे बड़ा सन्तोष हुआ। लक्ष्मी बाबू के सुझाव पर यह तय पाया कि बाबा की यात्रा जारी रहेगी, फर्क केवल यह होगा कि चूँकि कार्यकर्ताओं ने समय माँगा है इसलिए पड़ाव में कुछ फेर-बदल कर दिया जाय। इस प्रकार ११ से २७ तारीख तक का हमारा कार्यक्रम थोड़ा-सा बदल दिया गया।

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

मोहद्दीनगर में शाम के प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि हम चाहते हैं कि इसके आगे जमीन की खरीद-बिक्री न हो। भूमि अपनी माता है, उसकी सेवा ही की जा सकती है। देने से इज्जत बढ़ती है, मुहब्बत हासिल होती है, आत्मा में तसल्ली का अनुभव होता है। हम सबको सुखी बनाना चाहते हैं। सुख की खूबी यह है कि देने से बढ़ता है और दुःख की खूबी यह है कि बाँटने से घटता है। हम चाहते हैं कि दुःख घटे। इस वास्ते हम कहते हैं कि जिसके पास जमीन है वह उसे दे ही डाले। मिथिला प्रदेश में कोई भी ऐसा न रहे, जो बेजमीन हो। बाबा ने यह भी कि कहा कि गाँव-गाँव में उद्योग खड़े करने हैं। बिना उद्योग हम पराधीन रहेंगे। "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।" दरभंगा जिले में खादी के ज्यादा-से-ज्यादा कार्यकर्ता हैं। हम चाहते हैं कि मिथिला

में कोई ऐसा घर न हो, जहाँ चर्खा न चले। घर-घर में जैसे रोटी बनती है वैसे ही कपड़ा बनना चाहिए।

मऊ वाजिदपुर जाते हुए, नौ अगस्त को, खूब वारिश हुई। जब हम पड़ाव के पास पहुँच रहे थे, तो स्कूल के बच्चों ने बड़े जोश के साथ स्वागत किया। उन्होंने बाबा को घेर लिया। बाबा ने एक की उँगली पकड़ी और फिर एक-दूसरे को उँगली पकड़ने को कहा। इसके बाद वे तेज गति से से चलने लगे। लड़कों को दौड़ना पड़ा। तब बाबा भी दौड़े और बच्चों को तब और भी तेज दौड़ना पड़ा। बाबा ने जब देखा कि बच्चे थक गये हैं, तो उन्होंने गति धीमी कर दी और कहा कि वह सामने खंजरी लिये दुखायलजी जा रहे हैं, उन्हें दौड़कर पकड़ लो और उनसे कहो कि भजन सिखाइये। उन्होंने दुखायलजी को पकड़ लिया और "हाल रे कौआ हाल" का गाना दुखायलजी उन्हें सिखाने लगे।

एक गाँव, दो स्कूल

मऊ वाजिदपुर जब हम पहुँचे तो एक बड़ा दुःखद समाचार मिला। हम लोग ठहरे तो मिडिल स्कूल में थे, लेकिन मालूम हुआ कि यहाँ पर दो हाईस्कूल चलते हैं और दोनों में बड़ा वैर और मत्सर है। बाबा ने कहा कि इन दोनों स्कूलों को एक हो जाना चाहिए। वहाँ के लोगों ने ऐसी माँग भी की और कहा कि अगर दोनों रहें, तो दोनों टूटेंगे। बाबा से दोनों स्कूलवालों की तरफ से कहा गया कि हम आपका फैसला मानेंगे। तय यह पाया कि दूसरे दिन दलसिंगसराय में दोनों पक्ष आयें और तब आखिरी फैसला कर दिया जाय। लेकिन दुर्भाग्य की बात थी कि एक ही पक्ष के लोग आये और दूसरे पक्षवालों ने कहला दिया कि तबीयत खराब हो गयी। इस तरह वह मामला लटकता रह गया। दुःख की बात है कि शिक्षा जैसे निर्दोष क्षेत्र में दलबन्दी और भेद-भाव इतने भयानक रूप से घर कर बैठे हैं। क्या आजाद हिन्दुस्तान में इस तरह की चीजें बदस्तूर जारी रहेंगी?

तीव्रता की जरूरत

तीसरे पहर कार्यकर्ताओं की सभा में एक भाई ने कह दिया कि इस थाने का कोटा तो आठ हजार एकड़ का है, लेकिन चार हजार एकड़ से ज्यादा जमा नहीं हो सकता और वह भी डेढ़ वर्ष में। एक जिम्मेदार कार्यकर्ता के मुख से ऐसी वाणी सुनकर कौन हैरान न होगा? बाबा ने प्रार्थना-प्रवचन में इसका हवाला देते हुए कहा कि जो डेढ़ साल की बात करेगा वह कयामत के दिन तक कुछ नहीं कर सकेगा। यह काम थोड़ा-थोड़ा फुरसत से करने का नहीं है। जहाँ हृदय में सचाई होती है वहाँ यह बात नहीं चलती। अगर यमराज का बुलावा आयेगा, तो क्या यह कहोगे कि फुरसत नहीं है। फौरन जाना पड़ेगा। इसी तरह जब धर्म का बुलावा आता है तब मानो मृत्यु ने अपनी चोटी पकड़ ली। धर्माचरण में तीव्रता की जरूरत है। गंगा निरन्तर बहती है। सूर्य सतत उगता और डूबता है। अगर ये भी रुक जायँ, तो हमारी क्या हालत होगी? इसलिए जो कुछ करना है, सतत करना है। जहाँ संकट आया, वहाँ दया आती है। पर रोज के जीवन में हम कैसे निष्ठुर बनते हैं? इस पर हम जरा भी ध्यान नहीं देते। हिन्दुस्तान का सारा धर्म-कार्य भूला हुआ है। रामनवमी को उपवास कर लिया, कृष्णाष्टमी और शिवरात्रि को व्रत कर लिया। उधर शादी, जन्म और मौत के मौके पर ब्राह्मण को कुछ दक्षिणा दे दी। बस, इतने में ही हमारा धर्मकार्य खतम। ऐसा नहीं मालूम होता कि धर्म नित्य की चीज है। इसी तरह जो राष्ट्रीय कार्यकर्ता हैं उन्होंने भी अपने दिन बना रखे हैं। २६ जनवरी, ६ अप्रैल, १५ अगस्त आदि। उस दिन एक भजन गा दिया, झंडे की सलामी दे दी, राष्ट्र-कार्य खतम। धर्म-कार्य की यह हालत, राष्ट्र-कार्य की वह हालत। लोग रात-दिन अपने सांसारिक काम में, विषय-वासना में ही डूबे रहते हैं और यह कभी नहीं सोचते कि इससे मुक्ति पाना है। आखिर में बाबा ने कहा कि ६ अगस्त को वीरों ने संकल्प किया था, उस पर अमल हुआ, उसी तरह आज भी आप संकल्प

लें। मऊ वाजिदपुर के निकट खनुवा गाँव के सभी छोटे-बड़े भूमिवानों ने थोड़ी-बहुत भूमि दान में दी।

दस तारीख को हमारा पड़ाव दलसिंगसराय में था। रास्ते में बिहार के महाकवि विद्यापति की समाधि का बाबा ने दर्शन किया। बाबा बाद में रास्ते में कहने लगे कि मिथिला में ज्ञान की बड़ी पुरानी परम्परा चली आती है। शांकरभाष्य की पहली टीका एक मैथिल विद्वान, पंडित वाचस्पति मिश्र ने ही लिखी थी। अपनी स्त्री के नाम पर उन्होंने अपनी टीका का नाम भामिति रखा। फिर इसके ऊपर टीका लिखी गयी और इस प्रकार चार टीकाएँ और हुईं—कल्पतरु, सुमन, परिमल, भ्रमर। बाबा एक पुस्तकालय में भी रास्ते में गये। पुस्तकालय में उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हम आश्रम में दुर्जन को जगह नहीं देते हैं, उसी प्रकार पुस्तकालय में गन्दी पुस्तकों को नहीं रखना चाहिए और विवेकबुद्धि से उन्हें पसन्द करना चाहिए। थोड़ी-थोड़ी बूँदें पड़ने लगीं। बाबा दौड़ने लगे और "राही मन्दी गति न पड़े" गाते हुए पड़ाव पर पहुँच गये।

देश की गरीबी और भूदान

क्या भूदान से देश की गरीबी का सवाल हल हो सकता है, यह बात एक कार्यकर्ता ने बाबा से पूछी। बाबा ने कुछ विस्तार के साथ प्रार्थना-सभा में इसका उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि दो सौ साल से जो शोषण हिन्दुस्तान में चला है, उससे जो बेकारी और गरीबी फैली है, उसको मिटाने के लिए कई बातें करनी होंगी। जमीन का बँटवारा सबसे लाजिमी बात होगी। आज जमीन की मालिकी की जो बात चल पड़ी है, उसको बदलना होगा। इसके साथ-साथ पानी का इन्तजाम करना होगा। मैं चाहता हूँ कि हर पाँच एकड़ जमीन में एक कुँआ जरूर रहे। इसलिए कूप-दान-यज्ञ चलाया है। मेरी माँग है कि हर शादी के साथ, कन्या-दान के साथ कुँए का दान भी जरूर किया जाय। दूसरी बात यह करनी होगी कि पुरानी तालीम न देकर नये प्रकार से नयी तालीम अपने

लड़के-लड़कियों को देनी होगी। नये मूल्य लाने होंगे और नये विचार के अनुसार तालीम चलानी होगी। स्वावलम्बन का माद्दा सबमें होगा, क्या विद्यार्थी और क्या शिक्षक, हरएक में। श्रम की प्रतिष्ठा होगी और ज्ञान-विज्ञान की कमी न होगी। इसके साथ-साथ यह भी करना है कि गाँव के जो धन्धे टूट गये हैं वे सारे दुबारा खड़े हो जायँ। जैसे सीता और राम की हम एक ही उपासना समझते हैं वैसे ही जमीन के बँटवारे और ग्रामोद्योग की। गाँव-गाँव में लोगों को संकल्प लेना होगा कि जो चीज गाँव में तैयार हो सकती है वह बाहर से गाँव में नहीं आयगी। एक और भी बात करनी है, जिसके बिना धर्म टिकनेवाला नहीं। जब वोट का हक २१ साल से कम उम्रवाले को नहीं है, तो विवाह जैसी प्रतिज्ञा का हक कम उम्र के लड़के-लड़कियों को कैसे दिया जा सकता है? इसलिए शादी की उम्र बढ़नी चाहिए। इसके साथ-साथ आजकल बुढ़ापे तक, अन्तिम समय तक जो गृहस्थाश्रम चलता है वह भी गलत चीज है। इसलिए ४०-४५ साल की उम्र होने पर पति-पत्नी को भाई-बहन जैसा रहना चाहिए और समाज-सेवा में लग जाना चाहिए। समाज-जीवन को स्वस्थ और धर्मनिष्ठ बनाना होगा। सुबह जल्दी उठना, रात को जल्दी सोना, मन, वचन, कर्म की निर्मलता, गीता, कुरान और रामायण जैसे ग्रन्थों का आश्रय लेना, ये सब काम करने होंगे। आज जो पचासों किताबें चल पड़ी हैं, जो वासना बढ़ानेवाली हैं, जो सबको भ्रष्ट करनेवाली हैं, उन सबको जला देना होगा।

११ अगस्त से हमारी यात्रा ठेठ बाढ़-क्षेत्र में शुरू हो गयी। ११ तारीख को हमारा पड़ाव पतेली नाम के एक गाँव में हुआ, जो जमुआरी नदी के निकट है। इस छोटी-सी धारा ने भी इन दिनों तूफान मचा रखा है। दोपहर को एक बूढ़े कार्यकर्ता बाबा से मिलने आये। उन्होंने बताया कि उनके लड़के को, जो भूदान में काम कर रहा है और बेदखलियों में दिलचस्पी लेता है, जमीन्दारों की तरफ से

सताया जाता है और गुण्डा-दफाओं में फँसाने की कोशिश होती है।
प्रार्थना-सभा में विशाल भीड़ देखकर हम लोग दंग रह गये। बाढ़-क्षेत्र और इतनी भीड़! बाबा ने कहा, आपको देखकर मुझे लगता है कि आप महसूस करते हैं कि बाढ़ का संकट तो आज है, कल इससे निस्तार होगा, लेकिन मानव ने अपने लिए जो संकट खुद निर्माण कर लिये हैं वे कहीं ज्यादा भयानक हैं। बाढ़ में सबके लिए हमदर्दी पैदा होती है, लेकिन मनुष्य के बनाये संकट में कोई हमदर्दी आपस में नहीं मिलती। बावजूद बाढ़ के इस बड़ी तादाद में जो आप आये हैं, तो आपने समझ लिया है कि मनुष्य ने जो संकट खड़ा किया है उससे जल्दी-से-जल्दी मुक्त होना है।

भूदान समितियाँ और बेदखलियाँ

बेदखली की चर्चा करते हुए बाबा बोले कि हम समझ गये हैं कि ये सारे अज्ञान हैं। जहाँ ज्ञान पहुँच जायगा, उसे कबूल किये बिना चारा नहीं रहेगा और तब तक छोटे किसान, जो बेदखल किये जाते हैं या कार्यकर्ता, जो तंग किये जाते हैं उनकी रक्षा कैसे हो? होना यह चाहिए कि भूदान-यज्ञ की समितियों को बेदखलियाँ रोकना अपना ही जिम्मा समझना चाहिए। बेदखली पर विचार करना होगा और अपने दफ्तर में ऐसे लोगों को रखना होगा, जो ठीक तरह से तहकीकात कर सकें। कार्यकर्ताओं की तरफ से जो शिकायतें आयें उनकी जाँच हो और बाबा का सन्देश भूमिवानों तक पहुँचाया जाय। सच्चाई का असर होता है। यह सम्भव है कि कोई निष्ठुर हो गया हो, कहना न माने, तो उसके मुकदमे अदालत में चलाये जायँ। ऐसे मौके पर वकीलों से बुद्धिदान लेकर गरीबों के मुकदमे लड़े जायँ और सरकारी अधिकारियों को स्थान पर ले जाकर दिखाया जाय कि सारी जमीन छीन ली और घर के अन्दर तार के काँटे लगाये जा रहे हैं। सार यह है कि कार्यकर्ता को महसूस हो कि उसके पीछे कोई ताकत मौजूद है और जनता को भी यह महसूस हो। हम झूठ का बचाव

नहीं करेंगे। कार्यकर्ता से या गरीबों से अन्याय हुआ होगा, तो बचाव नहीं करेंगे। अगर उनका काम ठीक है, फिर भी उन पर जुल्म ढाया जाता है, तो उनके पीछे संगठन खड़ा है, ऐसा दीखना चाहिए। इसलिए मैं चाहता हूँ कि भूदान-यज्ञ-समितियाँ बेदखली को अपना काम समझें।

प्रेम की गंगा

बाबा ने आगे चलकर कहा कि हम चाहते हैं कि गाँव के लोग पैसे के पंजे से मुक्त हों। गाँव की जरूरत की हर चीज गाँव में बने और शहरवालों को उल्टे गाँव में आना पड़े। शहरवाले तो पीछे रहनेवाली जमायत है। क्रान्ति गाँववालों को करनी है। उल्टी गंगा बहानी है। आजकल शहरों से गंगा देहात की तरफ बहती है। बीड़ी की गंगा, शराब की गंगा, सिनेमा की गंगा, काम-चोरी की गंगा आदि। हमें उल्टी गंगा बहानी है—प्रेम की गंगा, सहयोग की गंगा, परिश्रम की गंगा, मालकियत मिटाने की गंगा आदि। इसी वास्ते हम चाहते हैं कि आप यह सब समझ लें और इस काम को उठा लें। हम समझते हैं कि आप लोगों की मदद से आर्थिक क्रान्ति होकर ही रहेगी।

नींद से एक पाठ

बारह तारीख को हमारा पड़ाव रुपौली नाम के गाँव में था। हम लोग मिडिल स्कूल में ठहरे थे और सारा दृश्य बहुत ही सुहावना था। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि प्रार्थना में दुःखी अपना दुःख और सुखी अपना सुख भूल जाता है। इससे सबको आनन्द मिलता है। ईश्वर ने योजना की है कि जहाँ भेद-भाव खतम किये कि एकता का अनुभव आता है। हर मनुष्य रात को रोज इसका अनुभव करता है। क्या रात को सोने के बाद ब्राह्मण, ब्राह्मण रहते हैं, हरिजन, हरिजन रहते हैं, बड़े लोग बड़े और छोटे छोटे ही बने रहते हैं? नहीं, वह परमेश्वर के सामने अपने को भूलकर समर्पित कर देते हैं और बड़ा आनन्द आता है। नींद में सब भेद खतम। इससे सबक लेना चाहिए कि जाग्रति

का जो जीवन है उसमें सुख कैसे आये ? भगवान् ने सुख का रास्ता दिखला दिया है। सुख चाहते हो, तो छोटाई-बड़ाई छोड़कर एक हो जाओ। परिवार में आनन्द का कारण एकता ही है। जितनी एकता हम व्यवहार में ला सकते हैं उतने हम सुखी होंगे। रोज भगवान् यह तालीम देते हैं। हरएक मनुष्य इसका अनुभव करता है। आप अगर एकता का व्यवहार करें, तो हरएक आपकी सेवा को दौड़ता है। लेकिन पैसा कमाया और प्रेम गँवाया, तो कुछ नहीं किया। हाँ, पैसे की कीमत है; पर प्रेम खोकर जो पैसा हासिल हो उसकी क्या कीमत ? सुख अल्पता में नहीं, विशालता में है। समाज में जितनी समानता लायेंगे उतना ही समाज सुखी होगा, एकरस बनेगा। आप पूछने पर कहते हैं कि मेरे पास बीस एकड़ जमीन है, पचास एकड़, सौ एकड़। यह क्यों नहीं कहते कि तीस करोड़ एकड़ है ? छोटी चीज खतम करो और विशाल बनो। बिन्दु अगर समुद्र में लीन होता है, तो आनन्द पाता है। अगर समुद्र से अलग रहता है, तो सूख जाता है।

इस बीच पानी पड़ने लगा। बाबा ने कहा कि आप डरिये मत। छाते बन्द रखिये। छाते आपस में भेद खड़ा करते हैं। परमेश्वर की कृपा का एक साथ आनन्द लूटिये। लेकिन हाँ, जिस गद्दी पर हम बैठे हैं उसको हटा दीजिये (बाबा गद्दी हटाकर खाली मेज पर बैठ गये)। बाबा बोले, इन गद्दियों की वजह से ही दुनिया में मुसीबतें आयी हुई हैं। राजा की गद्दी, सेठ की गद्दी और महन्त की गद्दी। गद्दी के दिन गये। दुनिया की सारी सम्पत्ति किसी एक आदमी की नहीं हो सकती। इसी तरह से गाँव की जमीन मेरी-तेरी नहीं, कुल गाँव की है।

रास्ता चुनने की आजादी

शुक्रवार को रुपौली से समस्तीपुर जाते समय रास्ते में बाबा लगभग सवा मील घुटने ऊँचे पानी में चले। एक घंटे से ऊपर लगा। नाव मौजूद थी, लेकिन नहीं बैठे। बोले, नाव हरएक को कहाँ नसीब होती है ? दोपहर

को केन्द्रीय सरकार के पार्लियामेण्टरी मिनिस्टर श्री सत्यनारायण सिंह, जो इसी इलाके के बाशिन्दे हैं, बाबा से मिलने आये। यह उनकी पहली मुलाकात थी। शाम को प्रार्थना के बाद दुखायलजी का एक भजन हुआ। फिर सत्यनारायण बाबू का व्याख्यान हुआ, जिसमें उन्होंने अपील की कि सन्त की बात को शिरोधार्य करना चाहिए। इसके बाद बाबा का प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान को आजादी किस तरह हासिल हुई, सब जानते हैं। मगर उसमें केवल अहिंसा का ही चमत्कार था, ऐसी बात नहीं। अगर केवल अहिंसा का चमत्कार होता, तो आजादी के बाद सुस्ती की जगह मस्ती दीख पड़ती और जो बुरे काम हुए वे भी न होते। इसलिए जनता को अहिंसा की ताकत में जो विश्वास आना चाहिए था वह नहीं आया। हमारी अहिंसा, जैसा बापूजी कहते थे, बलवान की अहिंसा नहीं, दुर्बल की थी, लाचारी की अहिंसा थी। लेकिन स्वराज्य-प्राप्ति के बाद हम अब चुन सकते हैं कि हम चाहें तो अहिंसा का रास्ता पकड़ें या हिंसा का, इसकी आजादी है। इसीका नाम आजादी है। लोग कहते हैं कि आजादी हुई, पर हम सुखी नहीं हुए। हम कहते हैं कि जरा ठहरो, आपको चुनाव करना है कि सुख के मार्ग पर चलेंगे या दुःख के मार्ग पर। इसलिए स्वराज्य-प्राप्ति और सुख-दुःख का सम्बन्ध नहीं। हम आजाद हुए हैं, तो हम अधोगति की तरफ जायँ या उन्नति की तरफ, सुख की तरफ जायँ या दुःख की तरफ, यह हमको छूट है। आजादी के बाद चुनने का अब हमें अधिकार है आजादी का यही श्रेष्ठ अर्थ है। लोग हमसे पूछते हैं कि आप पैदल क्यों घूमते हैं? अगर हम चाहते हैं कि कानून से काम हो, तो उसके पीछे क्या ताकत होगी? या तो लोकमत की या डंडे की। अगर लोकमत का बल है, तो अहिंसा का दर्शन है। अगर डंडे का बल है, तो हिंसा का द्योतक है। इसी दृष्टि से भूदान-यज्ञ का महत्त्व है। बात यह नहीं कि कोई यह मसला हल करेगा, बल्कि यह कि "ताला कुंजी हमें गुरु दीन्ही, जब चाहों तब खोलो किवरवा।" यह अहिंसा का

तरीका, सौहार्द का तरीका हम आजमा रहे हैं। बताया जाता है कि समाज स्पर्धा और जीवन के लिए कलह पर टिका है। अगर यह चीज मंजूर करते हो, तो उसकी एक प्रकार की बनावट होगी। अगर मैत्री और करुणा के आधार पर बनाते हो, तो दूसरे प्रकार की। आज समाज में जो कशमकश चली है उसका कारण है मैत्री का अभाव। भूदान-यज्ञ की कोशिश मैत्री और प्रेम पर समाज-रचना करने की है। बाबा ने अन्त में कहा कि इस गाँव का मूल नाम 'समष्टिपुर' है, याने समष्टि की सेवा करनेवाला गाँव। समष्टि इष्टदेव है। हम उसके सेवक और पूजक हैं, ऐसी हम आशा करते हैं।

जेल कबूल करें

शनिवार को हमारा पड़ाव समस्तीपुर से पाँच मील दूर हाँसा नाम के गाँव में था। हम वहाँ के बेसिक स्कूल में ठहरे, जिसकी देख-रेख इन दिनों श्री रामशरण उपाध्याय कर रहे हैं। आप कुछ समय पहले बिहार के शिक्षा-विभाग के उपसंचालक थे। वहाँ पर एक बड़ा भारी वट का पेड़ हमने देखा, जिसकी सोर से चौवन पेड़ और बन गये हैं। यह वृक्ष दो सौ साल पुराना बताया जाता है। उसीकी छाया में शाम की प्रार्थना हुई। ऐसा लगता था कि प्राचीनकाल के किसी तपोवन में सब लोग बैठकर भगवत्-भजन कर रहे हैं। बाबा ने अपने प्रवचन में कहा कि ईश्वर की इच्छा है कि जमीन की मालकियत पटक दो। जमीन के बँटवारे के बाद ग्रामराज्य स्थापित करने का काम करना है। इसलिए हमारी खास माँग है कि आप लोग चार महीनों की, जब तक हम बिहार में रहते हैं, जेल कबूल करें और इस काम में जुट जायँ। अगर हजारों आदमी भूदान-यज्ञ के काम के लिए निकल पड़ते हैं, तो बहुत ताकत पैदा होती है और बेदखली जैसे अन्याय भी खतम होते हैं। अगर आप इस काम को आन्दोलन का सच्चा स्वरूप देते हैं, तो इसका नैतिक दबाव सरकार पर पड़ेगा और देश का नकशा भी बदलेगा।

पंद्रह अगस्त को सवेरे हम लोग हाँसा से रवाना हुए और बूढ़ी गंडक पार करने के लिए नाव में बैठे। लगभग अठारह मील की सफर तय करके ग्यारह बजे सींगिया बुजुर्ग गाँव में (नरहन रेलवे स्टेशन के पास) पहुँचे । रास्ते में हम लोग छतौना गाँव में ठहरे। तीसरे पहर बाबा गाँव भर में घूमे और वहाँ के लोगों का दुःख-दर्द सुना। एक जगह एक बुढ़िया बैठी रो रही थी। उसका मकान गिर चुका था। कोई दूसरा सहारा न था। बाबा ने उसको दिलासा दिया और आस-पास के लोगों से उसकी मदद करने को कहा।

बाढ़ के बावजूद शाम की प्रार्थना-सभाओं में भीड़ जोरदार रहती थी। उस दिन सींगिया में तो दस हजार से कम भाई-बहन नहीं आये होंगे। अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने इस बात की बड़ी खुशी जाहिर की कि इस गाँव में वह आ सके। उन्होंने कहा कि परमेश्वर ऐसी लीला इस-लिए करता है कि हम सब लोग जग जायँ और भाई-भाई के नाते काम करना सीखें। हम यही कहते हैं कि हर आदमी को अपनी सम्पत्ति का छठा हिस्सा दान में देना चाहिए। जिसके पास भूमि है वह भूमि दे, सम्पत्तिवाला सम्पत्ति दे, जिसके पास दोनों नहीं, वह श्रम दे। अगर यह बात चल पड़ी और गाँव के कुल लोगों ने हर साल छठा हिस्सा देना मंजूर किया, तो ये सारे संकट हल हो सकते हैं। सभा में व्यापारी लोग भी थे। उनके सम्बन्ध में बाबा बोले कि ऐसे मौके पर व्यापारी भाव बढ़ा देते हैं, लेकिन यह कमाना नहीं, गँवाना है। ऐसे मौके पर तो लुटाना चाहिए। दिल खोलकर लुटाना चाहिए। छठे हिस्से का दान परोपकार समझकर नहीं, धर्म समझकर करना चाहिए। गाँव के बेजमीन की मदद करना अपना धर्म ही नहीं, अपने पर उपकार है। संकट के मौके पर हम परमेश्वर से विनती करें कि हमने गल्ले की फसल तो खोयी, पर प्रेम कमा लिया। गल्ले की फसल घटी, पर प्रेम की फसल बढ़ी।

गाँव-गाँव में स्वराज्य हो

पन्द्रह अगस्त के राष्ट्रीय पर्व के सम्बन्ध में बाबा ने कहा कि स्वराज्य हासिल हुए आज सात साल पूरे होते हैं। हमें प्रण करना चाहिए कि अपना स्वराज्य पक्का और मजबूत बनायेंगे। गाँव-गाँव में स्वराज्य लायेंगे। यह तभी होगा, जब सारा गाँव परिवार बनेगा। संकटकाल आया, मानो धर्माचरण के लिए मौका मिला। अगर धर्म-भावना दृढ़ होती है, तो स्वराज्य पक्का होता है। धर्म यह नहीं है कि गंगा में जाकर गोते लगायें। अगर गोता लगाने से मुक्ति मिल जाती, तो मछलियों को तो सदा वैकुण्ठ या कैलाश मिलना ही चाहिए, क्योंकि वे पानी में सतत रहती हैं। धर्म इसीमें है कि प्यार की गंगा में, प्रेम-गंगा में गोता लगाया जाय। भाई-भाई की सेवा हो। हरएक के हृदय में जो नारायण प्रकट हुए हैं उनकी सेवा हो। तभी सच्चा धर्म बढ़ता है। इस तरह धर्म की बात हम आपको समझाने आये हैं।

आपत्ति बाँट लें

सोमवार की सुबह सींगिया से हम लोग पाँच बजे रवाना हुए। लगभग तीन मील तक कच्ची सड़क और कांदो में चले। फिर घुटने बराबर, कहीं कमर बराबर और कहीं छाती बराबर पानी में चले। नाव मौजूद थी। लेकिन बाबा ने उसमें बैठने से इनकार किया। इस तरह पानी हेलते-हेलते आठ बजे समर्था पहुँचे। शाम की प्रार्थना साढ़े चार बजे हुई। बहुत से लोग पानी हेल-हेल करके आये थे और पूरी सभा में भींगे कपड़े पहने बैठे रहे। बाबा ने कहा कि आपत्ति मानो भक्ति के लिए मौका है, लुटाने के लिए मौका है। इस तरह आपत्ति भी सम्पत्ति हो जायगी और धर्म बढ़ेगा। हम चाहते हैं कि जो लोग बरबाद हुए हैं उनको मदद मिलनी चाहिए। यह मदद कौन करेगा? जो जिस हालत में है वह अपने से ज्यादा दुःखी को मदद करे। पानी को देखिये, किधर दौड़ता है? हमेशा नीचे की तरफ। चाहे पहाड़ का पानी हो,

चाहे मैदान का, चाहे किसी नाले का, जहाँ का भी हो, हर पानी नीचे की तरफ दौड़ता है। इसलिए जो दुःखी हैं वे अपने से ज्यादा दुःखी की मदद करने के लिए दौड़ें। अगर हम इतना करते हैं, तो जो आपत्ति आती है, वह सबकी आपत्ति बन जाती है। कान में दर्द होता है या फोड़ा होता है, तो आँख रोती है। उससे पूछो कि क्यों रोती है? तो जवाब मिलेगा कि हम अलग-अलग नहीं, एक हैं। पाँव में काँटा लगता है, तो हाथ एकदम झुककर उसके पास पहुँचता है। हाथ यह नहीं कहता कि हम ऊँची जातिवाले हैं और पाँव नीची जातिवाला या अछूत है। जब तक हाथ काँटे को निकाल नहीं देता तब तक उसे चैन नहीं पड़ता। इस तरह गाँव भी एक शरीर है और एक का दुःख दूसरे का दुःख बन जाना चाहिए। आपस की फूट के कारण ही हमारा देश बाहरवालों के सामने टिक नहीं सका। अगर स्वराज्य टिकाना है, तो सब को एक होकर, मिलकर रहना होगा।

सभा में बहनें भी काफी थीं। बाबा ने कहा कि स्त्री और पुरुष, संसाररूपी रथ के दो पहिये हैं। दोनों को विकास का पूरा मौका मिलना चाहिए। विहार में स्त्री-शक्ति परदे के कारण बेकार पड़ी है। आधा समाज ढीला पड़ा है। उसे पक्षाघात लगा है। आप केवल उसे भोग का साधन मानते हैं। उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं है। पर शास्त्र में देखिये, स्त्री को कितना ऊँचा स्थान दिया है। मनु महाराज ने कहा है कि दस उपाध्याय के बराबर एक आचार्य होता है, सौ आचार्य के बराबर एक पिता और एक हजार पिता से बढ़कर एक माता है। उस माता को आपने कैदी बनाकर रखा है। उसको बाहर लाइये और जीवन की शिक्षा दीजिये।

बीमारी से बचने के उपाय

अगले दिन हमारी यात्रा समर्था से नरहन तक हुई। पानी बहुत गहरा होने के कारण नाव में बैठना पड़ा। हम लोग करीब आठ बजे गाँव में पहुँचे।

बाबा ने शाम के प्रार्थना-प्रवचन में कहा कि बारिश के बन्द हो जाने के बाद तरह-तरह की बीमारी फैलती है। उससे बचने के लिए उन्होंने कुछ सुझाव रखे। पहली बात यह कि पानी उबालकर पीना चाहिए। दूसरी यह कि बीमारियाँ गन्दगी से फैलती हैं इसलिए गाँव के जितने लोग हैं वे सब मिलकर फावड़ा, कुदाली, टोकरी लेकर गन्दगी साफ कर डालें। जहाँ कहीं छोटे नाले बहते हों उनके पानी को ठीक से रास्ते दें और पूरा गाँव साफ-सुथरा बना लें। तीसरी चीज, इन दिनों बाजार की मिठाई नहीं खानी चाहिए और न खराब तरकारियाँ ही लेनी चाहिए। अगर तरकारी खाते हैं, तो उसे पकाने के पहले कुएँवाली लाल दवा से धो लेना चाहिए। चौथी चीज यह कि ऐसे मौके पर गल्ले आदि का भाव हरगिज न बढ़ाया जाय। व्यापारी भी सेवक है। व्यापार उसका धर्म है। आफत का फायदा उठाना अधर्म है। पाँचवी चीज यह कि हमें छठा हिस्सा दीजिये। हमारी यह माँग धर्म की माँग है। आदमी को दौलत छोड़कर जाना होता है, पर प्रेम उसके साथ रहता है। इसलिए हम कहते हैं कि जिसके पास जो कुछ भी है उसका एक हिस्सा जरूर दे। पहले खिलाये, पीछे खाये। पहले दे, पीछे ले। इससे गरीबों को राहत पहुँचेगी और श्रीमानों को आत्मसमाधान जैसी अनमोल चीज मिलेगी।

जमीन की मालकियत पटक देने के लिए बाबा ने कहा कि शास्त्रों में बताया गया है—"माता भूमिः पुत्रोहम् पृथिव्याः", जिसका अर्थ है कि भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। भूमिपति नहीं, हम केवल भूमि-पुत्र बन सकते हैं। जमीन के दाम लगना गलत बात है। हमसे एक भाई ने कहा कि उत्तर बिहार में जमीन बड़ी महँगी है। हमने पूछा कि कितनी? बोले चार हजार रुपये बीघा। तो हमने कहा कि अच्छा, एक गढ़ा बनाओ, उसमें धान के बीज डालो, ऊपर से चार हजार रुपया रख दो। फिर चार महीने तक उस पर बारिश होने दो। देखें कि कितनी फसल आती है? अरे भाई, मिट्टी का मोल पैसे में करने चले हो। पैसा जड़ है

और मिट्टी चेतन। चार हजार नहीं, चार लाख रुपये कहो, जमीन की कीमत लगा ही नहीं सकते।

आखिर में बाबा ने समझाया कि अगर आप दान नहीं देते हैं तो इसके माने यह हैं कि लोग आपकी मृत्यु की वासना करें, वे आपके मरने का इन्तजार करें। इससे बढ़कर अपमान क्या होगा? इससे बदतर जीवन क्या होगा? इसलिए बेहतर है कि जीते-जी दे डालिये। हिन्दुस्तान की खूबी यह थी कि तिनके के समान राज्य को छोड़कर राजा लोग प्रजा की सेवा में लग जाते थे। ऐसे महान् देश में हम इतने छोटे दिलवाले बन गये कि जीते-जी नहीं देते। इससे बढ़कर दुर्भाग्य क्या होगा? दिल खोलकर दीजिये और धर्म समझकर दीजिये।

सत्ता गाँव में हो

अठारह अगस्त को हमारा पड़ाव रोसड़ा में था। बाढ़ के कारण खुली जगह न मिल सकी और सभा म्युनिसिपैलिटी के तंग मैदान में हुई। इसमें लोग आसानी से अँट नहीं सके। बाबा ने प्रार्थना-प्रवचन में कहा कि भूमिहीन को भूमि नहीं मिलती है, तो देश के लिए संकट पैदा होता है। सरकार के पास ताकत थोड़ी-सी है पर अहंकार बड़ा है। इस वास्ते आजकल की सरकारें सारी ताकत अपने पास केन्द्र में रखती हैं। मान लीजिये कि दुनिया भर में एक सरकार हो गयी और उसका केन्द्र इराक या मेसोपोटामिया या काकेशस में है। अब अमेरिका में मिसिसिपी नदी में बाढ़ आयी, तो एक टोली उसे देखने इराक से जा रही है। जापान में कोई आफत आयी, तो उसके सर्वे के लिए दूसरी टोली जा रही है। आप सोचें, भला इस तरह से कोई काम बनेगा? इस वास्ते सारी शक्तियाँ केंद्रित करने में जो हानि है उसका अनुभव बाढ़ जैसे संकट के मौके पर साफ जाहिर हो जाता है। इसलिए हमारी माँग है कि ज्यादा-से-ज्यादा सत्ता नीचे, गाँव-गाँव में होनी चाहिए।

नैतिक दुराचार

रोज की तरह बाबा ने व्यापारियों से यहाँ भी लुटाने के लिए अपील की। वह बोले कि अगर हम आपत्ति का फायदा उठाते हैं, तो बेअक्ल-वाले और पतित साबित होंगे। जो आपत्ति हम पर आती है उसका कारण हमारी चरित्रहीनता और ईश्वर-विमुखता है। शायद यही कारण है कि जितना झूठ हिन्दुस्तान में बोला जाता है उतना किसी दूसरे देश में नहीं। वकील, व्यापारी, राजनीतिज्ञ, जो कोई भी हो, हरएक को झूठ बोलने का मानो हमने अधिकार-पत्र दे दिया हो। तो सत्य के लिए हमने कहाँ जगह छोड़ी? कहेंगे कि बच्चों को सत्य बोलना चाहिए और संन्यासी को। नतीजा यह है कि जब कोई भी सत्य नहीं बोलता, तो हमारे स्कूल के बच्चे भी झूठ बोलने लग गये और संन्यासी भी ढोंगी हो गये। शायद संन्यासी जितने खराब हो गये हैं उतने गृहस्थ भी नहीं और बच्चों को तो चोर ही समझा जाता है। अपनी मैट्रिक की परीक्षा में जब मैं बैठा, तो जहाँ-तहाँ लोगों को खड़ा देखकर घबड़ा गया। वे इसलिए खड़े थे ताकि बच्चों को पकड़ें। याने बच्चे चोर हैं। बच्चों के ऊपर इनको विश्वास नहीं। मैं सोचने लगा कि जब परीक्षा देनेवाले बच्चे तुम्हारे विश्वास की कसौटी में पहले ही फेल हो चुके, तो परीक्षा किसकी लेते हो? इस तरह हिन्दुस्तान में सब जगह असत्य चला है और व्यापार में तो उसकी हद हो गयी। इतनी दुर्दशा इस देश की हो रही है। धर्म का नाम लिया जाता है, पर धर्म का कहीं भी पता नहीं। जरा मन्दिरों की हालत देखिये, मन्दिर जिनके हाथ में सौंपे हैं वे बदमाशों से कम नहीं। ये पण्डे लोग क्या हैं? इनके अन्दर धर्म-तत्त्व कितना है? हम निन्दा नहीं करते। कहना यही चाहते हैं कि जीवन के सारे व्यवहारों में असत्य है। बाबा बोले कि हमारे इन्हीं नैतिक दुराचरणों के कारण परमेश्वर की अवकृपा हम पर रहती है। व्यापारियों की तरह उन्होंने वकीलों से भी अपील की कि ईमानदार वकील बनने की कोशिश करें। वकील गांधीजी भी थे। उनकी आत्मकथा

पढ़िये। किस तरह उन्होंने सच्चा वकील होने का प्रयत्न किया, ऐसा उन्होंने लिखा है। वकील अरबी शब्द है। कुरान में वकील परमेश्वर को कहा है। हम चाहते हैं कि गरीबों के पक्ष में वकील लोग बुद्धि-दान देने को तैयार हों। आखिर में बाबा ने कार्यकर्ताओं को सचेत किया। कहा कि अभी हम साढ़े चार महीने बिहार में और हैं। अगर इस अरसे में वे जुट जायँ, तो हर थाने का, हर जिले का कोटा पूरा कर सकते हैं। इससे बिहार का यश फैलेगा और सारी दुनिया को आशा हो जायगी कि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में अहिंसा कारगर हो सकती है। जो आनन्द अँग्रेजों से लड़ने में हासिल हुआ उससे बढ़कर आनन्द इस धार्मिक और सामाजिक लड़ाई में आयेगा।

उन्नीस तारीख को हम लोग सुबह पाँच बजे रोसड़ा से चले। आधे घंटे बाद नाव में बैठे और लगभग सात घंटे की नाव-यात्रा के बाद सींगिया थाना नाम के स्थान पर पहुँचे। वहाँ तीसरे पहर कुछ बहनें बाबा से मिलीं। उन्होंने एक सवाल पूछा :

"हिन्दुस्तान का नारी-समाज बहुत पिछड़ा हुआ है और साधारणतया उसके उत्थान के लिए कुछ उद्योग चल भी रहे हैं। लेकिन खास कर हमारे सींगिया थाने में आज तक नारी-उत्थान के लिए कोई भी प्रयत्न नहीं किया गया। इसलिए हमारा अनुरोध है कि नारी-समाज के उत्थान के लिए आप कुछ तरीके बतायें और हमें आशीर्वाद दें।"

स्त्रियों की शिक्षा

बाबा ने उनके इस प्रश्न पर खुशी जाहिर की और कहा कि शाम की प्रार्थना के बाद इसकी चर्चा करूँगा। प्रवचन में वे बोले कि समाज, संस्कृति और धर्म की रक्षा करने का काम जितना स्त्रियाँ कर सकती हैं उतना पुरुष नहीं। हिन्दुस्तान में अगर धर्म की रक्षा किसीने की, तो बहनों ने। यह बात जरूर है कि वे पुरानी चीजें पकड़ी रहती हैं, समाज-सुधार में आगे नहीं आतीं। पर यह उनका दोष नहीं, तालीम की कमी है। इसलिए

ज्यादा-से-ज्यादा ज्ञान-संस्कार और तालीम स्त्रियों को मिलनी चाहिए। यह तालीम आरामतलबी की या फैशन बढ़ाने की नहीं; बल्कि धर्म-संस्कार की, चित्त-शुद्धि की, परमेश्वर-भक्ति की, समाज-सेवा करने की तालीम होनी चाहिए। रामायण, महात्माजी की आत्मकथा, गीता-प्रवचन जैसी आचरण सुधारनेवाली पुस्तकों का अध्ययन, संस्कार का शिक्षण, इसकी जरूरत स्त्रियों को ज्यादा है। हमारी माताओं की हृदय की शक्ति और संकल्प-बल जितना बढ़ेगा उतना समाज बढ़ेगा।

समरस समाज

बाबा ने आगे चलकर बताया कि भूदान-यज्ञ का लक्ष्य समरस समाज बनाना है। जो शक्ति ईश्वर में है वह पुरुष में भी है। मालिक और मजदूर, जमीन्दार और किसान, हरिजन और परिजन, इस तरह के भेद करना जुल्म है। हम सब भेद-भाव मिटाकर एकरसता लाना चाहते हैं। भूदान-यज्ञ एकांगी नहीं है। उसमें समाज को एकरस बनाने की वृत्ति है। अगर ज्ञान और कर्म अलग-अलग होते हैं, तो कर्म में जड़ता आती है और ज्ञान निर्वीर्य और पंगु बनता है। विद्वान में तेजस्विता नहीं आती। वह सेवा के बदले लूटने का काम करता है। यह बँटवारा गलत है। भूदान-यज्ञ से हम सबको एक भूमिका पर लाना चाहते हैं। अगर दिल एक हो जायँ, तो ज्यादा हाथों से कुछ काम बनता है। अगर दिल एक नहीं, तो ज्यादा हाथों से झगड़ा और टकराव होता है। हमारा भूदान का काम दिल एक बनाना चाहता है। हृदय से सारा समाज एक बने, यह कोशिश है। भूदान-यज्ञ पहला कदम है। इसके बाद दूसरे कदम उठाने होंगे।

शुक्रवार, तारीख बीस। हमारा पड़ाव शुम्भा बंगरहटा गाँव में था। हमारी यात्रा अब ऐसे बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में चल रही है, जहाँ पर कोसों दूर तक रेल की पटरी भी नहीं मिलती। शुम्भा जैसे गाँव से रेल का स्टेशन पन्द्रह मील की दूरी पर है। तीसरे पहर कार्यकर्ताओं की बैठक में

बाबा ने कुछ बूढ़े कार्यकर्ताओं से पूछा कि जिस तरह स्वराज्य की लड़ाई में आपने गांधीजी का साथ दिया, उसी तरह इस ग्राम-राज की लड़ाई में हमारा साथ देंगे या नहीं? क्या भूदान-यज्ञ से ज्यादा शान्तिप्रिय और क्रान्तिकारी काम कोई दूसरा हो सकता है? उन्होंने इतमीनान दिलाया कि वे पूरा सहयोग देंगे।

अनोखी सभा

इस दिन की प्रार्थना-सभा का दृश्य तो कभी भूला नहीं जा सकता। जैसे ही बाबा मंच पर पहुँचे कि पानी बरसने लगा। जब प्रार्थना शुरू होने का समय आया, तो बारिश और तेज हो गयी। बाबा तो मंच पर खड़े ही थे। उन्होंने सभा में मौजूद सब भाई-बहनों से खड़े होने की प्रार्थना की। तीन हजार से ऊपर भीड़ थी। पानी बहुत जोर से बरस रहा था और उतनी ही शान्ति के साथ प्रार्थना चल रही थी। माताएँ दुधमुँहे बच्चों को गोद में लिये खड़ी थीं और मूसलाधार वृष्टि हो रही थी। लेकिन कोई अपनी जगह से न हटा। बहनें भी अद्भुत शान्ति के साथ खड़ी रहीं। उधर नजदीक में ही मल्लाह लोग अपनी नाव पर खड़े थे। उस दिन करीब ढाई सौ नावें आसपास के गाँवों से आयी थीं। अनोखी शान्ति थी।

प्रार्थना के बाद बाबा का अत्यन्त मार्मिक प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि यह प्रार्थना हमें एक-दूसरे के नजदीक लायेगी। भगवान् ने ऊपर से जो करुणा बरसायी है वह हमारे दिल का मैल धोने का काम करेगी। सभा में जिस आदर्श तरीके से सब लोग पेश आये उससे पता चलता है कि देश की आत्मा जाग उठी है और क्या भूदान, क्या दान-पत्र, इस थाने में कसरत से प्राप्त होंगे। जो ईश्वर हमारी टाँगों में रोज चलने का उत्साह देता है, जो तीन हजार दाताओं को (इस थाने में) दान देने की प्रेरणा देता है, जो यहाँ के कार्यकर्ताओं को दस हजार दान-पत्र पूरे करने की प्रेरणा देता है, वह श्रीमानों को भी प्रेरणा जरूर देगा।

ईश्वर का आदेश है, बापू का उपदेश है, यह काम होकर रहेगा। आप सबसे प्रार्थना है कि दिल खोलकर लुटायें और प्रेम से एकरस हो जायँ। प्रार्थना के बाद दुखायलजी का एक भजन हुआ और फिर धुन चली—

"सबै भूमि गोपाल की, सम्पति सब रघुपति कै आही।"

इसके बाद बाबा पड़ाव-स्थान के लिए वापस लौटे। देखते-देखते पैर छूनेवालों की भीड़ लग गयी। नहीं, बाढ़ आ गयी। प्रेम से विह्वल जनता टूट पड़ी। हमारे यात्रा-दल के प्रमुख श्री रामदेव बाबू ने उनसे हटने की अपील की। पर कौन सुनता था? आखिर रामदेव बाबू ने जब देखा कि ये लोग बाबा को अब एक इंच भी आगे नहीं बढ़ने देंगे और कहने-सुनने का कोई असर नहीं है, तो उन्होंने बाबा से मंच पर लौटने को कहा। बड़ी मुश्किल से, भीड़ को चीरते हुए बाबा मंच पर आये। लेकिन पैर छूनेवालों का ताँता लगातार जारी था। बाबा कोई पन्द्रह मिनट तक मंच पर खड़े रहे और जब भीड़ छँट गयी, तो वहाँ से चले। कैसी श्रद्धा, कैसी भक्ति!

श्रीकृष्ण-चरित्र की अलौकिकता

अगला पड़ाव पोखराम में था। नाव से चौदह मील की यात्रा करके सात घंटे बाद, दोपहर को १२ बजे हम लोग पोखराम पहुँचे। दिन भर दर्शकों की भीड़ लगी रही। कृष्ण-जन्माष्टमी का दिन था। प्रार्थना में आज बहनों की तादाद लगभग मर्दों के बराबर थी। बड़ा भारी जन-समूह इकट्ठा हुआ था। अपने प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने इस बात की खुशी जाहिर की कि यह स्थान रेल, मोटर आदि साधनों से जरा दूर है। आज दुनिया में हाथ से काम करनेवाले का दर्जा कम माना जाता है, उसकी इज्जत कोई नहीं करता। मेहतर समाज की सफाई का काम सतत करता है। उसका दर्जा सबसे नीचा। हमारे वेदान्ती और ज्ञानी लोग यही चर्चा करते हैं कि काम से छुटकारा कैसे मिले? वे यह नहीं सोचते कि खाने से छुटकारा कैसे

हो ? बड़ा प्रोफेसर वही, जो साल में छह माह की छुट्टी ले, दिन में तीन घंटे काम करे और तनख्वाह एक हजार से ऊँची ले। हम ऐसे मूर्ख हैं कि अपने लड़के उनके पास भेजते हैं। अविद्या को ही हम विद्या समझ बैठे हैं।

इस तरह समाज में आलस्य का बोलबाला है। श्रीकृष्ण भगवान् निरन्तर काम ही करते रहे। बचपन में गाय चराते थे, फिर घोड़ों का खरादा किया करते थे। उसके बाद अर्जुन के सारथी बने। फिर कंस को मारा। हमेशा सेवक रहे। युधिष्ठिर महाराज के यज्ञ में जूठी पत्तलें उठायीं। ज्ञानियों ने खाया, पर पत्तलें भगवान् ने उठायीं। तब से हम उन श्रीकृष्ण का स्मरण करते हैं। फिर भी हम लोगों ने गीता से आलस्य की युक्ति निकाल ली। पत्थर की पूजा करते-करते हम भी पत्थर बन गये। जहाँ हम जाते हैं, धर्म-निष्ठा का अभाव पाते हैं। धर्म के नाम पर भेद-भाव चढ़ रहा है। हमारे मन्दिर पंडों के हाथ में हैं। ये पंडे लोगों को मारते हैं, पीटते हैं और लूटते हैं, आपस में भी लड़ते हैं। उनके हाथ में आपने मन्दिर की चाबी दे रखी है। दर्शन का ठेका इनका, भगवान् के एजेण्ट ये। क्या इनको कोई ईश्वर-दर्शन है ? धर्म के नाम पर छुआछूत चल रही है। श्रम से नफरत, मनुष्य से नफरत। नतीजा यह हुआ कि बीच के जमाने में संस्कृत में ऐसा गंदा साहित्य लिखा गया, जो किसीको नहीं पढ़ना चाहिए। परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्तान सैकड़ों बरस गुलाम रहा। बाहर से जो आया उसका राज्य हो गया। हमारे यहाँ विचित्र बात यह हुई कि ज्ञान अलग और कर्म अलग। बेअक्ल काम और बेकाम अक्ल। भूदान-यज्ञ में जो छटा हिस्सा माँगते हैं और बड़ों से कहते हैं कि थोड़ा रखकर सब दे दीजिये, इसके माने यही हैं कि जो खाना चाहेगा उसको काम करना पड़ेगा। बैठे-बैठे खाने के दिन गये। भू-माता की सेवा करनी होगी और आनन्द लूटना होगा। बाबा पैदल घूम रहा है और ३४ लाख एकड़ जमीन मिल चुकी है। सब लोग सोचने लगे की बाबा के काम में

भी कुछ अक्ल है। हम कहते हैं कि मेहनत में, परिश्रम में, शरीर से खटने में बहुत ज्यादा अक्ल है। इसी वास्ते श्रीकृष्ण का नाम आज तक याद किया जाता है। बड़े-बड़े राजा-महाराजा मिट गये, पर श्रीकृष्ण अमर हैं; क्योंकि उन्होंने आत्म-ज्ञान के साथ श्रम भी किया, लोकरूप होकर काम किया। भूदान-यज्ञ भी इसी वास्ते चला है कि परिश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ायी जाय। हम चाहते हैं कि इस थाने में दिये बगैर कोई न रहे। यह इस युग का काम है।

सुखी जमींदार से भेट

इन्हीं दिनों की एक घटना है। एक सुखी जमींदार बाबा के पास आये और खिसियाकर कहने लगे :

"हम तो बाढ़ के मारे मरे जा रहे हैं और आप हमसे भूदान माँगते हैं।"

बाबा ने बहुत शान्ति के साथ जवाब दिया, "यही तो कारण है कि मैं दान माँगता हूँ। क्या जाने के पहले आप दान देना पसन्द नहीं करेंगे ?" यह सुनकर वह जमींदार व हम सब हँस पड़े।

तब श्रीमान् धीरे से बोले, "लेकिन बाबा, आप थोड़े अरसे के लिए ठहर नहीं सकते थे ?"

"नहीं, नामुमकिन बात। बाढ़ से तो स्पष्ट सिद्ध होता है कि 'सबै भूमि गोपाल की'। अब तो मैं पूरे गाँव-के-गाँव चाहता हूँ। जब तक गाँव की कुल जमीन की मिलकियत सारे गाँव की नहीं होती तब तक गरीब को सही मदद भी नहीं पहुँच सकती।"

"आपसे तो बात करना वेकार है, कोई दलील नहीं चलती।"

"दलील की बात नहीं है। मैं तो आमफहम बात कह रहा हूँ। अगर कुल गाँव एक परिवार बन जाता है, तो यह बाढ़ का संकट एक वरदान के रूप में बदल जायगा और आप सब आनन्द का जीवन बिता सकेंगे।"

हाथ दिये कर दान रे

इस प्रकार बाबा आशा और प्रेमभरा सन्देश सुनाते हुए उत्तर बिहार के बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों का दौरा कर रहे हैं। रविवार, तारीख २२ अगस्त को जब हम बन्दा पहुँचे, तो एक बजने जा रहा था। शाम की प्रार्थना में बड़ी उम्रवालों के अलावा बच्चे भी काफी थे, जो आगे-आगे खड़े थे। बाबा का प्रवचन क्या था, मानो उन बच्चों का क्लास ले रहे हैं। उन्होंने एक लड़के से पूछा कि जमीन का मालिक कौन है? तो उसने तुरन्त जवाब दिया कि भगवान्। इस तरह सवाल-जवाब के जरिये बाबा ने अपनी माँग सबके सामने पेश की। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान के लोगों के दिल में भक्ति होती है, पर भक्ति की राह वे नहीं जानते। कबीर ने कहा है :

> माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
> मनुवां तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं॥

चित्त की स्थिरता जब होगी तभी भगवान् का स्मरण होगा। हरि-स्मरण का रास्ता यह है कि रोजाना दरिद्रनारायण के लिए, अपने भाई के लिए कुछ करें। मनुष्य और पशु में फर्क क्या है? मनुष्य को दो हाथ दिये हैं। 'हाथ दिये कर दान रे'—हाथ दान करने को दिये हैं। जीभ गीता और कुरान का पाठ करने को और सच बोलने को दी है और दिल दिया है कि दूसरे के दुःख से दुःखी हो। बाबा ने बेजमीनवालों से हाथ उठवाये और फिर जमीनवालों से भी। दोनों की काफी तादाद थी। बाबा ने जमीनवालों से कहा कि छठा हिस्सा दीजिये और बेजमीनवालों से प्यार जोड़िये। यह बात अगर आपने पकड़ ली, तो धर्म की प्रतिष्ठा होगी। आज धर्म का नाम तो है, पर प्रतिष्ठा नहीं। इसलिए भगवान् की अवकृपा होती है। अगर हम धर्माचरण करें, तो उसकी कृपा-ही-कृपा हो। आज आप सब हमारे कैदी हैं, प्रेम के कैदी बन गये। जिसके पास थोड़ी भी जमीन हो वह दिये बिना न रहे।

बाबा को जब यह मालूम हुआ कि गाँव के कई बड़े-बड़े श्रीमान् सभा में नहीं आये, तो वे शाम को नाव से नदी पार करके खुद खास गाँव में पहुँचे और श्रीमानों से मिलकर इस आन्दोलन का प्रयोजन समझाया।

दूसरे रोज हम लोग हथोड़ी में थे। थोड़ा सफर नाव से था और थोड़ा पैदल। रास्ते में एक जमींदार ने अपना दान-पत्र दिया। बाबा को जब यह पता चला कि उन्होंने बेदखलियाँ की हैं, तो उन्होंने दान-पत्र लेने से इनकार किया। मैंने देखा कि उस श्रीमान् का चेहरा एकदम घबड़ा गया। उन्होंने कहा कि बाबा, मेरे खिलाफ शिकायतें झूठी हैं। लेकिन बाबा नहीं माने। इस पर वह भाई और भी परेशान हुआ और चाहा कि बाबा उनका मामला सुन लें। तब बाबा ने दोनों पक्षवालों को सात बजे शाम को आने को कहा। प्रार्थना के बाद मामला पेश हुआ। प्रेम की अदालत लग गयी। दोनों ने अपनी-अपनी दास्तान सुनायी। तब बाबा ने पूछा कि क्या कोई ऐसा आदमी भी है, जिस पर आप दोनों पक्षवालों को विश्वास हो। एक नाम दिया गया और तय पाया कि इस सम्बन्ध में उनका फैसला आखिरी माना जायगा। इस प्रकार यह किस्सा निबटा और तब बाबा ने उस भाई का दान-पत्र कबूल किया। उसके चेहरे पर ऐसी खुशी दीख पड़ी, मानो कंधे पर से कोई बड़ा भारी बोझ उतर गया हो।

दूसरे दिन सुबह पौने पाँच बजे हथोड़ी से नाव से चलकर हम लोग कोई आठ मील गये। फिर कुछ पैदल चले और लगभग दस बजे वारिसनगर पहुँचे। प्रजा-समाजवादी पार्टी का झंडा लिये हुए छोटे-छोटे, प्रसन्नचित्त बच्चों ने हमारा स्वागत किया। अक्सर किसी बच्चे का पैर पानी में फिसलता, तो वह हँसकर सीधा खड़ा हो जाता था। इत्तिफाक से एक लड़का ऐसा फिसला कि गोता खाने लगा। एक आदमी ने उसे देख लिया और झट से तैरकर उसे बाहर ले आया। इस पर बाबा ने कहा कि देखो, आनन्द और दुःख में कितना कम भेद है ?

झंडे पर फीस !

तीसरे पहर कार्यकर्ताओं की सभा में कांग्रेसवालों ने शिकायत की कि भूदान समिति के आदेश के बावजूद, प्रजा-पार्टीवालों ने अपने झंडे फहराये। बाबा ने उन्हें शान्त करते हुए कहा कि मैं झंडों पर रोक नहीं लगाता। चाहे जितने झंडे लाइये, लेकिन मेरी एक शर्त है। सबने पूछा कि वह क्या? बाबा ने कहा कि हर छोटे झंडे पर मेरी फीस दस एकड़ जमीन और बड़े झंडे पर सौ एकड़। जैसा झंडा वैसे एकड़। यह सुनकर दोनों पार्टीवाले चुप हो गये।

सभा का शास्त्र

शाम की सभा में रोज जैसी शान्ति नहीं थी। पान-बीड़ी की बिक्री खूब चल रही थी। बाबा ने उसे बन्द कर देने को कहा। लेकिन दूकानदार कब माननेवाले थे। बाबा ने फिर प्रार्थना की। मगर उन्होंने एक न सुनी। तब बाबा मंच पर से उठे, दूकान तक गये और एक आदमी का कत्थे का बरतन उठाकर फेंक दिया। तब तो सभी घबड़ा गये और शान्ति के साथ चुपचाप बैठ गये। इसके बाद बाबा ने अपना प्रवचन शुरू किया। उन्होंने कहा कि यह स्वराज्य के लक्षण नहीं हैं। सभा किस तरह करना, इसका भी एक शास्त्र होता है। उड़ीसा के इतिहास में हमने पढ़ा कि वहाँ मराठों का राज्य चलता था; पर केवल तीन हजार सैनिकों की अंग्रेजी फौज ने उसे जीत लिया। इन तीन हजार में गोरे सिर्फ छह सौ थे। यह सुनकर आश्चर्य करने का कारण नहीं है; क्योंकि यह देश इतना अव्यवस्थित है और इसमें असंख्य जमातें, जातियाँ, फिरके, गुट बन गये हैं कि यहाँ कोई काम न बनना स्वाभाविक है। लेकिन इसके आगे ऐसा न चलेगा। इसलिए स्वराज्य प्राप्त होने पर हमको जाग्रत हो जाना चाहिए और जगह-जगह एकता स्थापित करनी चाहिए। जिस देश में ठीक समय से काम करने की आदत न हो वह देश सिर्फ करोड़ों की संख्या से ताकतवर नहीं बनता। ताकत समूह और ढेर से नहीं, एकता से

आती है। भूदान-यज्ञ के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि इस काम में हमारे जितने राजनैतिक पक्ष हैं सबका मकसद पूरा होता है। यहाँ तक कि कम्यु-निस्टों का भी; क्योंकि सारे पक्ष कहते हैं कि गरीब के उत्थान का काम हमें करना है। इसलिए हमारी माँग है कि पक्ष-भेद भुलाकर कंधे-से-कंधा मिलाकर प्यार से इस काम में लग जाइये।

पंजों पर चलना

अगले दिन वीरसिंहपुर जाते समय रास्ते में कुछ खेत पड़ते थे, जो पानी से भरे थे। हमारे यात्रा-दल के व्यवस्थापक श्री रामदेव ठाकुर ने बाबा से कहा कि लोग नाव में बैठने को कह रहे हैं। बाबा ने पूछा कि कितना गहरा पानी है? रामदेव बाबू बोले कि कमर बराबर है। तब बाबा ने कहा कि यह तो बड़ा अच्छा है। हमें नाव की जरूरत नहीं। अब पंजों पर चलने का मौका मिलेगा। रामदेव बाबू ने पूछा कि क्या उसमें कोई खास फायदा है? बाबा बोले कि हाँ, उससे फुर्ती आती है और यह मैं इस आधार पर कह रहा हूँ कि एक दिन आश्रम में मैंने सुबह बापू को पंजों पर चलते देखा। मैंने पूछा कि यह नया अभ्यास क्यों शुरू किया? तो वे बोले कि जवाहरलाल ने मुझे बताया है कि पंजों पर रोज थोड़ा-बहुत चल लेने से आदमी में फुर्ती आती है और चुस्त बना रहता है। मुस्कराते हुए बाबा ने रामदेव बाबू से पूछा कि अब आप समझ गये? हम सब साथी भी इस पर हँस पड़े। इस तरह दस मील चलकर हम लोग वीरसिंहपुर आठ बजे पहुँचे।

इंजीनियर और जनता

उस दिन दोपहर को एक कांग्रेसी एम० एल० ए० बाबा से मिलने आये। वे दरभंगा जिले के उत्तरी हिस्से की बाढ़ देखकर आये थे। उन्होंने बताया कि पहले जहाँ बाढ़ का पानी दो दिन मुश्किल से ठहरता था, अब दो-दो हफ्ते ठहर रहा है। गाँव के लोगों का खयाल है कि सड़कें और पुल इसके लिए बहुत कुछ जिम्मेदार हैं। वे कहते हैं कि

बिहार के रेल-मार्गों और सड़कों की फिर से जाँच होनी चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इंजीनियर लोग इस विचार से सहमत नहीं होते। वे कहते हैं कि नदी के दोनों तरफ बाँध बाँधना चाहिए। इस तरह जनता को उन पर कोई विश्वास नहीं रह गया है। इसके बाद उन भाई ने कहा कि बाबा, सच तो यह है कि बाढ़ में सरकार मदद क्या दे रही है, किसी तरह अपनी लाज ढँक रही है। यह सुनकर मैं तो दंग रह गया। लेकिन बाबा के आगे भी अगर कोई सत्य नहीं बोलेगा तो कहाँ बोलेगा? इससे असली स्थिति का ज्ञान हो जाता है।

बाढ़ और ग्रामोद्योग

उस दिन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा बोले कि बाढ़ जैसी मुसीबत जब आती है तब हम लोगों को अपने छोटे-छोटे स्वार्थ छोड़ ही देने चाहिए। सारा गाँव एक परिवार है, यह सोचकर काम करना चाहिए। हमारे देश पर जो बड़ी आपत्ति है वह यह नहीं कि यहाँ बाढ़ आती है या कम बारिश होती है, बल्कि यह कि हमारे ग्रामोद्योग टूट रहे हैं।

कोई इज्जतदार मनुष्य सहायता क्यों लेगा? हालत यह है कि बाढ़-पीड़ित प्रदेश में कोई काम है ही नहीं। खेत में भी कोई काम नहीं है। अगर, जैसा गांधीजी ने बताया था, हम सूत कातते होते, तो इस समय भी उसके बदले अनाज ले लेते। हिन्दुस्तान के किसान केवल खेती के सहारे नहीं टिक सकते, ग्रामोद्योग चाहिए ही। लेकिन हमारा दिल्लीवाला खेती-मंत्री क्या कहता है? यही कि हिन्दुस्तान में फसल ज्यादा हुई है। सरकार को चिन्ता पड़ी है कि वह अनाज कहाँ बेचेगी? लंका के अलावा कोई दूसरा खरीदार नहीं मिलता। हम कहते हैं कि हर देश के पास कम-से-कम दो साल का अनाज होना चाहिए। एक साल के अनाज से देश नहीं टिक सकता। आज अगर अनाज है भी, तो काश्तकार को क्यों न बँटे? लेकिन काश्तकार में खरीदने की ताकत नहीं। इस वास्ते हम कहते हैं कि आप निश्चय कीजिये कि आप अपना कपड़ा खुद बनायेंगे। जब हर गाँव

में ग्रामोद्योग चलेंगे, तो लोगों के पास एक साल का नहीं, दो साल का अनाज रहेगा। हम आपसे कहना चाहते हैं कि ये सारे गाँववाले एक परिवार बनकर नहीं रहते हैं, तो कोई काम नहीं सधता। कोई वजह नहीं है कि बाढ़-पीड़ित क्षेत्र में पूरे गाँव क्यों न मिलें? समझाकर माँगें, तो मिलेंगे। कट्ठा-दो कट्ठा देना ठट्ठा करना है। अब कुल गाँव देने की बात है। गाँव की ताकत एक करनी है। हम चाहते हैं कि हर भाई परमेश्वर का भक्त बने।

२६ तारीख को हम लोग वैनी नाम के गाँव में थे। यह पूसा रोड रेलवे स्टेशन के पास है। हमारा पड़ाव बिहार खादी समिति के सरंजाम-कार्यालय में था। सौभाग्य से इसका शिलान्यास १६४८ में बाबा ने ही किया था। बताया गया कि इस स्थान पर, ताजपुर थाने में कांग्रेसी, प्रजा-समाजवादी और रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने मिलकर काम किया है। बाबा को यह सुनकर खुशी हुई और उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में जो आदमी सब लोगों को एक कार्यक्रम पर ले आयगा उसको आगामी पीढ़ियों का एहसान प्राप्त होगा। जिसे ईश्वर चाहेगा वही इसे कर सकेगा। हमारे अन्दर इतनी शक्ति होने का दावा हम नहीं करते, लेकिन एक चीज का हमें विश्वास है। हमारे अन्दर वृत्ति ऐसी जरूर है। हम पार्टियों को नहीं पहचानते, मनुष्य को मानते हैं। हम हर मनुष्य के अन्दर एक अखंड ज्योति देखते हैं और उसी नाते उसमें नारायण का दर्शन करते हैं।

दोपहर को साढ़े ग्यारह से बारह बजे तक सरंजाम-कार्यालय देखा। ढाई बजे ग्राम-सेविका विद्यालय गये, जो दो फरलांग की दूरी पर है। कस्तूरबा स्मारक निधि, बिहार शाखा का यह सदर मुकाम है। श्रीमती सुशीला अग्रवाल आजकल इसका संचालन कर रही हैं। इस समय वहाँ लगभग चालीस बहनें हैं। पूरी संस्था को देखने के बाद, बाबा सब बहनों से एक जगह मिले। बहनों ने लिखकर कुछ प्रश्न पूछे थे।

स्त्रियाँ और भावी भारत

बाबा ने कहा कि मैंने कई दफा कहा है कि स्त्रियों को पुरुषों से ज्यादा तालीम की जरूरत है। मेरा विश्वास है कि जब शंकराचार्य के जैसी या उनसे भी बढ़कर आत्म-ज्ञान और वैराग्यसम्पन्न बहनें निकलेंगी तब देश में क्रान्ति ला सकेंगी। अगर भगवान् हिन्दुस्तान का उद्धार चाहता है, तो ऐसी बहनें जरूर निकलेंगी। हिन्दू-समाज में बहनें बहुत पीछे हैं। कानूनी या सामाजिक अड़चनों के अलावा आध्यात्मिक विचारों की रुकावटें हैं। एक जमाना था, जब कहते थे कि स्त्री को वेद का अधिकार नहीं। कुछ टीकाकारों ने यहाँ तक लिखा है कि 'पुरुषार्थ' शब्द ही बताता है कि पुरुषार्थ पुरुष के लिए है और स्त्री को पुरुष में लीन होना चाहिए। विषय गहरा हो रहा है। पर मेरा मन यह विचार कबूल नहीं करता। इसमें आत्मा की बड़ी गौरव-हानि होती है। बाबा ने आगे चलकर कहा कि स्त्रियों की शिक्षा का जहाँ तक सम्बन्ध है उसमें अध्यात्म-ज्ञान पहले दिया जाय। कुछ उद्योग भी ऐसे हैं, जो वे सहज कर सकती हैं। जैसे बुनकर का काम, दर्जी का काम, चरखा-सरंजाम में तकुआ बनाना या चरखे पर पॉलिश करना, उत्तम से उत्तम रसोई बनाना और आरोग्य, विद्या और बीमार की सेवा में कुशल होना, दूध दुहना और गाय की सेवा, सफाई आदि करना। स्त्रियों को ज्ञान उत्तम और परिपूर्ण मिलना चाहिए। परिपूर्ण ज्ञान माने ज्ञान-प्राप्ति में स्वावलम्बी होना। उन्हें सेवा करने के लिए अनुभवी बहनों के पास भेजा जाय। हमें वे काम करने हैं, जो सरकार से नहीं बनेंगे। स्त्रियों को परदे से बाहर लाना है, तिलक की प्रथा बन्द करनी है। स्त्री-विवाह की उम्र बढ़ानी है। तालीम का काम करना है। यह सब कौन करेगा? लोक-शक्ति के आधार पर और धर्म-निष्ठा के द्वारा हमें ये काम करने हैं। आज जो शिक्षा दी जा रही है वह आरामतलबी और भोग की है। ज्यादा शिक्षा माने ज्यादा गुलाम, ज्यादा भोगप्रिय। हम आशा करते हैं कि देश में

तेजस्वी बहनें निकलेंगी; जो सूर्य की तरह प्रतापी होंगी। इन्हीं किरणों से चारों ओर प्रकाश फैलेगा और देश का अन्धकार दूर होगा।

बेकारी और ग्रामोद्योग

प्रार्थना के समय कम-से-कम बीस हजार की भीड़ थी। प्रवचन में बाबा ने कहा कि कुरान में मुहम्मद पैगम्बर ने लिखा है कि कमबख्तो, तुम कैसे हो गये हो कि जब नाव मँझधार में होती है तब तो खुदा की याद करते हो, पर किनारे लगी कि भूल गये। किश्ती में याद, किनारे पर भूल। यह क्यों? सतत याद रखो, तो क्या बिगड़ेगा? संकट के मौके पर चर्खा याद आता है। हम पूछते हैं कि क्या चर्खे की याद के लिए ऐसी आपत्तियाँ हर साल आया करें? क्या इस तरह की प्रार्थना हम परमेश्वर से किया करें? आज सरकार भी कहती है कि ग्रामोद्योग करने पड़ेंगे। पर वह ग्रामोद्योग को राहत के तौर पर रखना चाहती है। हम रोटी खुद पकाकर खाते हैं, वैसे अपना कपड़ा भी खुद बनायें, यह विचार सरकार नहीं करती। इस वास्ते हम कहते हैं कि यह आफत नहीं टलेगी, नित्य की बात हो जायगी। तीन साल पहले गोरखपुर में अकाल पड़ा। सरकार ने वहाँ अनाज भेजा, पर लोग खरीद नहीं सकते थे; क्योंकि खरीदने की ताकत बिल्कुल क्षीण थी। किसान लोग जानते हैं कि बिना इस शक्ति के कुटुम्ब का पोषण सम्भव नहीं। तो वे क्या करते हैं? जिसे 'मनी क्रॉप' कहा जाता है उसे बोते हैं। उत्तम से उत्तम जमीन से, भगवती मिट्टी में से तम्बाकू पैदा करते हैं। हमने एक गाना सुना था :

> "हाथ में धर कुदाली चलाते चलो।
> और मिट्टी में सोना उगाते चलो॥"

लेकिन अब हालत यह हो रही है :

> "इस तरह से बेकारी बढ़ाते चलो।
> मिट्टी की तम्बाकू बनाते चलो॥"

ऐसी हालत में देश टिकेगा? कल हमने गाँव में एक बाजार लगा देखा। हमने देखा कि अनाज के दाम बढ़ा दिये हैं। हमने पूछा कि क्यों? व्यापारी बोला कि पैदावार कम है इसलिए भाव बढ़ा दिया। यही आधुनिक अर्थशास्त्र की युक्ति है। दस में से छह को भूखा रखा और चार को खिलाया। निभना तो तब कहा जाय जब थोड़ा-थोड़ा सबको दिया जाय। इस वास्ते यह युक्ति हराम की युक्ति है, अधर्म की युक्ति है, पूँजीवादी युक्ति है। होना यह चाहिए कि पैदावार कम, तो राशन कम। यह समय कमाने का नहीं, लुटाने का है। आखिर में बाबा ने बहनों के सम्बन्ध में कहा कि बाहरवाले कहते हैं कि हिन्दुस्तान की स्त्रियाँ पुरुष की दासी हो गयी हैं। पर हम कहते हैं कि उल्टे पुरुष ही दास हो गये हैं। घर के अन्दर उनकी कुछ नहीं चलती। वे अत्यन्त दास हैं, क्योंकि विषयासक्त हैं। विषयासक्त लोग स्त्री को घर में ही रखते हैं। देहात की शक्ति इसीसे क्षीण हुई। अब जाग जाओ, बहनें अब कुछ काम करेंगी। आपके पड़ोस में कस्तूरबा केन्द्र चलता है। उसका जितना भी हो सकता है, उपयोग कीजिये।

सत्ताईस अगस्त को हमारा पड़ाव सादीपुर में था। इस यात्रा में दरभंगा जिले का यह आखिरी मुकाम था। बाबा ने दो से साढ़े चार बजे तक अपनी लोकनागरी लिपि का वर्ग लिया। शाम की प्रार्थना के समय लोग कुछ अशान्त-से घूम रहे थे। बाबा ने उनसे बैठ जाने को कहा। लेकिन इसी बीच क्या देखते हैं कि कोई भाई लोगों को चुप करा रहा है। बाबा ने उससे भी बैठ जाने को कहा। वह नहीं माना। तब बाबा बोले तुम कौन हो? क्या इस जगह पर भी पुलिस का राज्य है? यह तो धर्म की सभा है। जब मैं लोगों से बोल रहा हूँ, तो आपको बैठना चाहिए। लेकिन जब उस भाई पर कोई असर नहीं हुआ तब बाबा ने बुलन्द आवाज से कहा कि मुझे आपकी इस हरकत पर शर्म आती है। आपको बैठ जाना चाहिए। आखिरकार वह भाई बैठ गया। इसी

अरसे में बारिश होने लगी। बाबा ने लोगों से कहा कि छाते बन्द रखें और खड़े-खड़े प्रवचन किया।

आत्मा का समाधान

बाबा ने कहा कि जब बापू मौजूद थे तब मैं देहात की सेवा में लगा था। ध्यान-धारणा करता था। बाहर कभी जाने की इच्छा भी न होती थी। बापू के जाने के बाद हमने सोचा कि उनका पैगाम लेकर निकल पड़ना चाहिए। भाइयो, मुझमें कोई ताकत नहीं है। परमेश्वर की ताकत, बापू की दी हुई ताकत ही मेरा बल है। भूमि-दान के लिए अपील करते हुए बाबा बोले, इस काम में लगने के बाद हमें इतनी शान्ति और समाधान मिला है कि जिन्दगी भर न मिला। बादशाह की तरह हम घूम रहे हैं। न कोई दुःख है, न कोई चिन्ता। हमें यह आनन्द क्यों मिल रहा है? क्योंकि हमने अपना अहंकार, लोभ, वासना आदि कुछ भी नहीं रखा, सिर्फ एक ही वासना रखी कि सबका भला हो। जिन्दगी में सबसे बेहतर कमाई आत्मा का समाधान है। पैसे में इसकी कीमत नहीं की जा सकती। जब अमीर लोग यह विचार समझ जायेंगे, तो क्रान्ति का झंडा अपने हाथ में लेकर निकल पड़ेंगे।

● ● ●

जैसे घर में रहनेवाला घर से बिल्कुल अलग होता है, वैसे हम देह से बिल्कुल ही पृथक् हैं। यह बात सीखने की है। हम घर का जन्म-दिन तो नहीं मनाते, उसका उपयोग करते हैं। उसको अच्छा साफ-सुथरा रखते हैं। ऐसा ही व्यवहार शरीर के साथ करना सीख जायँ, तो जीवन कितना सरल और सुख-मय होगा!

१९५४ के अगस्त और सितम्बर में मुजफ्फरपुर जिले के बाढ़-पीड़ित सीतामढ़ी सब-डिवीजन में बाबा ने चार हफ्ते बिताये। इस यात्रा के दो प्रसंग बहुत ही अनोखे हैं:

(१) एक बुढ़िया के पास केवल आधा बीघा जमीन थी। जमींदार ने उस बेचारी को बेदखल कर दिया। वह बहुत रोयी-पीटी, मगर जमींदार के दरबार में उसकी कोई सुनवाई न हुई। मामला पटना हाईकोर्ट तक गया और उसने साम्प्रदायिक रूप ले लिया। बुढ़िया की हालत बिगड़ती ही गयी। एक दिन सुबह जब बाबा उसके गाँव से निकले, तो वह रास्ता रोककर खड़ी हो गयी और अपनी विपदा बाबा को बताने लगी। बाबा ने उससे पड़ाव पर आने को कहा। साथ-ही-साथ उन्होंने उसके जमींदार को भी बुलवाया। दोनों फरीकों ने अपना-अपना हाल बताया। आखिर यह तय पाया कि वह जमींदार उस बुढ़िया को कहीं नजदीक में एक बीघा अच्छी जमीन दे। बुढ़िया ने इसे मंजूर कर लिया। इस तरह यह दो साल पुराना झगड़ा राजी-खुशी से निबट गया।

(२) आँख का अन्धा, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हुईं, गालों में गड्ढे, लकड़ी टेकता हुआ एक बुड्ढा अपनी छह कट्टा जमीन का दान बाबा को देने आया। बाबा ने उसका दान स्वीकार किया और दान-पत्र की पीठ पर अपने हाथ से यह लिख दिया :

"इस अन्धे भक्त ने यह जमीन प्रेमपूर्वक दी है। यह उसीको प्रसाद के तौर पर वापस दी जाती है।"—विनोबा

× × ×

शनिवार, तारीख २६। बाबा ने मुजफ्फरपुर जिले में प्रवेश किया। इस जिले की यह उनकी तीसरी और आखिरी यात्रा है।

दो बेदखलियाँ

रास्ते में चलते-चलते एक बुढ़िया ने उन्हें रोका। उसने अपनी पूरी कहानी सुनायी। उसने बताया कि वह विधवा है, दो बेटे हैं और उसके पास दो कट्ठा जमीन थी (एक एकड़ का दसवाँ हिस्सा)। लेकिन वह बेदखल कर दी गयी। बाबा ने उसे शाम को पातेपुर-पड़ाव पर आने को कहा। उन्होंने उस जमींदार को भी बुलवाया, जिसके खिलाफ बुढ़िया की शिकायत थी। दोनों पक्षवाले तीसरे पहर पहुँचे। बुढ़िया अपनी प्यारी जमीन छोड़ने को तैयार नहीं थी और जमींदार का काम बिना उस दो कट्ठे जमीन के चलता नहीं था। आखिर यह तय पाया कि वह जमींदार लगभग आठ कट्ठा अच्छी जमीन, पुरानी जमीन के आसपास, उस बुढ़िया को दे दे। यह बात दोनों ने मान ली।

उसी दिन एक और भी रोचक घटना हुई। एक और बुढ़िया अपना दुखड़ा लेकर आयी। उसके पास आधी एकड़ जमीन थी। मामला बहुत आगे बढ़ चुका था। हाईकोर्ट तक गया था। बुढ़िया की तरफ अहीर लोग थे और जमींदार की तरफ गाँव के ब्राह्मण। जमींदार की तरफ से लगभग पाँच हजार रुपया खर्च किया जा चुका था। दोनों तरफ की बात सुनकर

बाबा ने जमींदार से कहा कि या तो बुढ़िया को बेदखल मत कीजिये या उसको दूसरी जगह, अच्छी और पहले से ज्यादा जमीन दीजिये। वे इस पर राजी हो गये और लगभग दुगुनी जमीन बुढ़िया को दी, जो उसने खुशी से ले ली।

पूरा गाँव परिवार बने

शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि संकट-काल में मनुष्य की सद्भावना जाग्रत हो जाती है। ऐसे समय अगर वह स्थिरबुद्धि से काम करता है, तो न सिर्फ संकट टलता है; बल्कि नया जीवन भी पैदा होता है। जहाँ समाज में अनुराग है और नागरिकता विकसित हुई है उस समाज में संकट-काल में भी गढ़ा नहीं पड़ता; बल्कि कुल की कुल सतह थोड़ी सी नीचे गिर जाती है और बाद में अच्छे दिन आने पर वह फिर उठ जाती है। हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव एक हो जायँ। गाँव में सब मिलकर सेवा-समिति जैसी बनायें, जो गाँव की भलाई के बारे में सोचे और काम करे। बाढ़ का हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि इस संकट-काल में मदद पहुँचाने के तीन रास्ते हैं—सरकार, बाहरी जनता और स्थानीय जनता। सरकार से और बाहरी जनता से मदद की कुछ आशा रखी जा सकती है, लेकिन सबसे ज्यादा मदद स्थानीय लोगों से ही मिलनी चाहिए। हम कहना चाहते हैं कि सुख और दुःख सबमें बँटना चाहिए। जहाँ आप यह समझ जायेंगे कि सुख और दुःख बाँटने से हमारी भलाई है वहाँ भूमि के प्रति आप अन्याय नहीं कर सकते। अपनी कन्या के लिए आप वर ढूँढ़ते हैं या नहीं? वैसे ही जब आप भूमि के लिए पात्र ढूँढ़ेंगे तब यह काम पूरा होगा। हम जमीन के साथ-साथ सम्पत्ति का भी छटा हिस्सा माँगते हैं। इससे हिन्दुस्तान के घर-घर में हमारा बैंक बन जायगा। "तेन त्यक्तेन भुंजीथाः"—यह नीति हमारे पूर्वजों ने हमें बतायी है। जो भी अपने पास है उसका त्याग करो और फिर जो कुछ उससे मिले उसका भोग करो। आज

की कि कत्तिनों को सर्वोदय-ज्ञान और धर्म की शिक्षा मिलनी चाहिए। आठ घंटे के काम के अन्दर शिक्षा का एक घंटा आपके तरफ से शामिल होना चाहिए। खादी-कार्यकर्ता भूदान के अन्दर भी काफी काम कर सकते हैं। जमीन के बँटवारे में और वस्त्र-स्वावलम्बन और ग्राम-राज्य की स्थापना में उनको बहुत कुछ करने का है। आखिर में बाबा ने कहा कि हमें याद रखना चाहिए कि बापू ने रचनात्मक प्रोग्राम में बाईस काम रखे हैं, जिनमें प्राकृतिक चिकित्सा भी एक है। यद्यपि हममें से कोई यह दावा नहीं कर सकता कि जिस तरह हमने खादी के अलावा कोई दूसरा कपड़ा नहीं पहना, उसी तरह प्राकृतिक चिकित्सा के अलावा कोई दूसरी चिकित्सा नहीं की। लेकिन हमारे ग्रामीण जीवन में इसका बहुत ही स्थायी महत्त्व है। जड़ी-बूटी, मिट्टी-पानी की मदद से इसे सर्वव्यापी बनाया जा सकता है। यह सब काम आपको सर्वोदय विचार मंडल के द्वारा करना है।

सम्पत्तिदान से खादी

शाम को प्रार्थना के बाद बाबा का बहुत छोटा-सा प्रवचन हुआ। उन्होंने कहा कि खद्दर में मिल के कपड़े से थोड़ा ज्यादा पैसा लगता है। मेरा सुझाव है कि खादी में जो आपको ज्यादा पैसा लगे उसको सम्पत्तिदान समझें और अपने पीड़ित भाई-बहनों के लिए खद्दर पहनने का व्रत लें। यह आपका गुप्त-दान होगा। गुप्त-दान से न दाता अहंकारी बनता है, न लेनेवाला दीन बनता है। गुप्त-दान ही सच्चा दान है। आज यह समझा जाता है कि श्राद्ध के मौके पर दूसरों को खिलाना चाहिए। एक जमाने में इससे आत्म-ज्ञान का प्रसार होता था, लेकिन आज खिलाने से कोई लाभ नहीं। आज तो श्राद्ध के मौके पर खादी खरीदें और गीता का दूसरा अध्याय पढ़ें। वही सच्चा श्राद्ध होगा। शादी में खादी क्यों न खरीदी जाय? इस तरह हर मौके पर अगर सोचें, तो जहाँ-जहाँ दान-धर्म का मौका आये वहाँ-वहाँ खादी और ग्रामोद्योग का ही उपयोग किया जाय।

पहली सितम्बर को मुजफ्फरपुर से भीखमपुर जाते समय रास्ते में बड़ा भयानक दृश्य दिखायी पड़ा। सड़क के दोनों तरफ लोग बसे थे, जो बाढ़ के कारण अपने घरों में नहीं रह सकते थे। उनमें ज्यादातर भाई दुःखी हरिजन थे। भीखमपुर का गाँव भी बुरी तरह बरबाद हुआ था। उसके लगभग तीन-चौथाई घर चौपट हो गये थे। यात्रा-दल के कुछ साथी (इनमें एक अमेरिकन महिला भी थीं, जो एक हफ्ते साथ रहीं) जब गाँव में गये, तो एक कुआँ ध्वस्त हालत में दिखायी दिया। उसकी ईंटें चारों तरफ गिरी पड़ी थीं। उन्होंने पूछा कि इस कुएँ की मरम्मत तो आप खुद ही कर सकते हैं। इस पर गाँव के एक आदमी ने कहा कि कौन करे? सरकार से जब मदद आयगी, तभी होगा। यह सुनकर साथी लोगों को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने उसके आसपास सफाई करनी शुरू की। तब गाँव के लोग भी उत्साह के साथ पिल गये।

समाज पर पक्षाघात

तीसरे पहर बाबा के पास गाँव के कुछ लोग आये और बताया कि किस गलत ढंग से सरकार मदद बाँट रही है। जो असली गरीब हैं और दुःखी हैं, उनकी कोई सुनवाई नहीं। जिनको मदद की जरूरत नहीं, पर बोलना जानते हैं, उन्हींको मदद मिल जाती है। बाबा ने शाम को अपने प्रवचन में इसका हवाला देते हुए कहा कि इसका इलाज तो सिर्फ यही है कि गाँव को परिवार का रूप दीजिये। लेकिन बड़े दुःख की बात है कि लोगों का व्यवहार दूसरे ढंग का हो रहा है। मानो जिले पर कोई संकट आया ही नहीं है। इस तरह जब लोगों को अपने पड़ोसी की कोई चिन्ता नहीं है, तो ऐसे समाज को पक्षाघात-समाज कहा जायगा। हमें इस पर कोई ताज्जुब नहीं होता, क्योंकि आज इतना भेदभाव बढ़ गया है कि हमारी सारी शक्ति क्षीण हो गयी है। आगे चलकर बाबा ने बताया कि आपको स्त मदद नहीं लेनी चाहिए। आपके अड़ोस-पड़ोस में कई संस्थाएँ

चलती हैं, जहाँ पर आप तरह-तरह की दस्तकारियाँ सीख सकते हैं। बिना काम किये खाना पाप है।

अगला पड़ाव छपरा गाँव के हाईस्कूल में था। वहाँ एक कुआँ हाल ही में बना था। मजदूर उसके चारों तरफ के गढ़े में मिट्टी भर रहे थे। बाबा ने खड़े-खड़े थोड़ी देर तक इसे देखा। पास ही में स्कूल के लड़के घूम रहे थे। बाबा ने उनको बुलाया और पूछा कि तुम इन मजदूरों की मदद क्यों नहीं कर देते? यह काम जल्दी हो जायगा। एक लड़के ने जवाब दिया कि यह बड़ा मुश्किल काम है और हमें इसकी आदत नहीं है। तो बाबा बोले कि जब तुम स्कूल में भर्ती हुए थे, तो क्या पढ़ने की आदत थी? जिस तरह तुमने पढ़ने की आदत डाली, उसी तरह काम करने की आदत डाल सकते हो। लड़के शरमा गये और इधर-उधर खिसक गये।

आलस्यपीड़ित कार्यकर्ता

तीसरे पहर यात्रा-दल के कुछ भाई गाँव में गये और जाकर जमीन माँगी। उन्हें यह जानकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि इस गाँव में अभी तक भूदान माँगने कोई नहीं आया है। बाबा ने अपने प्रार्थना-प्रवचन में इस तरफ़ संकेत करते हुए बड़े दुःख के साथ कहा कि जनता तो बाढ़-पीड़ित है, लेकिन कार्यकर्ता आलस्यपीड़ित हैं। बाढ़पीड़ित जनता और निष्क्रियतापीड़ित कार्यकर्ता। गाँववालों को सम्बोधित करते हुए वे बोले कि संकट के मौके पर हम सबको काम में लग जाना चाहिए। गाँव को परिवार मानो और गाँव के बारे में सोचो। आज अमीर और गरीब, सबकी जमीन पानी में है। इससे ईश्वर यही बोध देता है कि सारी-की-सारी जमीन बाबा को दे डालो। आपको झगड़ने की अक्ल तो है, पर फैसला करने की अक्ल मुजफ्फरपुरवालों और पटनावालों को है। क्या वे आपको न्याय देंगे? हम तो कहते हैं कि वह न्याय के नाम पर खुद ही अन्याय करने-वाली जमात है। पुलिस, जज, जेलर और वकील, सब बेकारों की जमात

का बोझ आपके ऊपर लादा गया है। या यों कहिये कि आपने उठा लिया है। झगड़ा बढ़ाने का काम तो वकील लोग करते हैं। किसी डाक्टर से पूछो कि आजकल आपकी कैसी चल रही है, तो वह कहेगा कि सीजन डल है (बाजार मन्दा है)। इसके माने क्या हुए? जब लोग ज्यादा तादाद में बीमार पड़ते हैं या मरते हैं, तो डाक्टर का अच्छा मौसम रहता है और जब लोग कम बीमार पड़ते हैं, तो उसका सीजन डल हो जाता है। हम कहेंगे कि ऐसे डाक्टरों और वकीलों से भगवान् बचाये। इस वास्ते हमारा कहना है कि गाँव के झगड़े गाँव के ही सज्जन की मदद से गाँव में ही निबटने चाहिए। बीमारों के इलाज के लिए गाँव में ही वनस्पति का एक बगीचा हो, जिसका ताजा रस बीमारों को दिया जाय। इस तरह करने पर ग्राम-राज्य होगा और ग्राम-राज्य से राम-राज्य होगा।

शनिवार, चौथी सितम्बर को बाबा सैदपुर में थे। दोपहर को जब बाबा डाक लिखा रहे थे, तो भूकम्प के कुछ धक्के आये। साथी लोगों ने उनसे जाकर कहा कि बाहर आ जाइये। बाबा मुस्करा दिये कि जिन्हें जाना है वे बाहर जायँ। बाबा अपना काम पहले की तरह करते रहे। ये धक्के बहुत हल्के ही थे।

बाढ़-पीड़ितों के लिए पंचसूत्री कार्यक्रम

उस दिन शाम को प्रार्थना-सभा में पन्द्रह हजार से ऊपर की भीड़ थी। बाबा ने कहा कि अगर आपके दिल एक-दूसरे के नजदीक आ जायँ, तो इस संकट को वरदान में बदल सकते हैं। इसके लिए आप एक दूसरे के सुख-दुःख में शरीक होइये। फिर उन्होंने बाढ़-पीड़ित-केन्द्र के लिए अपना पंचसूत्री कार्यक्रम रखा। पहला, गाँव में जो मकान गिर पड़े हैं वे स्थानीय मदद के द्वारा खड़े कर दिये जायँ। दूसरा, हर छोटा या बड़ा भूमिवान अपनी जमीन का छठा या ज्यादा हिस्सा भूदान में दे, ताकि कुल गाँव एक परिवार बन जाय। तीसरा, जिनकी औकात है वे कोई चीज मुफ्त न लें। चौथा, लोग काम की माँग करें और अपना

समय बेकार न गवायें। पाँचवाँ, बाढ़ के बाद की आफतों से बचने के लिए उन्हें अपने घर, गाँव की नालियाँ, रास्ते और कुएँ, अड़ोस-पड़ोस का इलाका साफ रखना चाहिए। कुदाली, झाड़ू, टोकरी लेकर गाँव के अमीर-गरीब, पढ़े-लिखे या अनपढ़, सब लोग मिलकर इस काम को कर सकते हैं।

अपने व्याख्यान के बाद बाबा ने सामने बैठे हुए एक लड़के को बुलाया कि हमने पाँच बातें कौन सी बतायीं? उसने कुछ हिचकिचाहट के साथ तीन बातें बतायीं: भू-दान दो, मुफ्त मदद मत लो और गाँव साफ रखो। तब बाबा ने दूसरे लड़के को बुलाया। यह लड़का बड़े भरोसे के साथ मंच पर खड़ा हो गया और पाँचों बातें शान के साथ सुना दीं। बाबा ने उसकी पीठ थपथपायी और पूछा कि क्या गाँव में जाकर ये बातें सबको बताओगे और अमल करने को कहोगे? उसने बड़ी भक्ति के साथ कहा, 'बेशक'।

चेतावनी

अगले दिन बेलसण्ड जाने पर जब बाबा रास्ते में अचरी नाम के गाँव में जरा देर के लिए ठहरे, तो एक कड़ी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि मुझे आपके प्रदेश में दो साल से ऊपर घूमते हुए हो गये। जरा अपने दिल से पूछिये कि इस अर्से में आपसे कितने लोगों ने चौबीस घंटे भी इस काम के लिए दिये हैं? बिहार प्रादेशिक कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पास किया, जिसमें अपने सदस्यों को छठा हिस्सा जमीन भूदान-यज्ञ में देने के लिए और बत्तीस लाख का कोटा पूरा करने के लिए अपील की। लेकिन कांग्रेस ने अपने प्रस्ताव के साथ द्रोह किया है। बिहार प्रजा-समाजवादी पार्टी ने भी इस सम्बन्ध में कोटा पूरा करने का प्रस्ताव पास किया; मगर इसने भी अपने प्रस्ताव के साथ दगा किया है। ये कठोर शब्द जरूर हैं, लेकिन इतिहास आपको माफ नहीं करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि भूदान और बाढ़-पीड़ित सहायता के काम में कोई टक्कर नहीं है। लेकिन

हमें कोई ऐसा काम आपका नहीं दीखा, जिसके लिए आपको श्रेय दिया जाय। जब हम आपके इलाके में आते हैं, तो बिजली की चमक की तरह आप प्रकट होते हैं और फिर दिखायी भी नहीं पड़ते। काम करने का यह तरीका नहीं होता।

हरिजनों के साथ अधर्म

दूसरे दिन पड़ाव परसौनी में था, जो एक छोटा-सा गाँव है और बाढ़ से बुरी तरह बरबाद हुआ है। जैसा कि अक्सर होता है, इसमें सबसे ज्यादा नुकसान् बे-जमीनवाले हरिजनों का ही हुआ। उनकी हालत देखकर किसका दिल नहीं पसीजेगा? प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि अपने समाज का एक हिस्सा बिलकुल अनाथ-सा हो जाय, तो समाज का क्या हाल होगा? ये हरिजन लोग और दूसरे मजदूर ही मेहनत करते हैं। हमारा सारा आराम, खाने-पीने का इन्तजाम उनके बल पर चलता है। कोई मकानवाला अगर चाहे कि दूसरी-तीसरी मंजिल बनाये, लेकिन नीचेवाली मंजिल कमजोर रहे, तो उस मकान की क्या हालत होगी? सारा मकान गिर जायगा। वैसे ही जिन पर हमारा सारा आधार है, वे अगर कमजोर बनें, तो हमारा सारा समाज गिरेगा। सबसे भयानक बात तो यह है कि हमने हरिजन को अछूत माना है। अगर ये हरिजन जानवर होते—गाय, बैल, कुत्ता, बिल्ली, बकरी होते, तो हम उन पर प्यार करते। लेकिन वे इन्सान हैं, इसलिए हम उन्हें छूते नहीं। हम उनको भगवान् का भी दर्शन नहीं करने देते। शास्त्रज्ञ पंडित कहते हैं कि अगर हरिजन मन्दिर में जायगा, तो भगवान् भाग जायगा। ऐसा भगोड़ा, डरपोक भगवान् है कि मंदिर से भाग जायगा? परमेश्वर को ये लोग पहचानते ही नहीं हैं। उन्होंने भगवान् को खतम कर दिया, पत्थर बना दिया और खूबी यह है कि यह सब धर्म के नाम पर चल रहा है। धर्म क्या है? महात्मा गांधी को मालूम नहीं था, स्वामी विवेकानंद को भी मालूम नहीं था, बाबा को भी मालूम नहीं है। लेकिन मालूम है इन

ब्राह्मणों और पंडों को, जो कि लोभ के पानी में मछली बनकर तैरते रहते हैं। स्वार्थ और नीचता की कोई हद होती है !

जमींदारी बनाम फारमदारी

आगे चलकर बाबा ने कहा कि आज जमींदारी तो गयी, पर फारमदारी शुरू हो गयी। हमने बड़े बड़े फारम देखे हैं, जहाँ अच्छा गेहूँ बोया जाता है और काम करनेवाले बैलों को कड़ुआ घास ही खाने को दिया जाता है। बैल सिर्फ फसल को देख सकता है, खा नहीं सकता। यही हालत मजदूरों की भी है। वे गेहूँ बोते हैं, सारा श्रम करते हैं, पर उनको गेहूँ नहीं मिलता, पैसा मिलता है। उस पैसे के बदले में रद्दी-से-रद्दी गेहूँ मिलता है। उनकी गाढ़ी कमाई का बढ़िया-से-बढ़िया यह गेहूँ पटना जायगा, कलकत्ता जायगा, कानपुर जायगा। ऐसी बुरी हाल्त में फारमवालों ने मजदूरों को रख छोड़ा है। जमींदारी गयी और फारमदारी आयी। महापुरुष टॉल्स्टाय ने कहा है कि एक गुलामी जाती है, तो दूसरी गुलामी पैदा करके जाती है। पौधा मरने के पहले वैसा ही बीज पैदा करके जाता है। बाप मरता है, तो बेटा छोड़कर जाता है। वह चाहता है कि बेटा छोड़कर ही जाऊँ। वही चिन्ता गुलाम की भी होती है। यह बड़े मार्के की बात उन्होंने कही है। जब तक समाज में लोग सत्ता-सत्ता चिल्लाते रहेंगे, तब तक एक सत्ताधारी जायगा और दूसरा आयगा। १९५२ आया था। कुछ लोगों को चुना गया। उन लोगों की सरकार बनी और जब हालत में कोई सुधार नहीं हुआ, तो कहने लगे कि १९५७ में देखेंगे। पहले भेड़ियों को नहीं पूछा जाता था, लेकिन अब पूछा जाता है। इतना ही फर्क हुआ है। लेकिन हर हालत में आपको भेड़ रखना चाहते हैं।

भेड़ नहीं, इन्सान बनें

तो हम कहते हैं कि जब तक गड़रिये का सिलसिला नहीं तोड़ते और भेड़ों को यह नहीं समझाते कि तुम मानव हो, तब तक समाज की

प्रगति नहीं होगी। कोई यह नहीं कहता कि हमको मत चुनो और अपना इन्तजाम आप कर लो। क्या आपके चुने जाने से लोगों में सद्वृत्ति बढ़ी, क्या वे आपस में प्रेम से रहने लगे, क्या आपस के झगड़े खतम हो गये, क्या ऊँच-नीच का भेद मिट गया? उत्तर मिलेगा कि पहले की अपेक्षा आज झगड़ा बढ़ रहा है, चुनाव के कारण जाति-भेद भी बढ़ ही रहा है। अंग्रेजों के जमाने में तो हमारे उद्योग-धंधे टूटे ही, पर स्वराज्य-प्राप्ति के बाद कहीं ज्यादा टूटे हैं और दुःख के साथ कहना पड़ता है कि टूटते ही जाते हैं। शराबखोरी, झूठ आदि आज भी मौजूद हैं। यह सारा दुर्गुण कायम रखकर अगर हम यह चाहें कि गड़रिया बदल करके हम सुखी बनें, तो हम हर्गिज सुखी नहीं बन सकते। आपको अपना उद्धार अपने-आप ही करना होगा।

बाढ़ में भी सिनेमा

मंगल के दिन शिवहर जाते समय रास्ते में बहुत तेज अन्धड़ चला और फिर बारिश भी खूब हुई। लगभग डेढ़ घंटे तक घनश्याम की बरसती हुई करुणा का आनन्द लेते हुए बाबा चलते रहे। शाम को प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने कहा कि उत्तर बिहार के संकट की तरफ सारे देश का ध्यान गया है। सरकार भी, जहाँ तक उससे बन पड़ता है, कर रही है। लेकिन हम पूछना चाहते हैं कि स्थानीय लोग क्या कर रहे हैं? हमें बताया गया कि मुजफ्फरपुर शहर के सिनेमा पहले की तरह चल रहे हैं, मानो इस इलाके में कोई संकट ही नहीं आया। इसके क्या माने होते हैं? क्या यहाँ के लोग इतना नहीं कर सकते कि कुछ रोज के लिए सिनेमा न देखें और सिनेमा के टिकट का पैसा बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए दे दिया जाय? उनकी मदद करने से जो चित्र सामने आयेंगे वे सिनेमा के चित्रों के मुकाबिले क्या कम आकर्षक होंगे? लेकिन इस तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता। कारण यही है कि परिवार की भावना खतम-सी हो गयी है। लेकिन हम आपसे कह देना चाहते हैं कि अगर हममें

यह भावना नहीं पैदा होती है, तो हम ज्यादा दिन टिकनेवाले नहीं हैं। बाहर से कितनी ही मदद क्यों न मिले, अगर आपका आपस का व्यवहार प्रेम का न हो, तो आगे बड़ा खतरा है।

हम आपको समझाने आये हैं कि सारा गाँव एक परिवार बन जाय। अपनी कुल भूमि दान में दीजिये और गाँव को जमीन का मालिक बनाइये। आदमी-आदमी के बीच जो बनावटी भेद आपने बना रखे हैं, उन्हें खतम कीजिये। अगर ये भेद भगवान् को मंजूर होते, तो क्या वह यह नहीं कर सकता था कि हर अमीर आदमी को या हर मिनिस्टर को छह-छह नाक देता और चीफ मिनिस्टर को एक-एक दर्जन। या श्रीमानों के घर में वह बच्चों को हीरे-जवाहिरात पहनाकर भेजता। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। हरएक को एक-एक ही नाक दी है और हर बच्चा नंगा आता है। इस तरह से जब हवा, पानी और सूरज की रोशनी पर किसीकी मालकियत नहीं हो सकती, तो जमीन पर भी किसीकी मालकियत नहीं हो सकती। हम आपको बताना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान में अब जमीन उसीके पास रहेगी, जो अपने-आप काश्त करने को तैयार होगा।

जो करना सो खुद करना

अगले दिन हम धनकौल में थे। यह एक छोटा-सा गाँव है। शाम को सभा में ठेठ देहाती लोग नजर आते थे। बाबा ने उनसे कहा कि देहात का हृदय पहले जैसा शुद्ध नहीं है, फिर भी काफी निर्मलता है। देहात के लोग प्रेम समझते हैं। अड़ोसी-पड़ोसी को पहचानते हैं। शहर का लक्षण यह है कि पड़ोसी एक-दूसरे को नहीं पहचानते। जितना बड़ा शहर उतना ही एक-दूसरे से कम जान-पहचान, एक-दूसरे की परवाह नहीं। जैसे टिकटघर पर एक काशी का टिकट लेता है और दूसरा कलकत्ते का। एक-दूसरे के लिए कोई दिलचस्पी नहीं, प्रेम नहीं। आपने देखा होगा कि सड़े गोबर पर मक्खियाँ

खूब बैठती हैं। वे एक-दूसरे की चिन्ता नहीं करतीं। उनकी दिलचस्पी चूसने में है। इसी तरह शहर में लोग चूसने के लिए रहते हैं। वहाँ पैसा मिलता है। गाँव में ऐसा नहीं होता। लेकिन शहर की बुराइयाँ गाँव में काफी आ गयी हैं। बाबा ने आगे चलकर कहा कि आजकल सरकारों की महिमा दुनिया भर में बढ़ी है। यह कहा जाता है कि कल्याण-राज्य और जनता के कल्याण की सारी जिम्मेदारी सरकार पर है। पाँच साल के लिए हमारे कल्याण का ठीका आपके पास। लेकिन यह बात होनेवाली नहीं है। हिन्दुस्तान में पाँच लाख देहात हैं। इनकी इतनी समस्याएँ हैं कि दिल्ली और पटने से हल नहीं हो सकतीं। इस वास्ते जो कुछ करना है, वह आपको ही करना है। बाबा ने बताया कि पहली चीज आपको जो करनी है, वह है जमीन का बँटवारा, दूसरी चीज है, ग्रामोद्योग। तीसरे अपने गाँव के लिए शिक्षक का इन्तजाम खुद करें। फिर आपको गाँव भी साफ-सुथरा रखना चाहिए। मल-मूत्र का खाद बनाइये। हरएक मनुष्य के मल-मूत्र से हर साल छह रुपये का खाद मिल सकता है। इसके अलावा वह बुराइयाँ, जैसे बीड़ी, सिगरेट, सिनेमा, शराब, ये शहर से आयी हैं, उनको छोड़ना होगा। एक खास बात यह करनी है कि गाँव में हफ्ते में एक दिन सब भाई-बहन मिलकर बैठें, भगवान् की प्रार्थना करें, और गाँव की भलाई की बात सोचें और उसकी चर्चा करें। ऐसा होगा, तो आपकी उन्नति होगी और गाँव सुखी होगा।

दान-पत्र वापस

अगला पड़ाव रेवासी में था। कार्यकर्ताओं ने आकर बताया कि बड़े जमींदार भी कट्ठा-दो कट्ठा, बहुत कम जमीन दे रहे हैं। बाबा ने उन जमीनों के दानपत्र वापस कर देने को कहा। शाम को प्रार्थना में उन्होंने विस्तार से इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आगे के जमाने में जमीन उसके हाथ में रहेगी, जो काश्त करेगा। किताब उसीके पास रहेगी, जो पढ़ेगा। अगर लड़का खेती नहीं करता है, तो काफी जमीन

उसकी तालीम में चली जायगी। होना यह चाहिए कि दूसरे लड़कों के साथ मिलकर आपका लड़का भी खेत पर काम करे। इससे फर्क मिटेगा और आपकी खेती की पैदावार बढ़ेगी। भूमि-माता की सेवा से बढ़कर किसी दूसरे काम में आनन्द नहीं। उद्योग माने ऊँचा योग। जो उद्योग नहीं करते, वे विकार-वासना के शिकार होते हैं। आज दुनिया में जितने सारे पाप, लड़ाई-झगड़े चलते हैं, उसका कारण यह है कि कुछ लोग काम को नीच दृष्टि से देखते हैं और शरीर-श्रम टालना चाहते हैं। भूदान-यज्ञ में केवल भूमि नहीं देना है, जीवन बदलना है। दान देने के साथ आलस्य छोड़ने की प्रतिज्ञा करो। अगर आलस्य नहीं छोड़ते, तो मैं आपकी जमीन नहीं लेना चाहता। मैं जानता हूँ कि वह आपके हाथ में नहीं रहनेवाली है। बाबा स्कूल या आश्रम खोलने के लिए जमीन नहीं माँगता, आपके जीवन में, हृदय में परिवर्तन करना चाहता है। कट्ठा-दो कट्ठा देने में सार नहीं है। बाबा को जमीन का क्या करना है? उसे विचार बदलने से मतलब है। काम तो तब बनेगा, जब आप हमारा विचार जान जायँगे। हम चाहते हैं कि जो विचार हमको दो साल से आपके बिहार प्रदेश में घुमा रहा है वह आपके अन्दर पैठ जाय। दीपक से दीपक लग जाय। आज भी हमने कई दानपत्र वापस किये हैं। दुःख पहुँचाने के लिए नहीं, विचार पहुँचाने के लिए। ठीक से सोच-समझ-कर दीजियेगा। जीवन में भारी परिवर्तन लाइयेगा। हमारा झंडा लेकर घूमियेगा। आपको आत्म-समाधान मिलेगा।

अगले दिन दस मील चलकर हम बमनगामा पहुँचे। उस दिन भी कई दानपत्र वापस हुए। इससे दाताओं को दुःख हुआ। साढ़े तीन बजे वे लोग बाबा से मिले, मानो प्रेम का बाजार लग गया। एक जमींदार ने कहा कि बाबा, आपने हमारा दानपत्र वापस कर दिया?

बाबा ने पूछा कि आपके पास कुल माया कितनी है?

तीस बीघा।

और हमें कितना दिया है ?

एक बीघा, उसने बड़े झिझकते हुए कहा ।

अगर हम आपका एक बीघा ले लेते हैं, तो लोग यही कहेंगे कि आपने बाबा को ठगा है। हम नहीं चाहते कि आपकी बदनामी हो ।

जमींदार चुप था ।

हिम्मत कीजिये, कुछ आगे बढ़िये—बाबा ने कहा ।

अच्छा तो दो बीघे और सही ।

आप तो पक्के व्यापारी मालूम होते हैं—बाबा ने कहा । हमें सब्जी-मंडी की याद आ गयी । वहाँ खरीदनेवाला धीरे-धीरे आगे बढ़ता है । यह सुनकर सब हँस पड़े । बाबा बोले कि हम चाहते हैं कि आप हमारे विचार को समझें और फिर छठा हिस्सा दें । हम ज्यादा नहीं माँगते ।

जमींदार कुछ सोचते हुए मालूम पड़े ।

आपको संकोच किस बात का है ? जब आप तीन बीघे दे सकते हैं, तो पाँच भी दे सकते हैं ।

करुणा का विकास करें

आखिर काश्तकार भाई ने हिम्मत की और पाँच बीघा जमीन दी। उनके चेहरे पर सन्तोष नजर आता था । इसी तरह दूसरे काश्तकारों से बात हुई और घंटे भर यह सत्संग चला ।

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि भूदान-यज्ञ के मूल में जो विचार है, वह करुणा का है । बुद्ध भगवान् के पिताजी ने योजना की थी कि राजपुत्र को कोई दुःख न दीखे । फिर भी दुःख उसे दीख गया । वह बुद्धिमान था । उसने अन्दाज लगाया कि कितना दुःख इस दुनिया में होगा । वह घर से निकल पड़ा । चालीस दिन तक उपवास किया । तपस्या की । आँखें खोलीं, तो क्या दीखता है ? भगवान् की करुणा सर्वत्र फैली है । करुणा के रूप में भगवान् का दर्शन किया । उन्होंने करुणा-ही-करुणा देखी । यह सन्देश लेकर वे निकल पड़े । भूदान-यज्ञ के मूल में करुणा रही है । इसका

दर्शन जिसे होगा, वह छटपटायेगा। उसके अन्दर करुणाभाव प्रकट होगा। मानव-समाज ने बड़ी निष्ठा और तपस्या से कुछ भावनाओं का विकास किया है। वात्सल्य का गुण मानव ने हजारों बरस के अभ्यास से विकसित किया है। इसी तरह आदर का गुण बड़ी तपस्या से समाज ने पाया है। आदर बड़ों का, वात्सल्य छोटों का। उन दोनों के बीच का गुण है, करुणा। करुणा सबके लिए होनी चाहिए। हम चाहते हैं कि जो कार्यकर्ता हों—हर कोई जो काम करे वह कार्यकर्ता है—वे इस गुण का विकास करें। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हमने कोई संगठन नहीं बनाया। हम किसी संस्था के सदस्य नहीं। हमारा जितना विश्वास गुण पर है, उतना बाहरी रचना पर नहीं। तुलसीदासजी अपने को पतित से पतित कहते थे। सबसे एकरूप हुए। उनकी करुणा कितनी विशाल, कितनी गहरी थी। इसी विशालता का फल है कि रामायण हमारे उत्थान में मदद करती है। कवि तो कितने ही मिलेंगे, पर उनमें करुणा कहाँ पैदा होती है? महात्मा गांधी का उदाहरण हमने सामने ही देखा। उनके हृदय में करुणा-ही-करुणा थी। इसलिए छोटे कार्यकर्ता छोटे रहें। हम चाहते हैं कि वे कभी बड़ों का मत्सर न करें और हृदय में करुणा का विकास करें।

अगले दिन ११ सितम्बर पड़ता था। इस दिन बाबा ने अपनी जीवन-यात्रा के उनसठ बरस पूरे करके साठवें में प्रवेश किया। हमारा पड़ाव सीतामढ़ी में था, जो सबडिवीजन का सदर मुकाम है। रास्ते में कहीं घुटने भर पानी, कहीं कादों, कहीं कच्ची सड़क और कहीं पक्की। पड़ाव पर पहुँचने के पहले बाबा राधाकृष्ण गोयनका कॉलेज में दस मिनट के लिए ठहरे। वहाँ उन्होंने गांधी-निधि द्वारा संचालित सर्वोदय-स्वाध्याय-मंडल का उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने अपने दिल का दर्द जाहिर किया।

गांधी-साहित्य

उन्होंने कहा कि मुझे इस बात का दुःख है कि कॉलेजों में गांधी-

स्मारक-निधि की ओर से गांधी-साहित्य रखना पड़े। दुनिया में शायद ही कोई दूसरा देश होगा, जहाँ के कॉलेजों और युनिवर्सिटियों में अपने यहाँ के महापुरुषों का दखल न हो। जिन्होंने हमें न सिर्फ आजादी का रास्ता दिया, बल्कि जिन्होंने ऐसा रास्ता दिया, जिससे सारी दुनिया के मसले हल हो सकते हैं, उनका साहित्य—जो तीन-चार सौ रुपये से ज्यादा का नहीं होगा—गांधी-निधिवालों को अपनी तरफ से देना पड़े, इससे ज्यादा लज्जा-जनक बात क्या हो सकती है, मैं नहीं समझ सकता। जहाँ नागरिकता का अध्ययन पहला कर्तव्य होना चाहिए, जहाँ उस सत्पुरुष का साहित्य, जिसने हमें नागरिक बनाया—नहीं तो हम गुलाम के सिवा क्या थे—उसका साहित्य अध्ययन के लिए न रखा जाय, यह आश्चर्य की बात है। जहाँ सरकार बार-बार दुहराती है कि गांधीजी के रास्ते से ही अपना काम होगा, पंडित नेहरू अनेक बार कहते हैं कि अहिंसा से ही अपना बेड़ा पार होगा, उन कॉलेजों में उस ऋषि के साहित्य का दखल न हो, यह मैं समझ नहीं पाता। आगे चलकर बाबा ने कहा कि गांधीजी ने जो कुछ कहा है और लिखा है, उससे वे कहीं ज्यादा बड़े हैं। अगर वे सोलह आने अनुभव लेते थे, तो एक आना लिखते और बोलते थे। इसलिए उनकी बात सीधे हृदय में जाती है। उपनिषद् की भाषा में वह द्रष्टा थे। इसलिए वे जो भी लिखते थे, उससे दसगुनी कल्पना आपको करनी चाहिए। तब उनके अर्थ की गहराई का पता चलेगा। जहाँ उनके साहित्य में आप पहुँचते हैं, वहाँ उसे अपने जीवन में उतारने के लिए पूर्ण श्रद्धा से प्रयत्न करें।

उस दिन बहुत से तार और सन्देश आये, जिनमें एक तार विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इसे पलामू जिला भूदान-समिति के संयोजक ने भेजा था। उसमें लिखा था कि "इस पवित्र अवसर पर पलामू आपको एक नया गाँव भेंट करता है। उसमें पन्द्रह परिवार हैं। वे सारी जमीन पर समानता के आधार पर मिलकर काश्त करेंगे। एक परिवार की तरह रहेंगे। उन्होंने

यह भी संकल्प किया है कि अपनी सभी जरूरतों में ग्राम को स्वावलम्बी बनायेंगे। कृपया इसे स्वीकार कर कृतार्थ कीजिये।"

भूदान का रहस्य

बाबा का प्रार्थना-प्रवचन लगभग अस्सी मिनट तक चला। उन्होंने बड़े विस्तार के साथ समझाया कि भूदान की कल्पना के पीछे रहस्य क्या है ? उन्होंने कहा कि जैसे व्यक्ति के जीवन में धर्म बदलता है, वैसे ही समाज के जीवन में। मूलभूत तत्त्व एक ही रहता है। पर बाहर का आकार इतना बदल जाता है कि एकदम उल्टा दीखता है। इस तरह जो मूल्य या कदरें हम स्थापित करना चाहते हैं, वे पुराने मूल्य या कदरों से बिलकुल विपरीत दीख पड़ेंगी। पर वह विपरीत नहीं होंगी, विकास-क्रम में आगे के कदम की सूचक होंगी। आज की माँग संग्रह-मुक्त-समाज बनाने की है। आज हम सारे समाज में अपरिग्रह की शक्ति फैलाना चाहते हैं। समाज की धारणा के लिए अपरिग्रह का मूल्य स्थापित करना चाहते हैं। संन्यासियों और यतियों के लिए असंग्रह का जो गुण व्यक्तिगत रूप से रखा गया था, उसे व्यापक बनाने का जमाना आया है। अब कल्पना यह होनी चाहिए कि मेरा संग्रह हर घर में है और हरएक का संग्रह मेरे घर में है। असंग्रह माने व्यापक संग्रह याने समविभाजन। हम विज्ञान का बहुत आदर करते हैं। आत्मज्ञान की तरह वह भी एक शक्ति है। विज्ञान से अगर दृश्य का ज्ञान मिलता है, तो आत्मज्ञान से द्रष्टा का ज्ञान मिलता है। अब हम स्वतंत्र हुए हैं। विवेकपूर्वक ज्ञान की नयी-नयी खोज का सदुपयोग करना और सारे समाज के अन्दर धर्म-विचार को फैलाना हमारा काम है। इसलिए हमने उसे धर्म-चक्र-प्रवर्तन नाम दिया है।

कुछ लोग कहते हैं कि जब व्यक्ति की मालिकी न रहेगी, तो काम करने का प्रोत्साहन कैसे मिलेगा ? यह मानना कि बिना मालिकी के आप बुद्धि का उपयोग नहीं करेंगे, आपकी बेइज्जती करना है। हम पूछते हैं कि कल अगर आप निःसन्तान हो जायँ और आपका ही एकमात्र अधिकार

स्थापित हो जाय, तो क्या आप आठ घंटे के बजाय बारह घंटे काम करेंगे ? जिसको नये जमाने का जरा भी खयाल है, उसकी समझ में आयेगा कि सारी जमीन अगर गाँव की कर दें, तो परिवार का आनन्द सौगुना बढ़ जायगा। हम चाहते हैं कि आप धर्म-विचार को समझें, कबूल करें। बिना खिलाये खाना नहीं है। बिना दिये लेना नहीं है और सतत देते ही रहना है। जैसे फुटबॉल के खेल में गेंद अपने पास आयी, तो तुरन्त उसको लात मारकर फेंक देते हैं, उसी तरह सम्पत्ति को भी लातें लगनी चाहिए। अगर सम्पत्ति चलती रहेगी, तो उसका विलास प्रकट होगा और समाज को आनन्द आयगा। भूदान-यज्ञ के पीछे यही विचार है।

प्रार्थना-प्रवचन के बाद बाबा ने नित्य की भाँति गीता-प्रवचन पर अपने हस्ताक्षर किये। उस दिन लगभग दो सौ प्रतियाँ बिकीं, जिन पर सही करने में बाबा का एक घंटे से ज्यादा समय लगा। फिर वे 'श्रद्धानन्द अनाथालय' देखने गये, जिसे बाबा नरसिंहदास बरसों से चला रहे हैं। वे उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले के निवासी हैं, लेकिन सीतामढ़ी सबडिवीजन में बत्तीस साल से सेवा कर रहे हैं और आज वहाँ के अत्यन्त लोकप्रिय सज्जनों में से हैं। इसके बाद कार्यकर्ताओं की बैठक हुई।

जन्म-दिन माने क्या ?

आठ बज चुके थे। बाबा ने अपना आज का अन्तिम भोजन, वही तीस तोला दही, लिया। इन दिनों वे चौबीस घंटे में चार बार खाते हैं और खाने में केवल इतना दही ही लेते हैं। साढ़े आठ बजे वह आराम करने चले गये। इस प्रकार वह महत्त्वपूर्ण दिन पूरा हुआ। बाबा इसको किस दृष्टि से देखते हैं, इस बात का एक चिट्ठी से साफ पता चलता है। यह चिट्ठी उन्होंने आज ही एक बहन कार्यकर्त्री के पत्र के जवाब में लिखी। बाबा ने लिखा :

"हाँ, जन्म-दिन तो है। जैसे घर में रहनेवाला घर से बिल्कुल अलग

ही होता है, वैसे हम देह से बिलकुल ही पृथक् हैं। यह बात सीखने की है। हम घर का जन्म-दिन तो नहीं मनाते, उसका उपयोग करते हैं। उसको अच्छा साफ-सुथरा ही रखते हैं। वैसा ही व्यवहार शरीर के साथ करना सीख जायेंगे, तो जीवन कितना सरल और सुखमय होगा।"

जैसे सूर्यनारायण के लिए हर दिन समान है और वह किसी दिन किसी भी उत्सव में नहीं फँसते, उसी तरह बाबा के लिए भी हर दिन समान है और उनकी यात्रा अखंड चलती है। जन्म-दिन हो या और कोई दिन, उससे उनके कार्यक्रम में कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन शरीर तो शरीर ही है। इस वजह से शायद उनकी वर्षगाँठ के माने हैं, उनके जीवन के एक नये अध्याय का आरम्भ। ११ सितम्बर, १९५१ को बाबा ने अपने पवनार-आश्रम से दिल्ली के लिए ऐतिहासिक कूच किया। एक साल बाद जब वे काशी-विद्यापीठ में थे, तो उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जब तक इस देश में से भूमिहीनता का कलंक नहीं मिटता है, मैं अपने आश्रम नहीं लौटूँगा। इसी दिन पिछले साल (सन् '५३ में) सम्पत्तिदान-यज्ञ का आरम्भ हुआ, जब एक निष्ठावान कार्यकर्ता ने अपने मासिक तलब का छठा हिस्सा आजीवन देने का व्रत लिया। इस साल बाबा ने इस शुभ अवसर पर अपनी भूदान की माँग को ही एक नयी दिशा दी। अब तक तो वे छठा हिस्सा माँगा करते थे, लेकिन अब उन्होंने अपनी माँग दूसरे ढंग से पेश करनी शुरू कर दी। अब वे यह कहते हैं कि मुझे अपने घर में जगह दो, मुझे अपना भाई समझो और भाई के नाते मुझे मेरा हक दो। अगर अकेले हो, तो दूसरा हिस्सा दो, तीन भाई हो, तो चौथा हिस्सा दो, पाँच हो, तो छठा और छह हो, तो सातवाँ। उनके इस मंत्र का जादू हमने आगे की यात्रा में साफ-साफ देखा। मुजफ्फरपुर जिले में तो रोजाना ही दिन में दोपहर को श्रीमान लोग अपने दानपत्र लेकर उनके पास आते थे और अपना हिस्सा देकर जाते थे, विशेषकर वे भाई, जिनके दानपत्र वापस कर दिये जाते थे। इस कार्यक्रम का श्रेय श्री रामविलास शर्मा को दिया

जाना चाहिए। समझा बुझाकर, प्रेम से वे श्रीमानों को बाबा के पास मानो पकड़ ही लाते थे। बाबा ने इस कार्यक्रम को सत्संग नाम दिया है। इस सत्संग में जो अनोखी घटनाएँ देखने को मिलीं, उन सबकी चर्चा करना तो यहाँ नामुमकिन है। हम केवल एक मिसाल देकर सन्तोष करेंगे, जिससे उसकी झाँकी मिल सके।

एक सत्संग

लगभग साठ वर्ष का एक बूढ़ा, पुराना कांग्रेसी कार्यकर्ता, बाबा के पास सवा बीघा जमीन देने आया। उसके पास तीस बीघा जमीन थी। बाबा ने वह दान वापस कर दिया और कहा कि अगर हमें अपना भाई मानते हो, तो पन्द्रह बीघा दो या अपने इकलौते लड़के के बराबर मानते हो, तो तीसरा हिस्सा याने दस बीघा दो। उन वयोवृद्ध सज्जन ने जवाब दिया कि बाबा, आपकी माँग तो सही है, लेकिन मोह नहीं छूटता।

लेकिन इस उम्र में तो आपको हिम्मत करनी चाहिए।

हाँ, लेकिन मोह............(इतना कहकर वे बोले) अच्छा, दो बीघे ले लीजिये।

केवल दो बीघे ? क्या मैं दस बीघे का हकदार नहीं हूँ ?

अच्छा बाबा, तीन बीघा लेकर किस्सा खतम कीजिये।

आप शायद भूल गये कि मैं भाई के नाते अपना हक माँग रहा हूँ।

बाबा की यह बात सुनकर वे सज्जन कुछ सोचने-से लगे। उनको चिन्तित देखकर बाबा ने कहा, अच्छा, हम बीच का रास्ता सुझाते हैं। आप और आपके लड़के के पास पन्द्रह-पन्द्रह बीघे हैं। आपके लड़के से हम अलग बात करेंगे। इस वक्त आप और हम दो भाई हो जाते हैं। इस लिहाज से आप हमें साढ़े सात बीघे दे डालिये।

यह सुनकर वे भाई और भी चकित रह गये। उनका चेहरा लाल हो गया। मुँह से कुछ कहते नहीं बनता था। रामविलासजी ने उनसे कहा कि इससे कम अब क्या हो सकता है ? इस पर भी वे चुप रहे।

फिर थोड़ी देर बाद बोले कि अच्छा बाबा, छठा हिस्सा याने पाँच बीघे लीजिये और मैं जाता हूँ। यह कहकर वे चलने लगे। बाबा मुस्करा उठे और बोले कि आप बैठिये, जाते कहाँ हैं? हमने आपसे केवल दान ही नहीं लिया है, आपको दान माँगने की विधि भी पूरी बता दी है। अब आज से आप हमारे कार्यकर्ता हो गये।

बराबरी की मिठास

बारह सितम्बर को हम लोग बथनाहा में थे। सुबह कार्यकर्ताओं की बैठक में बाबा ने अपनी माँग का नया सूत्र पेश किया। एक कार्यकर्ता ने पाँचवाँ हिस्सा दिया और दूसरे ने तीसरा। और सबने कबूल किया कि आपकी माँग सही है। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि बराबरी में जो मिठास और सुख है, वह ऊँच-नीच में नहीं। विशेष अधिकार या जिसे अँग्रेजी में प्रिविलेज कहते हैं, उसका जमाना गया। हमारे ऋषि-मुनियों ने सिखाया कि तुम सारे ईश्वर के प्रेरित हो, सबके अन्दर समान रूप से ज्योति जल रही है। हाँ, प्रकाश कम-ज्यादा हुआ करता है। इसका कारण यह नहीं कि ज्योति कम-ज्यादा है, पर यह है कि ऊपर का काँच साफ या स्वच्छ है या नहीं? लालटेन के ऊपर के चिमनी अगर गन्दी हो, तो उजाला कम पड़ता है। इस प्रकार यह जो फर्क है, वह ज्योति के कारण नहीं, ऊपर की स्थिति के कारण है। यह जो हमारे सामने लोग बैठे हैं, गरीब कहे जाते हैं। पर सचमुच ये हीरे हैं, जो कचरे में पड़े हैं। उनमें ऐसी चमक और रोशनी है, जो बड़े-बड़े सत्पुरुषों में होती है। वह प्रकट हो भी सकती है। उसके लिए प्रयत्न होना चाहिए। सबको विकास का समान मौका मिलना चाहिए। इसके बाद बाबा ने बताया कि हमारा जो यह काम है, उसका जमीन के बँटवारे से आरम्भ मात्र होता है, अन्त नहीं। यह तो ऐसा ही है कि जैसे शादी हो गयी, फिर मामला शुरू हुआ। आगे सारा संसार चलेगा, सब कुछ करना पड़ेगा। जैसे यह वैसे वह। जहाँ आपने गरीबों का हक समझकर, उसको अपना जमाई मानकर

भूदान देना कबूल कर लिया, वहाँ एक व्रत ले लिया—यही कि गरीब की सेवा में अपने को लगा देंगे। अपने में और उसमें कभी भेद नहीं करेंगे। यही परमेश्वर-निष्ठा है। भूदान-यज्ञ का उद्देश्य यही है कि जिस भगवान् का हर कोई नाम लेता है, उसकी भक्ति का मौका मिले और सब उसके भक्त बन जायँ। आज तो पैसे की भक्ति है। उस भक्ति के लिए मारे-मारे फिरते हैं; फिर भी सन्तोष नहीं, आत्म-समाधान नहीं। हम चाहते हैं कि सब ईश्वर की भक्ति करें और सच्ची विद्या सबमें फैले।

बटोरना बंद, बाँटना शुरू

दूसरे दिन हमारा पड़ाव सुतिहारा में था। प्रार्थना के बाद बारिश होने लगी। बाबा मंच पर खड़े हो गये और सभा में सब भाई-बहन भी खड़े हो गये। बाबा ने कहा कि आज हम शास्त्र की बातें आप सबको खड़े-खड़े सिखायेंगे। शास्त्रकार ने कहा है :

कलिः शयानो भवति, संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठन् त्रेता भवति, कृते सम्पद्यते चरन्॥

शास्त्रकार कहता है कि जो मनुष्य सोता रहेगा वह कलियुग में रहेगा, जो बैठ गया वह द्वापर में, जो खड़ा हो गया वह त्रेता में और जो चलने लगा वह कृतयुग याने सत्ययुग में आ गया। इसलिए सोना अच्छा नहीं। हर कोई चाहता है कि सुख बढ़े और दुःख घटे। इसकी एक ही सूरत है। सुख बढ़ाना चाहते हो, तो सुख बाँट लो, दुःख घटाना चाहते हो, तो दुःख बाँट लो। सुख और दुःख दोनों बाँट लेना है। लेकिन आज हम करते क्या हैं? बाँटते नहीं, बटोरते हैं। जहाँ बटोरते हैं, वहाँ झगड़ा बढ़ेगा, सुख घटेगा और दुःख फैलेगा। इसलिए बटोरना छोड़ो और बाँटना शुरू करो। जहाँ बटोरा वहाँ चोरी, पुलिस, लश्कर, फौज, वकील सबकी लूट चलेगी। चोरों से लेकर वकीलों तक की, कुल बेकार जमात आ टूटेगी। अगर बाँटते रहेंगे, अपने पास जो कुछ भी है वह दूसरों को देकर भोगेंगे, तो सुखी होंगे। प्रेम-भाव बढ़ेगा। देश मजबूत

रहेगा। आप सबको कम-से-कम छठा हिस्सा तो देना ही चाहिए। इससे गाँव में कोई भी बेजमीन न रहेगा। भगवान् श्रीकृष्ण क्या करते थे? मक्खन, दही बाँटकर खाते थे। यशोदा कहती थी कि तू गलत काम करता है। दही, मक्खन खाना नहीं, बेचना चाहिए, मथुरा से पैसा मिलेगा। श्रीकृष्ण कहते हैं कि मथुरा में पैसा है, तो कंस भी है। पैसे का राज्य चलेगा, तो कंस का भी चलेगा। इसलिए हम बेचेंगे नहीं, बाँटकर खायेंगे। गाँव के लड़के-बच्चे मक्खन खाकर मजबूत हो गये। आखिर कंस की कुछ नहीं चली। और आप जानते हैं कि वह मारा गया। लोग कहते हैं कि कलियुग खराब है। अरे, कलियुग में तो महात्मा गांधी जैसे सत्पुरुष हो गये। शास्त्रकार बताते हैं कि सोना खराब है, आलस्य खराब है, इस वास्ते जाग जाओ। काम करना शुरू करो। आलस्य छोड़ो, शराब छोड़ो, मेहनत से काम करो। गाँव की जमीन और सम्पत्ति का बँटवारा करो।

अंधे का दान

अगले दिन हमारा पड़ाव परिहार में था। आज बाबा को बिहार में आये हुए दो वर्ष पूरे होते हैं। इस अर्से में उन्होंने सूर्य जैसी नियमितता-पूर्वक अपनी यात्रा जारी रखी है। बीमारी के तीन महीनों के अलावा उनका कार्यक्रम अखंड चलता रहा। हमें नहीं मालूम कि पिछले एक हजार साल में इतनी एकाग्रता और निष्ठा के साथ किसी भारतीय ने बिहार की इतने अर्से तक इतनी तत्परता से सेवा की हो। आगे के इतिहास में बिहार जरूर इस बात का गौरव प्राप्त करना चाहेगा कि नये भारत के नये निर्माण में उसने देश का महत्त्वपूर्ण मार्ग-दर्शन किया। दो वर्ष पूरे होने की खुशी में मानो आज एक बड़ी प्रेरणादायी घटना हुई। वह यह कि एक बूढ़ा आदमी, जिसकी दोनों आँखें चली गयी थीं, बाबा से दोपहर को मिलने आया। उसके पास जो छह कट्ठा जमीन थी, वह उसने सबकी सब दान में दे दी। बाबा ने पूछा कि तुम फिर अपना काम कैसे चलाओगे? उसने जवाब दिया कि मेहनत-मजदूरी से गुजर होती है

और इन छह कट्ठों से कोई खास मदद भी नहीं मिलती, इसलिए आपको भेंट करता हूँ। बाबा ने खुशी से उसका दान स्वीकार किया। लेकिन दानपत्र के पीठ पर यह लिख दिया :

"इस अन्धे भक्त ने यह जमीन प्रेमपूर्वक दी है। वह उसीको प्रसाद के तौर पर वापस दी जाती है।"—विनोबा।

सूरदास की खुशी का ठिकाना न रहा। लकड़ी टेकते हुए, अपने पोते के कंधे पर हाथ रखकर वह अपने घर वापस चला गया।

स्वराज्य से सर्वोदय

पन्द्रह तारीख को मुरसण्ड जाते हुए रास्ते में बाबा सोनखी नामक छोटे-से गाँव में कुछ देर के लिए ठहरे। सामने ही सूर्योदय का दर्शन हो रहा था। बहुत ही मनोहर छटा थी। बाबा ने कहा कि खाना-पीना इत्यादि पशु-देह और मनुष्य-देह, दोनों में चलता है; पर उससे रस नहीं आता है। रस तब आता है, जब उसमें विचारों की दिव्यता दाखिल होती है—भक्ति, प्रेम, त्याग की दिव्यता। सद्विचार जितना फैलेगा और जीवन के अन्दर जितना पैठेगा, जीवन उतना ही शानदार और ऊँचा उठेगा। आप सबको चाहिए कि इस विचार का अध्ययन-मनन करें और दूसरों तक इसे पहुँचायें।

शाम को प्रार्थना के समय भी बहुत सुन्दर दृश्य था। ऊपर नीला आसमान, सामने शीशम के बड़े-बड़े पेड़ और नीचे हरी-हरी घास। एक अद्भुत शान्ति थी, जिसने बाबा के मन को मोह लिया और उन्होंने लगभग चालीस मिनट तक अपना प्रवचन दिया, जिसमें भूदान के पीछे जो त्रिविध विचार हैं, उनकी कल्पना पेश की। उन्होंने कहा कि हर जमाने में मनुष्य के सामने कोई ध्येय होता है और उस ध्येय के अनुसार उसका जीवन-प्रवाह चलता है। जानवरों के इतिहास में यह चीज नहीं मिलती। हम देखते हैं कि कुछ वर्ष हुए कि हमने स्वतंत्रता प्राप्त की। इसके बाद कोई दूसरा ध्येय हमारे सामने है या नहीं? या हम ऐसे ही जानवरों

का जीवन बिताते रहेंगे ? जीवन का आनन्द भोग भोगने में नहीं, ध्येय के साथ एकरूप होने में है। परमेश्वर की कृपा से जहाँ हिन्दुस्तान को स्वराज्य का एक ध्येय प्राप्त हुआ, वहाँ फौरन यह दूसरा ध्येय सामने आया। और वह है सर्वोदय। इस तरह स्वराज्य-प्राप्ति के पहले ही सर्वोदय का ध्येय सामने आ गया था—जैसे पूर्णिमा के दिन इधर सूर्य का अस्त और चन्द्र का उदय या उधर चन्द्र का अस्त और सूर्य का उदय। भारतीय समाज में हम पूर्णिमा का दर्शन करते हैं। एक ध्येय का अस्त होता है और दूसरे ध्येय का उदय होता है। इस वास्ते हम बच गये।

बाबा ने पूछा कि इस ध्येय तक पहुँचने के लिए मार्ग कौन सा है ? इसके लिए साधन कौनसा है ? कोई कहेगा कि कम्युनिटी प्रोजेक्ट साधन है। सर्वोदय में, देश में सम्पत्ति बढ़ाना, पैदावार बढ़ाना जरूरी है। लेकिन यह सर्वोदय में ही नहीं, हर ध्येय में जरूरी है। इसलिए पैदावार बढ़ा ली, तो सर्वोदय हो गया, ऐसा नहीं है। सर्वोदय का साधन "सर्व" शब्द में है। जो कुछ हो वह सबको हासिल हो। जो कुछ पैदा करो वह सबमें बाँटो। उत्पादन की वृद्धि अमेरिका में है, यह बात मनुष्य ही केवल जानता हो सो नहीं, चींटी भी जानती है, प्राणीमात्र इसे जानता है। हर कोई जो खाता है, सो जानता है। रूस में भी उत्पादन बढ़ाने पर जोर है, लेकिन क्या इससे सर्वोदय हो गया ? इसलिए बाहर के देशों का नाम हम नहीं ले सकते। यह खूबी हिन्दुस्तान की है कि उसने सर्वोदय जैसा अद्वितीय शब्द निकाला। यह अपने देश का स्वतंत्र मंत्र है। उत्पादन बढ़ाने के लिए जो साधन अमेरिका ने अपनाये, रूस ने अपनाये, उससे हमारा काम नहीं चलेगा। अपने साधन बनाने होंगे। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वह साधन हमको मिल गया। जमीन का समान बँटवारा कर लो, यह उस साधन का हिस्सा है। लेकिन केवल जमीन का बँटवारा सर्वोदय का साधन नहीं। जमीन का बँटवारा दूसरी जगह तरह-तरह से हुआ है। यह जो साधन हमको मिला है, वह है अहिंसा के ढंग से, प्रेम-

पूर्वक, अपनी जमीन का हिस्सा खुद ही समर्पण करना। अहिंसक ढंग से जमीन का बँटवारा, वह ध्येय और यह साधन। अब इन दोनों की प्राप्ति के लिए विचार चाहिए। वह विचार है अपरिग्रह, अस्तेय और शरीर-श्रम। अपरिग्रह माने संग्रह घर में नहीं, समाज में होगा। सम्पत्ति समाज को समर्पण करनी चाहिए। अस्तेय माने चोरी नहीं करना। वह रातवाली चोरी नहीं, जिसे हरएक ने मना किया है। दिनवाली चोरी मिटनी चाहिए। वह बहुत सूक्ष्म होती है और सफाई के साथ की जाती है। ये जो चोर होते हैं, वे साहूकार माने जाते हैं और जो गुनहगार होते हैं, वे न्यायमूर्ति, जज, वकील और कोतवाल कहे जाते हैं। शरीर-श्रम के माने क्या है? कुछ-न-कुछ उत्पादन हरएक को करना होगा। जो भी खाये वह उत्पादन करे। शारीरिक जीवन हरएक को है। जब वह नहीं टलता, तब उसका बोझ दूसरे पर क्यों डाला जाय? यह नवयुग का विचार है। यह त्रिविध विचार है। आखिर में बाबा ने कहा कि जिसके सामने यह ध्येय होगा, वह उठ खड़ा होगा। यह काम संस्था-प्रेरणा से नहीं, निष्ठा-प्रेरणा से होता है। संस्था से प्रेरित होकर ऐसा क्रान्तिकारी काम नहीं होता।

अगले दिन जब हम रसलपुर पहुँचे, तब स्वागत में बड़ी उम्र के लोगों के अलावा बहुत से बच्चे भी थे। बाबा ने एक लड़के से पूछा कि हम यहाँ क्यों आये? उसने कहा कि जमीन माँगने। बाबा बोले कि कितनी? उसने कहा कि छह बीघा में से एक बीघा।

और बारह बीघे में से?

दो बीघा।

और तीस बीघे में से?

पाँच।

और साठ में से?

दस।

यह क्या ? बाबा ने कहा। फिर बोले कि छोटी गाय से भी उतना दूध और बड़ी से भी उतना ही ?

यह सुनकर वह लड़का सोच में पड़ गया। फिर क्षण भर बाद बोला कि पन्द्रह बीघा।

बाबा ने कहा कि हाँ, ठीक है। इसके बाद उन्होंने सब लोगों से पूछा कि जो हमारी माँग से सहमत हों, वे हाथ उठायें। सबने हाथ उठाये। बाबा ने कहा कि आप अपनी जमीन दें और दूसरों से भी दिलवायें।

शुक्रवार, तारीख १७ सितम्बर। मुजफ्फरपुर जिले में बाबा का आखिरी दिन। हमारा पड़ाव पुपरी में था, जो जनकपुर रेलवे स्टेशन से सटा हुआ है। इस वास्ते बाहर से भी कई मिलनेवाले आ पहुँचे, श्री अनुग्रहनारायण सिंह (बिहार के अर्थमंत्री), श्री लक्ष्मीनारायण, संयोजक, बिहार भूदान समिति और लंदन के एक दैनिक-पत्र की नयी दिल्ली स्थित महिला प्रतिनिधि। इस बहन ने जीवन-भर में चर्खा कभी नहीं देखा था। बाबा के पास जब वह पहुँची, तो वे कताई समाप्त कर रहे थे। चर्खा जैसा सरल यंत्र देखकर वह स्तम्भित हो गयी। उसने खुद ही इसे चलाने की इच्छा जाहिर की। बाबा की अनन्य सेविका और हमारे यात्रादल की प्राण, श्रीमती महादेवी ताई ने उसकी मदद की। उसने कुछ सूत भी निकाला। हमारा खयाल है कि कुछ अभ्यास के बाद वह अच्छी तरह कात सकेगी।

उत्तराधिकारी कौन ?

इस बहन ने बाबा से कई सवाल पूछे। उनमें से एक यह था कि आप अपने काम के लिए उत्तराधिकारी किसे चुनेंगे ? बाबा ने फौरन जवाब दिया कि मैं आपको ही चुन सकता हूँ। जो कोई भी अपने आपको मानव-समाज से एकरूप कर ले, वह मेरा उत्तराधिकारी बन सकता है। मुझे किसीका नाम देने की जरूरत नहीं है। यह ईश्वर-प्रेरित आन्दोलन है। मुझे तो एक दिन जाना है, लेकिन वह प्रेरक ईश्वर सर्वदा, सर्वत्र विराजमान है, जिससे वह चाहेगा उससे काम लेगा। मैं उस बहन के चेहरे को

देख रहा था। वह बाबा की बात सुनकर अवाक् रह गयी। शायद उसे पहली बार एक शत-प्रतिशत मानव-आत्मा के दर्शन हुए।

अपने को पहचानें

दोपहर को दो बजे जिले भर के कार्यकर्ताओं की सभा हुई। बाबा ने अपने दिल के उद्गार प्रकट किये। उन्होंने कहा कि जिन पर जिले की जिम्मेवारी मानी जाय, ऐसा कोई आदमी हमने नहीं देखा, जो हर पड़ाव पर हमारे साथ रहा हो या यह भी किसीने नोट कर रखा हो कि कौन हमसे मिला, किसने कितना दिया, कितना वादा किया ? सारे जिले का दर्शन किसीके पास हो, ऐसा नहीं। बड़ा ही महँगा अवसर खोया गया। हम इस जिले में पहली बार यहाँ जनवरी में आये थे। इसे नौ महीने होने आये, फिर भी यहाँ कोई काम नहीं हुआ। कई थाने बिलकुल अछूते रह गये हैं। यहाँ पर योजना-शक्ति का अभाव दिखायी पड़ता है। हमने यहाँ पर दान-पत्र वापस देने का भी आन्दोलन शुरू किया। दानपत्र अस्वीकृत होने पर हमने देखा कि लोग दौड़े-दौड़े आते हैं और छठे हिस्से का दान कर जाते हैं। इसलिए हमें आश्चर्य होता है कि लोग इतना क्यों दे रहे हैं ? यह सारा जो दृश्य हुआ, इसमें अद्भुत श्रद्धा का दर्शन मिला। मानवता पर हमारी श्रद्धा खूब बढ़ती जा रही है। यहाँ पर जो कमी है सो देख लो, अपने को पहचानो। मुख्य-मुख्य लोग जरा देखें कि कितनी पैदल यात्रा की, कितना घूमे, कितना समय दिया ? सार यह है कि व्यवस्था के अभाव में हमारा काम रुक रहा है।

प्रेम-झरना बहता रहे

शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि डबरे का पानी स्थिर होता है, बहते झरने के जैसा नहीं। इसलिए उसका उपयोग हानिकारक होता है। पानी बहता रहे, तो वह साफ रहता है। स्वच्छ, निर्मल प्रेम की भी यही बात है। प्रेम का झरना बहता रहना चाहिए, इसके बदले वह घर या कुटुम्ब के अन्दर महदूद हो गया या बँध गया, तो वह काम-वासना

का रूप लेता है। क्योंकि, हमारा प्यार घर के बाहर नहीं बहना चाहता, अड़ोसी-पड़ोसी तक नहीं पहुँच पाता। इसलिए वह सड़ जाता है और काम-वासना में उसका रूपान्तर होता है। अपने देश में प्रेम की कमी नहीं। पर बीच के जमाने में प्रेम का बहाव रुक गया और पैसे को स्थान दिया गया। पैसे की महिमा बढ़ायी गयी। इसे अब बदलना है। लोग दान दे रहे हैं, इसका अर्थ है कि प्रेम बहने को राजी है। लोभ का पत्थर फोड़ दें, तो सोता फूट निकले। इसके बाद बाबा ने बताया कि प्रेम सबकी माता है। सारे सद्गुण उसीकी सन्तान हैं। प्रेम से ही त्याग पैदा हुआ। खतरे में कूदने की हिम्मत भी प्रेम से पैदा होती है। निर्भयता भी प्रेम से आती है। इसी प्रकार उद्योग, वात्सल्य, सहयोग, भक्ति, शौर्य, पराक्रम ये सारे गुण प्रेम से पैदा होते हैं। इसलिए दिल खोलकर प्रेम से इस काम में हिस्सा लीजिये। प्रेम में तारकशक्ति है। हिंसा में मारक या विध्वंसक शक्ति है। प्रेम से काम करनेवाले को आत्म-समाधान मिलेगा, धर्म बढ़ेगा। प्रेम का धर्म नकद धर्म है, उधार धर्म नहीं।

● ● ●

"अगर हम रोटी-रोटी का जप करते रहेंगे, तो न रोटी मिलेगी, न कोई तृप्ति मिलेगी। रोटी के लिए मेहनत करनी होगी और उसे पकाना पड़ेगा। राम का सिर्फ नाम लेने से कैसे काम चलेगा? राम का काम करना होगा। काम तो हराम का करें और नाम राम का लें। राम इतने भोले नहीं कि ठगे जायँ। हमारे देश में लोग राम का नाम तो अक्सर लेते हैं, लेकिन राम का काम नहीं करते। इसीने हमारे जीवन को छिन्न-भिन्न कर दिया है। अब हमें सही और सच्चे धर्म की शिक्षा ग्रहण करनी होगी। यही भूदान-यज्ञ का मकसद है।"

दरभंगा जिले के मधुबनी सबडिवीजन के प्रवास-काल के दो दृश्य रह-रहकर याद आते हैं :

(१) एक दिन तीसरे पहर एक साधारण जमींदार ने अपनी चालीस बीघा जमीन में से छह बीघा जमीन बाबा को दान में दी। फिर वह प्रार्थना में शरीक हुआ। उसके बाद बाबा के पास शाम को आया और पैर पकड़कर रोने लगा। बोला कि बाबा, मैं बिल्कुल अंधा हो गया था। आज आपने मुझे अपने धर्म का ज्ञान करा दिया। मेरे चार लड़के हैं। आप पाँचवें हो गये, इसलिए पाँचवें हिस्से के तौर पर आपको दो बीघे की भेंट और करता हूँ।

(२) रात के कोई आठ बजे होंगे। तारे टिमटिमा रहे थे। कुछ बेजमीन लोग बाबा से आकर अपना दुखड़ा रोने लगे। उन्होंने कहा कि हम सब १३ बीघा जमीन पर खेती करते थे। जमींदार साहब ने बेदखल कर दिया। हम सब दाने-दाने को मोहताज हैं।

इत्तिफ़ाक की बात कि वह जमींदार महोदय हमारे उस पड़ाव के स्वागताध्यक्ष भी थे। बाबा ने दोनों फरीकों से कहा कि पुरानी शिकायतें भूल जाइये और नये सिरे से इस मामले को आपस में तय कर लीजिये। जमींदार से बाबा ने प्रार्थना की कि वे कुल-की-कुल तेरह बीघा जमीन इन किसानों को लौटा दें। पर वे टस से मस न हुए। एक धूर भी नहीं देते थे। कुछ देर के बाद दो बीघा देने को राजी हुए। बाबा ने इस दान को लेने से इनकार किया। जमींदार भाई भी आगे नहीं बढ़ते थे। हवा में सन्नाटा छा गया था। देखने-वालों के दिल धड़क रहे थे। बाबा आँख मीचे चुपचाप बैठे थे। जमींदार भाई पाँच बीघे तक आये। बाबा को जैसे समाधि लग गयी थी। शांत बैठे रहे मानो धीरज और परिग्रह की लड़ाई चल रही थी। उस नम्रता के सागर के आगे कौन तूफ़ानी नदी ठहर सकती है? दाता का दिल पसीज उठा। उसने सोचा था कि बहसें और दलीलें होंगी। लेकिन उस मौन-शक्ति के आगे उसके विरोध का सारा किला आप ही आप ढह गया। पर उसके आत्मसम्मान की शान वैसी ही बनी रही। दोनों की विजय हुई।

× × ×

प्राचीनकाल से सारे देश में मिथिला का नाम बड़े गौरव और प्रेम से लिया जाता है। संस्कृति, विद्या और धर्म का वह सदा से केन्द्र रहा है। नम्रता, उदारता और अतिथि-सत्कार भी यहाँ की मिट्टी में कूट-कूट-कर भरा हुआ है। यों राजनीतिक लोग तो गण्डक से लेकर कोसी तक और हिमालय से लेकर गंगा तक के पूरे इलाके को 'मिथिला' कहते हैं, जिसमें आज के चार जिले—चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा और सहरसा समा जाते हैं, लेकिन मिथिला का असली आनंद तो दरभंगा जिले के उत्तरी भाग मधुबनी सबडिवीजन में ही आता है। इस इलाके में बाबा ने दो हफ्ते से ऊपर का समय बिताया।

समाज में एक फच्चर

दरभंगा जिले में बाबा की यह तीसरी और आखिरी यात्रा थी। शनिवार, १८ तारीख को इस यात्रा का पहला मुकाम दोघरा आश्रम नामक स्थान पर था। तीसरे पहर स्थानीय कत्तिनों और स्कूल के बच्चों ने कताई का प्रदर्शन किया। शाम के प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने इसका हवाला दिया और कहा कि हमने जो भूदान-यज्ञ शुरू किया है, वह समाज के जीवन में एक फच्चर ठोक रहा है। भूदान-यज्ञ की बुनियाद पर हमको ग्रामोद्योग का भवन खड़ा करना है। इसके ऊपर सर्वोदय का झंडा होगा। यह मत समझिये कि हम कपड़े का झंडा बनायेंगे या बना रहे हैं। हमारा झंडा विचार का झंडा होगा।

मिथिलावाले कपड़ा खुद बनायें

इसके बाद बाबा ने कहा कि आप गाँववाले निश्चय करें कि अपने गाँव का कपड़ा बुनाकर पहनेंगे। हमारा सुझाव है कि इस काम के लिए दरभंगा जिला यानी मिथिला प्रदेश चुना जाय। मिथिला प्रदेश में प्राचीनकाल से एक सभ्यता है। लेकिन, उसको फिर से खड़ी करना होगा। यहाँ अपना कपड़ा और अपने ग्रामोद्योग चलाये जायँ। पैसे की जरूरत ही कम होनी चाहिए। अगर आप सूत कातेंगे, तो अपने को बचा लेंगे। फिर भी पैसा लगेगा, तो आपके ग्रामोद्योग उसके लिए हैं ही। आपके पास जो बेशी सूत होगा, उसे लेने की जिम्मेदारी सरकार की होगी। अगर सरकार उसे लेने से इनकार करे, तो वह स्वराज्य के अयोग्य और नालायक साबित होगी।

रविवार, १९ सितंबर को हम लोग सुबह साढ़े चार बजे दोघरा आश्रम से निकले और दस मील चलकर लगभग सवा आठ बजे कमतौल पहुँचे। रास्ते में हम सबने गौतमकुंड और अहिल्या स्थान का दर्शन किया। यह वह स्थान है, जहाँ पर भगवान् रामचन्द्र ने अपने चरणों से अहिल्या

को मुक्त किया था। तीसरे पहर कुछ स्थानीय लोगों ने बाबा से भेंट की और एक परचा दिया।

काम, दया और बेकारी

बाबा ने प्रार्थना-प्रवचन में उसका हवाला देते हुए कहा कि आज यहाँ के गरीब लोगों की तरफ से हमें एक चिट्ठी मिली है, जिसमें लिखा है : "रिलीफ में मुफ्त राशन वितरण हो रहा है, उसे बन्द करके काम मिले, ऐसा यहाँ के गरीब लोग चाहते हैं।" बाबा ने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है और इसमें हमारे लोगों की खानदानी का लक्षण दिखायी पड़ता है। हमारे पूर्वजों ने सिखाया था कि किसीको भी बिना काम किये खाना नहीं चाहिए। लेकिन बीच के जमाने में यह होने लगा कि लोग दूसरों के श्रम का लाभ लेने लगे। बिना श्रम किये दूसरे की मेहनत के माल और मेवे उड़ाने लगे। इस वास्ते मुफ्त राशन लेने में पहले जैसी हिचक नहीं मालूम होती। फिर भी गरीबों को हिचक होती है, यह खुशी की बात है। लेकिन यह जान लेना होगा कि आपको काम कौन देगा? बड़े-बड़े लोग गरीबों पर उपकार करना चाहते हैं, पर वे उनका हक नहीं देना चाहते। वे गरीबों को अपने पाँव पर खड़ा कर देने के लिए राजी नहीं हैं। यह दया सच्ची दया नहीं है। गरीब को बराबरी का हक है। उसको भी हिन्दुस्तान के नागरिक का हक है। ये लोग मजदूरों को, गरीबों को बैल की हालत में रखना चाहते हैं। हम कहते हैं कि उन्हें मनुष्य की हालत में रखो। आपको तो यह माँग करनी चाहिए कि हमें बैल नहीं, आदमी समझो। आप सबको गाँव-गाँव सभा करनी चाहिए और यह प्रस्ताव करना चाहिए कि हिन्दुस्तान का किसान सिर्फ खेती के सहारे जिन्दा नहीं रह सकता। इसलिए गाँव-गाँव में ग्रामोद्योग चलने चाहिए। बाहर से आनेवाले माल का हम बहिष्कार करेंगे। क्या गाय का गोश्त सस्ता मिले तो हिन्दू खरीदेगा? क्या सूअर का गोश्त सस्ता मिले तो मुसलमान खरीदेगा? नहीं लेगा, नहीं लेगा। वह हराम

है। ऐसे ही जब आप समझ लेंगे कि मिल का कपड़ा खरीदना हराम है, उससे घर में बेरोजगारी बढ़ती है, तभी आपको कोई बुद्धिमान समझेगा। काम बाहर से माँगते हो। पटना से मिलेगा क्या? वहाँ काम कौन देगा? क्या ये प्रोफेसर, वकील, न्यायाधीश, पुलिस या लश्करवाले, जो बेकार बैठकर तनखाह खाते हैं, आपको काम देंगे? यह कब तक चलेगा? आप काम में चोरी करना चाहते हैं, वे दाम में चोरी करना चाहते हैं। दोनों से देश का नुकसान होता है। इसलिए गाँव की कुल जमीन को गाँव की बना दो। कोई बेजमीन न रहे। प्रतिज्ञा कीजिये कि बाहर का माल नहीं लेंगे, नहीं लेंगे। जो अक्ल हमें परमात्मा ने दी है, उसका उपयोग कीजिये और महात्मा गांधी के वचन की कद्र कीजिये, जिससे आपको सुख, शान्ति प्राप्त होगी।

भाग्यवाद बनाम नास्तिकता

दूसरे दिन २० तारीख को हमने मधुबनी सबडिवीजन में प्रवेश किया और बेनीपट्टी थाने के परसौनी नाम के ग्राम में पड़ाव डाला। उस दिन कुछ कार्यकर्ता बाबा से मिले और बोले कि जो कुछ होता है वह नसीब से ही होता है। हम अपने प्रयत्न से क्या कर सकते हैं? प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने उस पर रोशनी डाली और कहा कि आखिर नसीब क्या है? अपना पुराना किया हुआ काम ही तो है। जिस चीज के लिए हमने प्रयत्न नहीं किया हो, वह चीज नसीब नहीं देता। जैसा हम करते हैं, वैसा वह देता है। इसलिए सारी जिम्मेदारी हम पर आती है। जैसा करोगे वैसा भरोगे। अगर बबूल बोया, तो आम कहाँ से पाओगे? इसलिए यह सोचकर मत बैठो कि अपनी हालत हम नहीं सुधार सकते। दूसरे देशों ने पुरुषार्थ से अपनी आयु बढ़ा ली। हम भी ऐसा पुरुषार्थ कर सकते हैं। किसान-समाज की आयु बढ़े, गाँव साफ-सुथरा रहे, गन्दगी मिटे, सब लोग प्रेम से मिल-जुलकर रहें, तो सुखी हो सकते हैं। मान लीजिये कि आपने कहा कि मिल का कपड़ा नहीं खरीदेंगे, अपना कातकर

बनायेंगे। इससे गाँव का रुपया बचेगा या नहीं? इसके बजाय कपड़ा, तेल, शक्कर, हर चीज बाहर से खरीदो और कहो कि नसीब का खेल है, तो भला सुख कैसे मिल सकता है? कहना यह है कि ईश्वर ने काफी आजादी दे रखी है। अगर हम चाहें, तो अपने जीवन को आनन्दमय बना सकते हैं। यहाँ पर वैकुण्ठ ला सकते हैं। सिर्फ आपस में प्यार बढ़ाना होगा।

सद्ग्रंथ = सत्संग

अगले दिन धकजरी जाते वक्त रास्ते में अरेड़ नाम के एक गाँव से हम गुजरे। वहाँ एक वयोवृद्ध लेकिन साहसी कार्यकर्ता ने गाँव के हर काश्तकार से जमीन हासिल करके ३६८ बीघा जमीन प्राप्त की थी, जो पूरे गाँव के पाँचवें हिस्से से ज्यादा होती है। प्रार्थना के लिए जाते समय बाबा रास्ते के एक पुस्तकालय में भी गये। यह तीन साल से चल रहा है। यहाँ की निरीक्षण-बही पर बाबा ने लिखा : 'पुस्तकालय की योग्यता पुस्तकों की संख्या पर निर्भर नहीं है, पुस्तकों के चुनाव पर निर्भर है। सद्ग्रंथ सत्संग का ही पर्याय है।'

धर्म के चार स्तंभ

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने चतुष्पाद धर्म के लक्षण पेश किये। उन्होंने बताया कि धर्म के चार चरण हैं : श्रद्धा, सत्य, प्रेम और त्याग।

इसमें पहला चरण, यानी श्रद्धा तो अब भी जनता में मौजूद है। बाकी तीनों चीजें करीब-करीब खतम हो चुकी हैं। बेचारा धर्म उसी एक पाँव के आधार पर लड़खड़ाता चल रहा है। इससे धर्मकार्य में प्रगति नहीं हो सकती। केवल श्रद्धा के आधार से प्राणी खड़ा हो जाता है, पर उससे चलना-दौड़ना नहीं बन सकता। इसलिए धर्म के जो दूसरे चरण हैं, उनको जाग्रत करना होगा।

सबसे पहले सत्य है। समाज का टिकाव बिना सत्य के संभव ही नहीं। आज लोगों ने असत्य को सत्य मान लिया है। सम्पत्ति और भूमि

की मालिकी को धर्म मान लिया है। जमीन और सम्पत्ति के मालिक व्यक्ति हो सकते हैं, यह असत्य है। सत्य यही है कि सम्पत्ति और जमीन भगवान् की और उसके प्रतिनिधि के नाते समाज की। मन्दिरों में हम नैवेद्य चढ़ाते हैं। लेकिन भूखे भगवान् की चिन्ता न करें और जिस भगवान् को भूख न लगे उसकी चिन्ता करें, यह नाटक चलता है। भूदान-यज्ञ द्वारा हम सत्य स्थापित करना चाहते हैं।

दूसरा चरण है, प्रेम। इसे दया भी कह सकते हैं। हम मौके पर दया कर लेते हैं। लेकिन हमने इसे नित्यधर्म नहीं बनाया है। बाजार में गये कि प्रेम खतम, एक-दूसरे को ठगना शुरू। हर चीज के साथ पैसा जोड़ दिया गया है। विद्वान लोग भी जितनी ज्यादा योग्यता रखते हैं, उतना ज्यादा लूटते हैं। हम चाहते हैं कि प्रेम का जो अनुभव कुटुम्ब में आता है, वही सारे समाज में आये। दरिद्रनारायण को अपने घर में लीजिये और घर का एक हिस्सेदार समझकर उसका हक दीजिये। सब पर प्यार करने का हमारा धर्म है।

तीसरा चरण है, त्याग। बिना त्याग के समाज आगे नहीं बढ़ सकता। त्याग के अभ्यास से लक्ष्मी हासिल होती है। किसान को लक्ष्मी कब हासिल होती है? जब वह अच्छे-से-अच्छे बीज बोता है। अगर वह उस बीज को नहीं बचाकर रखता और उसका त्याग नहीं करता, तो फसल नहीं, घास उगेगी। एक दाने के बदले भगवान् बेहिसाब देता है। कुरान में भी लिखा है कि बेहिसाब मिलता है। आप आम की एक गुठली बोयें, तो क्या एक ही आम पाते हैं? नहीं, सैकड़ों। लेकिन एक तो बोना ही पड़ेगा। अगर कोई कहे कि एक बोने पर भगवान् सौ देता है, अगर मैं एक कम बोऊँ यानी कुछ भी न बोऊँ, तो मुझे वह ९९ देगा! भगवान् ऐसों से क्या कहेगा? त्याग के जरिये ही लक्ष्मी, ऐश्वर्य, शोभा और वैभव प्राप्त होता है। ईशावास्य उपनिषद् में दो शब्दों में अद्भुत उपदेश दिया है : "त्यक्तेन भुंजीथाः।" त्याग करो, तो भोग मिलेगा। खुशी की

बात है कि जो बटोरना जानते थे, वे बाँटना चाहते हैं और लोगों में त्यागवृत्ति पैदा हो रही है।

धन की पूजा

२२ तारीख को हम लोग बेनीपट्टी में थे। उस दिन प्रार्थना में बहुत भीड़ थी। बाबा ने कहा कि मनुष्य ने जब यह फैसला किया कि नैतिक तरीके से, धर्मबुद्धि से रोजी हासिल करेंगे, तबसे वह मनुष्य बना। मनुष्य की विशेषता यही है कि उसमें धर्मबुद्धि है। लेकिन इन दिनों मनुष्य ने धर्म का रास्ता छोड़ दिया है और धर्म की जगह पैसे को दे दी है। हमारे पूर्वजों ने बताया है कि जहाँ धर्म और अर्थ एक-दूसरे के खिलाफ खड़े हों, वहाँ धर्म की बात सुननी चाहिए, अर्थ की बात नहीं। जहाँ इन दोनों के बीच झगड़ा न हो, वहाँ अर्थ की बात सुनने से चलेगा। यह एक बड़ा सिद्धान्त हमारे पूर्वजों ने, हमारे सत्पुरुषों ने रखा था। आज हम धर्म को स्थान तो देना चाहते हैं, पर जहाँ धर्म और अर्थ का झगड़ा आता है, वहाँ धर्म को छोड़कर अर्थ की बात कबूल करते हैं। जहाँ द्रव्य और सत्य का विरोध आया, वहाँ सत्य को छोड़ा और द्रव्य को पकड़ा। इस तरह मनुष्य ने अपनी विवेकबुद्धि को खतम कर दिया और वह परिस्थिति के वश हो गया।

योजना और यंत्र-युग

आगे चलकर बाबा ने कहा कि आजकल बड़े-बड़े राष्ट्र एक-दूसरे को देखकर बजट बनाते हैं। यह वानरानुकरण चल रहा है। ऐसी सारी व्यवस्था-शून्य हालत दुनिया की हो गयी है। और ये सब दम्भ करते हैं व्यवस्था का। व्यवस्था तो तब होगी, जब काबू रखकर कोई कुछ काम करेगा। एक-दूसरे को देखकर ही अगर बरताव करना है, तो 'इनीशिएटिव' या अभिक्रमशक्ति कहाँ रही? यही हमारी बड़ी ताकत थी कि हम सोच-विचारकर, विवेक से, समाज के जीवन का आयोजन-नियोजन कर सकते थे। कुछ-न-कुछ आयोजन तो हर जगह चलते हैं। पर वे स्वतंत्र विवेक-

बुद्धि के आधार पर नहीं होते। इसलिए वे आयोजन नहीं रहते। जैसे, जो तैरना नहीं जानता, वह अगर नदी में पड़ जाय, तो हलचल तो करेगा, लेकिन वह हलचल डुबानेवाली होगी, बचानेवाली नहीं। तैरना एक बात है और जोर से हाथ-पैर मारना दूसरी बात है। दुनिया में आज जो योजना के नाम से चल रहा है वह योजना नहीं है, भोग है। लाचारी के नाम से भोग है। इस वास्ते हमको ऐसा समाज बनाना है, जो अपने पर निर्भर रहे और विवेकपूर्वक अपने संस्कारों के अनुकूल हो।

इसके बाद बाबा ने कहा कि यह यंत्र-युग नहीं, मंत्र-युग है। यंत्रवाले भी एक मंत्र के जादू में आ गये हैं। आखिर मनुष्य ही तो यंत्र को चलाता है। इसलिए यंत्र-युग नहीं, मंत्र-युग है। जो मंत्र हम मनन करेंगे उस पर दुनिया सोचेगी। हम पैदल जाते हैं और रेलगाड़ियाँ फर-फर दौड़ा करती हैं। पर उनमें इतनी ताकत नहीं कि हमको उठाकर ले जायँ। इसलिए हम कहते हैं कि इस युग की सत्ता हम पर नहीं है। युग हमारा है। कर्म जड़ है, कर्ता चेतन। खासकर हिन्दुस्तान के लोगों में हिम्मत होनी चाहिए। अगर हमारा रास्ता सत्य का होगा, तो उसका असर पड़े बिना नहीं रहेगा। सूर्य के आगे अंधकार नहीं आ सकता। इसलिए दुनिया भर में चाहे हिंसा होती हो, पर जहाँ अहिंसा है, वहाँ हिंसा नहीं ठहर सकती।

उस दिन शाम को जब कार्यकर्ताओं की सभा हुई, तो बाबा ने एक नयी बात शुरू की। लगभग ८० भाई जमा थे। बाबा ने पूछा कि इनमें कितने भाई ऐसे हैं, जो अपना पूरा या अधिकांश समय भूदान-यज्ञ में लगाने को तैयार हैं? जो तैयार हों वे बैठे रहें और बाकी के चले जायँ। थोड़ी देर में केवल १२ भाई वहाँ रह गये। उससे उस सभा में एक नया बल आ गया और कार्यकर्ताओं ने आगे के काम का अच्छी तरह से नियोजन किया।

उत्तम सूत की कताई

२३ तारीख को हमारा पड़ाव मधवापुर थाने के साहरघाट नाम के गाँव में था। हम यहाँ यह बता दें कि मधुबनी सब-डिवीजन बिहार का प्रमुख खादी-उत्पादक केन्द्र है। इस कारण इस सब-डिवीजन में कत्तिनें काफी तादाद में हैं और कहीं-कहीं तो वे बहुत बारीक, १०० नम्बर से ऊपर का सूत कातती हैं। साहरघाट में स्थानीय कत्तिनों ने अपनी कताई का प्रदर्शन किया। उनमें कुछ विधवाएँ भी थीं। चार बहनें अपने हाथ की बनायी हुई बाँस की तकली पर बहुत बारीक और मजबूत सूत कात रही थीं। बाबा ने ध्यान से उनके काम को देखा। एक बहन, जिसके हाथ को लकवा मार गया था, कात रही थी। कुछ बहनें कपास ओटकर तुनाई और धुनाई कर रही थीं। इस सुन्दर दृश्य को देखकर चरखे की आन्तरिक शक्ति का कुछ भान होता था।

पड़ोसी नेपाल

साहरघाट नेपाल के निकट है। इस तरफ इशारा करते हुए बाबा ने कहा कि सीमा के पास रहनेवाले लोगों की बड़ी जिम्मेदारी होती है। उनमें खूब प्रेम होना चाहिए। खुशी की बात है कि आज भारत और नेपाल के बीच प्रेमभाव है और वे एक-दूसरे को दोस्त समझते हैं। वैसे देखा जाय तो हमारे और नेपाल के बीच बहुत पुराना और घनिष्ठ सम्बन्ध है। फिर भी दोनों अलग-अलग राज्य हैं। इसलिए अलग-अलग ढंग से अपना कारोबार चलाने का और विकास करने का हरएक को हक है। हमें चाहिए कि एक-दूसरे की खूबियाँ और अच्छाइयाँ लें और एक-दूसरे को दें। अगर यहाँ के व्यापारी केवल गाँजा-भाँग चुराकर लायेंगे, तो बुरी बात होगी। अपने अच्छे विचार देने चाहिए। वहाँ के अच्छे विचार लाने चाहिए। अपने दोषों का शुद्धिकरण करना चाहिए। आज हम भूदान के काम से यहाँ आये हैं। हम मानते हैं कि यहाँ अगर कामयाबी हो गयी, तो पड़ोसी देशों पर भी उसका असर पड़ेगा। नेपाल के राजनीतिक प्रश्नों

की बारीक जानकारी हमें नहीं है। लेकिन राजनीतिक पक्षों की हम कोई फिक्र भी नहीं करते। हम कहते हैं कि भूदान-यज्ञ के मूल में ऐसा सुन्दर धर्म-विचार है कि जिस देश में वह चलेगा, उसका भला ही होगा। हम समझते हैं कि भूदान-यज्ञ का विचार नेपाल को भी लाभदायक होगा। नेपाळ से हमें एक दानपत्र भी मिल गया है। वह जमीन वहीं के गरीबों को बँटेगी। उसका आरंभ तो एक तरह से हो गया। पर दूसरे देश में कोई विचार तब फैलता है, जब अपनी जन्मभूमि में उसे पूरी सफलता मिल गयी हो।

सच्चा दान क्या है ?

भूदान-यज्ञ का महत्त्व बताते हुए बाबा ने कहा कि मिथिला में दान देने की परम्परा हमेशा से चली आयी है। उस खिलाने के क्या मानी कि आज खिलाया और कल फिर भूख सवार है? दान ऐसा हो कि आज दिया, तो फिर देना ही न पड़े। यह है—भूमिदान। एक बार भूमिदान पानेवाले को फिर से माँगना नहीं पड़ता है। वह स्वावलंबी हो जाता है। इसी तरह का दूसरा दान विद्यादान है। लेकिन कौनसी विद्या? यह लूटनेवाली विद्या नहीं, जो पटना या इलाहाबाद, बम्बई या दूसरी युनिवर्सिटियों में सिखायी जाती है। लेकिन सही विद्या, आत्मविद्या, अपने पाँव पर खड़े होने की विद्या, दूसरों को मदद देने की विद्या। यह जिसे मिलती है, वह स्वावलंबी हो जाता है। भूदान-यज्ञ में हम हक माँगते हैं। देनेवालों से कहते हैं कि आप हमारा हक दीजिये। उसके साथ आपको अहंकार नहीं, प्रायश्चित्त होना चाहिए कि नाहक ज्यादा जमीन अपने पास रखे हुए थे। अब भूल सुधारने का मौका मिला है। इस तरह भगवान् की कृपा से श्रद्धा जाग्रत होती है। इस तरह हिन्दुस्तान में सद्धर्म प्रकट होगा।

शाम को नेपाल के कुछ कार्यकर्ता बाबा से मिले। बाबा ने मुस्कराते हुए उनसे पूछा कि दोनों भाइयों का कैसा चल रहा है? बालि और

सुग्रीव की तरह चलता है या राम और लक्ष्मण की तरह ? यह सुनकर वे लोग हँस पड़े और उन्होंने बहुत दुःखपूर्वक कहा कि हमारे यहाँ की राजनीति बहुत बिगड़ी हुई है । इसके बाद उन्होंने बाबा से नेपाल आने की प्रार्थना की । बाबा ने जवाब दिया कि आपकी सरकार अगर बुलाये, तो इस सम्बन्ध में कुछ सोचा जा सकता है ।

कार्यकर्ता किधर ?

दूसरे दिन सुबह साहरघाट से चलकर हम खिरहर पहुँचे । उस दिन रास्ते भर बाबा पवनार-आश्रम के एक पुराने कार्यकर्ता से बातें करते रहे, जो इन दिनों भूदान में लगे हुए हैं । उन भाई ने जब यह कहा कि आजकल हम लोगों में आपस में विश्वास और सद्भावना की बहुत कमी है, तो बाबा ने दुःखपूर्वक कहा, हाँ, मैं जानता हूँ कि आप लोग आत्मस्तुति और परनिन्दा में लगे रहते हैं । लोग तो हरिनाम का संकीर्तन करते हैं, लेकिन आप मित्रों के दोषों का संकीर्तन करते हैं । ऐसा लगता है कि ईश्वर की तरफ से आप लोगों को यह काम सौंपा गया है कि अपने को छोड़कर हरएक के गुण और दोषों का कच्चा चिट्ठा तैयार कीजिये । यह सुनकर वे भाई बोले कि क्या हमें वस्तुस्थिति से मुँह मोड़ लेना चाहिए ? बाबा ने बीच में ही कहा कि वस्तुस्थिति तो यह है कि आत्मा अमर है और निर्विकार है । मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हमलोग इस धरती पर इसलिए भेजे गये हैं कि दूसरों के गुणों को पहचानें, उनको अपनायें और आत्मशुद्धि करें ।

इसके बाद बाबा ने श्री रामकृष्ण परमहंस की एक कहानी सुनायी । उन्होंने बताया कि कहीं पर एक कीर्तन-कुशल ब्राह्मण और एक वेश्या पड़ोस में ही रहते थे । इत्तफाक से उनका देहान्त एक ही समय में हुआ । वेश्या को लेने के लिए स्वर्ग से दूत आये और ब्राह्मण के लिए यमराज के दूत पहुँचे । यह देखकर वे पंडितजी बहुत चकित हुए और बोले कि अरे, मैं तो एक प्रख्यात संकीर्तन-पुजारी हूँ और हर कोई मेरा आदर

करता है। इसलिए मैं स्वर्ग का अधिकारी हूँ। लेकिन उस वेश्या को, जो कुकर्म करती थी, नरक मिलना चाहिए। शायद आपके कागजों में कहीं कुछ गड़बड़ हुई है। इसलिए जरा दुबारा तहकीकात कर लीजिये। दूत दौड़े-दौड़े गये और थोड़ी देर में वापस आकर बोले कि नहीं, कागजात में कोई गलती नहीं है; जिस दूत को जहाँ आना चाहिए था, वहीं वह आया है। इसपर पंडितजी बोले कि अजीब बात है, यह कैसे हो सकता है? तब उन्हें जवाब मिला कि सत्य तो यह है कि आप कीर्तन जरूर करते थे, लेकिन आपके मन में यही भाव रहता था कि उस स्त्री (वेश्या) का जीवन कितना सुखमय और आनन्द का है? उसके खिलाफ वह बेचारी परिस्थितिवश कुकर्म करती थी, लेकिन उसे हमेशा दुःख बना रहता था और मन-ही-मन वह आपके जैसे पवित्र जीवन की कामना करती थी। दुनियावाले अन्दर की बात नहीं जानते, वे केवल ऊपर की बात जानते हैं। इस कारण से आपके शरीर का चंदन-लेप के साथ संस्कार होगा और उस बेचारी का मांस कौवे और गिद्ध नोचेंगे। लेकिन स्वर्ग की हकदार वह है और आपको हमारे साथ यमराज के यहाँ चलना है। यह सुनाने के बाद बाबा बोले, आप कुछ समझे? उन भाई को काटो तो खून नहीं

तब से लगातार वह कहानी मेरे मन में घूमा करती है और बार-बार महसूस होता है कि बाबा का सबसे बड़ा गुण गुणग्राहकता है। यह ऐसा गुण है, जो हमारे समाज में आज क्या सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में, क्या दूसरों में, बहुत कम मिलता है। शायद इसी गुण का प्रताप है कि बाबा को भूदान-यज्ञ जैसा पक्षातीत और सर्वकल्याणकारी कार्यक्रम सूझ पड़ा। और यह भी निश्चय है कि अगर हम लोगों में यह गुण विकसित नहीं होता है, तो हम चाहे कुछ भी बन जायँ, लेकिन इन्सान नहीं बन सकते।

तीसरे पहर वही सत्संग या प्रेम का बाजार चला। एक भाई के पास पैंतालीस बीघा जमीन थी। वे दो बीघा दे रहे थे। लेकिन साढ़े सात बीघा

देकर लौटे। दूसरे भाई ने अपने छठे हिस्से के अलावा सात बीघा और देकर अपना चौथा हिस्सा पूरा किया। इसके बाद कुछ बहनें और माताएँ बाबा के दर्शन को आयीं। उन्होंने अपनी बड़ी लाचारी जाहिर की कि (धन्य हैं उनके घर के पुरुष और सम्बन्धी !) शाम को प्रार्थना में शरीक न हो सकेंगी ! इस पर किसे दुःख न होगा ?

बहनों का उद्धार

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने बहनों की दुःखद स्थिति की चर्चा की। उन्होंने कहा कि भगवान् कृष्ण ने बहुत अद्भुत काम किये हैं। उनके गुणों का और उनके कामों का कोई पार नहीं है। ऐसे अनन्त कार्य, जो उन्होंने किये हैं, उनमें बहुत महत्त्वपूर्ण है स्त्री-जाति का उद्धार। उनके पहले नारी को वह प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त हो सकी थी, जो भगवान् कृष्ण ने दिलायी। उनके बाद शायद जिन्होंने स्त्रियों के लिए प्रयत्न किया, उनमें गांधीजी का नाम सबसे ऊँचा गिना जायगा। हम सुनते हैं कि भगवान् महावीर के शिष्यों में जितने श्रमण थे, उनसे ज्यादा श्रमणियाँ थीं। बावजूद उन प्रयत्नों के, नारी की हालत समाज में गिरी हुई रही और श्रीकृष्ण के बाद अधिक-से-अधिक नारी का पक्षपात गांधीजी ने ही किया। आज हमें बिहार में दो साल से ऊपर हो चुके, फिर भी हम स्त्रियों में तेजस्विता नहीं देख रहे हैं। हम समझते हैं कि जब तक स्त्रियों में ही कोई महातेजस्विनी, ब्रह्मवादिनी, धर्मचारिणी, शंकराचार्य के समान न निकले, तब तक स्त्रियों का उद्धार न होगा। आज हमारे पास कुछ स्त्रियाँ दोपहर को आयी थीं। पता चला कि वे गाड़ी के अन्दर परदे में बैठी हैं। यह देखकर हमको तीव्र वेदना होती है। अगर शरीर का एक अंग ढीला पड़ जाय, तो शरीर को पक्षाघात लगा, ऐसा कहा जाता है। ऐसी हालत जहाँ समाज की होगी, वहाँ समाज न तरक्की करेगा, न उसमें कोई ताकत आयेगी। हमारे यहाँ स्त्री को स्वतंत्र पुरुषार्थ का अधिकारी नहीं माना है। उसका बहुत आदर किया, तो माता के स्वरूप में। हम मानते हैं कि महापुरुषों

की माता होना बहुत बड़ी बात है। लेकिन इसमें ही अगर स्त्री के गौरव की समाप्ति होती है, तो हमारा समाज पंगु ही रहेगा। पत्नी के लिए अगर पति का देवता होना ठीक है, तो पति के लिए पत्नी भी देवी होनी चाहिए। लेकिन यह नहीं होता। जब तक यह शल्य समाज में रहेगा, तब तक समाज में आरोग्य न होगा। जब तक स्त्री की प्रतिष्ठा पुरुष की बराबरी में नहीं होती, तब तक पुरुष का पाँव भी जोरों से आगे नहीं बढ़ सकेगा।

हरिजनों का प्रश्न

इसके बाद बाबा ने हरिजनों का प्रश्न लिया और कहा कि मनुष्य को अछूत मानना एक अद्भुत कल्पना है। हमने ऐसे ब्राह्मण देखे हैं, जो बिल्ली को छुयेंगे, उसे अपने साथ खिलावेंगे, लेकिन हरिजन के रूप में मानव को नहीं छुयेंगे। धर्मशास्त्र हमने भी पढ़ा है। लेकिन हम यह नहीं समझ सके कि किस तरह मनुष्य की पदवी जानवर से हीन हो सकती है। यह भेद मिटाना होगा, वरना हिन्दू-धर्म खतम हो जायगा। स्वराज्य में भी अगर यह बात चली, तो स्वराज्य नहीं टिकेगा। बिहार में लोग हमेशा एक-दूसरे की जाति पूछते हैं। हमें भी नहीं छोड़ते। और कहते हैं कि आप जनेऊ क्यों नहीं पहनते? मैंने कहा कि हम जनेऊ क्यों पहनें, हमें कोई कुंजी नहीं बाँधनी है। यह यज्ञोपवीत है या कुंजी-उपवीत? जनेऊ-वाले कौनसा यज्ञ करते हैं? और कितने गंदे हमने जनेऊ देखे हैं! मानो सारा धर्म कहीं हो, तो जनेऊ में ही। बहनों को पर्दे में रखो, शादी पर तिलक चढ़ाओ और मरने के बाद श्राद्ध करो, बस यही धर्म रह गया है। जैसे लाश पर गिद्ध टूट पड़ते हैं, वैसे सारे रिश्तेदार श्राद्ध के दिन मिष्टान्न खाने के लिए जमा होते हैं। पर मनुष्य जब जिन्दा होता है, तो उस बेचारे के पास कोई नहीं आता। धिक्कार है ऐसे धर्म को!

बाबा ने आगे चलकर कहा कि हम वैद्यनाथ धाम में गये थे। वहाँ धर्म के ठेकेदारों ने जो किया, वह आप जानते हैं। बाबा अधर्म कर रहा

था और वे धर्म कर रहे थे ! इसको कोई क्या कहेगा ? बात यह है कि हमारे व्यवहार में धर्म का पता ही नहीं है। राजनीति में, व्यापार में, हर जगह झूठ ही लेना, झूठ ही देना, झूठ चबेना है। हम आपसे कहना चाहते हैं कि मानव के लिए मानवता से बढ़कर कोई धर्म नहीं। यह सब भेद-भाव मिटाना होगा। भूदान-यज्ञ के जरिये हम यह करना चाहते हैं। इसलिए हमने इसे साम्ययोग का नाम दे रखा है। हम चाहते हैं कि सबका समान अधिकार हो, हम सब परमेश्वर के सेवक बनें और सेवक के नाते आपस में भाई-भाई के जैसा व्यवहार करें।

हिमालय-दर्शन

शनिवार, तारीख २५ सितम्बर को हमारी यात्रा ठेठ उत्तर की दिशा में थी। सूर्योदय के समय बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। इधर किरणें फूट रही थीं, उधर हिमालय के शिखर एक के बाद एक प्रकट हो रहे थे। बहुत ही रमणीय और गंभीर दृश्य था। बाबा इसे देखकर मुग्ध हो गये। रास्ते में बीच-बीच में वे ठहर जाते थे, मानो मग्न होकर समाधि लगा रहे हों।

हिमालय-दर्शन का असर बाबा पर दिन भर बना रहा। शाम के प्रार्थना-प्रवचनों में भी बाबा ने इसकी चर्चा की और कहा कि आज के दर्शन से हमें बहुत ही शान्ति प्राप्त हुई। जीवन में लोगों की सेवा करते हुए मन के अन्दर उसी हिमालय का मैं चिन्तन करता रहा हूँ और आज भी गरीबों की सेवा के लिए गाँव-गाँव घूमता हूँ। किन्तु चित्त में वही मूर्ति है, जो आज हम घंटे भर अपनी आँख से देखते रहे। गीता में भक्त का लक्षण भगवान् ने बताया है : "अनिकेतः स्थिरमतिः।" यानी जिसका कोई घर नहीं और जिसकी बुद्धि स्थिर है, वह भक्त है। परमेश्वर की ऐसी कृपा है कि आज हमारा कोई घर ही नहीं है। चौबीस घंटे के अन्दर एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान को जाना होता है। ऐसा सुन्दर साधन भगवान् ने दिया है। परिणाम यह है कि उसके जरिये भक्ति स्थिर हो रही है, क्योंकि आसक्ति का कहीं साधन ही नहीं है। हमारा विश्वास है कि इस काम से

जितना लोक-कल्याण होगा, उतना ही आत्म-कल्याण सधेगा। और जैसा यह हिमालय पहाड़ स्थिर है, वैसा ही स्थिर उद्देश्य हमारे सामने है। हमें भूदान-यज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसात्मक क्रान्ति करनी है। इसके सिवा दूसरा कोई काम नहीं।

भूदान से हृदय-शुद्धि

इसके बाद बाबा ने कहा कि भूदान-यज्ञ जीवन-परिवर्तन का काम है, जीवन-शुद्धि का काम है। सच पूछा जाय, तो यह कोई आन्दोलन नहीं है। आन्दोलन में तो इधर-उधर डोलना होता है, लेकिन यह आरोहण है, ऊपर चढ़ना है। इसमें जमीन का हिसाब मुख्य नहीं, बल्कि यह मुख्य है कि मनुष्य कितना ऊँचा चढ़ा? यह हृदय-शुद्धि की चीज है। जिन्हें ईश्वर हृदय-शुद्धि की प्रेरणा देगा, उनके द्वारा नक्शा बदल जायगा। भगवान् बुद्धदेव निकले, तो नक्शा बदल गया। हमारा हिसाब यह है कि जीवन-शक्ति कितनी बढ़ रही है, जीवन-शुद्धि कितनी गहरी हो रही है। इससे जीवन-दान निकला। स्वराज्य के जमाने में लोग सुख की तरफ जाते हैं, परराज्य में वैराग्य निर्माण होता है। ऐसी हालत में हजारों की तादाद में लोग जीवन-दान देने को राजी हो जायँ, तो यह छोटी बात नहीं है। इसमें भी हम संख्या पर निर्भर नहीं हैं। इसमें भी हृदय-शुद्धि मुख्य है। इसलिए सद्गुणों का विकास करते रहना चाहिए, अहंकार को कहीं घुसने नहीं देना चाहिए।

क्रान्ति कैसे ?

एक दिन सुबह की यात्रा के दौरान में दरभंगा के एक समाजवादी एम० एल० ए० भाई ने बाबा से पूछा कि क्या आपके इस आन्दोलन से देश के अन्दर क्रान्ति नहीं रुकेगी? आपके काम से जो राहत लोगों को पहुँचेगी, उससे ऐसा हमेशा दीखता है। बाबा यह सवाल सुनकर मुस्कराये और बोले, क्या आपका यह खयाल है कि क्रान्ति के लिए गरीबी लाजिमी होना चाहिए? वे भाई कुछ अकबका गये और दबी आवाज से

उन्होंने कहा कि कम-से-कम असंतोष तो चाहिए ही। इस पर बाबा ने कहा कि आप जानते हैं कि बंगाल में १९४३ में तीस लाख से ज्यादा आदमी भूख से मर गये, लेकिन वहाँ क्रान्ति नाम की चीज नहीं हुई। आखिर ऐसा क्यों? बाबा जवाब के लिए ठहरे, लेकिन उन भाई के पास कोई जवाब न था। तब बाबा कहने लगे कि क्रान्ति के लिए दो चीजों की जरूरत होती है, विचारशक्ति और प्राणशक्ति। केवल असंतोष से काम नहीं चलता। बिना विचार के कभी क्रान्ति नहीं हो सकती। भूदान आज की सामाजिक और आर्थिक मान्यताओं को बदलकर नयी मान्यताएँ या नये मूल्य या नयी कदरें स्थापित करना चाहता है। यह कोई राहत या भूत-दया का काम नहीं है, बल्कि प्रेम और अपरिग्रह के आधार पर नया समाज खड़ा करने की योजना है।

रविवार, ता० २६ सितम्बर को हम लोग छतौनी में थे। उस दिन एक अमेरिकी पत्रकार को बाबा ने एक घंटे का समय दिया। ये भाई पिछले तीन दिन से हमारे साथ घूम रहे थे। उन्होंने बाबा से बहुत कुछ सवाल पूछे। उनका एक मुख्य सवाल था कि आदमी के जीवन में वह कौन चीज है, जो उसके विकास में सबसे ज्यादा बाधा डालती है? बाबा ने जवाब दिया कि वह चीज है, अपने को देहस्वरूप समझ लेना। सच बात तो यह है कि हम और हमारी देह बिल्कुल अलग-अलग चीजें हैं। लेकिन मनुष्य यह समझ बैठता है कि वह देह ही है। इस खयाल को अपने दिल से कतई निकाल देना चाहिए। जैसे मैं इस मकान में रहता हूँ, लेकिन मैं यह मकान नहीं हूँ, उसी तरह मैं यह देह नहीं हूँ। जिस तरह मैं एक मकान छोड़कर दूसरे में चला जाता हूँ, उसी तरह से मुझे यह मकान छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।

गंदगी और धर्म

उस दिन एक बड़ी दुःखद घटना घट गयी। गाँव के हरिजनों ने कुएँ से जो पानी भरा उस पर ब्राह्मणों ने एतराज उठाया और वह सबका

सब पानी फेंक दिया। बाबा ने प्रार्थना-प्रवचन में इसका जिक्र करते हुए कहा कि जिन्होंने यह काम किया, उन्होंने बहुत गलत काम किया। यह बिल्कुल अधर्म है। ब्राह्मण लोग हरिजन को अछूत समझते हैं। लेकिन हमने गन्दे ब्राह्मण देखे हैं, जिन्हें देखना भाता नहीं। उनके जनेऊ ऐसे गन्दे रहते हैं, मानो मलिनता का पंचवार्षिक नमूना हो। रसोई करनेवाले भी बड़े गन्दे मिलते हैं। स्वच्छता की बात हरएक पर लागू है। खाली एक जाति पर नहीं। ब्राह्मण समझते हैं कि सफाई करेंगे, तो अधर्म होगा, गन्दगी करेंगे, तो धर्म होगा। काशी में हम दो-ढाई महीने रहे। हमने वहाँ के सारे घाट देख डाले। वे एक-से-एक गन्दे मिले। हम इस नतीजे पर पहुँचे कि जो कोई वहाँ नहायेगा वह सीधे नर्क में ही जायगा।

असली चीज हृदय की शुद्धि है। ब्राह्मण गन्दगी कर सकता है, पर गन्दगी साफ नहीं कर सकता। अजीब विचार है। सारा धर्म खतम कर दिया।

आगे चलकर बाबा ने कहा कि हम कुछ दिन हुए वैद्यनाथधाम गये थे। हमने देखा कि कुछ यात्री लोग "बम बोलो" "बम बोलो" कहते थे और मुँह से बीड़ी फूँकते थे। इन तामस भक्ति करनेवालों का देवता भी भंग पीता है। एक भाई ने हमसे कहा कि गाँजा-भाँग से समाधि में मदद मिलती है। हम पूछते हैं कि पतंजलि को योगशास्त्र क्यों लिखना पड़ा? यम, नियम और संयम की जरूरत क्या रही? थोड़ी भंग ज्यादा चढ़ा लेते तो समाधि ही समाधि है। कैसी भयानक हालत है। बुद्धि तामसी हो गयी, तो सब धर्मों को विपरीत ही देखेगी। इन लोगों ने सारा धर्म खतम कर दिया। यह ऊँच-नीच, यह विषमता मिटनी चाहिए, तभी देश का उत्थान होगा।

अगले दिन जयनगर में महाराजा दरभंगा बाबा से मिलने आये और करीब एक घंटे तक सत्संग रहा। उन्होंने बाबा को विश्वास दिलाया कि भूदान में पूरा सहयोग देंगे।

मंत्री और मेहतर

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने साम्ययोग का विचार समझाया। उन्होंने कहा कि हजारों वर्ष बाद आज अपने देश को अपनी इच्छा के मुताबिक बनाने का मौका मिला है। करने की बात यह है कि जीवन में किसीको भी शरीरश्रम किये बिना खाना नहीं चाहिए, उत्पादन में हरएक का हिस्सा होना चाहिए। हरएक को भगवान् ने भूख दी है, हरएक को हाथ दिये हैं। इसलिए हरएक को काम करना लाजिमी है। दूसरी बात यह है कि आज हमने यह मान रखा है कि शरीरश्रम के लिए मजदूरी कम दी जाय और मानसिक काम के लिए ज्यादा। यह विचार तोड़ना है। इस नये साम्ययोगी समाज में मेहतर की और राष्ट्रपति की मजदूरी समान होगी। मंत्री और मेहतर का वेतन समान होना चाहिए, उनकी इज्जत समान होनी चाहिए। इस तरह इज्जत समान और मजदूरी भी पाँच अंगुली जैसी समान मिलनी चाहिए। तीसरी बात जो करनी है, वह है, मालकियत मिटाना। जमीन की मालकियत, कारखाने की मालकियत, सब मालकियत मिटानी है। मालिक तो केवल भगवान् है। इस भगवान् की तरफ से मालकियत सारे गाँव की रहेगी।

शान्ति-सेना

बाबा ने बताया कि ये बातें समझाकर प्रेम से करनी हैं। धर्म के काम में जबर्दस्ती नहीं हो सकती। मुहम्मद पैगम्बर ने यह जाहिर किया है। यही बात क्रान्ति पर लागू है। बाबा फौज बनायेगा, तो वह शान्ति की फौज होगी, वह शान्ति-सेना होगी। आजकल जो फौज होती है, वह लूटनेवाली होती है। इसमें भर्ती वही होगा, जिसने भूदान या सम्पत्तिदान के साथ-साथ जीवन में भी परिवर्तन कर लिया है और ढाँचा बदलकर, नये विचार के अनुसार काम करता है। सेना बनाने के बाद साम्ययोग लाने का काम आरंभ हो सकेगा।

दम्भ से बचें

सोमवार की सुबह। चलने का सारा समय एक कार्यकर्ता के साथ बातचीत में गया। बाबा ने उन्हें बताया कि किस तरह दम्भ हमारे भीतर छिपा बैठा रहता है। उन्होंने एक कहानी भी सुनायी। स्वामी रामदास अपने को बड़ा भक्त मानते थे। एक दिन मन्दिर में उन्हें सुनायी पड़ा कि उनसे भी ऊँचे भक्त मौजूद हैं। वे अचरज में पड़ गये और ऐसे भक्तों की खोज में निकल पड़े। उन्हें बताया गया कि रंका और बंका नाम के पति-पत्नी आदर्श भक्त का जीवन बिताते हैं। रामदास उनकी तलाश में चले। बड़ी मुश्किल से उनका पता लगा। लेकिन उन्होंने देखा कि रंका और बंका साधारण किसान की जिन्दगी बसर करते हैं। इसलिए उनकी समझ में नहीं आया कि उन्हें बड़ा भक्त कैसे मानें। फिर भी उन्होंने अपनी खोज जारी रखी। एक दिन शाम को उन्होंने देखा कि रंका खेत से लौट रहा है। चलते-चलते रास्ते में ठहर गया। बंका जरा पीछे थी। अपने पति का रुकना देखकर उसे कुछ हैरत हुई। वह जल्दी उसे पकड़ने दौड़ी। रास्ते में उसने देखा कि सोने का एक जेवर मिट्टी से ढँका हुआ है। रंका से भेंट होने पर उसने पूछा कि क्यों ठहर गये थे? वे बोले कि जेवर पड़ा था। मैंने उसे मिट्टी से ढँक दिया था, ताकि कहीं तुम्हें लालच न पैदा हो। बंका हँसकर बोली कि यह तुमने क्या किया? मिट्टी पर मिट्टी ढँक दी। रामदास यह सुन रहे थे। तब उन्हें मालूम हुआ कि ये दोनों कितने ऊँचे भक्त हैं।

नीचे का तल्ला मजबूत हो

शाम के व्याख्यान में बाबा ने अपने पैरों पर खड़े होने की जरूरत बतलायी। उन्होंने कहा कि उन सब भाई-बहनों को, जो मेहनत-मजदूरी करते हैं और पसीने की रोटी कमाते हैं, हम पहले दर्जे का देशसेवक समझते हैं। जो लोग देशसेवक होने का दावा करते हैं और जिनके दावे सही हैं उन्हें हम दूसरे दर्जे का देशसेवक कहते हैं। पर जिनके

दावे सही नहीं हैं, वे तो ढोंगी ही हैं। अगर हम देश की ताकत बढ़ाना चाहते हैं, तो सबसे पहले मेहनत-मजदूरी करनेवाले समाज की ताकत बढ़ानी चाहिए। जैसे कई मंजिल का मकान हो, तो सारा जोर बुनियाद पर या नीचे के तल्ले पर ही आता है। यह तल्ला अगर कमजोर रहता है तो ऊपरवाले तल्ले, कुल मकान को खतरा है। इस सारे देश को और शहरवालों को भी मजबूत करने के लिए सबसे पहले इन लोगों को मजबूत करना होगा। इसी वास्ते हम पैदल घूमते हैं। आपके उद्धार की शक्ति आपके ही हाथ में है। आप अपना नसीब खुद बना सकते हैं। हम गाँव-गाँव को जगाने आये हैं। रात को कार्यकर्ताओं की बैठक में ६ भाइयों ने बाबा की जेल कबूल की कि ३१ दिसम्बर तक भूदान-यज्ञ के अलावा कोई दूसरा काम नहीं करेंगे।

मालिक और मजदूर

अगले दिन साढ़े दस मील चलकर हम लोग खजौली पहुँचे। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि भूदान-यज्ञ में भी दया है। लेकिन तात्कालिक, नैमित्तिक या प्रासंगिक दया नहीं है। इसमें स्थायी दया है। इस वास्ते इसके जरिये समाज का सारा ढाँचा प्रेम और करुणामय बनेगा। इसमें ऐसी दया है, जिससे समाज में आहिस्ता-आहिस्ता समता आयेगी। दया धर्म का मूल तो है, पर धर्म का परिपक्व फल 'समता' या बराबरी है। निरंतर दया करते-करते सबका जीवन परिपूर्ण हो जाय, तो समता आयेगी। इस कारण से इसमें और मामूली दया में बहुत फर्क पड़ जाता है। कितने ही लोग इस बात की कोशिश करते हैं कि कारखानों के मजदूरों की मजदूरी या तलब बढ़े। कोई यह चाहते हैं कि उनके काम करने के घंटे कम हो जायँ, लेकिन यह कोशिश कोई नहीं करते कि मालिक और मजदूर एक-दूसरे के नजदीक आयें, दोनों में भाईचारा कायम हो। जहाँ यह कोशिश होगी, वहाँ बुनियादी फर्क होगा। यह क्रान्तिकारी फर्क होगा, इसका अर्थ समझ लेना जरूरी है। आजकल जहाँ कोई बड़ा काम बना,

तो उसे "क्रान्ति" कहते हैं। ऐसी बात नहीं है। भाखरा नंगल डाम बना, तो लोग समझते हैं कि यह क्रान्ति हुई। बड़ा भारी काम जरूर हुआ, पर क्रान्ति नहीं हुई। क्रान्ति तब होती है, जब बुनियादी फर्क होते हैं, यानी कदरें या मूल्य बदलते हैं। इस आन्दोलन में हम गरीबों को उनका हक देने जा रहे हैं। यह योजना कायम नहीं रह सकती कि मजदूर हमेशा ही दूसरे के खेत पर काम करने जायँ। दस-पाँच साल के अन्दर आप अपने बच्चों को तैयार कर लीजिये। उन्हें काम करना होगा, उन्हें क्रान्ति की तालीम का ज्ञान दिलाना होगा। यह विचार भूदान के पीछे है। इसलिए यह राहत का या फुर्सत के समय करने का काम नहीं है। यह काम उनसे ही बनेगा, जो इसमें अपना पूरा समर्पण कर देंगे और सर्वस्व लगायेंगे। हम चाहते हैं कि दस-पाँच वर्ष के भीतर ही यह विभिन्न दर्जोंवाली बात मिट जाय।

पैसा और राम

अगले दिन बाबूबढ़ही में बाबा ने कहा कि अभी तक यह माना गया है कि एक के फायदे में दूसरे का नुकसान है। हम मानते हैं कि सच्चे माने में अगर एक को फायदा हो, तो सारे समाज को भी फायदा होगा। और सारे समाज को फायदा हो, तो हर आदमी को भी फायदा है। बात यह है कि हमने पैसे को परमेश्वर की जगह दे दी है। हम हर चीज खरीदते हैं, पैदा नहीं करते। कपड़ा खरीदेंगे, पैदा नहीं करेंगे। तेल-शक्कर खरीदेंगे, पैदा नहीं करेंगे। अगर आप चाहें, तो ये चीजें पैदा कर सकते हैं। तब प्रेम की ताकत जाहिर होगी। मेहनत की कीमत जाहिर होगी। आज मेहनत की कीमत नहीं है। एक दिन सुबह हम एक भाई के साथ घूम रहे थे। रास्ते में हमें एक गहना दीख पड़ा। उसे उठाकर उन्होंने पूछा कि इसका क्या करना चाहिए। मैंने कहा कि जहाँ से उठाया था, वहीं रख दीजिये। एक अजीब तालीम उस भाई को मिली। वह व्यापारी था। कहने लगा—'हमने यह पढ़ तो रखा था कि मिट्टी और सोना समान समझो। लेकिन

अमल आज आपके कहने पर ही किया। अगर धर्म की तालीम हो, तो जिसकी चीज है वही उठायेगा। इस तरह लोग करेंगे, तो धर्म बढ़ेगा। हिन्दुस्तान में धर्म या मजहब का नाम तो खूब चलता है, लेकिन उस पर अमल नहीं होता।

आगे चलकर बाबा ने कहा कि आप अगर रोटी-रोटी जप करते रहेंगे, तो न खाना मिलेगा और न कोई तृप्ति होगी। रोटी के लिए मेहनत करनी होगी और उसे पकाना पड़ेगा। उसी तरह राम का सिर्फ नाम लेने से काम न चलेगा। राम का काम करना होगा। काम तो हराम का करें और नाम राम का लें। राम इतने भोले नहीं कि ठगे जायँ। हम गाँव-गाँव असली धर्म समझाने घूम रहे हैं। इस वास्ते हम कहते हैं कि पैसे से मुक्त होना पड़ेगा। नाम लें राम का और काम करें पैसे का, इसीलिए गाँव बरबाद हो गये। हमने जो यह भूदान-यज्ञ शुरू किया है, उसीसे देश बच सकता है। अगर आप अपने परिवार का कम-से-कम छठा हिस्सा देते हैं और अपनी जरूरत की चीजें गाँव में ही बना लेते हैं, तो खूब आनन्द होगा।

शनिवार को गांधी-जयंती थी। हमारा पड़ाव सिसवार गाँव में था। परमेश्वर की कृपा से उस दिन ६ बजे से घंटे भर खूब जोरदार बारिश हुई। उस इलाके में पानी की बड़ी जरूरत थी। गाँव की कत्तिनों ने अपनी कताई का प्रदर्शन किया और सूतांजलि में बाबा को एक-एक गुंडी सूत भेट की।

गांधी-जयन्ती

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आज महात्मा गांधी का जन्म-दिन है और आज यहाँ बारिश भी हुई है। हमारे देश में प्राचीनकाल से आज तक परमेश्वर ने संतपुरुषों को सतत भेजा है। महात्मा गांधी ऐसे महापुरुषों में थे, जिनका सारा जीवन दूसरे लोगों के लिए ही था। यानी जिनको अपना न कोई स्वार्थ था और न अहंकार। वे केवल दूसरे के

दुःख से दुखी ही नहीं होते थे, बल्कि दूसरे के पाप से अपने को पापी मानते थे। यह बहुत बड़ा फर्क हो जाता है। इसीलिए लोग उन्हें "महात्मा" कहते थे। "महात्मा" याने आत्मा इतनी विशाल हो गयी कि हरएक के शरीर के साथ जुट गयी। दूसरे के पापों से अपने को पापी मानना और समझना, ऐसा करनेवाले विरले लोग होते हैं। ऐसे लोग मुक्त भी नहीं होना चाहते, वे मोक्ष की भी परवाह नहीं करते, सबका पाप-पुण्य अपने सिर पर उठानेवाले परम भक्त होते हैं। प्रह्लाद ने कहा था कि दीन-दुखियों को छोड़कर मैं मुक्त भी नहीं होना चाहता। यह जो प्रह्लाद की बात है, वह महात्मा गांधी में हमें दीखती है। वे प्रह्लाद को आदर्श सत्याग्रही कहते थे। वे स्वयं भी प्रह्लाद के रास्ते पर चलनेवाले, उनकी पंक्ति के संत थे। ऐसे महापुरुष का स्मरण करने से हमें अपनी आत्मा की ताकत का भान होता है। जो ताकत ऐसे महापुरुषों की आत्मा में होती है, वह ताकत हम सबमें हो सकती है। इसका भान ये महापुरुष कराते हैं। खाना, पीना, सामान्य कार्य हर कोई करता है, पर देह से ऊपर उठनेवाले ही सत्पुरुष हो सकते हैं। यह जब देखते हैं, तो हमें विश्वास होता है कि हम भी अगर वैसी ही चेष्टा करें, तो उठ सकते हैं। ऐसे सत्पुरुषों के स्मरण से खुद हमें लाभ होता है।

इसके बाद बाबा ने कहा कि महात्मा गांधी ने चर्खे की बात बहुत ही पहले बतायी थी। हमने तय किया है कि महात्मा गांधी की स्मृति में हर कोई —बूढ़ा हो या छोटा-सा लड़का, स्त्री हो या पुरुष—अपने हाथ के कते सूत की ६४० तार की एक लच्छी हर साल दे। यह छोटी-सी बात है; पर इसमें ताकत बहुत है। इसीको हमने सर्वोदय की दीक्षा का नाम दिया है।

तीसरी अक्तूबर को हम लोग नरहैया में थे। उस दिन केन्द्रीय सरकार के योजना-मंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा बाबा से मिलने आये। उनके साथ में कोसी-योजना के कई अधिकारी भी थे। बाबा ने कोसी-योजना

का स्वागत किया और इस बात पर जोर दिया कि यह काम दो साल के बजाय एक ही साल में पूरा हो जाना चाहिए।

दिल्ली न जायँ

उस दिन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि अंग्रेजों के सामने चूसने का जो कार्यक्रम देहात में चलता था, वह जोरों से अब तक जारी है। रोज ही ग्रामोद्योग टूट रहे हैं। आपने यह बेकारों की सारी जमात, वकील, जज, पुलिस इत्यादि अपने सिर पर खड़ी कर रखी है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने कहा था कि ये लोग विभाजन करते हैं, पैदावार या गुणन नहीं करते। आप झगड़ा करने में स्वावलम्बी और मिटाने में परावलम्बी हैं। अगर दरभंगा में काम नहीं चला, तो पटना जायेंगे, पटना में हार गये, तो दिल्ली चले। दिल्ली में अजीब ही न्याय है। वहाँ की माया भी निराली है। वहाँ शराब की नदियाँ बहती हैं। जैसे स्वर्ग जाने के लिए वैतरणी पार करनी होती है, वैसे ही दिल्ली जाने के लिए शराब की नदियाँ पार करनी होती हैं। यह मैं हँसी नहीं कर रहा हूँ, अपने दिल का दुःख बता रहा हूँ। पहले सर्वोच्च न्याय लन्दन में मिलता था। वहाँवाले, जिन्होंने किसी गाँव की शक्ल नहीं देखी, आपका रहन-सहन नहीं देखा, आपकी किस्मत का फैसला करते थे। अब दिल्ली तक ही जाना पड़ता है। हम कहते हैं कि दिल्ली भी क्यों जायँ? पटना या दरभंगा भी क्यों जायँ? अपने गाँव का झगड़ा अपने गाँव में ही क्यों न निपटे? और फिर झगड़ा हो ही क्यों?

योजना गाँववाले बनायें

श्री नन्दाजी के आने का हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि प्लानिंग कमीशन ने एक योजना बनायी। ढाई साल बाद अनुभव हुआ कि बेकारी बढ़ी है। कल कोसी का बाँध बाँधने पर संकट और भी बढ़ जाय, तो कोई क्या कहेगा? अगर यह अनुभव हो, तो अजीब बात है। पर यह अनुभव आया। क्यों आया? दिल पर एक वरद हस्त है और दिमाग पर दूसरा। ये लोग कुछ अमेरिका का और कुछ रूस का नमूना लेकर हम पर लादना

चाहते हैं। इन्हें यह ध्यान नहीं कि इस देश की अपनी अलग सभ्यता है। पर अब प्लानिंग कमीशन ने भी माना है कि गाँव-गाँव की योजना गाँव-गाँव के लोगों के जरिये ही हो। यह बहुत खुशी की बात है। हम अपनी बात का आग्रह नहीं करते और यही चाहते हैं कि शान्ति बढ़े और दुनिया को हिन्दुस्तान का डर न हो। इस वास्ते हमारा कहना है कि प्रेम की ताकत बढ़ाने के लिए जमीन बँटनी चाहिए। इसके साथ-साथ घर-घर चर्खा चलना चाहिए।

पाप बनाम जन-संख्या

इसके बाद बाबा ने कहा कि भगवान् ने दो-दो हाथ सबको दिये हैं। सबको श्रम करना चाहिए। लेकिन प्लानिंगवालों को खतरा मालूम होता है कि बहत्तर करोड़ हाथ हैं और जन-संख्या बढ़ रही है। सोचने की बात है कि भगवान् ने दो हाथ और एक मुँह हरएक को दिया। अगर दो मुँह और एक हाथ दिया होता, तो अलबत्ता मुश्किल होती। हम कहते हैं कि हिन्दुस्तान में अपार शक्ति है। पृथ्वी पर जनसंख्या का भार नहीं होता, पाप का भार होता है। हम कहना चाहते हैं कि न सिर्फ हिन्दुस्तान में, बल्कि दुनिया भर में जन-संख्या का भार नहीं है। भार आलस्य का, द्वेष का, विषय-वासना का है। जब विषय-वासना-रहित सन्तति पैदा होती है, तो उसमें से बड़े-बड़े सत्पुरुष निकलते हैं।

नरहैया से दस मील चलने के बाद दूसरे रोज सुबह आठ बजे हम लोग लौकहा पहुँचे।

चार ताकतें

शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आज दुनिया में कई ताकतें काम करती हैं। एक ताकत तलवार की होती है, जिसने अब ऐटम बम और हाइड्रोजन बम का रूप ले लिया है। विज्ञान के जमाने में तलवार की ताकत का रूपान्तर इस राक्षस के रूप में होने से मनुष्य का काबू उस पर से जाता रहा। वह ताकत हमारे हाथ की नहीं। वह राक्षस

के हाथ की ताकत है। अगर बच्चों को यही तालीम दी जाय कि जब कोई तमाचा लगाये, तो उसकी बात पर जरूर अमल करो, तो इसका मतलब यह हुआ कि जब कोई शैतान पीटेगा, तो उसकी बात भी वे मानेंगे। उसके बदले में पिता अगर लड़के को समझाता है कि मारने, पीटने, धमकाने से मेरी बात हरगिज न मानना, अगर समझ में आये, तो मानना, तब उनका लड़का ऐटम बम के सामने भी खड़ा हो सकता है। इस वास्ते हम प्रतिज्ञा लें कि दूसरों को दबायेंगे नहीं। तब हम दूसरों से दबेंगे भी नहीं।

दूसरी ताकत पैसे की होती है। आप जानते हैं कि पैसे से मनुष्य खरीदा जा सकता है। कुछ लोगों ने मान रखा है कि पैसे से धर्म भी होता है। यह गलत विचार है। पैसा एक बात है, लक्ष्मी दूसरी बात। लक्ष्मी माने श्रम-शक्ति। यह लक्ष्मी तो पोषण करनेवाली है। पैसा शोषण करनेवाला है। शोषणवाले कभी दान भी दिया करते हैं, पर वह दान शोषण का हिस्सा है। जिस तरह तलवार के सामने खड़े होने के लिए हमें आत्म-बल की ताकत चाहिए, उसी तरह पैसे का सामना करने के लिए परिश्रम की ताकत चाहिए।

तीसरी ताकत बुद्धि की है। अगर बुद्धि स्वार्थ के लिए चलती है, तो वह दूसरों को लूटती है। बुद्धि का दुरुपयोग और सदुपयोग, दोनों हो सकता है। इसका दुरुपयोग करें, तो खतरा है। प्रेम से बुद्धि का उपयोग करें, प्रेम से लक्ष्मी का बँटवारा कर लें, प्रेम से हिंसा के खिलाफ खड़े हो जायँ। हमारे सामने जो कई काम हैं, उन कामों को, उन सवालों को हम प्रेम से हल कर लें, तो हमारी सबकी ताकत बढ़ती है। प्रेम की शक्ति हरएक के पास पड़ी है। सबको उसकी शिक्षा-दीक्षा मिलती है। कोई बच्चा बिना माता के पैदा नहीं हुआ। याने उस बच्चे को माता की तरफ से प्रेम की तालीम मिल गयी। यह सार्वजनिक तालीम है। इस तालीम से हम काम लेते हैं, तो सर्वोदय होता है, सब लोगों का राज्य

कायम होता है। इसके अलावा अगर किसी दूसरी ताकत से काम लेते हैं, तो थोड़े लोगों का ही राज्य होता है।

बाबा ने आगे चलकर कहा कि मिसाल के लिए रूस को लीजिये। वहाँ पर जन-शक्ति से काम हुआ। लेकिन जन-शक्ति के माने क्या? पैसे की शक्ति से, तलवार की शक्ति से, बुद्धि की शक्ति से (बुद्धि जो आधी दैवी है और आधी राक्षसी है) काम लिया गया। परिणाम यह है कि आज रूस में लोगों का राज्य नहीं। इसी तरह अमेरिका में आज प्रजा की सत्ता कही जाती है, पर वस्तुतः है नहीं। चन्द लोगों के हाथ में सत्ता है। आज वहाँ की बागडोर एक लश्करी आदमी के हाथ में है और उसके इर्द-गिर्द चन्द लोग हैं। वे जो तय करें वही होगा। आम लोगों की वहाँ नहीं चलती। इस वास्ते भूदान-यज्ञ में हम लोक-शक्ति यानी सार्वजनिक शक्ति अर्थात् प्रेम-शक्ति से काम करना चाहते हैं। लोग हमसे पूछते हैं कि आप कब तक दान माँगते फिरेंगे? हम पूछते हैं कि आप दुनिया में कब तक तलवार चलाते रहेंगे? आप यह प्रयोग दस हजार साल से कर रहे हैं, फिर भी शान्ति नहीं कायम कर पाते। जब आपके ध्यान में यह आ जाय कि प्रेम-शक्ति से ही काम करना जरूरी है, तो आप समझेंगे कि समय का सवाल ही नहीं है। भूदान-यज्ञ का रहस्य तब आपकी समझ में आ जायगा।

प्रेम-शक्ति सर्वोपरि

पुराने लोगों के अनुभव से हम अब यह सीखते हैं कि प्रेम-शक्ति से, अच्छे साधनों का ही आधार लेकर काम किया जा सकता है। अपने पूर्वजों से ज्यादा अक्ल हम नहीं रखते। पर उनके अनुभव से हम जरूर सीख सकते हैं। अपने पिता के कन्धों पर जब खड़े होते हैं, तब हम उनसे आगे का देख सकते हैं। यह उनकी कमाई है कि हमारी निगाह ज्यादा दूर तक जाती है। हम उनसे बड़े नहीं, लेकिन उनसे बढ़े हुए जरूर होते हैं। हमारे काम के लिए परिशुद्ध प्रेम की ताकत ही इस्तेमाल

करनी चाहिए। इस विचार में हम इतने मजबूत हैं कि हम कहना चाहते हैं कि इसके खिलाफ दूसरा विचार अधर्म है, फिर वह चाहे रामायण में लिखा हो, चाहे महाभारत में। जो चीज हमारे पुरुषों को उस समय सूझी, उस पर उन्होंने अमल किया। लेकिन धर्म-विचार के विकास का जो अनुभव हमें मिला है, इतिहास के प्रवाह का जो अनुभव हमें मिला है और विज्ञान की परिस्थिति जो बताती है, उन सबके परिणाम-स्वरूप जो बात आज हमें सूझ सकती है, वह वशिष्ठ मुनि को भी नहीं सूझ सकती थी। वे बहुत बड़े महापुरुष, अत्यन्त शान्त महामुनि थे, हम उतने नहीं हो सकते। पर इतना जरूर है कि जो आज हमें सूझ सकता है, वह उन्हें तब नहीं सूझ सकता था। हम यह कहने को तैयार हैं कि जिनके हाथ में तलवार, पैसे और बुद्धि की ताकत है, वे आज भी दुनिया का कुछ कल्याण कर सकते हैं, जैसे कोई अच्छा गड़रिया भेड़ों का कुछ भला कर सकता है। पर कोई भी गड़रिया भेड़ों को मुक्त नहीं कर सकता। हम आपको समझाने आये हैं कि हम आपका कल्याण करने नहीं चले हैं, बल्कि आपको अपनी ताकत का बोध कराने आये हैं। हरएक के हृदय में प्रेम-रूप में परमेश्वर मौजूद है। इसका अनुभव भूदान-यज्ञ से हो सकता है। लेकिन शर्त यह है कि काम करनेवाले को अहंकार न हो।

रात के समय गाँव के कई प्रमुख लोग बाबा के पास अपना दानपत्र लेकर आये। लेकिन वह दान दाताओं के अयोग्य था। इसलिए बाबा ने उन दानपत्रों को दुःखपूर्वक वापस कर दिया और उनसे कहा कि आप लोग अभी और विचार करें।

पाँच अक्तूबर, दरभंगा जिले में बाबा का आखिरी दिन। हमारा पड़ाव भरफोरी गाँव में था, जो जिले की उत्तर-पूर्वी सीमा पर है। वहाँ से नेपाल की सीमा लगी हुई है। शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि जैसे समुद्र में तरंगें उठती हैं और गिरती हैं, उसी तरह पीढ़ी-दर-पीढ़ी

लोगों के सामने नये-नये सवाल आते रहते हैं। इस तरह के आन्दोलन सैकड़ों हो चुके हैं और हजारों होनेवाले हैं। ईश्वर की दुनिया ईश्वर की इच्छा से चलती है। वही हमें घुमाता है। इस वास्ते हम इस काम की कोई कीमत नहीं करते। पर इस बात की हम बहुत ज्यादा कीमत करते हैं कि भूदान-यज्ञ से दिल जोड़ने का काम हो रहा है।

कार्यकर्ता सच्चे पोस्टमैन बनें

बाबा ने कहा कि इस काम के लिए हो सकता है कि हमें पहले से ज्यादा कष्ट सहन करने पड़ें, लेकिन हमें खुशी ही है। कुरान में हमने पढ़ा है कि ईश्वर मुहम्मद से कहता है कि तेरा काम सिर्फ विचार पहुँचाना है। इसके सिवा तेरी कोई जिम्मेवारी नहीं है। हमारा काम विचार पहुँचाना है! हमें सन्तोष है कि हमने सही विचार लोगों के पास पहुँचाने के लिए अपनी जिन्दगी के सात हफ्ते इस जिले को दिये। हमने अपना काम खतम किया। अब आगे जाते हैं। अब आप पर जिम्मेदारी आती है कि यह विचार पहुँचायें। लेकिन डाक तो पोस्टमैन ही पहुँचा सकता है, हर कोई नहीं। इस वास्ते जो सेवक हैं, उनमें भगवान् का विचार पहुँचाने की योग्यता होनी चाहिए। उसके लिए तीन बातों की जरूरत है। पहली यह कि कार्यकर्ता खुद विचार पर अमल करें और अपना जीवन परोपकारी बनायें। दूसरी यह कि नतीजे की तरफ न देखें, तटस्थ और निर्लिप्त बुद्धि से काम करें और तीसरी यह कि सबके साथ नम्रता से पेश आयें।

इसके बाद दरभंगा जिले के संयोजक श्री गजानन दास ने कहा कि बाबा को दरभंगा जिले की यात्रा में जो कष्ट हुआ है, उसके लिए हम उनसे क्षमा माँगते हैं। गजानन बाबू की यह बात सोलह आने सच्ची है कि सारे बिहार की यात्रा में बाबा को कहीं भी इतनी तकलीफ नहीं उठानी पड़ी, जितनी कि दरभंगा जिले के बाढ़पीड़ित-क्षेत्र की यात्रा में। क्षमा माँगने के साथ-साथ गजानन बाबू ने बाबा को आश्वासन दिया कि इसके आगे हम सब कार्यकर्ता ज्यादा जोर और उत्साह से इस काम में लगेंगे। ● ● ●

"पूँजीवादी समाज में पूँजी की तरह गुणों की भी मालकियत कायम हो गयी। वैराग्य साधु का गुण मान लिया गया, सत्य ऋषि का और अहिंसा योगी का। गुणों की यह मालकियत मिटानी है और सारे समाज में ये गुण फैलाने हैं। सभ्यता या संस्कृति गिने-चुने लोगों की बपौती नहीं रह सकती। वह जनसाधारण का जन्मजात अधिकार है। सारे समाज का निर्माण इन गुणों के आधार पर हो, यह चिंता नहीं रही। यह अब हमें करना है।"

कोसी-क्षेत्र में पद-यात्रा की दो घटनाओं की याद सदा ताजी बनी रहती है—

(१) एक दिन शाम को कार्यकर्ताओं की सभा चल रही थी। पता चला कि उनमें से किसीने कोई दान ही नहीं दिया है। इस पर बाबा ने कहा कि जब आप खुद ही अपने हिस्से का दान नहीं देते, तो दूसरों से किस तरह माँगेंगे? एक भाई उठकर खड़े हो गये और उन्होंने अपनी तीस बीघा जमीन में से पाँच बीघे का दान किया। फिर तो दान का ताँता लग गया। थाना कांग्रेस के मंत्री ने बारह बीघे में से एक ही बीघा दिया। ज्यादा देने से मजबूरी जाहिर की। बाबा ने पूछा कि क्या कोई भाई इनके दो बीघे पूरे करेंगे? तुरंत एक सज्जन ने खड़े होकर अपने छठे भाग के दान के अलावा एक और बीघे के दान का एलान कर दिया।

(२) कुछ मालदार नौजवान जमींदारों ने बाबा को लिखकर यह शिकायत भेजी कि हमारे दान-पत्र खारिज कर दिये गये (क्योंकि

उनका दान उनकी हैसियत के लिहाज से बहुत ही कम था) और इस तरह हमारे गाँव की बेइज्जती की गयी। बाबा ने उन सबको बुलाया और एक घंटे तक उनसे चर्चा चली। आखिर उन सबने दरिद्रनारायण का हक कबूल किया और अपनी जमीनों में से, अच्छी और बुरी, दोनों में से, छठा हिस्सा देने का वायदा किया।

× × ×

उत्तर भारत की तमाम नदियों में कोसी शायद सबसे ज्यादा बदनाम है। इन दिनों उसके दुखड़े की बहुत चर्चा की जाती है। हिमालय पहाड़ से निकलकर यह चतरा (नेपाल) नामक मुकाम पर मैदान में उतरती है और पूर्णिया जिले के कुरसेला मुकाम पर गंगा में जा मिलती है। आज से लगभग चालीस साल पहले यह चतरा से कुरसेला तक करीब-करीब सीधे उत्तर से दक्षिण बहती थी और उत्तर भागलपुर (जो अब सहरसा जिला कहलाता है) और पूर्णिया जिलों के बीच हद बनाती थी। लेकिन आजकल यह पश्चिम की तरफ को एक त्रिभुज की दो रेखाएँ बनाती हुई चलती है। इस त्रिभुज की ऊपरी नोक सुपौल के पास समझना चाहिए। इस तरह यह अब सारे सहरसा जिले में और दरभंगा के पूर्वी हिस्से में बहती है। पिछले अगस्त महीने में जब हम लोग दरभंगा जिले के रोसड़ा और सिंगिया थानों में घूम रहे थे, तो हमें जगह-जगह बतलाया गया कि कोसी का पानी यहाँ तक आ पहुँचा है। उनको डर यह था कि अगर यह नदी इसी तरह पैंतरे बदलती रही, तो कुछ अरसे के बाद इसकी मुख्य धारा ही दरभंगा जिले में आ पहुँचेगी। कोसी की इस रविश को रोकने के लिए सरकार की तरफ से यह सोचा जा रहा है कि इसके दोनों तरफ भारी-भारी बाँध बाँधे जायँ। सन्त विनोबा ने कोसी-क्षेत्र में दो अक्तूबर से लेकर दो हफ्ते तक यात्रा की। इसमें से उनके तीन दिन दरभंगा जिले में और बाकी ग्यारह दिन सहरसा जिले में बीते।

विद्यार्थी और भूदान

बुधवार, तारीख छह अक्तूबर को हमने सहरसा जिले में प्रवेश किया और कन्हौली बाजार में पड़ाव डाला। दोपहर को नेपाल के कुछ विद्यार्थी बाबा से मिलने आये और उन्होंने बाबा से बहुत-से सवाल पूछे। उनमें से एक सवाल यह था कि भूदान-यज्ञ के लिए हम क्या कर सकते हैं? बाबा ने उनको चार बातें सुझायीं—सर्वोदय-साहित्य का अध्ययन करना, रोज कुछ देर उत्पादक शारीरिक श्रम करना, आसपास के गाँवों में जाकर जनता की हालत का अध्ययन करना और सबके साथ, विशेषकर गाँववालों के साथ नम्रता से पेश आना।

इसके बाद कार्यकर्ताओं की सभा हुई। उसमें एक भाई ने पूछा कि आप जो दानपत्र वापस कर देते हैं, सो क्यों? क्या आप कोई टैक्स वसूल कर रहे हैं? इसका हवाला देते हुए बाबा ने शाम को प्रार्थना-प्रवचन में कहा कि हमारे पास जो अधिकार है, वह किसी सरकार या दूसरे के पास नहीं। यह अधिकार प्रेम और सद्-विचार का अधिकार है। इसकी ताकत हरएक को कबूल करनी पड़ती है। सद्-विचार जब मनुष्य के दिमाग में बैठ जाता है, तब उसके दिल में लड़ाई शुरू हो जाती है। आखिर सद्-विचार के वश उसे होना पड़ता है। वहाँ उसकी हार नहीं होती, जीत ही होती है। आजकल की हिंसा की लड़ाई में यह परिणाम आता है कि जो हारा वह मरा और जो जीता वह हारा। अहिंसा की लड़ाई में जो जीता, वह तो जीता और जो हारा वह भी जीता। अन्धकार और प्रकाश में जहाँ मुकाबला होता है, वहाँ प्रकाश तो प्रकाश रहता ही है, अन्धकार भी प्रकाश बनता है।

अगले दिन दशहरा था। हमने उस दिन कोसी नदी पार की। कोसी को हमने कुरसेला में देखा है, जहाँ वह चुपचाप गंगा में आत्म-समर्पण कर देती है। लेकिन यहाँ तो वह जोर से गरज रही थी और दूर से ही उसके रोब का पता चलता था। हमें बताया गया कि मध्य अगस्त

या सितम्बर के शुरू में जब वह अपने पूरे जोर पर होती है, तो मामूली मल्लाह का उसे पार करना नामुमकिन है। नाव से उतरने के बाद हम लोग कोई दस मील चलकर करजाइन बाजार ६ बजे पहुँचे।

दशहरे का सन्देश

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि धर्म का अभ्यास कराने के लिए हमारे शास्त्रकारों ने युक्ति निकाली है। वह यह कि साल भर में कुछ दिन नियत किये हैं और कहा है कि कम-से-कम इन दिनों पर अन्य बातें छोड़कर धर्म का काम विशेष रूप से किया जाय। ऐसे विशेष दिनों पर हमारे जीवन में धर्म का अच्छा प्रकाश पड़ना चाहिए। आज का दिन ऐसे ही दिनों में से है। कुछ हजार साल पहले अपने देश में जंगल ही जंगल थे। उस समय ऋषियों ने सिखाया कि जंगल को तोड़ना और जमीन अच्छी बनाना हरएक का धर्म है। ऐसा करने पर ही मानव-समाज सुखी होगा। जंगल तोड़ने के काम में मदद देनेवाली दुर्गा देवी उन्होंने बनायी। कहा कि उसकी उपासना करो। दुर्गा की उपासना में लोगों ने कुल्हाड़ी या कुदाल लेकर जंगल तोड़ना और काटना शुरू कर दिया। इस तरह असंख्य लोगों ने मेहनत की और जंगल को जलाया। जंगल जलाने का भी यज्ञ हो गया। जहाँ घने जंगल थे, वहाँ बड़े-बड़े जंगली जानवरों से मुकाबला होता था। दुर्गा देवी के उपासक समाज को निर्भर बनाने के लिए उन जानवरों का शिकार करते रहे।

अब जंगल तो कट गये। लकड़ी जलानेवाले यज्ञ की जरूरत नहीं रही। जानवर भी दूर जंगलों में रहते हैं। तो दुर्गा देवी के नाम से लोगों ने बेचारे बकरे का बलिदान जरूरी मान लिया है। यह एक ऐसी कल्पना है, जिसने समाज में धर्म-बुद्धि का लोप किया है। शास्त्रकारों ने कहा है कि अगर तुम्हें बलिदान करना है, तो "भेदाः पशु" याने भेद को खतम करो और अभेद बढ़ाओ। दशहरे का दिन आया है। आज से किसी प्रकार का भेद नहीं रखना है। बकरे की बलि नहीं, भेद की बलि देनी है।

अगले दिन हमारा पड़ाव दौलतपुर में था। ६ बजे के करीब जब हम वहाँ पहुँचे, तब बाबा ने चन्द शब्द उन लोगों से कहे, जो स्वागत के लिए वहाँ जमा हुए थे। उन्होंने कहा कि अगर आप हमारा हक नहीं मानते हैं, तो देना गलत है। इसमें भिक्षा नहीं माँगी जा रही है कि मालिक मालिक बना रहे और थोड़ा-सा टुकड़ा दे दे। अगर हक कबूल नहीं है, तो न दें। हमें इसीसे खुशी होगी। जब विचार बदले तभी दीजिये। इसलिए विचार समझकर ही जो करें सो करें। इसके बाद उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि बड़े जमींदार या काश्तकार, जिनके लिए सार्वजनिक दृष्टि से आज आदर नहीं है, वे सामने आयें। ऐसा मौका बाद में नहीं मिलेगा। अगर इसका पूरा इस्तेमाल करते हैं, तो समाज का नेतृत्व उनके हाथ आ सकता है। भूदान-यज्ञ में जमीन देकर छूटना नहीं है, बल्कि शादी की तरह बँध जाना है।

हाथ हजार, दिल एक

शाम के प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि स्वराज्य तो लन्दन से आया, पर उसका पार्सल कहीं रास्ते में रुक गया है। वह दिल्ली और पटना से आगे नहीं बढ़ा। अभी वह यहाँ गाँव तक पहुँचा ही नहीं। इस वास्ते यह बात बहुत जरूरी है कि आप अपने गाँव का राज्य खुद कायम करें। बड़ों से हमारी माँग है कि आप इस काम को उठा लीजिये। बड़ों की बड़ाई यह है कि पहले छोटों की फिक्र करें, फिर अपनी। हमारा काम गरीब और अमीर के बीच प्रेम पैदा करने का है। दो हाथ इसके और दो हाथ उसके, चतुर्भुज रूप खड़ा करने का हमारा काम है। हम जोड़ने को आये हैं, तोड़ने को नहीं। जैसा वेद में कहा, वैसा होना चाहिए—"हजारों हाथ, हजारों मुख और दिल एक।" यहाँ यह हालत है कि दिल जुदा हो गये हैं। अपने गाँव में पाँच सौ दिल हैं, तो होना चाहिए कि दिल एक है और हाथ हजार। जब यह होगा, तब ईश्वर का रूप प्रकट होगा।

आपको भाई मान लिया

रात को गाँव के कुछ बड़े-बड़े लोग अपने दानपत्र लेकर आये, जो शाम की प्रार्थना-सभा में वापस कर दिये गये थे। उनमें एक थे वकील और दूसरे थे ग्रेजुएट। करीब घंटे भर तक प्रेम का बाजार चलता रहा। वे लोग दलीलों से यही कोशिश करते रहे कि बाबा पहली किश्त के तौर पर उनका दानपत्र कबूल कर लें। लेकिन बाबा भी पत्थर की तरह अटल थे और अपना हिस्सा माँगते थे। आखिर में वे कहने लगे कि हम अपने-अपने व्यक्तिगत हिस्से में से छठा हिस्सा देते हैं और परिवार की बाकी जमीन के बारे में अपने-अपने घरवालों से सलाह करेंगे। कमाल की बात यह है कि उन्होंने यह मान लिया कि बाबा का उनके घर में हक है। तब बाबा ने कहा कि आप छठा हिस्सा तो देते हैं, लेकिन अच्छी जमीन ही दीजियेगा। तो वे बोले कि बाबा, जब आपको भाई मान लिया, तो अच्छी और बुरी, दोनों तरह की जमीन आपको लेनी होगी। बाबा मुस्कराये और कहने लगे कि अच्छी बात है। लेकिन आप इतना तो खयाल कीजिये कि हम आपके गरीब भाई हैं और आप हमारे साधन-सम्पन्न भाई हैं। इसलिए आपका फर्ज हो जाता है कि जिस तरह आप अपने पैरों पर खड़े हैं, उसी तरह हमको भी खड़ा कर दें। इसके आगे वे भाई चुप हो गये। उन्होंने वादा किया कि अच्छी जमीन के अलावा परती जमीन जो देंगे, वह तुड़वाकर देंगे।

तलवार बनाम कुदाल

शनिवार के दिन हम लोग गनपतगंज में थे। प्रार्थना रोज की तरह शाम को चार बजे हुई। अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि आज हमने अखबार में पढ़ा कि जापान के लोग शान्ति की तरफ झुक रहे हैं। वहाँ के एक बड़े आदमी ने कहा है कि हमारे देश के लोगों का झुकाव शान्ति की तरफ जा रहा है। हमें यह पढ़कर खुशी हुई कि जापानवाले हथियार नहीं चाहते। वे बहुत भुगत चुके हैं। ऐटम बम का पहला अनुभव उन्हें ही मिला।

आज जापान में, जिन्होंने उन्हें पराजित किया, वे ही चाहते हैं कि उन्हें हथियार देकर सुसज्जित करें। यही हालत जर्मनी में है। जिन्होंने हराया, वे ही हारे हुओं को हथियारबन्द करना चाहते हैं। यह तमाशा क्या है? दुनिया के देशों को दोनों चौधरी अपने-अपने गुट में लाने की कोशिश कर रहे हैं। यह केवल डर के मारे हो रहा है, अक्ल से नहीं। इसलिए हमारे शास्त्रकारों ने समझाया है कि अच्छे निर्णय के लिए स्थित-प्रज्ञ के पास जाना चाहिए। जापान का बड़ा मनुष्य शान्ति की तरफ झुकाव बताता है, लेकिन हम कहते हैं कि केवल झुकाव से क्या होता है? केवल झुकाव से नहीं चलेगा। शान्ति के लिए समाज की रचना बदलनी होगी। ये जो दरजे और भेद-भाव बना रखे हैं, इनको तोड़ना होगा। हम कहते हैं कि यह सब आपको दुरुस्त करना होगा। मिट्टी में काम करने को तैयार होना होगा। भूदान आपने मंजूर कर लिया, अब मेहनत-मजदूरी को तैयार होना है। सम्पत्ति के बँटवारे को तैयार होना है।

कोसी-योजना सफल कैसे हो?

रविवार, तारीख दस अक्तूबर को गनपतगंज से दस मील चलकर बाबा पिपरा बाजार पहुँचे। वहाँ दोपहर को श्री ललितनारायण मिश्र बाबा से मिले। मिश्रजी कोसी-क्षेत्र से कांग्रेस-टिकट पर पार्लियामेंट के सदस्य हैं। उन्होंने बाबा से कोसी-योजना के बारे में चर्चा की और पूछा कि कोसी-योजना की सफलता के लिए आपके क्या सुझाव हैं? बाबा ने कई ठोस सुझाव दिये। पहला यह कि इस योजना में काम करनेवाले भाइयों को डेढ़ रुपया रोज मजदूरी मिलनी चाहिए। यह ठीक और वाजिब मजदूरी है। दूसरा यह कि काम संक्रान्ति यानी १४ जनवरी, १६५५ तक जरूर शुरू हो जाना चाहिए। तीसरी यह कि यह काम एक गैर-पार्टी आधार पर किया जाय और सब पक्षों का सहयोग लेने की पूरी कोशिश की जाय। चौथी यह कि जो लोग हटाये जायँ, उन्हें उचित मुआवजा दिया जाय, गरीब की आह इसके खिलाफ न हो। पाँचवीं यह कि जो काम

बने वह पक्का बने। काम की निगरानी अच्छी तरह होनी चाहिए, ताकि दीवार समान मजबूती की हो। निगरानी करनेवाले जानकार आदमी होने चाहिए। लेकिन वे सिर्फ हुक्म देनेवाले नहीं, प्रेम करनेवाले हों। काम में ढील न हो, पर व्यवहार ठीक हो। बाबा ने यह भी कहा कि श्रीमान् जो श्रम करें, उसे सहर्ष मंजूर किया जाय। पर उनसे दान में पैसा न लिया जाय। इससे वर्ग-भेद पैदा होगा, जो काम को बिगाड़ेगा। बाबा ने यह भी कहा कि छोटे-छोटे काश्तकारों से जो जमीन ली जाय, उसके बदले में उन्हें जमीन मिलनी चाहिए।

"लेकिन सरकार जमीन कहाँ से देगी? वह तो पैसा ही दे सकती है।" ललित बाबू ने कहा।

"इसका मतलब यह होता है कि आप बे-जमीनों की तादाद और बढ़ा देंगे। यानी, आप नयी समस्या खड़ी करेंगे।"

"लेकिन इसका तो कोई इलाज दीखता नहीं।"

इस पर बाबा बोले, "ऐसी नाउम्मीदी की तो कोई बात नहीं है। जो जमीन पर बसना चाहते हैं, हम उनको जमीन देंगे। कोसी-इलाके के पुराने और नये, दोनों तरह के बे-जमीनों को हम जमीन देने को तैयार हैं। लेकिन इसके लिए आपको और आपके साथियों को डटकर काम करना पड़ेगा। हम चाहते हैं कि इन तीन जिलों से जो हमारी माँग है (दरभंगा डेढ़ लाख एकड़, सहरसा सवा लाख एकड़ और पूर्णिया तीन लाख एकड़) उसे आप पूरी करते हैं और उसके अलावा कुछ जमीन और भी दिलाते हैं, तो हम कोसी-क्षेत्र के सब बेजमीनों को जमीन पर बसाने के लिए तैयार हैं। भूदान से जमीन पाकर और आपसे पैसा पाकर वे लोग बड़े आनन्द के साथ बस जायँगे।" मिश्रजी ने यह सुनकर सिर हिलाया। थोड़ी देर के बाद बाबा ने कहा कि "हमें इस काम में बड़ी दिलचस्पी है। जनता अगर इसे बनाती है, तो स्वराज्य है।"

प्रार्थना-प्रवचन में इस चर्चा का जिक्र करते हुए बाबा ने कहा कि हम चाहते हैं कि आप दिल खोलकर जमीन दें। 'छोटा दिल, बड़ी बात' नहीं चलेगी। हम कहते हैं कि भूदान-यज्ञ की माँग पूरी कर दो और ऊपर से थोड़ा और भी दो, तो बाँध भी बँधेगा और सबका काम होगा।

दान की धारा

रात को कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। पाँच भाइयों ने बाबा की जेल कबूल की। बैठक में कांग्रेस के स्थानीय पदाधिकारी भी थे। बाबा ने पूछा कि आप क्यों नहीं कदम आगे बढ़ाते? किसीने कहा कि बाबा, इनमें से बहुतों ने जब खुद ही छठा हिस्सा नहीं दिया है, तो दूसरे से कैसे माँगेंगे? तब बाबा ने उनमें से एक-एक से खड़े होने की प्रार्थना की और कहा कि आप बतायें कि हरएक के पास कितनी जमीन है, अब तक कितना दान दिया है और छठा हिस्सा पूरा न करने का कारण क्या है? खुशी की बात है कि जो भाई सबसे पहले खड़े हुए, उन्होंने कहा कि हमारे पास तीस एकड़ जमीन है, जिसमें से तीन एकड़ दे चुके हैं और बाकी दो अब दिये देते हैं। इस तरह जो सिलसिला चला, तो एक के बाद एक ने अपने छठे हिस्से का वादा कर दिया। सिर्फ एक भाई ने अपनी आर्थिक तंगी की वजह से अपनी मजबूरी जाहिर की कि वे छठा हिस्सा पूरा नहीं दे सकते। एक एकड़ की कमी पड़ती थी। तब एक उदार दिल सज्जन खड़े होकर बोले कि एक एकड़ हम पूरा कर देते हैं। इस दृश्य को देखकर एक एंग्लो-इंडियन महिला चकित रह गयी और बोली कि अगर मैंने यह सब अपनी आँखों से नहीं देखा होता, तो जरा भी विश्वास नहीं आता। मैं सोचने लगा कि बाबा ने इन सभाओं को सत्संग का जो नाम दे रखा है, वह अक्षरशः सही है।

एक दुःखद घटना

अगले रोज हम मोरा में थे। उस दिन एक दुर्घटना घट गयी। बाबा के स्वागत में स्थानीय प्रजा-समाजवादी कार्यकर्ताओं ने जयप्रकाश बाबू

के नाम से एक दरवाजा बनाया था। कांग्रेसवालों ने इसे तोड़कर अलग कर दिया। यह घटना बड़ी दुःखदायी थी। कुछ कांग्रेसवालों ने इस पर पश्चात्ताप भी जाहिर किया। तीसरे पहर कुछ बड़े काश्तकार बाबा से मिले। उनमें से एक ने कहा कि अगर हम आपको छठा हिस्सा एक मर्तबा दे दें, तब दुबारा तो आप चढ़ाई नहीं करेंगे? बाबा यह सुनकर मुस्कराये और बोले कि अपनी बेटी की शादी कर देने के बाद क्या आप उससे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेते हैं? यह सुनकर सब हँस पड़े। फिर बाबा ने कहा कि अगर छठे हिस्से से देश के बे-जमीनों का काम नहीं चलता है, तो और जरूर माँगा जायगा। लेकिन मेरी तो धर्म की माँग है। इसकी गहराई आपको समझनी चाहिए।

शाम की प्रार्थना में बाबा ने सवेरे की दुर्घटना की चर्चा की। उन्होंने अपील की कि व्यवहार में हमको पक्षपात-रहित दृष्टि और संयम से काम करना चाहिए। हिन्दुस्तान जैसे गरीब मुल्क को जब हम उठाना चाहते हैं, तो उसमें भेद-भाव और पक्ष-भेद के लिए कोई स्थान नहीं है। एक दरवाजा तोड़ने के बजाय आपने दूसरे दरवाजे खड़े किये होते। बड़े-बड़े आदरणीय नेता हैं, उनके नाम से भी दरवाजे बनवाये होते। वैसे हमारा काम तो बिना दरवाजे के चलता है। यह स्वागत भी नहीं चाहिए। पर जब एक दरवाजा बना, तो उसे तोड़ना गलत बात है। उससे दिल टूटते हैं। हमने सैकड़ों बार इसके कारण स्वराज्य खोया। हमारा इतिहास इस तरह की बातों से भरा पड़ा है। इसलिए हम कहना चाहते हैं कि प्रेम से मिल-जुलकर काम करना होगा।

मंगल के दिन हमारा पड़ाव त्रिवेणीगंज में था। दोपहर को स्थानीय व्यापारी बाबा से मिलने आये। बाबा ने कहा कि पहले व्यापारियों को "महाजन" कहते थे। शास्त्र में लिखा है कि जिस रास्ते महाजन जायँगे, वह धर्म का रास्ता है। अगर वह लूटना, चूसना, ठगना करेंगे, तो वही धर्म बनेगा और सब लूटना, चूसना, ठगना करेंगे। इसलिए व्यापारियों

की बड़ी भारी जिम्मेदारी है। उन्हें बहुत ईमानदारी के साथ व्यापार चलाना चाहिए। हमें उनका सहयोग ही नहीं, आत्मयोग चाहिए। बाबा ने उनसे पूछा कि जब व्यापारी व्यापार करता है, तब अपने पास जमीन क्यों रखे ? उसे जमीन तो दे ही देनी चाहिए। इस पर कुछ व्यापारियों ने कहा कि हाँ, ठीक है।

जाति बनाम समाज

शाम की प्रार्थना में व्यापारियों की बातचीत का हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि क्या दो घोड़े पर एक सवार बैठेगा ? अगर सवार को अच्छी तरह काम करना है, तो एक घोड़े पर बैठे, ठीक से बैठे और दूसरा पटक दे। जमीन छोड़ो और व्यापार करो या व्यापार छोड़ो और काश्तकारी करो। आज व्यापारियों ने समझ रखा है कि दूकान के लिए जैसे तराजू चाहिए, वैसे झूठ भी चाहिए। यह गलत बात है। तराजू कहती है कि डंडी सीधी रहे। कुरान में लिखा है कि भगवान् ने अजीब-अजीब चीजें पैदा की हैं, उनमें सबसे अजीब है तराजू। तराजू माने इन्साफ यानी न्याय, बिल्कुल संतोष। इसलिए जो व्यापारी हैं, वे हमारे काम में बहुत कुछ मदद कर सकते हैं। बाबा ने यह भी बताया कि हमारे देश में परिवार की भावना तो स्थिर हो गयी है, पर जिसे समाज कहते हैं, वह बना ही नहीं है। हिन्दुस्तान में जातियाँ बनी हैं, पर समाज नहीं। परिणाम यह है कि गाँव-गाँव में ताकत नहीं बनती। इसलिए करना यह होगा कि परिवार की भावना बढ़ानी होगी। पूरे गाँव का एक परिवार है, इसकी भावना बनानी होगी। आज विचार से जाति का कोई सम्बन्ध नहीं रहा। आज अगर ब्राह्मणों का समाज बने, तो उसमें कंजूस भी आयेंगे और उदार भी आयेंगे, दुर्जन भी आयेंगे और सज्जन भी आयेंगे। ऐसी खिचड़ी पकाकर क्या होगा ? दाल और चावल की खिचड़ी बन सकती है, पर चावल और कंकड़ की क्या खिचड़ी बनेगी ? इसलिए जाति पर जोर देकर कोई काम नहीं बन सकता, बिगड़ ही सकता है। एक जमाना रहा होगा, जब जातियाँ

बनी रही होंगी, तब उनके पीछे कोई विचार रहा होगा। आज वह विचार नहीं है। जातियाँ समाज बनाने में रोक रही हैं। इसलिए जातियों को हटाना होगा और परिवार की भावना पूरे गाँव में फैलानी होगी। भूदान-यज्ञ के जरिये हम यही बात करने जा रहे हैं।

जब हम १३ तारीख को कोरियापट्टी जा रहे थे, तो रास्ते में सात मर्तबा नदियों को पार किया। कहीं नाव से, कहीं हेलकर। स्वागत में बहुत-से दरवाजे बनाये गये थे। ये दरवाजे आचार्य किशोरलाल मशरूवाला, ठक्करबापा, श्री जयप्रकाश नारायण के नाम पर रखे गये थे और आखिर एक दरवाजे में तो कल्पना ने ऊँची उड़ान मारी। उसे "जीवन-दानी द्वार" नाम दिया गया था।

गुणों की मालकियत मिटे

वहाँ पर प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि पूँजीवादी समाज में पूँजी की तरह गुणों की भी मालकियत हो गयी। वैराग्य साधु का गुण मान लिया गया, सत्य ऋषि का और अहिंसा योगी का। गुणों की भी मालकियत हो गयी। अब वह मालकियत मिटानी है और सारे समाज में गुण फैलाने हैं। ब्राह्मण क्या करता है? पचास बार नहायेगा, मगर दूसरे को छुएगा नहीं। गन्दगी करेगा, पर सफाई नहीं करेगा। स्वच्छतारूपी गुण को उसने अपना लिया, पर सफाई करने नहीं जायगा। क्षत्रियों ने क्या किया? रक्षण करेंगे, पर बाकी समाज को अपना रक्षण करने की ताकत नहीं देंगे। इस तरह पूँजीवादी समाज में गुणों की भी मालिकी हो गयी। सभ्यता या संस्कृति गिने-चुने लोगों की बपौती नहीं रह सकती। वह जन-साधारण का जन्मजात अधिकार है। सारे समाज का निर्माण उन गुणों के आधार पर हो, यह चिन्ता किसीको नहीं रही। अब हमें यह काम करना है।

सेवा बनाम क्रान्ति

इसके बाद बाबा ने कहा कि हजारों-लाखों लोग इस काम के लिए चाहिए। हर गाँव से दो-दो, तीन-तीन लोग, पुरुष भी, स्त्रियाँ भी,

निकलें। ऐसे लोग निकलें, जो परिवार की भावना को बढ़ायें, इस विचार का अध्ययन-मनन करें, तरह-तरह के प्रयोग करते रहें और गाँव की रचना में फर्क करने की कोशिश करें। आज तो जीवन-दान माने कोई बलिदान है। लेकिन जरूरत तो सारे समाज के ही जीवन-दानी होने की है। बच्चा-बच्चा कहेगा कि नया समाज बनाना है। नये समाज में हरएक यही कहेगा कि मेरा जीवन समाज के लिए है। आज उलटी ही बात है। जो दर-असल सेवक हैं, वे सेवक नहीं माने जाते। जो हजार, पाँच हजार लेते हैं, उनकी सेवा सेवा मानी जाती है। जो अपने पाँव पर खड़े हैं, जो दूसरों का बोझ उठाते हैं, वे सेवक नहीं। यह इस वास्ते हो रहा है कि किसान भी आज दर-असल पेट के लिए काम करता है। यद्यपि सेवा होती है, पर उस सेवा का कोई मूल्य नहीं। यह हमें बदलना है। हर मनुष्य जीवनदानी हो, हर लड़का-लड़की, सब कोई कहे कि समाज की सेवा के लिए यह जीवन है। ऐसा जब होगा, तब जीवन आनन्दमय बनेगा। तब गीता सब लोगों का ग्रन्थ बन जायगा। आज सबका ग्रंथ है, "पेनल कोड" (ताजीरात) और चन्द लोगों का है, गीता। तब पारमार्थिक जीवन होगा। आज चन्द लोग पारमार्थिक हैं, बाकी सब स्वार्थी और निकम्मे हैं। यह पूँजीवादी भेद है। जैसे चन्द पैसेवाले होते हैं, वैसे ही चन्द परमार्थी हैं। जैसे ज्यादातर लोग गरीब होते हैं, वैसे ही ज्यादातर लोग स्वार्थी हैं। यह भेद मिटाना है। गहराई से अगर समझेंगे, तो क्रान्ति जल्द-से-जल्द होगी। बाहर से यों ही कुछ कर देने से क्रान्ति नहीं होती। उससे अपने इस आन्दोलन को समाधान नहीं।

तारीख १६ को हमारा पड़ाव बलुआ बाजार में था। सहरसा जिले में बाबा का यह आखिरी मुकाम था। उस दिन जो दरवाजे बने, उन्होंने तो कोरियापट्टीवालों को भी मात कर दिया। ये दरवाजे महादेव देसाई, मशरूवाला, विदेह, दधीचि, शिव और गांधी के नाम पर थे। आखिरी दरवाजा "सन्त द्वार" था।

जिले में आखिरी दिन होने के कारण बहुत-से कार्यकर्ता भी आये थे। पड़ाव पर पहुँचते ही बाबा ने उनसे कहा कि भूदान-यज्ञ से केवल भूदान-प्राप्ति नहीं, बल्कि ग्रामराज कायम करने की कल्पना है। हम आशा करते हैं कि सहरसा जिला सहर्ष दान देगा और सहस्रशः देगा।

ग्यारह बजे कार्यकर्ताओं की सभा हुई। उसमें उन्होंने कहा कि हमको दूसरे काम इतने रहते हैं कि भूदान में समय नहीं दे पाते। उनकी दिक्कत को बाबा ने महसूस किया और कहा कि बिना काम के कोई रहता हो, यह तो हम मानते नहीं। आपको काम में लगाने का मेरा काम नहीं है। ईश्वर किसीको एक क्षण बैठने नहीं देता। आपको काम में लगाने के लिए यह आन्दोलन नहीं है। जिसने जन्म पाया, वह मृत्यु तक काम पा गया। बाद में भी वासनानुसार चलता है। यह काम जो आया है वह जमाने की माँग लेकर, युगधर्म लेकर आया है। सोचने की बात यह है कि कौन-कौन लोग ऐसे हैं, जो इस काम का रहस्य समझते हैं और इसे ही मुख्य तथा दूसरे कामों को गौण समझते हैं। वे ही जीवन भर इसमें लग सकेंगे।

संस्थाओं की शुद्धि

बाबा ने आगे चलकर कहा कि कांग्रेस या प्रजा-समाजवादी दलों में सब तरह के लोग हैं, जो मिली-जुली जमातें हैं। कम्युनिस्टों में ऐसा नहीं होता। जहाँ अवांछनीय मनुष्य आया, उसे खतम कर दिया। इसे वे "पर्जिंग" कहते हैं। यह ऐसा तरीका है, जिससे सफाई होती है। हम इसे कल्याणकारक नहीं मानते। पर इसमें कुछ बल है। बाकी सारी जमातें मिश्रण हैं। कांग्रेस के सामने सवाल है कि जब गांधीजी थे, तो ऐसे क्रांतिकारी कार्यक्रम रखते थे, जिसमें त्याग और सहन का माद्दा रहता था। अब जब वह राज्यकर्ता जमातें हैं, तो किसीको क्या उज्र हो? प्रजा-समाजवादियों में सत्ताभिलाषी भरे पड़े हैं। दोनों जमातें सत्ता-परायण हैं। परसों एक भाई दुःख के साथ कहते थे कि सारा प्रेस पूँजीपतियों के

हाथ में चला जा रहा है। हमें डर लग रहा है कि इलेक्शन (चुनाव) भी पूँजीवादियों के हाथ में आ जायगा। वे मशीनरी पर कब्जा कर लेंगे, आप देखते रह जायेंगे। पूरा 'फासिस्ट' ढंग हो जायगा। संस्थाओं की शुद्धि का सवाल आज बड़ा सवाल है। स्वराज्य के पहले यह दावा था कि जो अंग्रेजों के खिलाफ खड़ा हुआ, वह अपने साथ है। जो भी पत्थर लिया, सिन्दूर लगा दिया, तो भगवान् हो गया। लेकिन अब जो पत्थर इकट्ठे करते हैं, वे मूर्ति-स्थापना के लिए नहीं, मकान बनाने के लिए। मकान में हर पत्थर नहीं लग सकता। इस तरह कब तक चलेगा? पंडित नेहरू प्रवाह को रोके हुए हैं। पर सोचने की बात है कि गंगा के प्रवाह को कौन रोक सका है? कहना यह है कि एक मनुष्य सब कुछ नहीं कर सकता। भिन्न-भिन्न पार्टियों में ताकत रहे, वह दूसरों के हाथों में न जाय, तभी टिकेगी।

नया सेवक-वर्ग तैयार हो

शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि करीब एक सदी से दुनिया में 'डेमोक्रेसी' का, लोकसत्ता का प्रयोग चल रहा है। यह नया विचार आया है। इसमें भी कई पक्ष हो गये हैं। कुछ दायेंवाले कहलाते हैं, कुछ बायेंवाले। विचार-भेद हम जिन्दगी का लक्षण समझते हैं। लेकिन विचार-भेद के आधार पर जब पक्ष-भेद बनते हैं, तो उनमें विचार का माद्दा कम हो जाता है और संगठन का, अनुशासन का, बाहरी प्रचार का माद्दा बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप आज सारी दुनिया में राजनैतिक-क्षेत्र में एक कोलाहल-सा मचा है। राजनैतिक-क्षेत्र अगर छोटा होता, तो बहुत चिन्ता की बात नहीं थी, पर यह बहुत व्यापक बन गया है। ऐसे व्यापक क्षेत्र में अगर स्पर्धा रही, विचार-मन्थन के अलावा आधारों का संघर्ष भी जारी रहा, तो मानव के विकास के लिए बाधा पड़ सकती है। इसलिए मेरी कोशिश है कि एक ऐसा सेवक-वर्ग तैयार हो, जो अपने लिए न सोचे। किसी खास पन्थ, सम्प्रदाय, पार्टी, पक्ष, इज्म, वाद

आदि से परे हो। स्वच्छ, निरुपाधि, स्वतंत्र चिन्तन करनेवाला हो और मानव की मानव के नाते सेवा करे।

यह समझने की जरूरत है कि राजनैतिक पक्षों के अलावा ऐसा एक सेवक-वर्ग हर देश में मौजूद भी है, जिसे 'ह्युमैनेटेरियन', मानव-सेवा-परायण पन्थ कहते हैं। कुछ दयालु लोगों का यह धर्म है। लेकिन इससे मेरा समाधान नहीं। यह मानवता का खयाल करता है, लिहाज करता है, मगर मानवता के सब अंगों पर विचार नहीं करता। खासकर राजनीति, समाजशास्त्र से अलग रहता है। भूतदया या सेवा करता है। मेरे सामने जो वर्ग है, वह भी ऐसे ही सेवा करना चाहता है। पर जीवन के सब अंगों पर विचार करना चाहता है और राजनीति को लोकनीति का रूप देना चाहता है। उसकी कोशिश होगी कि पक्षभेद मिटे और पक्षातीत लोकनीति पर समाज-व्यवस्था चले। मैं उसे राज्य-व्यवस्था नाम देना भी पसन्द नहीं करता। समाज-व्यवस्था के अन्तर्गत राज्य-व्यवस्था भी आ ही जायगी। सत्ता जिसे कहते हैं, वह अत्यन्त विकेन्द्रित होकर आखिर लुप्त हो जायगी। उसके विकेन्द्रित होने का श्रीगणेश आज से ही हो। वह धीरे-धीरे लुप्त होगी, याने हर मनुष्य में बैठेगी और शासन का अधिकार हरएक के हाथ में आयगा। एक ही व्यक्ति शासक और शासित का संगम होगा। मैं ही अपना शासक और मैं ही अपना शासित। हम सब भाई-भाई, साथी या सहोदर। एक ही विचार-उदर से हमारा जन्म। इसके माने यह नहीं कि कोई विचार-भेद नहीं होगा। याने यह कि हार्दिक विचार एक होगा, बौद्धिक विचार अलग-अलग हो सकते हैं।

आखिर में बाबा ने कहा कि सारे पक्षों को छोड़नेवाले लोग आज भी देश में मौजूद हैं। पर वे ऐसा काम नहीं करते कि पक्षों की शुद्धि हो, एक-दूसरे के नजदीक आयें। शुद्धिकरण, एकीकरण और विलीनीकरण की शक्ति भूतदया करनेवाले सेवक-वर्ग में नहीं है। हम चाहते हैं कि

सारी दुनिया में एक ऐसा सेवक-वर्ग तैयार हो। कम-से-कम हिन्दुस्तान में तो हो ही। बिहार में मैं बोल रहा हूँ। बिहार की भूमि इसके लिए बहुत उपयुक्त है। बिहार में तो एक ऐसा वर्ग जरूर हो जाय। वर्ग नाम दिया, क्योंकि बोलने के लिए कुछ नाम देना ही पड़ता है। पर जो बातें वर्ग या जमात कहने से सामने आती हैं, वे इसमें नहीं हैं। यह एक समाज होगा, इसका हर व्यक्ति हरएक पर प्यार करेगा। किसी संकुचित दृष्टि से नहीं देखेगा। वह अपने को किसी शिकंजे में जकड़ेगा नहीं, न अपने को सीमित ही मानेगा।

इसलिए हम चाहते हैं कि अपने बिहार में जो बुद्ध भगवान् की भूमि है, जो महावीर की, जनक महाराज की भूमि है, जहाँ सत्याग्रह की रोशनी महात्माजी को मिली, जिसे उन्होंने अहिंसा का साक्षात्कार नाम दिया, इस पुण्यभूमि में ऐसे सेवक निर्माण हों, जो अपने को किसी तरह से संकुचित न मानें। जो वर्ष हमने यहाँ बिताये, आनन्द के साथ बिताये। तपस्या नहीं कहना चाहता, क्योंकि उसमें तो ताप होता है। लेकिन मुझे तो यहाँ कोई ताप, किसी तरह का क्लेश हुआ ही नहीं। मेरा जीवन अत्यन्त आनन्द से बीता है। अगर ऐसे पाँच-पचीस लोग भी मुझे मिल गये, तो इस यात्रा का अत्यन्त शुभ परिणाम मुझे और समाज को मिल गया, ऐसा मैं समझूँगा। मेरी निगाह में जमीन जो मिलती है, उसकी उतनी कीमत नहीं है, जितनी कि निष्काम बुद्धि से काम करनेवाले सेवक तैयार हो जाने की है।

● ● ●

लोक-नीति की ओर : ६ :

"जब परकीय सत्ता होती है, तब सारी ताकत उसे मिटाने-वाली राजनीति में रहती है। लेकिन जब सत्ता हाथ में आ जाय, तब सारी ताकत सामाजिक और आर्थिक क्रांति में लगनी चाहिए। कर्तव्य समझकर कुछ लोग राज-कार्य में जायँगे, पर ताकत उसमें नहीं होगी। ताकत तो तब पैदा होगी, जब लोग सामाजिक और आर्थिक क्रांति करेंगे। इसलिए जो लोग यह समझेंगे कि केवल राजसत्ता में ही ताकत है, उनके लिए यह कहना पड़ेगा कि वे स्वराज्य का महत्त्व ही भूल गये। समझने की बात यह है कि भूदान-यज्ञ-मूलक क्रांति में दिया गया जीवन-दान, जिसे राज-नीति से अलग होना कहा जाता है, उससे बहुत भिन्न वस्तु है। उसमें राजनीति तोड़ने की बात है। सूर्यनारायण क्या करते हैं? वे तारों में आकर चमकने लग जायँ, तो क्या होगा? वे तारों को मिटाने आते हैं। उनके आने पर एक भी तारा नहीं रहता। इसलिए आज जो हम पक्ष-भेद से अलग रहते हैं, चुनावों आदि में हिस्सा नहीं लेते, वह इसी वजह से कि इन सबको मिटाकर हम लोक-नीति स्थापित करना चाहते हैं।"

बिहार से विदा होते समय बाबा ने पूर्णिया जिले में पाँच हफ्ते बिताये। यह प्रवास बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा। यहाँ के अनेक मार्मिक प्रसंगों में से ये दो बड़े प्रेरणादायक हैं :

(१) एक नवाब साहब ने अपनी जायदाद में बाबा का हक कबूल किया। उनके घर में उनके अलावा चार भाई और दो बहनें हैं। शरीअत के लिहाज से बहनों का भी जायदाद पर हक होता है।

बाबा को उन्होंने अपना आठवाँ भाई माना और अपनी खुदकाश्त का आठवाँ हिस्सा तो दिया ही, उसके अलावा कुल-की-कुल परती जमीन दान में दे दी।

(२) एक दिन सुबह जब बाबा एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव को जा रहे थे, तो रास्ते में उनके स्वागत में गाँव के लोगों ने एक नया भजन गाया। एक मौलिक, अनोखा और क्रांतिकारी भजन :

सीता सीता राम बोलो
सब कोई भूमिदान दे दो।
राधे राधे श्याम बोलो
सब कोई सम्पत्तिदान दे दो॥

१७ अक्तूबर, १९५४ को जब बाबा दूसरी बार सहरसा जिले की तरफ से चलकर पूर्णिया जिले में प्रवेश कर रहे थे, तो बंगाली लोक-गीतों द्वारा उनका स्वागत हुआ। एक घंटे तक पानी हेलते हुए हम लोग ८ बजे के करीब नरपतगंज पहुँचे। पाँच घंटे की यह यात्रा बड़ी खुशगवार और मनमोहक रही। शीतल, मन्द, सुगन्ध पवन बह रहा था। उधर उत्तर की तरफ गगनचुम्बी धवलगिरि (एवरेस्ट) और गौरीशंकर की चोटियाँ दिखाई पड़ती थीं। पूरब में सूरज चमक रहा था। चाँद भी अपनी रात भर की मंजिल पूरी करके आसमान में बिदा माँगता खड़ा था। यह सारा दृश्य देखकर हमारे साथ के दो विदेशी भाई बहुत ही चकित हुए। एक भाई इसराईल के थे, दूसरे केनिया के। ये दोनों शान्ति-निकेतन के विद्यार्थी हैं। दुर्गा-पूजा की छुट्टियों का एक सप्ताह हमारे साथ बिताने चले आये थे। उनमें से एक भाई पानी हेलने की हालत में बाबा का चित्र खींचना चाहते थे, पर असफल रहे। कहने लगे कि आपका चक्र (बाबा की तरफ इशारा करते हुए, जो भूदान-यज्ञ-आन्दोलन को 'धर्म-चक्र-प्रवर्तन' कहते हैं) तो जरा भी रुकता ही नहीं। मैंने कहा कि इसको रुकना चाहिए भी

नहीं। आपको ज्यादा सतर्क रहना पड़ेगा। तो वे बोले कि मैं फिर और कभी कोशिश करूँगा।

पूर्णिया में पूर्ण काम हो

स्वागत में आयी हुई जनता से बाबा ने कहा कि रास्ते में हवा, पानी, रोशनी और आसमान का तो हमने खूब सेवन कर लिया। अब जमीन का आश्रय बाकी है। इस पर एक बूढ़े भाई ने कहा कि जमीन भी मिलेगी। झुकी कमर, सुनहरी दाढ़ी, भूरे बालवाले इन वयोवृद्ध का आशीर्वाद पाकर किसे खुशी न होगी। बाबा ने कहा कि बच्चे और बूढ़ों के बीच में बाकी सब चिमटे की तरह पकड़े जाते हैं। इस वास्ते अब पूर्णिया जिले में हमारा काम पूर्ण होना चाहिए। तभी तो यह "पूर्णिया" कहलायेगा, नहीं तो अपूर्ण रहेगा।

संकल्प, व्यक्ति और समाज

अगला पड़ाव कनैली बाजार में था। वहाँ तीसरे पहर एक भाई ने सवाल पूछा कि मनुष्य कभी कोई संकल्प करता है, लेकिन उसे पूरा नहीं कर पाता। इसका क्या कारण है? यह संकल्प-शक्ति कैसे बढ़ेगी? प्रार्थना-प्रवचन में इसका हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि जैसे व्यक्ति के लिए थकान और ताजगी आती है, वैसे ही समाज के लिए भी। जब समाज को थकान आती है, तब कलियुग समझिये, शयनकाल। जब कोई ध्येय उपस्थित हुआ और समाज उसको पूरा करने में लग गया, तो उसे सत्ययुग समझिये। ऐसे युग में न सिर्फ हर व्यक्ति अपने लिए, बल्कि सारा समाज ही अच्छे-अच्छे संकल्प करता है और आगे बढ़ता है। इस तरह समूचे इतिहास में देखा गया है। यह हिन्दुस्तान का भाग्य है कि स्वराज्य-प्राप्ति के बाद फौरन एक नया ध्येय, "सर्वोदय" हमारे सामने उपस्थित हुआ। इस ध्येय के लिए राह भी खुल गयी, जहाँ भूदान का विचार परमेश्वर ने सुझाया। तब से हम कह सकते हैं कि समाज में फिर से जाग्रति आ रही है, समाज में

सद्प्रेरणाएँ काम कर रही हैं और संकल्प निर्माण हो रहे हैं। जो लोग बोधगया-सम्मेलन में हाजिर थे, उन्होंने देखा कि जैसे ढाई हजार साल पहले बुद्ध भगवान् को करुणा और मैत्री की प्रेरणाएँ हुई थीं, वैसे ही नयी प्रेरणा, नया संकल्प लोगों को हुआ, जिसे "जीवन-दान" के नाम से पुकारा गया। अगर हम सामाजिक संकल्प के साथ अपना निज का संकल्प जोड़ देते हैं, तो हमारा बल समाज को और समाज का बल हमको मिलता है। इसका अनुभव भी बोधगया में हुआ और एक के बाद एक को जीवन-दान करने की प्रेरणा हुई। अब यह बड़ा संकल्प समाज-प्रेरणा से हो गया। उसके अनुसार व्यक्ति संकल्प करता है। पर होता यह है कि अन्दर से संकल्प होने के बजाय बाहर की हवा के प्रवाह में हम कुछ तय कर लेते हैं और उसे संकल्प का नाम दे देते हैं। पर वह संकल्प होता नहीं है। अनुभवियों का अनुभव है कि संकल्प आत्मा से निकलता है। पर ये छोटे-छोटे संकल्प आत्मा के संकल्प नहीं होते। ये प्रवाह के ही परिणाम होते हैं। थोड़ी देर के लिए लहर उत्पन्न हुई, बस इतना ही। संकल्प में निष्ठा का बड़ा उपयोग है, आग्रह का नहीं। जहाँ आग्रह होता है, वहाँ विरोधी संकल्प पैदा होते हैं और टूटते हैं। इसलिए जरूरी हो जाता है कि जिन्होंने प्रतिज्ञा ली है वे चित्त-शुद्धि का सतत खयाल रखें और साधना बढ़ायें। दूसरे लोग जो आयेंगे, प्रवाह के कारण आयेंगे। थोड़ी देर काम करेंगे, छोड़ भी देंगे। लेकिन हमें उनकी निन्दा नहीं करनी है। समझना चाहिए कि उन्होंने संकल्प कभी किया ही नहीं, केवल शुभ इच्छा प्रकट की।

कौन आगे, कौन पीछे ?

बाबा ने कहा कि यह समझना चाहिए कि हम अनेक जन्मों के प्रवासी हैं। हमें जो अनुभव मिलता है, उसे लेकर हम आगे बढ़ते हैं। यहाँ कोई आगे नहीं, कोई पीछे नहीं। सब अपनी-अपनी जगह पर हैं। एक के लिहाज से एक ऊँचा, दूसरे के लिहाज से वही नीचा। संसार में

जितने प्राणीमात्र हैं, वे अपने-अपने स्थान पर काम करते हैं। यह निर्णय हम नहीं कर सकते कि उनमें कौन आगे है, कौन पीछे? यह तो ईश्वर ही कर सकता है कि कौन जीव उससे कम दूर है, कौन उससे ज्यादा दूर। इसलिए हम जो जीवनदानी होना चाहते हैं, उनके दिल में तनिक भी अहंकार नहीं होना चाहिए। हमें सबकी सेवा करनी है और सबकी मदद लेनी है। जैसे चिराग से चिराग जलता है, वैसे एक जीवनदानी का जीवन देखकर दूसरे को प्रेरणा मिलेगी, दानपत्र देखकर नहीं। इसलिए जिन लोगों ने छोटे-छोटे संकल्प किये और उन पर अमल नहीं कर पाये, उनके बारे में यह समझना चाहिए कि उनकी आत्माओं में उतना गहरा संकल्प नहीं हुआ होगा। परमेश्वर का नाम लीजिये। निरहंकार बनिये। नम्र बनिये। दूसरे के प्रति मृदु और अपने लिए कठोर बनिये। ऐसा करने से दिशा बदलेगी। दक्षिणायन से उत्तरायण में पदार्पण होगा। समाज का चित्र देखते-देखते बदल जायगा।

नगर ग्रामाभिमुख बनें

मंगल को हमारा पड़ाव फारबिसगंज रेलवे स्टेशन के पास था। पूरे तीन हफ्ते के बाद आज हम रेलवे के मुकाम पर पहुँचे। यहाँ एक हाई-स्कूल भी है। इसलिए विद्यार्थी और शिक्षक काफी तादाद में स्वागत के समय मौजूद थे। बाबा ने कहा कि जीवन का मूल्य जहाँ बदलना होता है, वहाँ सबसे पहले विचार-परिवर्तन आता है। उसके बाद हृदय-परिवर्तन का प्रसंग आता है। फिर साक्षात् जीवन-परिवर्तन होता है। पहले व्यक्तियों का, फिर समाज का और सबसे पीछे सरकार का। व्यक्तियों के विचार बदलते हैं और ऐसे बलवान व्यक्ति समाज में विचार फैलाते हैं। तब समाज में क्रांति होती है। उसका प्रतिबिम्ब स्वराज्य-संस्था पर आता है, फिर राज्य सरकार पर यानी राज्य-शासन-यंत्र पर आता है।

हम ग्रामवासियों को भगवान् का सेवक कहते हैं। अगर वे सन्तोषपूर्वक भू-माता की सेवा और परिश्रम करते हैं, तो भगवान् के सेवक हैं। शहर-

वालों को ग्रामवालों का सेवक होना चाहिए। ग्रामवासियों की देवी दृष्टि है और शहरवासियों की देवी ग्रामीण जनता। उस देवी को रिझाने का काम शहरवाले करें। शहर और ग्राम का ऐसा संबंध हो। शहरों को ग्रामाभिमुख होना है। यह विचार हम समझाते हैं।

एक घंटे का स्कूल

तारीख २० को बाबा कुसमाहा में थे। यह तीस घरों का एक छोटा-सा गाँव है। रकबा करीब दो हजार बीघा है। इसमें से सिर्फ एक-चौथाई जमीन गाँववालों की है। शाम की प्रार्थना में बाबा ने कहा कि बच्चों को देखकर यही इच्छा होती है कि यात्रा रोककर बच्चों का स्कूल चलाऊँ। हमारे सामने जो लड़के बैठे हैं, वे ऐसे बैठे हैं मानो अस्सी-नब्बे साल के बूढ़े हों। इनके बदन और कपड़े कैसे गन्दे हैं! स्कूल में भी क्या चलता है? एक मास्टर और तीन-चार जमात। लड़का बीमार, तो उसका स्कूल जाना खतम और मास्टर बीमार, तो सारा स्कूल खतम। सरकार ने यह ढोंग खड़ा कर रखा है। हमने कई दफा कहा है कि एक घंटे का स्कूल चलना चाहिए। इसमें गरीब और अमीर सभी बच्चे आयें। गाँव के पढ़े-लिखे लोग उसमें समय दें। शिक्षक को गाँव की तरफ से अन्न मिले। पढ़ाने के घंटे के अलावा बाकी समय में शिक्षक अपना काम करे। बच्चों को बुनाई, बढ़ईगिरी आदि सिखायी जाय। हर बच्चे के अक्षर साफ, स्वच्छ और निर्मल होने चाहिए। अच्छी तरह पढ़ना आना चाहिए। तुलसी, मीरा, सूर, कबीर आदि के भजन कंठस्थ होने चाहिए। इस तरह गाँव की पढ़ाई का इन्तजाम गाँव में हो सकता है।

स्वाध्याय की जरूरत

एक दिन सवेरे चलते समय एक कार्यकर्ता ने बाबा के आगे अपनी मुश्किल पेश की :

'मैं सवेरे ही प्रचार के लिए निकल पड़ता हूँ और घूमता ही रहता हूँ। मुझे अध्ययन का मौका नहीं मिलता।'

बाबा ने पूछा, 'क्यों नहीं मिलता ?'

'मुझे फुरसत ही नहीं मिलती।'

'प्रचार-कार्य में आपके साथ कुछ साथी जरूर रहते होंगे ?'

'नहीं, मैं अकेले ही घूमता हूँ।'

'तब तो आपको कोई दिक्कत नहीं पड़नी चाहिए। आप रोजाना कितने मील चलते हैं ?'

'दो घंटे में लगभग आठ मील।'

'तब तो सहज तरीका है। अगर आप आठ मील की यात्रा करते हैं, तो समझ लीजिये कि बारह मील की यात्रा कर रहा हूँ और बारह मील चलने में जितना समय लगे, उतना समय आप कहीं एकान्त रमणीय स्थान में बैठकर अध्ययन करें, चिन्तन करें।'

यह बात उस भाई को जँच गयी। इस तरह बाबा अध्ययन और चिन्तन पर लगातार जोर दिया करते हैं। हाल में ही पंडित जवाहरलालजी ने प्रादेशिक कांग्रेस अध्यक्षों को जो चिट्ठी भेजी थी, उसमें लिखा था कि मैं मौजूदा जिम्मेदारियों से बरी होना चाहता हूँ। उसके कई कारणों में एक यह भी गिनाया कि अध्ययन और मनन के लिए समय नहीं मिलता। बाबा इस चीज पर खास तौर से इसरार करते हैं और कार्यकर्ताओं को इस तरफ ध्यान देने के लिए हमेशा समझाते रहते हैं।

तारीख २८ को बाबा मुखानी गाँव में थे। नेपाल-बिहार की सरहद पर यह एक छोटा-सा गाँव है। प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में गल्ले की उपज बढ़ गयी है, पर इससे गरीबों का मसला हल नहीं होगा। जमीन का बँटवारा ही गलत हुआ है। जिस जमीन के आधार पर सभी लोग रहते हैं, उसीका बँटवारा गलत हुआ है, तो लोगों की क्या हालत होगी ? कुरान में लिखा है कि हम किसी पर ज्यादा बोझ नहीं आने देना चाहते। हमारा भी कहना है कि हम किसी पर ज्यादा बोझ नहीं डालते हैं और न ज्यादा माँगते हैं। हम दावे के साथ कहते हैं

कि हिन्दुस्तान के इतिहास में लिखा जायगा कि बाबा ने गरीबों को तो बचाया ही, अमीरों को भी बचाया।

विदेश-यात्रा

प्रार्थना के बाद बाबा टहलने निकले। सरहद पार करके नेपाल में गये। वहाँ एक छोटा-सा गाँव था। वहाँ के लोगों ने बड़े प्रेम से बाबा का स्वागत किया। नेपाल सरकार का चौकीदार भी मौजूद था। बाबा ने उससे कहा कि आप अपनी सरकार को खबर दे दें कि हम आपकी सीमा में आये थे। उसने झुककर सलाम किया और कहा कि हम जरूर खबर देंगे। यह तो हमारा काम ही है। थोड़ी देर में बाबा वहाँ से लौट आये और कहने लगे कि हमने आज चन्द मिनट में ही विदेश-यात्रा कर ली। जब हमसे कोई पूछेगा, तो हम कहेंगे कि हमने भी विदेश-यात्रा की है।

बिना दिये लेना नहीं

अगले दिन हम लोग ठाकुरगंज में थे। कटिहार और सिलिगुड़ी के बीच, आसाम रेल लाइन पर यह एक बड़ा स्टेशन है। दोपहर को कुछ स्थानीय बड़े काश्तकार बाबा से मिलने आये और उन्होंने अपने दानपत्र पेश किये। हँसी में एक ने कहा कि आपने हमारी गुजर-बसर के लिए आगे क्या सोच रखा है? प्रार्थना-प्रवचन में इसकी चर्चा करते हुए बाबा ने कहा कि भगवान् ने हरएक को भूख दी है। यह उसकी बड़ी कृपा है। लेकिन भूख देने के साथ-साथ मनुष्य को दो हाथ भी दिये और एक दिल भी दिया है। यह दिल दूसरों के दुःख में दुःखी होता है और दूसरों के सुख में सुखी होता है। ये तीनों चीजें देकर भगवान् सुझा रहा है कि हांथ से काम करके मनुष्यों को रोटी कमानी चाहिए। वह जो कमाये, वह समाज को अर्पण कर दे और प्रसाद के तौर पर समाज से उसे जो मिले, उसे ग्रहण करे। दिल बता रहा है कि बिना दिये लेना नहीं है। हाथ बता रहे हैं कि बिना मेहनत किये लेना नहीं है। भूख

बता रही है कि उद्योग के बिना मनुष्य टिक नहीं सकता। आगे यह होगा कि हर कोई जो जमीन माँगता है, वह इसलिए कि वह उस पर काम करना चाहता है।

अन्न-मंत्री श्री रफी अहमद किदवई और मध्यप्रदेश के प्रजा-समाजवादी नेता ठाकुर प्यारेलाल सिंह के निधन की खबर बाबा को उसी दिन मालूम हुई। उनका हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि इस हफ्ते में दो घटनाएँ घटीं। हमारे अन्न-मंत्री चल दिये। उन्हें "अन्नदाता" ही कहना चाहिए। उन्होंने अन्न-कार्य बहुत अच्छी तरह से किया। उत्पादन बढ़ाने में मदद दी। उन्होंने यह मसला अच्छी तरह से सम्पन्न किया। कण्ट्रोल हिम्मत से उठाया। वे आखीर तक काम करते रहे। बिना नोटिस के परमेश्वर ने उन्हें उठा लिया। दूसरे थे, मध्यप्रदेश के प्रजा-समाजवादी कार्यकर्ता। वहाँ की असेम्बली में वे विरोधी दल के नेता थे। असेम्बली के अलावा वे सारा समय भूदान में देते थे। जिस दिन भगवान् ने उन्हें उठाया, उस दिन २२ मील पैदल चल चुके थे। एक व्याख्यान भी सम्मेलन में दिया और बाद में पन्द्रह मिनट के अन्दर चले गये। हम ऐसी मिसालों का बड़ा संग्रह करते हैं। मृत्यु ने चोटी पकड़ ली है, ऐसा समझें। एक क्षण भी गाफिल रहने का समय नहीं है।

उत्तर दिशा को प्रणाम

शनिवार, तारीख ३० नवम्बर को जब हम सोनापुर हाट आ रहे थे, तब रास्ते में कांचनगंगा का बड़ा सुन्दर दर्शन हुआ। अंग्रेजों ने इसे 'कंचनजंघा' का नाम दे रखा है। दरभंगा जिले में घूमते हुए हमें धवलगिरि (एवरेस्ट) और गौरीशंकर के दर्शन हुए थे। आज कांचनगंगा का दर्शन पाकर हम सब फूले नहीं समाये। ऐसा लगता था, मानो बरफ के ऊपर बड़ा आलीशान मकान बना है, जिसमें दो खिड़कियाँ भी हैं। उत्तर दिशा में बाबा का यह आखिरी दिन था। अगले दिन से वे दक्षिण की ओर मुड़ेंगे। बिहार में दो महीना और रहने के बाद पहली जनवरी, १९५५

को वे बंगाल में प्रवेश करेंगे। २५ दिन बंगाल की यात्रा करने पर २६ जनवरी को उड़ीसा में प्रवेश करेंगे।

तारीख ३० और ३१ को प्रान्तीय भूदान-प्राप्ति-समिति की बैठक थी। इसलिए उस दिन श्री जयप्रकाश नारायण, श्री गौरीशंकरशरण सिंह, श्री लक्ष्मीनारायण आये। इस समिति के दो और सदस्य, श्री वैद्यनाथ-प्रसाद चौधरी और श्री रामदेव ठाकुर तो हमारे साथ ही घूमते थे। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि बिहार प्रदेश में घूमते हुए हमें २५ महीने हो गये। आज हम उत्तर दिशा को आखिरी प्रणाम कर रहे हैं। कई दिनों से हिमालय का दर्शन करते हुए हमारी यात्रा चल रही है। अब यह दर्शन कब होगा, मालूम नहीं। और न ऐसी वासना रखकर ही हम जा रहे हैं। जो आदमी पैदल यात्रा करता हो, वह यह नहीं कह सकता कि फिर इसी स्थान पर कब आना होगा। इसीलिए बिहार प्रदेश में उत्तर दिशा को हमारा यह आखिरी प्रणाम है।

स्वागताध्यक्ष, श्री अनाथकांत बसु की विनती पर श्री जयप्रकाश बाबू ने भी कुछ शब्द कहे। उन्होंने कहा कि आज हर कोई अपने बच्चों के लिए या अपने स्वार्थ के लिए धन, धरती या यश कमाने की कोशिश करता है। जीतोड़ कोशिश करता है। स्वार्थ की लड़ाई चल रही है। इसका नतीजा स्पष्ट है। सौ में पाँच या मुश्किल से दस जीत गये। बाकी नब्बे लोग हारे। यह स्वार्थ की लड़ाई का नकशा है। लेकिन जो रास्ता बाबा ने बताया है, अगर हम उस पर चलते हैं, तो सौ में दस की ही जीत नहीं, सौ में सौ की ही जीत होगी। गाँव में कोई भूखा और नंगा न रहेगा। जो समाज बनेगा, वह स्वार्थ और संघर्ष पर नहीं, बल्कि सहकार और प्रेम पर टिका रहेगा। वह सर्वोदय-समाज होगा। इसका नकशा महात्मा गांधी ने देश के सामने रखा। इस नकशे को ही पूरा करने के लिए विनोबाजी गाँव-गाँव घूम रहे हैं। इसलिए जिससे जितना ज्यादा बन सके, वह उतना हाथ बँटाये।

रफ्तार तेज हो

तारीख ३१ अक्तूबर को रामगंज पड़ाव पर बिहार भूदान-प्राप्ति-समिति के सदस्य भी बाबा से मिले। बाबा ने स्थिति की गम्भीरता पर रोशनी डालते हुए उनसे कहा कि अगर हमारी रफ्तार उतनी तेज नहीं रही, जितनी की माँग काल-पुरुष करता है। हम कुछ भला काम भले ही कर लें, पर जमीन की पूर्ति हमसे नहीं हो सकती और समाज को बदलने की हमने जो आकांक्षा रखी है, वह पूरी नहीं होगी। कुछ सेवा का काम हो जायगा, पर नया समाज नहीं बन सकेगा। भगवान् बुद्ध ने पुण्यकर्म करनेवालों से एक बड़ा सुन्दर वाक्य कहा है और वह यह कि पुण्यकर्म आलस्य की गति से करोगे, तो पुण्य क्षीण हो जायगा और मन पाप में रमण करेगा। इसलिए आलस्य का त्याग करके पुण्य का काम करना चाहिए। आपने देखा कि चार माह में चुनाव का काम, अठारह करोड़ जनता के पास पहुँचने का काम किया गया। इसलिए यह काम भी हो सकता है। अगर हम जुट जायँ, तो कोई वजह नहीं कि यह काम पूरा न हो।

इसलामपुर में बाबा ने दो रोज तक पड़ाव डाला। पहली और दूसरी नवम्बर को अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ और अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड के अधिकारी और कार्यकर्ता वहाँ आये थे। बाबा से ये सब भाई एक लम्बे अरसे के बाद मिल रहे थे। इसलिए भूदान-यज्ञ के अलावा सम्पत्तिदान, खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम आदि पर भी चर्चा चली। पर अधिकांश समय भूदान-यज्ञ और ग्रामोद्योग को ही दिया गया।

ग्रामोद्योग किधर ?

शुरू में ही बाबा ने कहा कि हम जानते हैं कि स्वराज्य के बाद भी ग्रामोद्योग लगातार गिरते जा रहे हैं। सरकार कुछ सोचती है, कमेटी मुकर्रर करती है, कांग्रेस भी प्रस्ताव करती है, पर जनता को बिल्कुल विश्वास नहीं होता। इधर पार्लियामेंट आदि में कुछ इस तरफ करने को कहा जाता है, उधर इन धंधों के खतम होने का क्रम जारी है। अगर "स्टेटस-को"

(यथास्थिति) ही रहता, तब भी बात थी। लेकिन यहाँ तो ग्रामोद्योग सुव्यवस्थित रूप से खतम हो रहे हैं। सरकार का खुद का दिमाग साफ नहीं मालूम पड़ता। कहा यह जाता है कि प्लानिंग कमीशन की रिपोर्ट कोई फाइनल या अन्तिम चीज नहीं है। सुधार की गुंजाइश है। इसका यह अर्थ है कि धीरे-धीरे ग्रामोद्योग आ सकते हैं। पर यह अर्थ भी कर सकते हैं कि ग्रामोद्योग धीरे-धीरे खतम हो सकते हैं। लेकिन वे आज पहले से ज्यादा कबूल करते हैं कि ग्रामोद्योग के लिए कुछ जगह है······लेकिन सरकारवाले ग्रामोद्योग को अस्थायी तौर से मानते हैं। जब तक दूसरी चीज नहीं मिलती तब तक के लिए वे हैं। पर इस दृष्टि से भी ग्रामोद्योग चलाना पापकर्म नहीं है। इसलिए असहयोग की बात नहीं उठती। लेकिन साथ-ही-साथ हमारा यह भी दृढ़ विश्वास है कि हमारी इसमें कम-से-कम ताकत लगे। हमारे कम-से-कम लोग उसमें जायँ। हमारे एक-दो विशेषज्ञ सलाह-मशविरा दे दें। लेकिन हमारी मुख्य शक्ति जन-आन्दोलन में लगे। हम लोकमत तैयार करने में लगें। इसीमें हित है।

भूमि-वितरण में लगें

इसके बाद बाबा ने एक गम्भीर चीज पेश की। उन्होंने कहा कि हम आपसे एक सवाल पूछना चाहते हैं। वह यह कि हमारी कम-से-कम ताकत उसमें लगे और ज्यादा-से-ज्यादा ताकत जन-शक्ति के काम में लगे, इसमें श्रेय है या उसमें? इस तरह आप सोचें। हमें सलाह दें कि क्या नीति रखी जाय। पचीस साल हमने खादी और ग्रामोद्योग को दिये। सारा समय इसीमें लगाया। फिर आज वे सब बातें छोड़ दीं। यह काम उठा लिया। इसमें कोई विचार है या नहीं? कुछ क्रान्ति है या नहीं? आज हमसे पूछा जाता है कि अमुक प्रश्न पर आपकी क्या राय है। लेकिन हमारे मन में सिवा इसके कुछ बात नहीं उठती कि ३६ लाख एकड़ जमीन जल्दी-से-जल्दी कैसे बँटेगी। अगर निश्चित अवधि के अन्दर सही ढंग से

बँटवारा नहीं कर सके, तो सारा काम टूट जायगा। सारी ताकत शून्य होगी। इस वास्ते दूसरी-तीसरी हलचलें चलती हैं, तो शक्ति घटती है।

खादी बोर्ड की तरफ से सूचना मिली कि धान कूटना, कोल्हू से तेल पेरना, चमड़ा पकाना, दियासलाई बनाना—इन चार ग्रामोद्योगों के बारे में विशेष अध्ययन किया गया है। इन चारों में भी धान कूटने का उद्योग ऐसा है कि इसका पक्ष बहुत मजबूत है। कोई वजह नहीं दीखती कि धान कूटने की मिलें क्यों न बन्द की जायँ? इसलिए यह तय पाया कि इन चारों उद्योगों के बारे में और ग्रामोद्योग के लिए सामान्य नीति सरकार की क्या है, यह उससे पूछा जाय। यह भी पूछा जाय कि वह कौन-कौन से कदम कैसे उठायेगी।

बँटवारे का जिक्र छिड़ने पर बाबा ने कहा कि एक बात का ध्यान करके आप सब निर्णय करें। हमको मान ही लेना पड़ेगा कि बँटवारे में समय लगेगा। जाहिर है कि इसके मुकाबले जमीन हासिल करने का काम आसान है। लेकिन क्या हम ऐसी मुद्दत बना सकते हैं कि यह ३५-३६ लाख एकड़ जमीन जो मिली है, वह इतने अरसे में बँट जायगी? दूसरी बात यह कि बँटवारे के बाद ही जमीन पाने का काम चलेगा या साथ-साथ? तीसरी यह कि क्या बँटवारे का और भी दूसरा सही तरीका निकल सकता है, जो क्रान्तिकारी भी हो और अच्छा भी?

इसलामपुर में पहली तारीख को प्रार्थना में बाबा ने एक बहुत ही छोटा प्रवचन दिया, जो अत्यन्त सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण था। सारे कार्यकर्ताओं को चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा :

कसौटी की वेला

भूदान-यज्ञ-आरोहण में हम सब एक कठिन जगह पहुँचे हैं। यह हमारी कसौटी की वेला है और इससे चित्त बहुत उत्साहित होता है। प्राप्ति की जो कल्पना थी उसका पहला अंक निश्चित अवधि में प्राप्त हो चुका। अब लोग भी राह देख रहे हैं कि उसका उचित और जन-शक्ति की

प्रक्रिया के अनुकूल वितरण कैसे किया जा सकता है। पाँच करोड़ एकड़ जमीन की माँग तो है ही। प्राप्त भूमि उचित रीति से हम बाँटें, तो उससे शासन-मुक्ति का आरम्भ होगा। यह पूरी कसौटी है। जो शक्ति हमारे पास है वह सब-की-सब इस काम में लगानी होगी, ऐसा दीख रहा है। इस वास्ते हमने अपने साथियों से प्रार्थना की है कि लम्बी नजर से देखकर कुछ कार्यों का मोह छोड़ना ही होगा। अगर वे मोह से चिपके रहेंगे, तो जिस चीज के लिए मोह है, वह चीज भी न टिक सकेगी और सर्वोदय का जो हमारा दावा है कि शासन-मुक्त, शान्तिमय तरीके से अपने सवाल हल करेंगे, वह दावा भी गिर जायगा। फिर हम सर्वोदय के काम के लिए असमर्थ साबित होंगे। तो समझना होगा कि ऐसा मौका है कि इसमें सारी और पूरी ताकत लगाकर यश हासिल करते हैं और जरूर कर सकते हैं, तो हमारी फतह है। अगर हम इस काम में असफल रहे, पूरी ताकत नहीं लगायी, तो टूटने का डर है। तो हमारा मुख्य दावा टूटेगा। सरकार पर नैतिक ताकत के जरिये असर डालने का और समाज में नैतिक तरीके से फेर-बदल करने का काम हमसे नहीं बनेगा। इसके यह माने नहीं कि सर्वोदय या अहिंसा का विचार ही असमर्थ है, वह तो स्वयम्भू समर्थ है। इसका मतलब केवल यही होगा कि हम उसके औजार के रूप में नालायक साबित होंगे। इसलिए मैं कहा करता हूँ कि चक्रव्यूह के अभिमन्यु के जैसी आज हमारी हालत है। उसके भेदन के लिए जितनी मदद इस विचार से सहानुभूति रखनेवालों से मिल सकती है, वह मिलनी चाहिए। ऐसी मदद की हम हाथ जोड़कर विनती करते हैं।

"यतेमहि स्वराज्ये"

तारीख ४ को हमारा पड़ाव पांजीपारा नामक गाँव में मसजिद के के बिल्कुल बगल में था। मुसलमान भाइयों ने बड़े प्रेम से बाबा का स्वागत किया। प्रार्थना साढ़े तीन बजे हुआ करती है, लेकिन चार बजे नमाज का वक्त है। इसलिए उन भाइयों की इच्छा से बाबा ने दोपहर की सभा

दो बजे रखी। प्रवचन शुरू करने के पहले उन्होंने वेद और कुरान से कुछ मन्त्र पढ़े। फिर उन्होंने कहा कि आज मुझे १९४८ के वे दिन याद आ रहे हैं, जब हमारी कई सभाएँ मसजिदों में हुईं। कई मर्तबा हमें नमाज में शामिल होने का मौका मिला। मेव भाइयों के बसाने के काम में कई हफ्ते तक हम लगे थे। आज भी वह काम हमारी तरफ से एक भाई कर रहे हैं। मुसलमानों की बड़ी मुहब्बत भी हमें हासिल हुई। आगे चलकर बाबा ने बताया कि आक्रमण करने के वास्ते दूसरे देश में हिन्दुस्तान के लोग पहुँचे हों, ऐसा कभी नहीं हुआ। यह घटना बहुत बड़ी है। यह इसलिए हुआ कि हिन्दुस्तान की सभ्यता में सारी दुनिया के साथ एक भाव के साथ रहना ही ऊँची बात समझी जाती थी। हमारे पूर्वज ध्यानयोग में मग्न थे। उन्होंने आत्मा में गोता लगाया था। उन्हें खुद पर जीत हासिल करना बड़ी बात मालूम होती थी। हिन्दुस्तान की आजादी में आज जो शब्द 'आजादी' या 'स्वराज्य' चलता है, वह बहुत गहरे अर्थवाला है। 'स्वराज्य' अर्वाचीन शब्द लगता है। लेकिन यह वेद में आता है: "यतेमहि स्वराज्ये" हम स्वराज्य के लिए प्रयत्न करें। यह वाक्य लिखनेवाले आधुनिक अर्थ में आजाद थे। उन पर किसी दूसरे की सत्ता नहीं थी। फिर वे कहते हैं कि स्वराज्य के लिए प्रयत्न करना चाहिए। यह समझना होगा कि स्वराज्य के माने क्या हैं? स्वराज्य माने हर शख्स का अपने पर शासन, अपने पर काबू। स्वराज्य माने शासन-मुक्ति। स्वराज्य माने खुद मर्यादा में रहना और दूसरे को मर्यादा में रहने की सहूलियत देना। इस विचार को अपने यहाँ स्वराज्य कहते हैं। यह ध्येय हमारे पूर्वजों ने हमारे सामने रखा।

परिणामस्वरूप हिन्दुस्तान में बहुत-सी कौमें बे-रोक-टोक चली आयीं। इस तरह हमारे राष्ट्रवाद ने स्वाभाविक तौर पर अन्तर्राष्ट्रीयवाद या मानववाद का स्वरूप ले लिया।

हमारी विरासत

लेकिन यह जो बड़ी भारी विरासत हमें मिली है, उसको व्यापक बनाना हमारा काम है। दुर्दैव की बात है कि कुछ ताकतें इसके खिलाफ काम कर रही हैं। आज ही हमने अखबार में पढ़ा कि उड़ीसा और आन्ध्र की हद पर भाषा के सवाल को लेकर कुछ उपद्रव हुआ। देखने में यह छोटी-सी घटना है। फिर भी यह जो बात है, वह हमारी सभ्यता के बिल्कुल खिलाफ है। जिस सभ्यता का विकास बड़ी कुशलता से हमने जागरूक रहकर किया, यहाँ के ऋषियों, मुनियों और सन्तों ने ही नहीं, बल्कि राजाओं ने भी किया, उन मर्यादाओं का इसमें भंग होता है। उस सभ्यता का इसमें विरोध होता है। जहाँ हम भाषा के जात-पाँत के झगड़े पैदा करते हैं, वहाँ हम इतिहास की सारी कमाई गँवा बैठते हैं। यही नहीं, हिन्दुस्तान को आज की दुनिया में बड़ा काम करने का जो नसीब हासिल हुआ है, उसमें इससे बाधा पहुँचती है। इसलिए इन चीजों से, भले ही ये छोटी-छोटी हों, हमें बहुत तकलीफ पहुँचती है। हम इन घटनाओं की उपेक्षा नहीं कर सकते। क्योंकि ये हमारे शील के ही खिलाफ हैं। जो गलतियाँ शील की विरोधी नहीं, उन्हें तो हम सहन कर सकते हैं, लेकिन जो गलतियाँ शील के विरुद्ध जाती हैं, इतिहास की कुल कमाई के खिलाफ जाती हैं, ऐसी गलतियों को हम छोटी चीज नहीं समझ सकते।

हमारी धर्म-मर्यादा

इसके बाद बाबा ने कहा कि आजकल "लिव एण्ड लेट लिव" 'जीओ और जीने दो'—का आदर्श सामने रखा जाता है। हम इसीको बदलना चाहते हैं और कहते हैं कि दूसरों को जिलाओ और जीओ। इससे फर्क पड़ जाता है। पहले दूसरे की चिन्ता करो, बाद में अपनी। परिणाम यह होगा कि उसकी भी चिन्ता होगी और अपनी भी।

सबकी होगी। ताने और बाने की तरह व्यक्ति और समाज का जीवन ओतप्रोत हो जायगा।

यह विषय बाबा को बहुत ही रोचक लगता है। इस पर बोलते हुए वे कभी थकते नहीं। मसजिद के पास होने से उन्हें यह सब याद हो आया। प्रवचन समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि अपने देश का विशेष धर्म है, यही हम याद दिलाना चाहते हैं। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी, ईसाई, तरह-तरह के धर्म इस देश में हैं। लेकिन इन सबको अपने में समा लेनेवाला देश का अपना खास धर्म है। अपने देश का खास धर्म है, मर्यादा। 'मर्यादा' अपने देश का खास शब्द है। धर्म-मर्यादा, कुल-मर्यादा, जाति-मर्यादा। हम मर्यादा को ही आजादी समझते हैं। यहाँ मुख्य शब्द 'आजादी' नहीं, बल्कि 'मर्यादा' है। इसमें आजादी आ ही जाती है। जहाँ मर्यादा है, वहाँ पूरी आजादी सबको मिलती है। व्यक्ति और समाज का विकास खुलकर होता है। इसीको 'सर्वोदय' कहते हैं, 'साम्ययोग' कहते हैं, 'शासन-मुक्त-समाज' कहते हैं।

मसजिद में

शाम को साढ़े पाँच बजे उस बस्ती के मुसलमान भाई बाबा को मसजिद में ले गये और उनसे विनती की कि कुछ उपदेश दें। बाबा ने कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं और फिर बीस मिनट तक बोले। उन्होंने कहा कि हिन्दू-मुसलमान के झगड़े हम जानते नहीं, हम मानते नहीं। हम तो सबकी खिदमत करते हैं। हमने जो काम उठाया है, उसमें सबकी सेवा है। भगवान् गरीब के घर में रहते हैं, ऐसा बड़े-बड़े नबियों ने बताया है। पैगम्बर मुहम्मद जैसे महापुरुष गरीब की तरह रहे। मामूली रोटी और खजूर खाते थे और अपने हाथ से बकरी दुहते थे। आम लोगों से मिलते-जुलते थे। यही अच्छे-अच्छे लोगों ने किया। जैसा कबीर ने कहा है:

कर गुजरान गरीबी में,
जो सुख पायो रामभजन में,
सो सुख नाहिं अमीरी में।

हम भी निकले हैं गरीबों की सेवा के लिए। हमें ३६ लाख एकड़ जमीन मिली है, वह बिना जमीनवालों में बँटेगी, फिर वे चाहे किसी जमात के या धर्म के हों। कोई जानिबदारी नहीं, कोई तरफदारी नहीं। बाबा ने विस्तार के साथ जमीन बाँटने का तरीका समझाया। फिर कहा कि इस थाने में १३२ दाताओं से ५ हजार एकड़ जमीन मिली है। माँग है, १२ हजार एकड़ की। इससे पता चलता है कि कोई कठिन काम नहीं है। अगर दस-बीस लोग जुट जायँ, तो सहज में ही हो जायगा। आगे चलकर बाबा ने कहा कि धर्म क्या है? गरीब की, यतीमों की चिन्ता करना, रहम करना, हकपरस्ती, सब्र रखना। ये तीन बातें हैं—हक, सब्र और रहम। बताया गया है कि ईमान, अमन, आमाल दुरुस्त रखो। ईमान कहते हैं धर्म को, अमन शान्ति को और आमाल आचरण को। तो यह काम ऐसा है कि हरएक को तसल्ली होगी। यह सच्चे धर्म का काम है।

आपका हक कबूल है

शुक्रवार को हम लोग किशनगंज खास में थे, जो सबडिवीजन का सदर मुकाम है। सुबह के समय एक मुसलमान रईस बाबा से मिलने आये। वे साढ़े तीन हजार एकड़ जमीन दान में पहले ही दे चुके थे। उस दिन उन्होंने डेढ़ हजार एकड़ और दी। बाबा ने कहा कि आपने गैरमजरूआ खास, कुल-की-कुल दे दी। अब हम हक के तौर पर आपकी जोत की जमीन का छठा हिस्सा भी माँगते हैं।

बड़ी नम्रतापूर्वक उन श्रीमान् ने जवाब दिया कि आपका हक हमें कबूल है। लेकिन हमारे यहाँ औरतों का भी अधिकार होता है और हम पाँच भाई तथा दो बहनें हैं।

'तब हम आपके घर में आठवें भाई हो जाते हैं और आठवाँ हिस्सा माँगते हैं।'

'बहुत बेहतर। आपका हक कबूल है।'

और उन्होंने जोत की जमीन के आठवें हिस्से का दानपत्र तुरन्त भर दिया।

दुनिया के नागरिक बनें

शाम को प्रार्थना में बड़ी भीड़ थी। कुरान की आयतों के साथ शुरू करते हुए बाबा ने कहा कि हिन्दुस्तान में जो कौमें रहती हैं, उन सबने मिलकर यहाँ की सभ्यता बनायी है, यहाँ के हमारे समाज को अपना रंग दिया है। इन्द्र-धनुष के समान भारत में अनेक कौमें घुल-मिल गयी हैं और सबका अपना-अपना रंग भी है। इस तरह हमारा यह समाज बना है। बनते-बनते हमने अपनी आँखों के सामने देखा कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बन गये। खैर, मुझे इसका बड़ा दुःख नहीं, क्योंकि मैं जानता हूँ कि इस देश में पहले भी कई राज्य अलग-अलग चलते थे। फिर भी माँ का हृदय एक था। भारत की एकता में कोई बाधा नहीं आयी। इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का मिलकर एक दिल बनेगा। इसमें भी शक नहीं कि दुनिया के सारे देश एक दिल बननेवाले हैं। हम सब सारी दुनिया के नागरिक होंगे और अपने-अपने देश के भी। यह सब अब करना है। इसी वास्ते हमारा और आपका जन्म हुआ। भगवान् का सौंपा हुआ दुनिया में करने का यह बड़ा काम हासिल हुआ है। कुल दुनिया की नागरिकता हरएक को हासिल होगी। सारी दुनिया पर हमारा हक और सारी दुनिया का हमारे ऊपर हक हो। हक ही दीन है। हक माने सच्चा रास्ता, हक माने लूटना नहीं, प्यार करना—सेवा करने का हक।

पेट बनाम पेटी

बाबा ने बताया कि इसके लिए पहली चीज यह करनी है कि जमीन

की मालकियत मिटानी है। मालिक तो अकेला वह एक ही है। मालिक होने का जो हम दावा करते हैं, वह कुफ्र है, नास्तिकता है। कुरान में लिखा है कि मालकियत में शिरकत नहीं हो सकती। ईश्वर के काम में साझेदारी नहीं हो सकती। हम कहते हैं कि आप अगर हिन्दू हैं, तो होली के दिन मालकियत के सारे कागजों को होली में झोंक दें। मुसलमानों का कुछ बिगड़ेगा नहीं, अगर वे भी अपने कागजों को उसमें झोंक दें। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, खिस्ती, सभी झोंक दें। फिर देखिये कि हिन्दुस्तान में कितना आनन्द होता है? कैसी ताकत पैदा होती है? आगे चलकर बाबा ने कहा कि अपने देश में जो फिरकापरस्ती चलती है, वह तोड़नी चाहिए। सबको समान भाव से बरतना चाहिए। सब बराबर हैं, ऐसा कानून में तो मान लिया; लेकिन अमल में क्या चल रहा है? फैक्टरी का, कारखाने का मालिक अपने यहाँ काम करनेवालों को मजदूर समझता है। अपने को 'हेड' याने सिर, उनको 'हैण्ड' याने हाथ कहता है। जो 'हेड' है, उसे हाथ नहीं। जिसे हाथ है, उसे 'हेड' नहीं। हम चाहते हैं कि सबको काम मिले और सब हाथ और दिमाग, दोनों से काम करें। लेकिन यह क्या बात है कि किसीको दो हजार रुपया महीना मिले और किसीको तीस रुपया। क्या उसका पेट साठगुना बड़ा है? तो कहते हैं कि पेट भरने की बात नहीं, पेटी भरने की बात है। एक का पेट नहीं भरता, दूसरे के पास इतनी पेटियाँ हैं कि ठिकाना नहीं। और जब पेटियों में नहीं रख पाता, तो बैंक में रखता है। कुछ लोगों ने अपने घर की औरतों को बैंक बना दिया है। गले में जेवर पहनाते हैं। उनके कान और नाक छेदते हैं। हम पूछते हैं कि क्या भगवान् को अक्ल नहीं थी? क्या वे चाहते तो छेद पैदा करके नहीं भेज सकते थे? इस तरह जेवर पहनाना और अपनी बहू-बेटियों को घर के अन्दर बन्द रखना गलत बात है। देश में ये सारे भेद मिटने चाहिए।

अगले दिन जब बाबा कानकी नामक गाँव में पहुँचे, तो वहाँ के

लोगों ने दुःख जाहिर किया कि गाँव में एक छोटा-सा स्कूल है, इससे काम नहीं चलता। वे मिडिल स्कूल चाहते थे। बाबा ने कहा कि आपको तो युनिवर्सिटी की माँग करनी चाहिए। यह सुनकर वे लोग जरा घबड़ा गये। बाबा ने कहा कि शाम को प्रार्थना के बाद हम इस पर चर्चा करेंगे।

गाँव-गाँव में विश्वविद्यालय हो

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा बोले कि हम चाहते हैं कि हर गाँव में शुरू से आखीर तक तालीम देने का इन्तजाम हो। हर गाँव में जन्म पाने से लेकर मरने तक का इन्तजाम होता है। अगर ऐसा हो कि जन्म से बचपन तक का इन्तजाम एक गाँव में हो, फिर बारह साल से जवानी तक का इन्तजाम किशनगंज में हो, जवानी से बुढ़ापे तक का इन्तजाम पूर्णिया में हो और मरने के वास्ते गंगा के घाट पर जाना हो, तो कैसे चलेगा? हर गाँव में सारी जिन्दगी बसर करने का इन्तजाम होना चाहिए। दिल्ली में बच्चे जन्म लेते हैं, आपके इस गाँव में भी जन्म लेते हैं। दिल्ली में वे जवान होते हैं, इस गाँव में भी जवान होते हैं। और दिल्ली की तरह यहाँ भी लोग बूढ़े होते हैं और मरते हैं। लेकिन तालीम के इन्तजाम की यह सूरत नहीं है। दिल्ली में पूरा इन्तजाम है, पर गाँव में नहीं। तालीम के टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये हैं। हर गाँव में जब पूरी जिन्दगी का इन्तजाम होता है, तो पूरी तालीम का विश्वविद्यालय का इन्तजाम होना चाहिए। आज होता यह है कि कुछ पढ़ाई गाँव में, उसके आगे की किशनगंज में, फिर पूर्णिया में, उसके बाद पटना में और उसके आगे अमेरिका में। कैसा अजीब ढंग है!

पहले के जमाने में लड़के ऋषियों के पास बैठकर निःशुल्क सीखते थे। लेकिन आजकल तो पैसे का सवाल है। समझ में नहीं आता कि इल्म का पैसे से क्या वास्ता? नतीजा यह है कि जो लायक विद्यार्थी हैं, उन्हें तालीम नहीं मिलती। यह अक्ल का भाँड़ा भी ऐसा है कि इसमें

बहुत सारे छेद हैं। छेदवाले बरतन में पानी कैसे रुकेगा? कहते हैं कि अगर ३३% भी रुका, तो चलेगा, पास। मान लीजिये कि कोई रसोइया आपसे कहे कि अगर मैं सौ रोटियाँ बनाऊँगा, तो ३३ तो जरूर अच्छी होंगी। क्या आप उसे नौकर रखेंगे? इस तालीम के मामले में शुरू से आखीर तक कहीं भी अक्ल का पता ही नहीं लगता। अक्ल की और तारीफ देखिये। छोटे बच्चों के लिए नालायक शिक्षक रखे जाते हैं, १०-१५ रुपया पानेवाले। होना तो यह चाहिए कि बच्चों के वास्ते सर्वश्रेष्ठ गुरु हों। ऊपर के दर्जे में कम-ऊँचे शिक्षकों से भी काम चलेगा। फिर, यहाँ समझते हैं कि किताबों से तालीम चलेगी। यह नहीं सोचते कि इल्म पाने के औजार हैं—आँख, हाथ, नाक, कान वगैरह। इनसे काम लिया जाय। लेकिन इनका दिमाग तो किताब में पड़ा है। यह सारी चीज बहुत गलत है। हम कहते हैं कि गाँव-गाँव में तालीम का पूरा इन्तजाम होना चाहिए।

'मूरख-मूरख राजे कीन्हें'

बाबा ने आगे कहा कि सरकार के पास कौन ताकत है? हम हैं कुआँ, वह है बालटी। बालटी में क्या कुएँ से ज्यादा पानी आ सकता है? ताकत जनता में पड़ी है। पर मुश्किल यह है कि वहाँ जाय कौन? जनता में जो ताकत पड़ी है, उसका भान न हमें है, न जनता को। ये हमारे किसान, जिन्होंने कभी कॉलेज का मुँह नहीं देखा, सारे हिन्दुस्तान को खिला रहे हैं। लेकिन खेती की तालीम बन्द कमरे में दी जाती है। कैसी अजीब हालत है? सूरदास ने सच कहा है :

> मूरख मूरख राजे कीन्हें,
> पंडित फिरे भिखारी।
> ऊधो, करमन की गति न्यारी।

यही नहीं, 'चुन-चुनकर राजे कीन्हें।'

अब क्या कहें? इन दिनों राज्य चला है, १०० में ५१ का। हम

पूछते हैं कि दुनिया में आज मूर्ख ज्यादा हैं या अक्लवाले ? आप तो कहेंगे कि मूर्ख ज्यादा हैं। तब बहुमत की राय से जब राज्य चलेगा, तो मूर्खों का ही माना जायगा न ? यह बात ही गलत है। राज्य तो सबकी राय से चलना चाहिए। हमारे यहाँ था भी "पंच बोले परमेश्वर।" लेकिन आजकल चलता है, चार बोले परमेश्वर, तीन बोले परमेश्वर। इसी वास्ते इतने सारे झगड़े हैं, भेदभाव हैं। आज जिस गाँव में इलेक्शन का प्रवेश होगा, वहाँ आग लगेगी। यह आग पाँच-पाँच साल बाद लगायी जाती है ताकि बुझ न जाय। बीच-बीच में 'बाइ इलेक्शन' आते हैं और फिर-फिर झगड़े होते हैं। भागवत में लिखा है कि एक दफा गोकुल में आग लगी, तो कृष्ण भगवान् सारी आग को पी गये। अब इलेक्शनवाले आग लगाने आयेंगे, तो पीनेवाले कौन हैं ? आग लगाने की अक्ल है, बुझाने की नहीं। इसलिए गाँव का सारा ढंग बदलना है।

गैब पर ईमान लायें

सोमवार, ८ नवंबर को हमारा पड़ाव नवाबगंज पोखरिया में था। उस दिन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि हमारा यह विश्वास और तजुर्बा है कि हम जहाँ लोगों को देखते हैं, उनमें ईश्वर का नूर दीखता है। उसमें हमको बड़ी तसल्ली और समाधान होता है। परमेश्वर का पैगाम सुनाने के लिए ही हम गाँव-गाँव घूमते हैं। आपको मायूस नहीं होना चाहिए। अपने दिल में हिम्मत रखनी चाहिए और अपनी जमात मजबूत बनानी चाहिए। याने आज जो हर शख्स अलग-अलग काम करता है, उससे ताकत टूटती है। अगर सब मिल-जुलकर काम करें, तो छोटे-छोटे गाँव किले बन सकते हैं। कुरान में कहा है कि अल्लाह दीखता नहीं, लेकिन उस पर ईमान रखना है। जो गैब पर ईमान लाते हैं, वही ईमान रखते हैं। पाँच भाई तो आप घर में देख रहे हैं, छठा

गैब है। वह अल्लाह की जगह है, ऐसा समझकर ईमान रखो और उसके वास्ते दे दो। जमीन ही नहीं, बीज, बैल वगैरह भी दीजिये।

राम-नाम और दान

मंगलवार को जब हम कल्याण गाँव जा रहे थे, तो रास्ते में स्वागत में एक नया गीत सुनाई पड़ा :

सीता सीता राम बोलो,
राधे राधे श्याम बोलो।
सब कोई भूमिदान दे दो,
सब कोई सम्पत्तिदान दे दो।
सीता सीता राम बोलो॥

बाबा को यह गीत बहुत पसन्द आया। दिन भर उन पर इसका असर रहा। एक नये आनन्द का-सा अनुभव हो रहा था। शाम को प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने अपील की कि यह भजन रोज-रोज गाया जाय और इसे सुबह-शाम की प्रार्थना का हिस्सा बनाया जाय। जहाँ सुबह-शाम भजन चलते हों, वहाँ यह भजन हमेशा गाया जाय। यह जो भूदान या सम्पत्ति-दान का आन्दोलन है, वह चन्द दिनों के लिए नहीं है। जैसे रामजी का नाम, अल्लाह का नाम कायम के लिए है, उसी तरह से यह दान भी कायम के लिए है।

अगले दिन कार्तिकी पूर्णिमा थी। गुरु नानक का जन्म-दिन था। *बारसोई गाँव में पड़ाव था। रास्ते में सुयानी गाँव में बाबा* कुछ देर के लिए ठहरे और कहा कि हम पूरा गाँव चाहते हैं, पूरा दान। फिर नानक का भजन गाने लगे :

"नानक पूरा पाइयो, पूरे के गुण गाय।"

नानक के स्मरण में बाबा ने कहा कि पूरे गाँव-के-गाँव मिलने चाहिए। कट्ठा-मट्ठा देने से काम नहीं चलेगा।

इसके बाद बाबा इमादपुर गाँव में भी ठहरे, जहाँ मुसलमान भाइयों ने उनका जोरदार स्वागत किया। बाबा ने उनसे कहा कि भूदान-साहित्य उर्दू में भी मिलता है। उन्हें उसका अध्ययन करना चाहिए। बिहार प्रान्तीय भूदान कार्यालय से निकलनेवाले पाक्षिक अखबार "भूदान तहरीक" की बाबा ने सिफारिश की। कोई नौ बजे हम लोग बारसोई पहुँचे, जो उत्तर-पूर्व रेलवे का जंकशन है।

आत्मा को न भूलें

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आजकल हम आत्मा को समझ नहीं रहे हैं। हर चीज की कीमत पैसे में लगाते हैं। तुलसीदासजी ने रामायण लिखी। अगर आज का जमाना होता, तो उन्हें पाँच हजार रुपये जरूर मिलते। शायद 'भारत-रत्न' का पदक भी मिलता। वाह भाई, वाह, वे कहते। मेरी रामायण की कीमत आपने खूब लगायी। इतनी ऊपर-ऊपर की वृत्ति आज हममें आ गयी है। हमारी सरकार को न मालूम क्या सूझा कि खिताब देना शुरू कर दिया। 'पद्म-विभूषण' का पदक छाती पर लटकाइये, क्योंकि आपने अच्छी सेवाएँ की हैं। कहते हैं कि इससे दूसरों को सेवा की स्फूर्ति मिलेगी। याने समाज को बच्चे की हालत में मान लिया गया। हम जानते हैं कि बच्चे को भी ऐसे इनाम से कोई लाभ नहीं होता। हमारे समाज की बुनियाद ऐसी है कि उत्तम-से-उत्तम सेवक अपने को शून्य मानते हैं। योग्यता का नाप निरहंकारिता पर किया गया था। विद्वान अगर अहंकारी हो, तो खतम। जो अहंकार को बिल्कुल ही शून्य करे, उसकी सेवा की कीमत ज्यादा है। इस तरह समाज में मूल्य स्थापित किये जाते थे। आज भी उसीकी प्रतिष्ठा होगी, जो अहंकार छोड़कर काम करेगा। यही हिन्दू की हालत और यही मुसलमान की भी। जब मैं मेव लोगों के बीच काम करता था, तो एक दिन मैंने उनसे पूछा कि क्या आपने अकबर बादशाह का नाम सुना है? बोले, नहीं तो, 'अल्लाह हो अकबर' सुना है। उन्हें अकबर बादशाह नहीं मालूम। हिन्दू

भी अशोक राजा को नहीं जानते, लेकिन अशोक पेड़ को जानते हैं। दोनों के दोनों कबीर को जानते हैं; क्योंकि कबीर में अहंकार नहीं था। कबीर अपने को चींटी से भी छोटा मानता था। जो यह न समझे, वह यहाँ के समाज-उत्थान का काम नहीं कर पायेगा।

लाठी और आत्मबल

तारीख ११ को हम लोग शालमारी पहुँचे। पड़ाव पर पहुँचने पर स्कूल के विद्यार्थियों ने लाठी की कवायद दिखाकर स्वागत किया। बाबा इस पर मुस्कराये और कहा कि इन जवानों को देखकर हमको बहुत अच्छा लगता है, जिनसे सारा देश आगे बढ़नेवाला है। इन्तजाम के वास्ते इनके हाथ में लाठियाँ हैं। बेहतर इन्तजाम वे कर सकेंगे, जिनके हाथ में लाठी के बजाय 'मंगल-प्रभात' या 'गीता' हो। सद्‌विचार और प्रिय वाणी से अच्छा इन्तजाम किसी और साधन से नहीं हो सकता। पर लाठियाँ तो बिल्कुल बेकार हैं। पर इन दिनों तो वे और भी बेकार हैं, जब लोग ऐटम बम बनाते हैं। इसलिए हम जवानों से कहना चाहते हैं कि उन्हें अन्तरात्मा की शक्ति का विकास करना है। उन्हें स्वस्थ होना चाहिए। उनमें लाठी चलाने की शक्ति हो, पर लाठी हमारा आधार न हो। हमारी असली शक्ति अन्दर की है। इसलिए हमने माना है कि हमारी तालीम का आधार आत्म-ज्ञान होना चाहिए। उसके आधार पर विज्ञान सिखायेंगे। आत्मा की ताकत का जिन्हें ज्ञान है, वे अकेले ही सारी दुनिया के खिलाफ खड़े हो सकते हैं। वे अपने आत्मबल के आधार पर टिक सकते हैं। शूर वही हो सकता है, जो देह को अलग कर आत्मा को पहचाने। शस्त्रों पर आधार रखनेवाले शूर नहीं होते। जिसके हृदय में सचाई है, जुबान में मधुरता है, आत्म-निष्ठ है, जो किसीसे द्वेष नहीं करता, किसीको अपने से ऊँचा-नीचा नहीं समझता, सबको आत्मरूप मानता है, सबके प्रति बराबरी की निष्ठा रखता है, वह बिल्कुल निडर हो जाता है। इसलिए हमें आत्मा की ताकत निर्माण करनी है। सब लोग

मजबूत साबित हो सकते हैं, अगर आत्म-ज्ञान उनके पास पहुँचे। जिस बच्चे ने स्टेनगन या पिस्तौल नहीं देखी होगी, वह उसे वैसे ही देखने जायगा, जैसे प्रदर्शनी देखने जाता है। गनवाला कहेगा कि बोल मत, खतम कर दूँगा। बच्चा कहेगा, "इस देह को खतम करोगे, तो इसमें कौन कमाल है? यह तो खतम होनेवाली ही है। मैं आत्मरूप हूँ।" यह नाटक हमें करके दिखलाना है। यह ताकत हमें अपने लड़कों में लानी है। हम किसीसे डरेंगे नहीं, किसीको डरायेंगे नहीं। हम किसीसे दबेंगे नहीं, किसीको दबायेंगे नहीं। गांधीजी ने हम पर अनेक उपकार किये। पर उनका सबसे बड़ा उपकार यह है कि उन्होंने हमें निर्भय बनाया। हम चाहते हैं कि ये सारे लड़के हिम्मतवान, निडर बनें।

आखिर में बाबा ने कहा कि हिन्दी में एक शब्द है "सिंहावलोकन", जिसका मतलब है पीछे देखना। शेर पीछे देखता है, क्योंकि वह डरपोक है। कारण यह है कि उसने सारी दुनिया से दुश्मनी की है। लेकिन जो दुनिया से प्यार करता है, वह किसीसे नहीं डरेगा। प्रह्लाद की कहानी आपने सुनी होगी। नरसिंहावतार के समय नारद मुनि की वीणा भी बन्द हो गयी। लेकिन प्रह्लाद भगवान् की स्तुति में वैसे ही खड़ा रहा। उसके हृदय में राम थे। उसका उदाहरण हमें अपने सामने रखना चाहिए।

स्वावलम्बी और सहयोगी समाज

शाम को प्रार्थना के बाद कई बच्चों ने बाबा को फूल-मालाएँ भेंट में दीं। हाथ में लेकर बाबा ने वे मालाएँ बच्चों को बाँट दीं। फिर अपना प्रवचन शुरू किया। उन्होंने कहा कि फूल-माला देना हमारे देश का खास रिवाज है। इसमें हरएक फूल अलग-अलग रहता है। उनके अन्दर से एक धागा या सूत्र पिरोया रहता है। यह हमारे समाज की रचना है—हर व्यक्ति को अपने विकास का पूरा मौका और एकता के लिए प्रेम का सूत्र। इससे भिन्न गुलदस्ता होता है, उसमें फूलों को इकट्ठा करके

बाँध देते हैं। वह भी एक समाज-रचना है, जिसमें व्यक्ति को आजादी नहीं रहती। इस तरह से दो प्रकार से समाज-रचना होती है।

देश के आजाद होने पर उसे चाहे जिस ढाँचे पर बना सकते हैं। हमारे सामने दो रास्ते खुले हैं। एक रास्ता यह है कि फौज बढ़ाते चलो। उसके वास्ते सारे यंत्र जमा करो या पाकिस्तान की तरह बाहर से लो। उसके वास्ते गरीब की उपेक्षा करनी पड़े, तो कोई परवाह नहीं। जिस रास्ते से अमेरिका या दूसरे देश जाते हैं, उसके पथिक हम भी बन गये। दूसरा रास्ता यह है कि ऐसा समाज बनायें कि जो बिना हिंसा के खड़ा रहे। ऐसा समाज बनायें, जो सहयोगी हो, स्वावलम्बी हो और अविरोधी हो। हम अपने देश में एकतारूपी सेना बनायें। पराधीन समाज कभी अहिंसक नहीं हो सकता। उसका रक्षण करना होगा। तब टैक्स लगाना होगा। सहयोग न होने से मजदूर काम में चोरी करते हैं और मालिक दाम में चोरी करते हैं। आज विदेशों में हमारे व्यापार की प्रतिष्ठा गिरी हुई है। मजदूर मालिक को दोष देता है, मालिक मजदूर को। कसूर दोनों का है। अहिंसा से अगर सारी रचना की जाती है तो अनाक्रमणशील, सहयोगी समाज बनेगा, जो ऐटम बम के सामने भी खड़ा रह सकेगा। राह खुली है। चाहे तो प्राण-वान् राह पसन्द करो, जिससे दुनिया को रोशनी मिलेगी। नहीं तो दूसरी राह है। अगर हम स्वावलम्बी, सहयोगी, अविरोधी समाज बनाते हैं, तो दूसरे देशों को बचाते हैं और हमारे देश की नैतिक आवाज बुलन्द होती है।

अतिहिंसा या अहिंसा ?

पहले जो लड़ाई होती थी उसमें एक आदमी इधर रहता था और एक उधर। आज यह न होकर लाखों-करोड़ों की सेना होती है। पहले अगर लाठी और तलवार काम में आती थी, तो अब ऐटम बम चला है। इस तरह से अगर सेना और शस्त्र बढ़ाते चले गये, तो दुनिया का खात्मा है। इससे समाज टिकेगा नहीं। रामायण में एक बड़ा मनोहर किस्सा है। हनुमान लंका में चले जा रहे थे कि सामने एक राक्षसी आयी। हनुमान

ने उससे दुगुना रूप कर लिया, राक्षसी ने चौगुना किया, हनुमान ने आठगुना। राक्षसी ने सोलहगुना किया, तो हनुमान ने बत्तीस-गुना। अन्त में हनुमान ने देखा कि इससे छुटकारा नहीं। तो "अति लघु रूप धरेउ हनुमाना..........।"—बहुत छोटा-सा रूप बना लिया। वे राक्षसी की नाक के एक छेद से जाकर दूसरे से निकल गये। इसी तरह आपको भी सोचना है। अमेरिका और रूस में 'सोलह-बत्तीस भयेउ' वाली होड़ लगी है। अगर हम भी इसमें लगकर चौंसठ भयेउँ, तो यह मामला खतम नहीं होगा। हनुमान में ताकत कम नहीं थी, लेकिन अक्ल भी थी। यह विज्ञान का जमाना है। आपको भी सोचना चाहिए। एक हाथ में कुदाल और दूसरे में चर्खा ले लो, तो बस है। चर्खा हाथ में रहा, तो घर-घर कपड़ा होगा। कुदाल हाथ में हो, तो घर-घर अनाज होगा।

मिलावटी अर्थशास्त्र

सामने स्कूल में बाँस की दीवारों पर टीन की छतवाले कमरे थे। उनकी ओर इशारा करते हुए बाबा ने कहा कि नीचे हिन्दुस्तानी तरीका देखो, ऊपर दूसरा तरीका। टीन में क्या गुण है? गर्मी में ज्यादा गरम रहता है, जाड़े में ज्यादा ठंढा रहता है और बारिश में भड़भड़ करता है। हम कहते हैं कि अगर नीचे घास रखी है, तो ऊपर भी घास रखते, इससे विद्या में कोई कमी न आती। इसीको अंग्रेजी में 'मिक्स्ड इकॉनॉमी', घास और टीन की 'इकॉनॉमी' या मिलावटी अर्थशास्त्र कहते हैं। आजकल अपने देश में मिलावट-ही-मिलावट है, खालिस चीज है ही नहीं। हमको सोचना है कि १६-३२-६४ गुना रूप करें या अति लघुरूप। अगर अमेरिका या रूस का तरीका पसन्द है, तो सौ-दो सौ बरस उनके रास्ते जाना होगा। उनका गुलाम होना पड़ेगा। हमारी आजादी भी न रह सकेगी। इसलिए हम ऐसा समाज बनाना चाहते हैं, जो स्वावलम्बी, सहयोगी और अविरोधी हो।

दकियानूसी युनिवर्सिटियाँ

अगला पड़ाव सोनाली में था। शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि सार्वजनिक काम के लिहाज से हिन्दुस्तान के लोग इस समय बिलकुल प्राथमिक अवस्था में हैं। बीच में एक जमाना आ गया—वह आया और गया भी—जब काफी कार्यकर्ता काम में लगे थे। लेकिन अब स्वराज्य मिलने पर लोग यह महसूस करते हैं कि सरकार के अलावा किसी सार्वजनिक काम की मानो जरूरत ही नहीं है। सरकार की मार्फत ही सेवा होगी। अच्छे-से-अच्छे लोग सरकार में भेज दें, इससे ज्यादा कुछ नहीं करना है। यह सही है कि जनता की बहुत कुछ सेवा सरकार के जरिये हो सकती है और होनी भी चाहिए, लेकिन इसका माने अगर कार्यकर्ता यह समझ लें कि स्वतन्त्र जन-शक्ति के जरिये करने का कोई काम नहीं रहा, तो वे सरकार की ताकत को भी कुंठित कर देंगे। लोकशाही में जनता जितनी प्रगति स्वतंत्र रूप से करती है, सरकार उसके आगे बढ़ ही नहीं सकती। मान लीजिये, तालीम का सवाल है। स्वतंत्र प्रज्ञावान लोगों को नमूना पेश करना चाहिए कि विद्यालय कैसे चलाये जायँ? तब सरकार उनका लाभ उठा सकती है। नहीं तो क्या देखते हैं? क्या राष्ट्रपति, क्या प्रधान-मंत्री या कोई भी मंत्री जब बोलने लगता है, तो मौजूदा तालीम को पेट-भर गाली देता है। पूछिये तो सही कि इस तालीम का बदलना है किसके हाथ में? पुरानी तालीम जिन्होंने चलायी, उन्हें दूसरी कोई बात ही नहीं सूझती। इसलिये वे घबड़ाते हैं, स्वतंत्र चिन्तन नहीं कर पाते। हिन्दुस्तान की युनिवर्सिटियाँ आज बड़ी ही दकियानूस हैं। किसान आगे बढ़े हैं, मजदूर आगे बढ़े हैं। पर ये पढ़े-लिखे लोग उसी चालीस-पचास साल पुराने पाठ्य-क्रम या ढर्रे पर कायम हैं। फर्क करते हैं, तो बस इतना ही कि अल्पविराम यहाँ की जगह वहाँ हो, पूर्णविराम वहाँ नहीं, यहाँ हो, या यह पैरा यहाँ के बजाय वहाँ से शुरू हो। लेकिन बुनियादी फर्क उनसे नहीं करते बनता। यह तभी बन सकता है, जब देश में स्वतंत्र संस्थाएँ मौजूद हों।

राजनीति में तीन काल

व्याकरण में तीन काल होते हैं: वर्तमान, भूत और भविष्य। उसी प्रकार इन सत्ता-परायण लोगों के भी तीन काल होते हैं: इलेक्शन, प्री-इलेक्शन और पोस्ट-इलेक्शन। चुनाव, चुनाव से पहले और चुनाव के बाद। यह कालरूपी पुरुष जो खा रहा है, वह देखते नहीं। इनकी समझ में नहीं आता कि शक्ति राजनीति में नहीं होती, समाज-शास्त्र में होती है। तिलक महाराज से पूछा गया था कि स्वराज्य के बाद क्या करेंगे, कौनसा मुहकमा सँभालेंगे? वे बोले कि गणित का प्रोफेसर बनूँगा या वेदाभ्यास करूँगा। इस समय तो लाचारी से इस काम में पड़ा हूँ। यह जवाब उन्होंने क्यों दिया? तात्पर्य यह था कि जब परकीय सत्ता होती है, तो सारी ताकत राजनीति में रहती है, लेकिन जब सत्ता हाथ में आ जाय, तो सारी शक्ति समाजक्रान्ति में और आर्थिकक्रान्ति में लगनी चाहिए। कर्तव्य समझकर कुछ लोग राज-काज में जायँगे, पर ताकत उसमें नहीं होगी। ताकत तो तब पैदा होगी, जब लोग समाजक्रान्ति और आर्थिकक्रान्ति करेंगे। इसलिए जो लोग यह समझेंगे कि केवल राज्य-सत्ता में ही ताकत है, उनके लिए कहना होगा कि वे स्वराज्य का रहस्य ही भूल गये। समझने की बात है कि भूदान-यज्ञमूलक क्रान्ति में जो जीवनदान देते हैं, वे उससे बहुत भिन्न हैं, जिसे राजनीति से अलग होना कहा जाता है। उसमें राजनीति तोड़ने की बात है। सूर्यनारायण क्या करते हैं? तारों में आकर वे चमकने लग जायँ, तो क्या होगा? वे तारों को मिटाने आते हैं। उनके आने पर एक भी तारा नहीं रहता। इसलिए हम आज जो पक्ष-भेद से अलग रहते हैं, चुनाव आदि में हिस्सा नहीं लेते, वह इसी वजह से कि इन सबको मिटाकर हम लोकनीति स्थापित करना चाहते हैं।

भारत का समाजवाद

पंडित नेहरू ने हाल में कहा है कि मेरे सामने भावी हिन्दुस्तान का

जो नक्शा है, वह समाजवादी ढंग का है। यह ठीक बात है। लेकिन अपने देश का समाजवाद स्वतंत्र होगा। दुनिया में जो समाजवाद चलता है, वह विधानवादी है। अगर हम क्रान्तिकारी समाजवाद चाहते हैं, शान्ति, अहिंसा, परस्पर सहयोग के आधार पर समाज खड़ा करना चाहते हैं और हिन्दुस्तान की विशेषता प्रकट करना चाहते हैं, तो हर व्यक्ति को अपनी शक्ति स्वेच्छापूर्वक समाज को अर्पित करनी होगी। गंगाजल लोटे में जो पड़ा है, उसे समझना होगा कि तेरा यश तभी प्रकट होगा, जब तू गंगा में शामिल होगा। व्यक्ति की महिमा भी तभी प्रकट होगी, जब वह अपने आप समाज को समर्पित हो जायगा। इंग्लैण्ड में समाजवादियों को देखो। उनमें और कंजर्वेटिवों में क्या फर्क है ? दोनों ही सत्ता-परायण हैं। जनशक्ति का स्वतंत्र काम न ये करते हैं, न वे। अगर हम अपने यहाँ समाजवाद लाना चाहते हैं, तो वह तभी आयगा, जब मूल्यों में परिवर्तन होगा। इसलिए भूदान-यज्ञ को जो लोग दयामात्र का काम समझते हैं, वे इसे समझते ही नहीं। इसमें भूत-दया या प्रेम जरूर है, पर केवल प्रेम नहीं। प्रेम-शक्ति का यह काम है। इसलिए सच्चे अर्थ में इसमें राजनीति है, जो मौजूदा सारी राजनीति को उखाड़ फेंकनेवाली है। इसे मैं लोकनीति नाम देता हूँ। यह स्वतंत्र लोकनीति हमें अपने देश में निर्माण करनी है।

अगला पड़ाव चाँदपुर में था। रास्ते में चन्द मिनट के लिए हम लोग दुर्गागंज ठहरे। बहुत ही सुहावना दृश्य था। सामने सूर्यनारायण उदित हो रहे थे। भाई और बहन, दोनों बड़ी तादाद में स्वागत के लिए आये हुए थे। बाबा बहुत देर तक सूर्य की तरफ देखते रहे। फिर उन्होंने वेदमंत्रों का उच्चारण किया और लोगों से कहा कि सूर्य के प्रकाश की तरह जब नये विचार का प्रकाश फैलेगा, तो सारा अन्धकार मिट जायगा। हमें उम्मीद है कि जिन भाइयों ने हमें दान दिया है, वे हमारे कार्यकर्ता बनेंगे।

आनन्दस्वरूप सृष्टि

सुबह की अनोखी प्रभा का असर बाबा पर शायद दिन भर बना रहा। प्रार्थना-प्रवचन में उन्होंने कहा कि मानव की भाषा में शब्द ही नहीं हैं, जिनसे ईश्वर का ठीक-ठीक वर्णन किया जा सके। फिर भी कुछ शब्द दिये जाते हैं। उनमें एक बड़े महत्त्व का शब्द है "आनन्दस्वरूप।" ईश्वर की यह एक पहचान हम लोगों के सामने रखी जाती है। जो ईश्वर है, वही चारों तरफ सृष्टि के रूप में व्याप्त है। सृष्टि के स्वरूप में परमेश्वर ही प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हुआ है। यह उसीका शरीर है। बावजूद इसके, हमारा जीवन काफी दुःखों से भरा दीखता है। यह बड़ी आश्चर्यजनक घटना है कि ईश्वर भी आनन्दमय, सृष्टि भी आनन्दमय, फिर भी मनुष्य का जीवन आनन्दमय नहीं। यहाँ तक कहा गया है कि संसार का जीवन दुःखमय है। यह विरोध कहाँ से आया, यह सोचने की बात है। असलियत यह है कि हम कुदरत के खिलाफ जीते हैं। अंगूर, जो बहुत मीठा है, उसकी हम शराब बनाते हैं। धरती, जो अनाज पैदा करती है, उसमें हम तम्बाकू पैदा करते हैं। फिर हम दुःखी हों, तो क्या कहा जाय? रात को आकाश में सुन्दर तारे और नक्षत्र दीखते हैं। हम चिन्तन-भजन करें या शान्ति से सो जायँ तो आनन्द मिलता है। पर हम रात को सिनेमा देखा करें, रात-रात भर जागा करें, तब हमें दुःख हो, तो उसकी जिम्मेदारी किसकी? सृष्टि की या हमारी? इधर-उधर हम थूक देते हैं, जगह जगह अपना ट्रेडमार्क लगा देते हैं। यह जो हमने गन्दगी फैलायी, इसकी जिम्मेदारी सृष्टि की है या हमारी? गाय या शेरनी जब गर्भिणी होती है, तो साँड़ या शेर को अपने पास फटकने नहीं देती। लेकिन मनुष्य क्या करता है? इतना दुराचारी है कि कुछ कहा नहीं जा सकता! मनुष्य को जो नयी-नयी बीमारियाँ पैदा हो रही हैं, इसका क्या कारण है? हमने सृष्टि के खिलाफ नये-नये प्रयोग किये।

ईश्वर ने योजना बनायी है कि जैसा करो, वैसा पाओ। हमारे विकास

के लिए उसने यह योजना बनायी है, लेकिन हमने ही आनन्दमयी सृष्टि का अच्छा-अच्छा सामान लेकर सारे समाज को गन्दा बनाया है। इसके लिए मनुष्य जिम्मेदार नहीं, तो कौन है ?

जब भूदान-यज्ञ शुरू किया, तो किसीने कहा कि यह मानव-स्वभाव के विरुद्ध बात होगी। हमने कहा कि ईश्वर-स्वभाव के तो अनुकूल है, सृष्टि-स्वभाव के भी अनुकूल है। सृष्टि सतत देती रहती है। सूर्य क्या करता है ? पेड़ क्या करते हैं ? पेड़ को काटना हो, तो भी उसकी छाया में ही बैठकर काट सकते हैं। अगर आप देते रहते हैं, तो खोते क्या हैं ? हम अगर छीनने की कोशिश करते रहेंगे, तो कैसे बनेगा ? इसलिए भूदान-यज्ञ कुदरत के स्वभाव के अनुकूल है, ईश्वर के अनुकूल है। मानव जब उसके अनुकूल बरतेगा, तभी सुखी होगा। कुरान में "लोहा" नाम का एक अध्याय है। उसमें लिखा है कि परमेश्वर ने लोहा पैदा किया मनुष्य की परीक्षा के लिए। लोहे की तलवार भी बना सकते हैं, जिससे गला कटे। लोहे का फावड़ा भी बना सकते हैं, जिससे खेती हो। इंसान इस लोहे के जरिये ऐसा निर्दयी और कठोर बन गया है कि एक-से-एक भयानक-संहारक साधनों का आविष्कार करता है। नौबत यहाँ तक आयी है कि सारी मानव-जाति का संहार होने का सन्देह है। इसलिए आज जो दुःख दीखता है, उसका कारण न सृष्टि में है, न परमेश्वर में, बल्कि अपने में है। भूदान-यज्ञ के जरिये हमने शुरू किया है कि समाज का ढाँचा बदलो, भाईचारा और सहयोग बढ़ाओ। ऐसा अगर सूझेगा, तो सृष्टि की तरह हमारा जीवन भी आनन्दमय होगा।

बैलों का दान

तारीख १५ नवम्बर की सुबह जब हम भटवावाँ से रानीपतरा जा रहे थे, तो रास्ते में बलुआ नामक गाँव में ठहर गये, जहाँ अक्तूबर के पहले हफ्ते में जमीन बँटी थी। नयी भूमि पानेवालों में १६ व्यक्तियों के पास

बैल नहीं थे। उस दिन सुबह ये बैल विनोबाजी को दान किये गये, जो उन्होंने नये भूमि-पुत्रों को दे दिये। बैल देनेवालों और पानेवालों से बाबा ने कहा कि लोग कहते हैं कि यह कलियुग है। कलियुग उनके लिए है, जो कलियुग में रहना चाहते हैं। इस युग में तो महात्मा गांधी, रामकृष्ण परमहंस और स्वामी दयानन्द जैसे सत्पुरुष हो गये और उनके कुछ काल पूर्व कबीर, नानक और तुलसीदास जैसे सन्त हो गये। सत्ययुग में तो बालि, रावण और कुम्भकर्ण हुए। जो युग हम बनाना चाहते हैं, वही युग होता है। शास्त्रकारों ने कहा है कि इस युग में धर्म बड़ी आसानी से होता है। सिर्फ दो बातें करनी होती हैं: दान देना और हरिनाम लेना। बाबा ने उम्मीद जाहिर की कि अगर इसी तरह हमदर्दी और प्रेम के साथ हम सब काम करेंगे, तो गाँव सुखी बनेगा और देश मजबूत होगा।

हमारा पड़ाव रानीपतरा सर्वोदय-आश्रम में था। इस आश्रम को दो वर्ष पहले श्री वैद्यनाथप्रसाद चौधरी ने खोला है। उस दिन आश्रम का वार्षिकोत्सव भी था। उस उत्सव के लिए बंगाल के मूकसेवक डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोष बुलाये गये थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रफुल्ल बाबू ने कहा कि यहाँ वैद्यनाथ बाबू ने सोलह गाँव लिये हैं। मैं चाहता हूँ कि जैसा खाना वैद्यनाथ बाबू ने मुझे खिलाया या वे खुद खाते हैं, वैसा खाना इन सोलह गाँव में हरएक को मिले। यह परीक्षा है उनकी। पाँच वर्ष में वे इतना कर लें, तो उनको मैं सफल समझूँगा। प्रफुल्ल बाबू ने यह भी कहा कि मैं अगली फरवरी से सोलह-बीस गाँव लेकर बैठूँगा और वहाँ पर सर्वोदय की दृष्टि से अपने किसान भाइयों के बीच में काम करूँगा।

नैतिक जीवन ऊँचा उठायें

इसके बाद बाबा का प्रवचन हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि अभी प्रफुल्ल बाबू ने अपना संकल्प जाहिर किया है। वे गाँव में बैठकर आसपास के गाँव लेकर सर्वोदय-समाज बनाने की कोशिश करेंगे। आपको ध्यान

रखना चाहिए कि प्रफुल्ल बाबू बंगाल के मुख्यमंत्री थे। जो लोग अखबार पढ़ते हैं, उन्होंने सुना होगा कि हाल में ही इसराईल के प्रधान-मंत्री ने अपना पद त्याग दिया। वे अब देहात में जाकर खेती करते हैं, सेवा करते हैं। एक प्राइम-मिनिस्टर को सेवा का जो मौका मिलता है, उससे कम मौका उनको नहीं मिलता, जो लोग देहात में जाकर वहाँ का नैतिक जीवन ऊँचा उठाने की कोशिश करते हैं और साथ-साथ अपना भी नैतिक जीवन ऊँचा उठाते हैं। हममें से बहुत-से लोग, जो सेवा का नाम लेते हैं, वे शोषण पर जीते हैं। इसलिए हमें भी अपना नैतिक स्तर ऊँचा करने की जरूरत है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें किसी प्रधान-मंत्री से कम सेवा का मौका नहीं मिलता। आज जो आश्रम मौजूद हैं, उनमें ग्राम-राज का, राम-राज का नमूना जोरों से पेश करना होगा। हम आशा करते हैं कि यहाँ वह नमूना देखने को मिलेगा।

लंका बनाम अयोध्या

प्रार्थना के पहले १६ बैलों का दान किया गया और फिर बाबा ने वे बैल १६ भूमिपुत्रों को दिये। इसका हवाला देते हुए बाबा ने कहा कि आप लोगों ने यह क्या देखा? ऐसे दान देने का सिलसिला तो हिन्दुस्तान में पुराने जमाने से चला आता है। लेकिन यह जो दान दिया जा रहा है, जमीन का, बैल का या बीज का, वह गरीब का हक समझकर दिया जा रहा है और जिन्होंने यह दान दिया है, उन्होंने नम्रता के साथ दिया है और यह समझकर दिया है कि सम्पत्ति भगवान् की है, सारे समाज की है और जमीन भी सबकी है। इस वास्ते जहाँ जमीन और सम्पत्ति की माँग होगी, वहाँ देना धर्म है। देना जरूर चाहिए। न देंगे, तो गुनाह होगा। यह समझकर देनेवालों ने दिया और लेनेवालों ने हक समझकर लिया। आपने प्रफुल्ल बाबू से सुना कि जर्मनी, फिनलैण्ड वगैरह में हिन्दुस्तान से अच्छा खाना-कपड़ा मिलता है। हिन्दुस्तान में भी यह मिल सकता

है। लेकिन अगर खूब खाना मिला, तो हमारा काम बना ही, यह बात नहीं। रावण की लंका में खाना खूब मिलता था, पर वह अयोध्या नहीं कहलायी। पहले खिलाओ, पीछे खाओ, तब सर्वोदय होगा।

जो घर में, वह गाँव में

आखिर में बाबा ने कहा कि यूरोप में आज सम्पत्ति है। अमेरिका में और भी ज्यादा है, पर दया नहीं है। दया-शून्य सम्पत्ति से राक्षसी ताकत बनेगी। दया के साथ सम्पत्ति रही, तो आनन्द बढ़ेगा। गरीब हैं, तो बाँटकर खायँ। अगर खाना कम है और घर में छह आदमी हैं, तो छह में चार ही खायेंगे। इसे 'रेशनलाइजेशन' कहते हैं। उन दो से कह दिया जायगा कि तुम्हारे लिए व्यवस्था नहीं है, जब होगी, तब मिलेगा। लेकिन हमको यह करना है कि घर में छह जने हैं, तो छह ही खायेंगे, चाहे कम ही क्यों न खायँ। इस वास्ते पहली चीज है : दया, दूसरी है : लक्ष्मी। कुछ लोग कहते हैं कि सम्पत्ति के बँटवारे की क्या बात है? अभी तो पैदावार बढ़ाने का ही सवाल है। हम कहते हैं कि यह विचार ही गलत है। दोनों काम साथ-साथ चलने चाहिए। अगर दोनों में से कोई चीज पहले करनी ही है, तो पहले बँटवारा समान करो। ऐसा घर-घर में लोग करते भी हैं। जो घर में होता है, वही गाँव में करना है। इसीका नाम है 'सर्वोदय।'

शाम को आश्रम के कार्यकर्ता बाबा से मिले। बाबा ने सुझाया कि आपको मंगल-प्रभात, गीता-प्रवचन, तुलसीकृत रामायण का उत्तरकांड, धम्मपद और आश्रम-भजनावली—इन पाँच ग्रन्थों का पठन-पाठन और मनन अपने आश्रम-जीवन का अंग बनाना चाहिए। अगर आप दस कार्यकर्ता हैं, तो पाँच गाँवों में जायँ और पाँच आश्रम में रहें। इस तरह आपका जन-सम्पर्क सतत बना रहना चाहिए। आश्रम की किताब पर बाबा ने यह सन्देश लिखा :

यह आश्रम भूदान-यज्ञ-मूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसात्मक क्रान्ति का एक आदर्श केन्द्र बनेगा, ऐसी मैं आशा करता हूँ।

—विनोबा के प्रणाम।

तारीख १७ को हमारा पड़ाव कटिहार में था। यह रेलवे का बड़ा जंकशन है। यहाँ पर ६६ मजदूरों ने सम्पत्तिदान का संकल्प किया है। वे अपने सम्पत्ति-दान का पैसा खादी खरीदने में लगाते हैं। दोपहर में कार्यकर्ताओं की सभा हुई, जिसमें १३ कार्यकर्ताओं ने बाबा की जेल कबूल की। उनमें तीन बहनें भी थीं। कार्यकर्ताओं की निष्क्रियता पर दुःख जाहिर करते हुए श्री वैद्यनाथ बाबू ने कहा कि हालत यह हो रही है कि :

काम है तो कुछ नहीं,
फुरसत है तो कभी नहीं।

न डरें, न डरायें

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने सर्वोदय-विचार का रहस्य लोगों के सामने रखा। उन्होंने कहा कि मनुष्य के सामने, समाज के सामने मसले हमेशा रहे हैं और नये-नये मसले हमेशा रहेंगे भी। इसलिए हमारा मन भी उत्तरोत्तर विकसित होता रहता है। जिस तरह मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन में विचार का आरोहण होता है, उसी तरह सामाजिक जीवन में भी होता है। एक जमाना था, जब राजा के हाथ में सत्ता सौंप देते थे। अब उस विचार को पसन्द नहीं किया जाता। लोक-सत्ता आयी, जिसमें बहुसंख्या का प्रतिबिम्ब दीख पड़ता है। लेकिन यह भी काफी नहीं, सबका प्रतिबिम्ब दीखना चाहिए। इसलिए नया विचार सामने पेश है, जिसे 'सर्वोदय' कहते हैं। इस गलतफहमी में कोई न रहे कि जिसे हम साधारण 'डेमोक्रेसी' कहते हैं या 'सामान्य लोकशाही' कहते हैं, उससे सर्वोदय निभ जायगा। सर्वोदय-विचार उसके बहुत आगे जाता है। वह कहता है कि समाज का ढंग ही बदले। केन्द्र में कम-से-कम सत्ता हो।

गाँव का विकेन्द्रित कारोबार चले। हरएक को महसूस हो कि मेरा राज्य है। कोई किसीका शोषण न करे। न कोई किसीसे डरे, न कोई किसीको डराये। जिस राज्य में हरएक को यह महसूस हो, वही 'सर्वोदय' के माने में 'स्वराज्य' है। आगे चलकर बाबा ने कहा कि शान्ति रखने के लिए भिन्न-भिन्न राष्ट्र अपनी-अपनी ताकत का सन्तुलन रखते थे। इसे 'बॅलेन्स ऑफ पावर' कहा जाता है। सर्वोदय के विचार से लड़ाई का न होना ही शान्ति नहीं है। वे समझते हैं कि शान्ति एक अन्दरूनी चीज है। मनुष्य के हृदय में उसकी स्थापना होनी चाहिए। शान्ति अगर रहती है, तो पहली चीज यह होगी कि कोई देश दूसरे देश से डरेगा नहीं। दुनिया का सारा व्यवहार प्रेम का होगा। इसलिए सर्वोदय के सामने जो समस्या है, वह है—आज के समाज का रूप बदलना।

'रहना नहिं देश विराना है'

पूर्णिया जिले में हमारा आखिरी पड़ाव १९ नवम्बर, १९५४ को था। उस दिन हम लोग मनिहारी में थे। पड़ाव पर पहुँचने पर स्वागत में कबीर का एक भजन, "रहना नहिं देश विराना है" गाया गया। वह सुनकर बाबा ने कहा कि यह बात सही है कि हमको कल ही यहाँ से जाना है। लेकिन हम यह नहीं समझते कि हमारे लिए कोई विराना देश है, परदेश है। बल्कि हम तो यह समझते हैं कि यह सारा देश हमारा है। जहाँ भी हम जाते हैं, हमें अपना ही देश मिलता है। हाँ, हम यह भी जानते हैं कि थोड़े दिन का मुकाम है और यह तो एक यात्रा ही है। बीच-बीच में पड़ाव होते हैं। कहीं ५९ साल का, कहीं ६० का, कहीं ७० का। लेकिन इन दिनों तो हमारा एक ही दिन का पड़ाव होता है। किसी भी जगह की आसक्ति हम रख नहीं सकते। किसी भी जगह के लिए अरुचि भी पैदा नहीं हो सकती। हर रोज नये चेहरे, नये दर्शन, नया स्थान, नया अनुभव। इस तरह का जीवन चला है कि न आसक्ति की गुंजाइश है, न विरक्ति की। बीच में है भक्ति। केवल भक्ति ही कर सकते हैं।

कानून रोका जा सकता है

बाबा ने फिर कहा कि यह भजन हमें सिखाता है कि जो भी चीज है वह अपनी नहीं, सबकी है। 'मेरी' छोड़ो और 'हमारी' कहो। बिहार में इसका बड़ा अच्छा वातावरण है। यहाँ 'मैं-मैं' कोई नहीं कहता, 'हम-हम' कहते हैं। यहाँ सम्मिलित परिवार होते हैं। लेकिन कानून के डर से अब इन परिवारों का टूटना शुरू है। आप समझते हैं कि बच गये। लेकिन बचे नहीं, डूब गये। ऐसा मत कीजिये। सारा आनन्द चला जायगा। हम कहते हैं कि आज से साढ़े चार महीने सर्वोदय-सम्मेलन तक की, हम आपको मुद्दत देते हैं। इतनी मुद्दत में भी गाँव-गाँव की जमीन का छठा हिस्सा दे दो। अगर ऐसा नहीं करते हैं, तो सारी ताकत, सारी सभ्यता टूट जायगी। कृपा करके कानून का डर छोड़ दीजिये। उदारता से काम करें, तो कानून टल सकता है। दो साल पहले की बात है कि जमींदारों के प्रतिनिधि हमसे मिलने आये थे। हमने कहा था कि भूदान-यज्ञ-आन्दोलन को उठा लो, तो कानून रोका जा सकता है। आज भी हम कहने को राजी हैं कि आप उदारता से दें और हर गरीब को छठा हिस्सा दें, तो कानून की जरूरत नहीं रहेगी। कानून बनानेवालों को कोई खुशी नहीं होती। कहाँ तक मुआवजा देंगे? देने पर भी बात बनेगी नहीं। मुकदमेबाजी चलेगी। गाँव-गाँव में झगड़े पैदा होंगे। अब भी मौका है। अगर सर्वोदय-सम्मेलन के पहले, मार्च १९५५ तक आप ३२ लाख एकड़ जोत की अच्छी जमीन दे दीजिये, तो इसका असर सरकार पर भी पड़ेगा। हर संयुक्त परिवार छठा हिस्सा दे दे और $\frac{5}{6}$ हिस्सा अपने पास रखे, तो कानून भी रोका जा सकता है। बिहार के इस काम का असर सारे देश पर होगा, दुनिया पर होगा।

दोपहर में जिले भर के कार्यकर्ताओं की बैठक थी। फारबिसगंजवाली बैठक के बाद से इस समय तक कार्यकर्ताओं ने एक हजार एकड़ जमीन

अपने-अपने क्षेत्रों में जमा की थी। बाबा ने उनसे कहा कि हरएक में ईश्वर के प्रति श्रद्धा जाग्रत हो। हर कोई स्वतंत्र सेनापति है, यों समझकर काम में लग जाय। जो काम किया जाय, उसकी डायरी लिखनी चाहिए। पन्द्रह दिन की डायरी का सारांश वैद्यनाथ बाबू के पास भेज दिया जाय। डायरी में किसीकी निन्दा नहीं रहनी चाहिए। मेरा खयाल है कि इससे बहुत लाभ होगा, आगे काम बढ़ाना सम्भव होगा।

शिक्षा और चैतन्य

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि बहनें भी काफी तादाद में आयी हैं। यह जरूरी है कि कुछ दिन तक घर का काम सँभालने के बाद पुरुष और स्त्री को जन-सेवा का काम, लोगों को तालीम देने का काम, लोगों के दुःख-निवारण का काम उठा लेना चाहिए। नहीं तो घर में क्लेश रहता है, झगड़े बढ़ते हैं, चित्त को असमाधान रहता है, नयी पीढ़ी का विकास रुक जाता है। आत्मा का विकास कुंठित होता है। यह धर्म हमें पूर्वजों ने सिखाया था। इसे "वानप्रस्थ" नाम दिया था। पर अब यह चीज जारी नहीं है। देश की तालीम का काम इतना पड़ा है, पर अच्छे शिक्षक नहीं मिलते। जिसने दुनिया में पुरुषार्थ का कोई काम नहीं किया, ऐसा आदमी आजकल शिक्षक बनता है। उसके पढ़ाये लड़के कभी पराक्रमी नहीं बन सकते। लेकिन अगर ऐसे वानप्रस्थी शिक्षक मिल जायँ, जो व्यापार कर चुके हैं, राज-पाट चला चुके हैं, कांग्रेस आदि संस्थाओं में काम कर चुके हैं, घर सँभाल चुके हैं, दुनिया में तरह-तरह के पराक्रम कर चुके हैं—ऐसे लोग, ऋषि और ऋषि-पत्नी, दोनों तालीम के काम में लग जाते हैं, तो वे पराक्रम का काम अपने अनुभव से सिखायेंगे। अगर कल पंडित नेहरू शिक्षक बन जायँ, तो उनके मुँह से उनके पराक्रम की बातें सुनकर बच्चे वीर पुरुष बनेंगे। डाक्टर राधाकृष्णन् जैसे महापुरुष जिम्मेदारी से मुक्त होकर शिक्षक बनकर समाज-सेवा में लग जायँ, तो गाँव-गाँव में जीवन की नव-

स्फूर्ति, चैतन्य प्रकट होगा। नेपोलियन आखिरी वक्त में कोई स्कूल चलाता, तो अपने अनुभव से बच्चों को कितना पराक्रम सिखाता! जिम्मेदारी सँभालने के बाद व्यापक काम में लग जाने से समाज का विकास होता है। एक हद तक उपाधियाँ सँभालीं, पदवियाँ सँभालीं, जिम्मेदारियाँ सँभालीं, ऑफिस सँभाले। फिर एक दिन, सब कुछ पटककर सीधे मनुष्य के नाते मनुष्य से मिलने चले गये। हृदय के साथ हृदय एकरूप हो गया। तो, आज जो विकास का अभाव दीख पड़ता है और जनता और नेताओं के बीच जो दीवार-सी खड़ी है, वह मिट जायगी।

ऊपर जिनके नाम लिये, वे हिन्दुस्तान के सबसे बड़े नाम हैं। पर उनसे भी कई गुने बड़ों की मिसाल हमें मिलती है। मनु महाराज की बात है। वे राज-पाट चलाते थे। उन्होंने सोचा कि इतना काम करने पर भी ताजगी का अनुभव नहीं आता। आखिर उन्होंने क्या किया? तुलसीदासजी कहते हैं कि राज-पाट पुत्र को सौंप दिया और "बरबस" अपने पर जबरदस्ती करके, मनु महाराज वन को चले गये। तपस्या की और आत्म-ज्ञान पाया। उसके परिणामस्वरूप रामचन्द्र का अवतार हुआ। अगर मनु महाराज उसी राज-पाट में लिपटे रहते, तो अच्छा काम भले ही करते रहते, पर रामचन्द्र के अवतार का निमित्त न बनते। हम भी चाहते हैं कि जनता में अवतार हो, घर-घर में रामचन्द्र का अवतार हो। यह तब होता है, जब मनुष्य अपनी सीमाएँ छोड़ देता है, मुक्त हो जाता है, देश से परे होने की कोशिश करता है। जिस तरह कबीर ने किया था कि "ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया...।" अगर हम समाज की सेवा करना चाहें, तो व्यापकता, पंथशून्यता होनी चाहिए।

जनता में आयें

आगे चलकर बाबा ने कहा कि मैं संन्यास की बात नहीं कह रहा हूँ। वह तो बड़ी बात है। इससे कहीं आगे की बात है। पर यह तो दुनिया में ही काम करने की बात कह रहा हूँ। सीमित काम

करने के बजाय असीमित काम करने की बात रख रहा हूँ। हर कोई सीमा लाँघकर असीम बन जाय। यह कल्पना हमारे ऋषियों ने की थी। तुलसीदासजी क्या कहते हैं? रामचन्द्रजी ने जब सुना कि राजगद्दी मिलनेवाली है, तो उनके चेहरे पर उदासी आ गयी। कहते हैं कि अब तक चारों भाई साथ-साथ काम करते थे। लेकिन यह अजीब बात क्या कि राज्याभिषेक हमारा ही होगा, उन तीनों का नहीं। दूसरे दिन जब सुना कि राज्याभिषेक नहीं, जंगल जाना है, तब तुलसीदासजी ने ऐसा प्रभावशाली दोहा लिखा है कि कुछ ठिकाना ही नहीं :

नव गयंदु रघुबीर मनु राजु अलान समान।
छूट जानि बन गवनु सुनि उर अनंदु अधिकान॥

—रामचरितमानस, अयोध्याकाण्ड, ५१

राज-पाट तो पाँव में बेड़ी थी। जब पता चला कि वह टूट रही है, तो उछल पड़े। मस्त हाथी की तरह चलने लगे। सोचा कि अब ऋषियों का सत्संग मिलेगा, उनकी सेवा करने का मौका मिलेगा।

चौदह साल तक वन में भटकते रहे। एक कम्युनिस्ट भाई ने हमसे कहा कि चीन की सेना ने जितनी लम्बी यात्रा नहीं की, उससे लम्बी यात्रा आपने कर ली। हमने कहा कि हमारे सामने तो रामजी का आदर्श है। जब प्रभु रामचन्द्र ने चौदह साल तक तकलीफ उठायी है, तो हमारी जिन्दगी इसमें चली जाय, तो कुछ नहीं। हम तो उनके तुच्छ सेवक हैं। हमारी जिन्दगी इसमें जानी ही चाहिए। हमारे चमड़े के जूते उन्हें पहनाने चाहिए। एक उम्र में मनुष्य को चाहिए कि रामचन्द्र की तरह प्यार से जनता में जाय। निरंतर सेवा करते रहें। राम का नाम लेते रहें।

बाबा के प्रवचन के बाद वैद्यनाथ बाबू ने बड़े मार्मिक शब्दों में बाबा से क्षमा माँगी कि हम आपकी मनशा के लायक काम नहीं कर सके। उन्होंने आश्वासन दिया कि आपने जो बीज पूर्णिया जिले में बोया है, उससे ऐसा विशाल वृक्ष पैदा होगा, जो नया समाज

लायेगा। शाम को इस क्षेत्र के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी मिहीदासजी बाबा से मिलने आये। करीब पौन घंटे तक सत्संग रहा। फिर बाबा कार्यकर्ताओं से मिले और उन्हें काम में लगे रहने का आवाहन किया।

शनिवार के सुबह हम लोग मनिहारी से चले। कोसी की एक छोटी सी शाखा हेलकर गंगा के किनारे पहुँच गये। बाबा बिहार में आठवीं बार गंगा नदी का दर्शन कर रहे थे। उधर पूर्व में सूर्योदय होने को था। चाँद स्वागत के लिए डटा था। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। नाव में बैठकर चालीस मिनट के बाद हम लोग उस पार भागलपुर जिले में पहुँच गये। कोई दो घंटे चलने के बाद बाकरपुर नामक गाँव में पड़ाव डाला। ठीक एक साल और दो दिन के बाद बाबा भागलपुर जिले में एक दिन के लिए आये।

प्राणशून्यता और विचार का अभाव

पड़ाव पर पहुँचकर बाबा ने अपना दिल खोलकर रख दिया। उन्होंने कहा कि हमको कबूल करना चाहिए कि इस जिले के काम से हमको कोई संतोष नहीं हुआ, बल्कि बहुत दुःख ही है। हम ज्यादा नहीं बोलेंगे। हर काम ईश्वर की इच्छा से ही होता है। आप लोगों को ईश्वर प्रेरणा देंगे, तो आप काम करेंगे। अगर बहुत ज्यादा जमीन न मिली और हमारी यह माँग चन्द दिनों में पूरी न हुई, तो हम इतना ही समझेंगे कि परमेश्वर हमसे ज्यादा सेवा चाहता है, अधिक लम्बी यात्रा चाहता है। हम बहुत खुशी से उसकी सेवा में यात्रा करते रहेंगे। जो विचार ईश्वर ने सुझाया, जो आदेश मिला, उसीके अनुसार यात्रा हो रही है। जब उसकी आज्ञा हुई, तो साढ़े तीन साल पहले हम निकल पड़े। इस बिहार प्रदेश में दो साल और दो महीने हो गये। डेढ़ महीना इस प्रदेश में और रहेंगे। हमको यहाँ बड़ा ही आनन्द मिला है। गंगा का दर्शन हुआ, हिमालय का दर्शन हुआ, जीवन-दान का दर्शन हुआ और जनता की सद्भावना का दर्शन हुआ। परन्तु कार्यकर्ताओं में हमने कोई जान

नहीं देखी। प्राणशून्यता देख रहे हैं और उनमें इस बात का विचार भी उनमें नहीं देखा कि इस काम का कितना महत्त्व है।

इसके बाद बाबा ने कहा कि हम उम्मीद करते हैं कि आज नहीं, तो कल ईश्वर की प्रेरणा से लोग समझेंगे। बिहार के लोग साधुचरित हैं, सज्जन हैं। बिहार से हमारे जाने के बाद कार्यकर्ता सोचेंगे-समझेंगे कि बाबा ने हमारे लिए कितनी मेहनत की और हमने कितना साथ दिया।

शाम को जब प्रार्थना के लिए मंच पर पहुँचे, तो बाबा को बहुत-सी फूल-मालाएँ भेंट में दी गयीं। एक माला को हाथ में लेकर बाबा ने कहा कि यह माला उसे मिलेगी, जो पूरा समय भूदान में देगा। कोई नहीं उठा। तो बाबा बोले कि क्या मुझे भी जनक की तरह कहना पड़ेगा—"वीर-विहीन मही मैं जानी"? इस पर एक महिला कार्यकर्त्री उठी और उसने बाबा की चुनौती स्वीकार की। बाबा ने उसके गले में माला डाल दी। फिर एक के बाद एक, ग्यारह भाई-बहनों के गले में बाबा ने मालाएँ डालीं। इसके बाद प्रार्थना हुई। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आपने प्रेम से यहाँ हमें फिर से बुलाया, ताकि नाम-स्मरण फिर से हो जाय। हम आशा करते हैं कि भागलपुर जिला किसी दूसरे जिले से पीछे नहीं रहेगा। शाम को कार्यकर्ताओं ने आगे काम करने की योजना बनायी। भागलपुर कॉलेज के कुछ विद्यार्थी भी बाबा से मिले और अपने विद्यालय में सर्वोदय का काम फैलाने का वचन दिया।

● ● ●

संतों की राह पर

इतिहासकारों को मालूम है कि समाज की चक्राकार गति सतत चल रही है। इसमें कुछ लोग आगे बढ़े हुए हैं, कुछ बीच में हैं और कुछ सबसे पीछे हैं। दूसरे रास्तों में भी यह होता है, पर चक्राकार या गोल रास्ते में एक बहुत बड़ी बात यह होती है कि अगर मुँह बदल दो, तो जो सबसे पीछे था, वह सबसे आगे हो जाता है। जो पिछला है, वह अगुआ हो जाता है। अगुआ बनने का उपाय यही है कि दिशा बदल दो। इसी तरह पिछड़े कहे जानेवाले आदिवासियों में कुछ ऐसी बातें हैं कि उन बातों के पीछे अगर कुछ थोड़ा विचार आ जाय, तो वे सारे समाज के नेता बन सकते हैं। ये पिछड़े लोग ही आगे के समाज की क्रांति ला सकते हैं। उन्हें उस सारी भूमिका में से गुजरने की जरूरत नहीं, जिसमें दूसरे सब, सभ्य लोग फँसे हैं।

सन्थाल परगना जिले में बाबा ने एक महीने तक पदयात्रा की। इस समय की दो घटनाएँ बहुत ही लाजवाब हैं :

(१) आदिवासियों का एक प्रतिनिधि-मंडल बाबा से मिला और उनसे यह प्रार्थना की कि हमारे हित के लिए तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाय : महाजनों के पंजों से मुक्ति, सिंचाई की सुविधा और शराबबंदी।

(२) बाबा एक दिन जब प्रार्थना से लौट रहे थे, तो आदिवासियों ने कहा, "बाबा, जमीन लो, जमीन लो।"

शायद इस दुःखदायी घटना की जानकारी बहुत कम लोगों को होगी कि आज जो पिछड़ी जातियाँ मानी जाती हैं, उनमें से ज्यादातर वे हैं,

जिन्होंने अंग्रेजी ताकत के आगे सिर झुकाने से इनकार किया और अपनी आन पर डटे रहे। संथाल परगना, छोटा नागपुर तथा पश्चिमी बंगाल के कुछ हिस्सों में रहनेवाले बहादुर और ईमानदार संथालों के बारे में यह बात खास तौर से लागू है। इस वजह से अंग्रेज उनसे वैर रखने लगे और उनको 'पिछड़ा हुआ' या 'आदिवासी' नाम दे दिया। सच तो यह है कि ये बहुत ही शरीफ और ऊँचे आदमी हैं। इनकी अपनी अनोखी और शानदार मिली-जुली जिन्दगी चलती है। स्त्री और पुरुष क्या घर में, क्या बाहर एक साथ काम करते और जीवन बिताते हैं। अपने सामाजिक जीवन से वे आज के पढ़े-लिखे और सभ्य कहलाने-वाले लोगों का सहज नेतृत्व कर सकते हैं। खास रिवाज जो उनके अन्दर चालू है, वह यह कि वे जमीन नहीं बेचते हैं और इसे निजी सम्पत्ति नहीं मानते। शायद यही कारण है कि बाबा का यह सन्देश कि जमीन की मालकियत निजी न होकर समाज की होनी चाहिए, उनको बहुत अपील करता है।

समाज की क्रान्ति

बाबा संथाल परगना जिले में २१ नवम्बर से २० दिसम्बर तक रहे। पहला पड़ाव साहबगंज में था। वहाँ पर पहुँचते ही उन्होंने कहा, समाज की गति चक्राकार होती है। इतिहासकारों को मालूम है कि यह चक्राकार गति सतत चल रही है। गोल रास्ता अगर हो, तो उसमें कुछ लोग आगे बढ़े हुए हैं, कुछ लोग बीच में हैं और कुछ पीछे। दूसरे रास्तों में भी यह होता है, पर गोल रास्ते में एक बहुत बड़ी बात यह होती है कि अगर मुँह बदल दो, तो जो सबसे पीछे था, वह सबसे आगे हो जाता है। जो पिछला है, वह अगुआ हो जाता है। अगुआ बनने का उपाय ही है कि दिशा बदल दो। किसीके साथ होड़ लगाने की जरूरत नहीं। सिर्फ मुँह बदल दिया कि आगे हो गये, बाकी सब पीछे। जो समाज सबसे पीछे है, वह सबसे आगे बन जाता है, यह बहुत दफा देखा गया है। पिछड़ी हुई जमातें आगे आयीं।

यह सन्थाल परगना आदिवासियों का जिला है। यह सारा समाज पिछड़ा हुआ माना जाता है। पर पिछड़े हुए लोगों में कुछ बातें ऐसी होती हैं कि उन बातों के पीछे अगर कुछ थोड़ा विचार आ जाय, तो वे ही सारे समाज के नेता बन सकते हैं। अनुभव ने भी यह दिखाया। उड़ीसा के कोरापुट जिले में, बिहार के पलामू जिले में यह अनुभव हुआ कि इन पिछड़े लोगों में पूरे-के-पूरे गाँव दान में मिल जाते हैं। मालकियत गाँव की मानी जाय, इसके लिए वे लोग बहुत जल्द तैयार हो जाते हैं। दूसरे लोग जो समाजवाद, साम्यवाद इत्यादि सारे वाद जानते हैं, उनको ज्यादातर पैसे का आकर्षण है। आकर्षण साम्यवाद का नहीं, 'साम्यवाद' शब्द का है, 'समाजवाद' शब्द का है। शब्द के साथ घर में खूब पैसा रहे, तो खुश हैं। लेकिन इन आदिवासियों में और पिछड़ी जातियों में एक साथ काम करने का रिवाज आज भी मौजूद है। अगर उनको सर्वोदय का विचार बताया जाय कि धन और सम्पत्ति की मालकियत मिटानी है, सारे गाँव को एक परिवार बनाना है, तो यह बात सहज ही उनके ध्यान में आती है। ढाँचा उनका पुराना है, पर इस चीज के अनुकूल है। व्यक्ति की मालकियत मिटाकर समाज की मालकियत कायम करें, तो दुःख घटेगा और सुख बढ़ेगा। यह तत्त्वज्ञान, यह समाजशास्त्र, यह लोकनीति उन्हें समझायी जाय, तो यहाँ पर भूदान-यज्ञ में कुछ एकड़ जमीन इधर, कुछ एकड़ उधर मिलने के बदले पूरे गाँव-के-गाँव दान में मिल सकते हैं। पर ठीक से उन्हें समझाना होगा। विचार की पक्की बुनियाद बनायी जाय। यह खास काम इस जिले के लिए है। वे पिछड़े लोग आगे के समाज की क्रान्ति कर सकते हैं। उन्हें उस सारी भूमिका में से गुजरने की जरूरत नहीं, जिसमें दूसरे सब, सभ्य लोग फँसे हैं।

आन्दोलन नहीं, आरोहण

सारे दिन बाबा बहुत ही व्यस्त रहे। दस बजे बिहार की जिला-भूदान-समितियों के संयोजकों से भेंट हुई। बाबा ने उनका ध्यान अध्ययन

और मनन की ओर दिलाया, जिसके बिना सारा उत्साह फीका पड़ जायगा। उन्होंने कहा कि ऐसी बैठकें तो सत्संग जैसी होनी चाहिए, जिनमें ब्रह्म-विचार की सरस्वती प्रकट हो। चिन्तन की प्रक्रिया चलनी चाहिए। अन्दर से निरन्तर स्फूर्ति मिलनी चाहिए। उसके बिना हमारा काम रुकेगा। यह आन्दोलन नहीं, आरोहण है। सामने अन्धकार गहरा हो, तो आपको उत्साह होता है या निराशा? जितना ज्यादा अन्धकार हो, उतना ही ज्यादा उत्साह बढ़ना चाहिए। यह शक्ति बिना चिन्तन के नहीं आती। मुख्य तौर से सोचना यह है कि पचहत्तर हजार गाँवों में जायँ कैसे? उसकी योजना क्या हो? अपने को आत्मविश्वास, आत्म-सन्तोष होना चाहिए कि हमने अपना पूरा समय दे दिया और जनता के पास लगातार पहुँचते रहे। आत्मसमाधान भी हो। इस तरह संयोजक अखंड घूमते हों, तो नयी चीज पैदा होगी।

स्वराज्य की अपेक्षाएँ

ढाई बजे संथाल परगना जिले के कार्यकर्ता बाबा से मिले। आध घंटे बाद प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि हिन्दुस्तान में बरसों के बाद इस सिरे से उस सिरे तक एक भावना का राज्य स्थापित हुआ है। जिसे हम 'स्वराज्य' नाम देते हैं, वह सैकड़ों वर्षों के बाद हासिल हुआ है और जब वह चीज हमको प्राप्त हुई, तो आत्मा के विकास के लिए जिन बातों की कमी रह गयी थी, उनकी ख्वाहिश समाज में पैदा होती है। देश में अन्न का उत्पादन कम है। इसलिए बोला जाता है कि अन्न की वृद्धि होनी चाहिए। पर अन्न-वृद्धि मानव के समाधान के लिए एक अंशमात्र है। उसका पूरा समाधान तो तब होगा, जब उस अन्न का भोग सबको समानता से मिलेगा, क्योंकि यह अन्तरात्मा की माँग है। तो अन्न-उत्पादन के साथ उसका सम-विभाजन हो। इस बात की दुनिया में कमी है और अपने देश में भी। सम्यक् विभाजन होना चाहिए।

मनुष्य की दूसरी इच्छा प्रकाशन की है, जिसके वास्ते भगवान् ने

मनुष्य को वाणी दी है। उस वाणी को विकास के लिए पूरा मौका मिलना चाहिए। इसलिए वाक्-प्रकाशन का स्वातंत्र्य मानव की बुनियादी आजादी मानी गयी है। वह हरएक को हासिल होनी चाहिए। वाक्-प्रकाशन का स्वातंत्र्य जहाँ मानव समझता है, वहाँ उसे वाणी में प्रकट करता है। लेकिन समाधान तभी होता है, जब वह वाङ्मय ऐसा प्रकट हो कि लोगों के हृदय को कबूल हो। सिर्फ बोल देने से साहित्य का समाधान नहीं। इस वास्ते साहित्य में उत्तरोत्तर संशुद्धि की जरूरत रहती है। सौभाग्य की बात है कि इस बारे में हमारे यहाँ का साहित्य काफी परिपूर्ण है। प्राचीन-काल से आज तक—वेदों से लेकर गांधीजी तक—जो साहित्य-प्रवाह गंगा की धारा की तरह हिन्दुस्तान में अखंड बहता आया है, उस साहित्य में सम्यक् वाङ्मय की कमी नहीं। पर इन दिनों वाङ्मय का संयम कम हुआ है। जहाँ संयम क्षीण होता है और वाणी का प्रकाशन स्वैर हो जाता है, वहाँ उस वाणी में हृदयग्राह्यता नहीं रहती। वह वाणी टूट जाती है। इसलिए सच्चा शब्द बहुत रूढ़ होना चाहिए। परमेश्वर की कृपा से हमको चन्द शब्द मिल गये हैं। उनके आधार पर हम देश को एक कर सकते हैं। उनमें से एक शब्द था 'स्वराज्य'। पिछले साठ साल तक इसने देश को एक बनाये रखा। देश का स्वरूप बदला। स्वराज्य-प्राप्ति के बाद का शब्द है 'सर्वोदय'। उसने बहुतों का हृदय खींच लिया है। इसके अर्थ की बारीकी में प्रवेश करना होगा। इसका पूरा चित्र सामने लाना होगा। यह शब्द ऐसा है, जो हिन्दुस्तान के सब लोगों को खींचने में समर्थ साबित हुआ है। इसका चिन्तन हो, तो साहित्य सम्यक् बनेगा और आत्मा का समाधान होगा।

कलाहीनता और फैशन

आगे चलकर बाबा ने कहा कि तीसरी चीज है, कला। संगीत, नृत्य-कला, चित्रकला, शिल्पकला का विकास अपने देश में प्राचीनकाल में अपने ढंग से हुआ था। इस मामले में हम बहुत गिर गये हैं।

हारमोनियम बजता है, मानो कुत्ता भूँकने लगा। इतना कलाहीन वाद्य कोई नहीं हो सकता। जगह-जगह रात को रेडियो रोता है। हमको नागरिकों पर दया आती है कि कैसे वे ऐसी चिल्लाहट बरदाश्त करते हैं! रेडियोवाला संगीत चला, तो लोग अल्हड़ बन जायेंगे, संस्कार-विहीन बनेंगे। यह अत्यन्त कलाहीनता अपने देश में आयी है। फैशन भी तरह-तरह के चलते हैं। लेकिन उसमें कोई व्यवस्था, कोई सौन्दर्य-भावना नहीं। ऐसे रद्दी कपड़े पहनते हैं कि स्वच्छता नहीं दीखती। फेल्ट कैप के अन्दर साल भर का सारा पसीना जकड़ा रहता है। रद्दी-से-रद्दी टोपी अपने श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ अवयव पर मुकुट के तौर पर शिरोधार्य की जाती है। इन दिनों लोग बाल रखते हैं, उनमें रद्दी, मिलावट का तेल डाला जाता है। परिणाम यह होता है कि बाल पकते हैं। सौन्दर्य के बजाय कुरूपता आती है। बड़े-बड़े शहरों की दीवारों पर लिखा रहता है कि यहाँ थूकना मत। सवेरे उठे कि पहला कार्यक्रम होता है, अग्निहोत्र की उपासना, बीड़ी पीना! कितनी विकृति है कि मुँह में अग्निनारायण प्रकट हुए हैं। कॅमरा लेकर चित्र लिया जाय, तो कैसा लगेगा? हम जब वैद्यनाथधाम जा रहे थे, तो लोग 'बम बोलो' कहते चलते थे, लेकिन मुँह में बीड़ी थी। 'बोलो बम' और 'पीओ बीड़ी'। मन्दिरों में जाकर देखिये, वे कितने गन्दे हैं! घरों में जाकर देखिये, कितनी बदसूरत तसवीरें टँगी रहती हैं। तसवीरें क्या हैं, मच्छरों के लिए स्वतंत्र सहूलियत के स्थान हैं। यह सारी कलाहीनता जो देश में आयी है, उसका कारण यह है कि हमने अपने अच्छे संस्कार छोड़ दिये और बाहर के भी अच्छे संस्कार ग्रहण नहीं किये। आत्मा को समाधान नहीं होता। ठीक-ठीक बैठना भी नहीं आता। बीस-पचीस साल के नौजवान ऐसे झुककर बैठते हैं, मानो अस्सी साल के बूढ़े हों। इसको हम कला का अभाव समझते हैं और सभ्यता का भी। हम उसका विस्तार नहीं करते। कहना यह है कि देश और समाज का अन्तःसमाधान तब होता है, जब चीजों में व्यवस्था होती है।

साम्यवाद नहीं, साम्ययोग

बाबा ने आगे बताया कि चौथी चीज है, आत्म-विद्या और भौतिक-विद्या का संतुलन। ये सब चीजें बनेंगी, तो समाज उन्नत होगा, मानव-जीवन परिपुष्ट होगा। भूदान-यज्ञ जब से शुरू हुआ, तब से मानव-जीवन के हर पहलू में क्या संशोधन हो, इसका चिन्तन हमने किया है। ये सारी बातें हमने भूदान में जोड़ दीं। हमने कहा कि हर शख्स को मालिकी छोड़कर अपना हिस्सा देना ही चाहिए। इसके बिना सम्यक् विभाजन नहीं होगा, उत्पादन नहीं बढ़ेगा। साहित्य के बारे में हमने निश्चयपूर्वक बातें समाज के आगे रखीं कि हमको साम्ययोग स्थापित करना है। साम्यवाद नहीं, साम्ययोग। समाजवाद नहीं, समाजयोग। अपने प्राचीन साहित्य में शब्द भरे पड़े हैं। हमको उम्मीद है कि निर्मल शब्द जब रूढ़ हो जायँ, तो साहित्य का प्रवाह बदलेगा और अन्तःसमाधान होगा। भूदान-यज्ञ में जीवन के सब अंगों का संतुलन है। आज तक समाज के सामने जो ध्येय थे, उनके अनुकूल साहित्य तैयार हुआ। लेकिन अब साम्ययोग के आधार पर जीवन का क्या चित्र होगा, यह दृष्टि जब सामने होगी, तो महान् साहित्य का सृजन होगा। आज अच्छे-से-अच्छे साहित्य में हमारा समाधान नहीं होता। एक मिसाल लीजिये, सीता वन को जा रही है। कौशल्या को वेदना होती है। वह प्यार से कहती है कि मेरी बहू जंगल में कैसे रहेगी? वहाँ क्या करेगी? 'दीप बाति नहिं बारन कहेउँ'—दीप बारने का काम भी मैंने उससे नहीं लिया था। तो प्यार का उत्तम लक्षण यह हुआ कि किसी प्रकार का काम नहीं लिया जाय। यह साहित्य हमको समाधान नहीं देता। महान् कवि का बड़ा उत्तम साहित्य। पर इसमें हमारा समाधान पूरा नहीं। हमारे घर की बहू-बेटियाँ उत्तम काम करती हैं, घर के सब लोग भी काम करते हैं, कोई बिना काम के नहीं रहता, तभी सच्चा प्रेम प्रकट होगा। शरीर-श्रम, अपरिग्रह, मालकियत मिटाने की बातें आदि जो नये-नये विचार अब आ रहे हैं, उनसे अब साहित्य

परिपुष्ट होगा। सौन्दर्य की उपासना, सच्ची दृष्टि और कला की रसिकता तब प्रकट होगी, जब लक्ष्मी श्रम से उत्पन्न होगी। श्रमनिष्ठ समाज होगा, तो सच्ची लक्ष्मी और कला का आविर्भाव होगा।

आखिर में बाबा ने कहा कि आत्मज्ञान और भौतिकज्ञान का सच्चा संतुलन तभी होगा, जब हमारी शक्ति एक-दूसरे को लूटने में नहीं, सहायता में लगेगी। अगर शोषण की वृत्ति कायम रही, तो विज्ञान का आत्मज्ञान से झगड़ा ही रहेगा। विज्ञान खूब बढ़े, यह हम चाहते हैं। पर आत्मज्ञान से संयुक्त होकर बढ़े, तब समाधान होगा। आत्मज्ञान के साथ विज्ञान बढ़ता है, तो इस दुनिया में हम स्वर्ग ला सकते हैं। चिन्तन करनेवालों को इस पर सोचना, समझना और विचार करना चाहिए।

शाम को साहबगंज के कुछ व्यापारी बाबा से मिलने आये। सम्पत्ति-दान-यज्ञ का विचार उन्होंने विस्तार से उनको समझाया और कहा कि आपको इस साहित्य का खूब अध्ययन करना चाहिए। फिर उसके बाद बिहार-सर्वोदय-मंडल की बैठक हुई।

एक बनो, नेक बनो

अगले दिन हम लोग मिर्जा चौकी नामके छोटे सन्थाली गाँव में थे। प्रार्थना-सभा में बाबा ने कहा कि सर्वोदय में यही विशेषता है कि पहले उनकी मदद करनी है, जो नीचे की सतह पर हैं, फिर ऊपरवालों की। पानी ऐसा ही करता है। पहले गढ़ों में जाता है। जब गढ़े भर जाते हैं, तो जमीन पर जायगा, जो ऊँचाई पर होती है। इसके बाद टीले तक जायगा, जो और भी ऊँचे होते हैं। मगर शुरू हुआ गढ़े भरने से, क्योंकि पानी सर्वोदयवादी है, सबका भला चाहनेवाला है, सबके साथ समान प्रेम करता है। इसी तरह से जो आदिवासी हैं, हरिजन हैं, मजदूर हैं, याने जो पिछड़ा वर्ग है, उनकी तरफ पहली कोशिश होनी चाहिए।

तारीख २३ को चपरी जाते समय बाबा रास्ते में मदनपुर गाँव में

कुछ देर ठहरे। इसमें पैंतालीस घर हैं और तीन सौ बीघा जमीन। बाबा ने पौन घंटे तक उस गाँव की दर्दभरी कहानी सुनी। गाँव के कुछ लोगों ने सहयोगी तरीके से एक गल्ला-गोदाम खोला था। लेकिन पंचों ने इसका फायदा उठाया और गाँव के अन्दर मनोमालिन्य फैल गया। बाबा ने उनको सलाह के तौर पर पाँच बातें बतायीं : (१) गल्ले के कमीशन का रिवाज तोड़ देना चाहिए। (२) अपने गाँव का गल्ला दूसरे गाँव के लोगों को नहीं देना चाहिए। (३) किसी तरह का सूद नहीं लेना चाहिए। (४) गाँव की एक कमेटी बने, जिसमें हर घर से एक आदमी हो। (५) मुठिया हर साल चले और गाँववालों को गल्ला मुफ्त दिया जाय। हर साल नयी मुठिया चले। गाँववाले बड़े ध्यान से बाबा की बातें सुनते रहे। शायद हर घर की स्त्रियाँ भी मौजूद थीं। हमको बाद में मालूम हुआ कि जहाँ हम सब बैठे थे, उसके पास ही एक घर में एक मौत हो गयी थी। फिर भी वहाँ के लोग शान्ति के साथ सभा में मौजूद थे। हमारे चले आने के बाद दाह-संस्कार किया गया।

नयी तालीम, नये मूल्य

अगले दिन हमने दामन नामक सुन्दर पहाड़ी इलाके में प्रवेश किया। पहाड़ियों और जंगलों में होता हुआ बड़ा सुन्दर टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता था। इस इलाके में शायद ही कभी कोई बाहर से आता हो। शाम को प्रार्थना में संथाली भाई काफी तादाद में जमा हुए। बाबा ने कहा कि आपका स्वर्ग-नरक आपके हाथ में है। आपको अपनी तालीम चलानी चाहिए। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से लेकर नीचे तक जब कभी कोई तालीम पर बोलता है, तो जो तालीम चल रही है, उसकी दिल खोलकर निन्दा करता है। पूछिये, इन्हींके हाथ में तो बात है, तब गाड़ी कहाँ रुकी है? कुछ लोग कहते हैं कि नयी तालीम में बच्चों की तरक्की नहीं होती। नयी तालीम का कोई नाटक करे और उसमें तरक्की न हो, तो आश्चर्य की क्या बात है? सारे शिक्षकों को एक-सी तनखाह मिले, जिम्मेदारी के

साथ ज्यादा पैसा देने की बात छोड़ दी जाय, तो नयी तालीम टिकती है। पुराने मूल्य कायम रखकर पुराने विचार के साथ नयी तालीम नहीं चल सकती। नहीं तो, उसे पुरानी तालीम क्यों नहीं कहते? महज काम कराने से नयी तालीम नहीं बनती, उसे उद्योगी तालीम कह सकते हैं। पुराना ढाँचा बदले बिना नयी तालीम नहीं चलेगी। जिस तरह पुराना झंडा स्वराज्य में एक क्षण नहीं रह सकता, उसी तरह पुरानी तालीम भी नहीं रहनी चाहिए। नये झंडे के साथ नयी तालीम आनी चाहिए।

संथाली का दान

गुरुवार के दिन महँगामा में प्रार्थना के बाद एक बड़ी अनोखी और सुखद घटना घटी। एक वयोवृद्ध संथाली मंच के पास पहुँचे। वहाँ पर एक कार्यकर्ता 'भूदान' साप्ताहिक बेच रहा था। उन वयोवृद्ध ने उस भाई से पूछा कि मेरे पास दस बीघा जमीन है, क्या हम उसमें से पौने दो बीघा दान दे सकते हैं? उसने कहा, बड़ी खुशी से। तब संथाली भाई बोले कि हमारे लिए कागज भर दो। कार्यकर्ता दानपत्र भरने लगा। जब भर चुका, तो दस्तखत करने को कहा। वे बोले कि हम अँगूठा लगायेंगे। लेकिन, हमारे पास दूसरी जगह बारह बीघा जमीन और है, उसमें से भी दो बीघा देना चाहते हैं। कार्यकर्ता ने कहा कि जैसी आपकी इच्छा हो। जब आप अपनी कुल जमीन का छठा हिस्सा दान कर देते हैं, तो बाबा सिपाही बन जायँगे। वयोवृद्ध ने इस दो बीघे का भी दानपत्र भरने को कहा। फिर दोनों दानपत्रों पर अँगूठा लगा दिया और खुशी-खुशी अपने घर की राह ली। रात को एक मौलवी साहब ने कुरान की आयतें बाबा को पढ़कर सुनायीं और कहा कि भूदान-यज्ञ इस्लाम के माफिक है।

पैसे का राज हटायें

अगला पड़ाव पथरगामा में था। दोपहर को वहाँ के व्यापारी बाबा से मिलने आये। बाबा ने विस्तार के साथ सम्पत्तिदान-यज्ञ का महत्त्व समझाकर कहा कि इस देश में इसकी बहुत जरूरत है। अगर आप लोग

इसे उठा लेते हैं, तो समाज का नेतृत्व आपको मिलेगा। मैं चाहता हूँ कि आप मुझको अपने घर में कायम के लिए जगह दें। अगर घर में आप पाँच जने हैं, तो मुझे छठा समझिये और छठा हिस्सा मुझे दीजिये। ईश्वर की कृपा से साल-दो साल बाद आपके घर में छह जने हो जायँ, तो मुझे सातवाँ गिनिये, लेकिन मुझे घर का एक स्थायी सदस्य जरूर मान लीजिये। इस तरह जिन्दगी भर आप सम्पत्तिदान देते रहें।

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि हिन्दुस्तान में जब से ग्रामोद्योग टूटे हैं, तब से बड़ा फर्क पड़ गया है। जब से ग्रामोद्योग टूटने शुरू हुए, तब से पैसे को राजा बना दिया गया। पुराने राजा तो गये, पर पैसा अपना सिंहासन नहीं छोड़ रहा है। सारा व्यवहार उसके आधार पर चलता है। लेकिन वह तो लफंगा है। लफंगे का लक्षण क्या है? आज एक बात बोले, कल दूसरी और परसों तीसरी। यह लक्षण लफंगे पैसे में पूरा दीख पड़ता है। कभी कहेगा कि पाँच सेर गेहूँ, तो कभी कहेगा तीन सेर। एक-सी बात कभी नहीं बोलेगा। इस तरह के लफंगे को हमने अपना कारोबारी बनाया और उसके हाथ में सारी सत्ता सौंप दी। कोई अप्रामाणिक मनुष्य अपने बीच में रहता हो, तो उसे निबाह लेना एक बात है, पर सारा कारोबार ही उसके हाथ में सौंप दें, तो क्या हालत होगी? आज यही हालत हो रही है। उसके परिणामस्वरूप प्रामाणिकता का कोई मूल्य नहीं रहा, मानवता का कोई मूल्य नहीं रहा। पैसे की कीमत जब कम-बेशी होती रहती है, तो लोग सोचते हैं कि जितना मिले उतना थोड़ा, जितना ज्यादा मिल जाय, उतना सुरक्षित। लेकिन ज्यादा वासना बढ़ाना अच्छा नहीं है। महाभारत में ययाति का किस्सा मशहूर है। उसने एक प्रसिद्ध श्लोक कहा है :

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥

ययाति कहता है कि काम के उपभोग से काम शान्त नहीं होता,

वासना कभी तृप्त नहीं होती। अग्नि को घी से बुझाने की कोई कोशिश करेगा, तो अग्नि बुझेगी नहीं। वासना का अन्त कैसा? आज क्या वकील, क्या ब्राह्मण, क्या व्यापारी, क्या शिक्षक, सबको पैसे की हविस लगी है। सरकार तक जब 'पैसा'-'पैसा' बोलेगी, तब क्या होगा? इस चीज को तोड़ना है। श्रम की महिमा बढ़ानी होगी।

रविवार, तारीख २८ नवम्बर, १९५४ को जब हम लोग बुआरी-जोर पहुँचे, तो स्वागत में यह प्रसिद्ध नारा लगाया गया :

जयप्रकाश का जीवनदान।
सफल करेगा भूमिदान॥

बाबा ने कहा कि आपकी बात है तो सच्ची, लेकिन इतना काफी नहीं है। जीवनदान की जिम्मेदारी सिर्फ जयप्रकाश बाबू पर मत छोड़िये। कुछ हिम्मत बाँधिये। अपना जीवन समर्पित कीजिये। यह सबकी जिम्मेदारी है। और फिर कहिये :

हम लोगों का जीवनदान।
सफल करेगा भूमिदान॥

जैसे घर में, वैसे गाँव में

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने भूदान का रहस्य बहुत ही सीधी-सादी भाषा में समझाया। उन्होंने कहा कि मान लीजिये कि आपके घर में पाँच आदमी हैं, तीन कमानेवाले हैं, दो वैसे ही। इन तीनों में एक चार रुपया रोज कमाता है, दूसरा दो रुपया और तीसरा एक रुपया; तो चार रुपया कमानेवाला यह नहीं कहता कि मैं इन चार रुपयों का मालिक हूँ और इन पर मेरा ही हक है। दो रुपया और एक रुपया कमानेवाले भी यह नहीं कहते। बल्कि सब यही कहते हैं कि यह कमाई इस परिवार की है। इस कमाई का उपयोग घर के सब लोग करते हैं, किसीकी मालकियत नहीं रहती। इसलिए घर में सुख मिलता है। हमने घर में अपना अहंकार

छोड़ा और मालकियत छोड़ी। बाकी सब जगह अपना अहंकार, अपनी मालकियत बना रखी है। इसलिए घर में तो सुख मिलता है, बाहर नहीं मिलता। निजी मालकियत छोड़ने का प्रयोग जब अपने घर में किया, तो उसका नतीजा सुख हुआ या दुःख? हम पूछते हैं कि यही प्रयोग यदि आप गाँव भर में करेंगे, तो आपको सुख हासिल होगा या दुःख? इसी वजह से हम समझाते हैं कि सारी जमीन को गाँव की समझो।

आज का पड़ाव बहुत ही सुन्दर जगह पर था। चारों तरफ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ थीं। कुछ हरियाली भी थी और नजदीक ही तालाब था। शाम को बाबा टहलते हुए पहाड़ी पर एक गाँव की तरफ चले। बहुत से लोग उनके साथ हो लिये। लेकिन गाँव पहुँचने के पहले उन्होंने दो खेत देखे, जिनमें पत्थर बिखरे पड़े थे। बाबा उन पत्थरों को बीनने लगे। हम सब लोग भी उसी काम में जुट गये। आध घंटे में वह खेत ऐसा बढ़िया लगने लगा, मानो ताजा जोता गया हो। उसके बाद बाबा ने सबको एक कतार में खड़ा कराया और "ॐ सह नाववतु.........." मंत्र जोर से उच्चारित किया। सब ऐसे प्रसन्न हो गये, मानो श्रम-यज्ञ-स्नान कर लिया।

अगले दिन बोरिया में दोपहर को स्कूल के बच्चों ने कताई का प्रदर्शन किया। इसके बाद स्कूल के शिक्षकों के इसरार करने पर बाबा ने लोक-नागरी का क्लास लिया। हाथ में खड़िया मिट्टी लेकर, काले तख्ते के पास खड़े होकर उन्होंने समझाया कि देवनागरी के मुकाबले लोकनागरी कितनी ज्यादा वैज्ञानिक और आसान है। ढाई बजे के करीब आदिवासियों का एक प्रतिनिधि-मंडल बाबा से मिला। उसने अपनी दुःखभरी कहानी सुनायी। बताया कि साहूकार को सूद देना पड़ता है, जमीन हाथ से चली गयी है। सिंचाई के लिए कोई इन्तजाम नहीं है। शराब भी बन्द होनी चाहिए। बाबा ने बहुत ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुनीं और कहा कि प्रार्थना के बाद इस पर हम कुछ कहेंगे।

जब बाबा प्रार्थना के लिए पहुँचे, तो उन्हें बहुत-सी मालाएँ छोटे-छोटे बच्चों ने भेंट कीं। बाबा एक-एक करके ये मालाएँ चारों तरफ बाँटने लगे। जिस किसीने हाथ बढ़ाया, उसीकी तरफ माला फेंक दी। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि हमने मालाओं का यह जो खेल किया, वैसा ही खेल सम्पत्ति का होना चाहिए। किसीके पास सम्पत्ति का ढेर हो गया है, तो उसे चाहिए कि जो उसके लायक हो, उसकी तरफ सम्पत्ति पहुँचा दे। जब यह सिलसिला चलेगा, तब समाज आगे बढ़ेगा और सबके लिए सहूलियत होगी। अपने घर में रखने के बजाय, पड़ोसी को दे दिया, तो उसमें हम कुछ खोयेंगे नहीं।

सूद लेना अधर्म है

अपने प्रवचन में बाबा ने कहा कि सूद लेना अधर्म है। वे दिन गये, जब लोग बेकार रहकर खाना अच्छा समझते थे। अब तो दोनों हाथों से काम करो और मिल-जुलकर प्रेम से खाओ। अपना काम चलाने के लिए आपकी कोई सम्पत्ति ले ले, तो आपको खुश होना चाहिए। आपको एक मित्र मिल गया। उससे सूद लेना तो अधर्म है ही। लेनेवाला लायक हो और देनेवाला प्रेम से दे, तो दोनों का काम चलता है। इस वास्ते हमने सम्पत्ति दान चलाया है। आगे बाबा ने कहा कि हम जानते हैं कि जमीनें छीनी गयी हैं। साहूकारों से हम कहना चाहते हैं कि वे जमीनें वापस दे दें। जिनके पास जमीन है, उसमें से थोड़ी रखकर बाकी वापस कर दें। वह जमीन संथालों में बँटेगी। जिनके पास कम है या नहीं है, उनको मिलेगी। जमीन के अलावा हम बीज, हल, बैल इत्यादि भी माँगते हैं। प्रेम से जो काम होता है, वह दूसरी किसी ताकत से नहीं होता।

'मुखिया मुखसो चाहिए'

इसके बाद बाबा ने एक बहुत ही कोमल बात कही। उन्होंने कहा कि संथालों में कुछ प्रधान और मुखिया होते हैं। यह बात प्राचीनकाल से चली आ रही है। लेकिन तंग करने के जमाने अब गये। राजा-

महाराजा तक गये। मुखिया कैसा हो, इस बारे में तुलसीदासजी ने बताया है : "मुखिया मुखसो चाहिए, खान-पान में एक।" मुखिया को चाहिए कि जो चीज हो, वह सबमें बाँट दे। उसके बदले मुखिया होते हैं खानेवाले। यह सारी प्रथा मिटनी चाहिए। लोग अपने पंच एकमत से चुन लें। फिर उन पाँचों की राय से गाँव का काम चले।

सिंचाई के बारे में बाबा ने कहा कि यह सवाल सारे देश का है। इसके लिए सब लोगों को मेहनत के लिए तैयार होना चाहिए। श्रम-दान देना चाहिए। खोदने का काम हम लोग कर लें, बाँधने का काम सम्पत्ति से और सरकार से चले। आखिर में बाबा ने कहा कि शराब जरूर बन्द होनी चाहिए। हमें इस माँग पर बहुत खुशी हुई। इसके लिए आन्दोलन चलना चाहिए और एक-दूसरे को शराबबन्दी के लिए राजी करना चाहिए।

दीन-उल-हक

बोरिया में मुसलमान भाइयों की भी तादाद काफी है। उनमें से ज्यादातर बुनकर हैं। उन्हें यह जानकर बहुत अचरज और खुशी हुई कि बाबा अरबी भी जानते हैं। उन्होंने बाबा से अपने लिए कुछ समय माँगा। बाबा ने बड़ी खुशी से समय दिया। प्रार्थना के बाद जब वे डेरे को लौट रहे थे, तब उन भाइयों को समय दिया। बाबा ने कहा कि हमने बरसों तक बुनाई का काम किया है। लेकिन आप जो कपड़ा बुनते हैं, उसे कौन पहनता है? आप लोग तय करें कि हम लोग गाँव का कपड़ा पहनेंगे। फिर सूत कातना भी शुरू हो जाय। हम चाहते हैं कि गाँव का माल गाँव में ही इस्तेमाल हो। छुआछूत और जात-पाँत मिट जाय। आपस के भेदभाव भूल जायँ। सब प्रेम से मिलकर रहें। इसीको "दीन-उल-हक" कहा है। आप फातिहा बोलते हैं : "इहदिनस सिरातुल मुसतकीन........" सीधी राह पर चलने से मुकाम पर जल्द पहुँचते हैं। इसलाम में कहा है कि जो रिजक दिया है, उसमें से अल्लाह के वास्ते,

गरीब के वास्ते खर्च करना चाहिए। पैगम्बर ने समझाया कि जिसे 'अल्लाह' कहते हैं, उसे ही 'रहमान' कहते हैं। इसीको कोई 'कृष्ण' कहता है, कोई 'गॉड'। इबादत के तरीकों में फर्क है, बाकी कुछ नहीं। दीन-उल-हक एक है। हम चाहते हैं कि आपकी तरफ से खूब खैरात मिले। जो सचमुच मालिक है, उसीको मालिक बनाना चाहिए। मालकियत का दावा करना कुफ्र होगा। खिदमत के लिए जमीन बाँट दीजिये। यहाँ के मुसलमान अपनी सम्पत्ति देंगे और जमीन का कुछ हिस्सा देंगे, ऐसा हमें यकीन है। परमेश्वर की कृपा, अल्लाह का फजल उन्हें हासिल होगा।

जमीन लो ! जमीन लो !!

वहाँ से लौटते हुए जब बाबा डेरे पर जा रहे थे, तो एक अनोखी घटना घटी। रास्ते में कुछ संथाली भाई खड़े थे। उन्होंने कहा कि "*बाबा, जमीन लो ! जमीन लो !! हम जमीन देंगे।" बाबा मुस्कराये* और बोले, 'लाओ, लाओ।' यह कहकर वे आगे बढ़े। दस-पाँच कदम चले थे कि दूसरी जगह कुछ और संथाली भाई जमा थे। वे कहने लगे, "जमीन लो, जमीन लो ! बाबा, हम जमीन देंगे !" बाबा कुछ ठहर गये। उनकी तरफ मुड़े और कहा : "हाँ, अब जमीनें बाँट डालो, बटोरना बन्द करो। अपने पास जो भी हो, वह पड़ोसी को दे डालो।" साथ में चलनेवाले एक कार्यकर्ता से बाबा ने कहा कि इनके दानपत्र भरवा लिये जायँ।

यह छोटी-सी घटना खुद ही बोलती है। यह जो बताती है, वह सैकड़ों आँकड़े या तालिकाएँ नहीं बता सकतीं। इससे साफ पता लगता है कि किस तरह बाबा का सन्देश बिहार के लोक-मानस की गहराई तक पहुँच गया है। सितम्बर १९५४ में जब उन्होंने बिहार में प्रवेश किया था, तब कहते थे कि "जमीन दो ! जमीन दो !!" अब स्थिति एकदम पलट गयी है। अब "जमीन लो ! जमीन लो !" की बात सुनायी पड़ने लगी है।

छठे हिस्से का बाबा का हक बिहार के देहात में अब कबूल हो गया है। सवाल सिर्फ यही है कि कार्यकर्ता, यज्ञकर्ता कब गाँव -गाँव, घर-घर पहुँचकर बाबा का सन्देश सुनाते हैं और गाँव की जमीन गाँव की बना देते हैं?

आदिवासी और ब्रह्मविद्या

तारीख ३० को हम लोग बोरिया से वृन्दावन गये। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आप लोगों को मालूम है कि जो जमीन बरसों परती रही हुई है उसमें अगर हल चलाया जाय, खेती की जाय, तो बहुत ज्यादा फसल उगती है। इसी तरह ये जो आदिवासी कौमें हैं, उनको अगर विद्या हासिल होगी, तो उनकी बुद्धि से बहुत फसल हासिल होगी। उनकी बुद्धि अब तक परती रही है। उनको अगर तालीम मिले, तो बड़े-बड़े बुद्धिमान नेता और तेजस्वी लोग उनमें से पैदा होंगे। ये लोग प्राणवान तो हैं ही, इनकी प्राणशक्ति और भी बढ़ेगी। साथ-साथ विचार-शक्ति और प्रेम-शक्ति, दोनों का इनमें बल पैदा होगा। उन्हें उपनिषद् सिखाये जायँ, ब्रह्म-विद्या मिले, आत्म-शक्ति का भान हो। ब्रह्म-विद्या के साथ-साथ शरीर-परिश्रम भी चले, तो इनमें से ऋषि-पुत्र निकलेंगे और ज्ञान का जो वैभव हिन्दुस्तान में प्राचीनकाल में प्रकट हुआ था, वह इन लोगों में प्रकट होगा।

माँ बनाम सिनेमा

तारीख १ दिसम्बर को हम लोग आतापुर में थे। शाम की सभा में बाबा ने कहा कि ये छोटे-छोटे देहात प्रेम से बसे हैं और शहर लोभ से बसे हैं। शहर बसाये गये हैं, देहात बस गये हैं। देहात की ताकत तीन चीजों में थी : आपस का प्यार, स्वावलम्बन और अपनी अक्ल से काम करना। लेकिन अब प्रेम की जगह पैसे ने ले ली है और देहातवाले अब शहरवालों के गुलाम बन गये हैं। गाँव का स्वावलम्बन भी चला गया। वे गाँव में अनाज के अलावा कोई दूसरी चीज नहीं तैयार करते। गाँव में आज सब माल बाहर से आता है। वे अपनी अक्ल से अब काम

भी नहीं करते हैं। जरा किसीने पढ़-लिख लिया, तो शहर को चल देता है। उसे गाँव में रहना अच्छा नहीं लगता। गाँवों में माँ तो है, पर सिने-मा कहाँ ? फैशन क्या है, मानों फाँस है। इस तरह तीनों ताकतें टूट रही हैं। अगर ये तीनों ताकतें टूट गयीं, तो गाँव तबाह हो जायँगे। हम चाहते हैं कि आपका अपना समाज बने। इसकी शुरुआत जमीन की मालिकी मिटाकर करनी है। रात को बाबा ने संथाली भाषा पढ़नी शुरू की। हिन्दी जाननेवाले एक संथाली भाई को बाबा ने अपना गुरु बनाया।

अगला पड़ाव बड़हरवा में था। वहाँ जब पहुँचे, तो स्वागत के लिए शिक्षक और विद्यार्थी जमा थे।

दर्जे गलत हैं

बाबा ने अपने प्रवचन में कहा कि आजकल हर चीज में दर्जे किये जाते हैं। बच्चों में अपने-अपने गुण होते हैं, लेकिन उनके भी दर्जे बना दिये गये हैं। कोई तीसरे दर्जे में पास हुआ कहा जाता है, कोई दूसरे में, कोई पहले में। हम पूछते हैं कि गुलाब के फूल की तुलना आम के फल से करोगे ? दोनों के गुण-धर्म अलग हैं। हर बच्चे का अपना स्वतंत्र वर्ग है। सब बच्चे समान हैं, फिर भी दर्जे बनाये गये हैं। सरकार ने भी तमगे देने शुरू कर दिये। 'भारत-रत्न' और 'पद्म-विभूषण'। इसमें भी दर्जे बनाये : पहला, दूसरा, तीसरा। क्या खेल है ! अगर अलग-अलग तमगों के अलग-अलग नाम होते, तो भी बात थी। पर एक ही तमगे के दर्जे बना दिये। यह चीज हमको स्वाभाविक लगती है, क्योंकि आपके समाज में दर्जे पड़े हैं। माँ से पूछो कि तुझे कौन-सा लड़का नम्बर एक प्यारा है और कौन-सा नम्बर दो, तो वह कहेगी कि मैं कोई मास्टर हूँ, जो बच्चों में भेद करूँ ? मेरे एक बच्चे में एक गुण है, तो दूसरे में दूसरा। शिक्षकों को भी इसी तरह व्यवहार करना चाहिए। शिक्षकों के ऊपर बहुत-कुछ निर्भर है। विद्यार्थी मिट्टी हैं, शिक्षक उनको आकार देनेवाले कुम्हार। शिक्षक में अगर सर्वोदय-विचार बैठ गया, तो

जितने स्कूल और कॉलेज हैं, वे सारे ज्ञान-प्रकाश के केन्द्र बन जायँगे। देशभर में ज्ञान-प्रभा फैलेगी।

शुक्रवार को बड़हरवा से कोठालपोखर का रास्ता बहुत ही विकट था। कई पुल पार करने थे। रेल्वे-पुल पर टीन की चद्दरें लगी थीं, जो बहुत ही टूटी-फूटी और कमजोर थीं, जहाँ-तहाँ छेद भी थे। जब बाबा ने यह देखा कि मोती बाबू भी इसी रास्ते पर चल रहे हैं, तो उन्हें बहुत तकलीफ हुई। उन्होंने रुककर कहा कि मोती बाबू को किसी दूसरे रास्ते से ले आइये। बात यह हुई कि लालटेन दिखानेवाले हमारे नेता उस दिन कुछ रास्ता ही भूल गये थे। मोती बाबू को दूसरे रास्ते से लाया गया।

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने इस दुःखद घटना का जिक्र किया और कहा कि स्वराज्य के बाद अगर हमारे काम में इस तरह की व्यवस्था रहती है, तो स्वराज्य टिकेगा नहीं।

भूदान से तीन काम

शनिवार को बाबा पाकुड़ में थे, जो बिहार-बंगाल की सरहद के नजदीक है और सबडिवीजन का सदर मुकाम है। प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि आदिवासियों को चाहिए कि पड़ोस की भाषा सीखें। यहाँ पड़ोस की भाषा बंगला है। उसमें उत्तम साहित्य है। बंगला जैसा उत्तम साहित्य किसी दूसरी भाषा में नहीं है। बिहार के हर हाईस्कूल और कॉलेज में पढ़नेवालों को बंगला का अध्ययन करना चाहिए। इससे हिंदी मालामाल होगी, धर्म भी बढ़ेगा। 'भूदान-यज्ञ' भी हमने इसीलिए शुरू किया है। भूदान-यज्ञ से जमीन का मसला हल होता है, इतनी ही बात नहीं, बल्कि इससे दैवी सम्पत्ति भी बढ़ती है। फसल तो इससे बढ़ेगी ही। दया, सहयोग, प्रेम आदि को 'दैवी सम्पत्ति' कहते हैं। भूदान-यज्ञ से यह बढ़नेवाली है। बाह्य शक्तिवाले देश पहले शिखर पर चढ़ते हुए मालूम होते हैं, पर वे टिकते नहीं। जिस समाज में दैवी सम्पति नहीं, वह जड़-मूल

से खतम हो जाता है। इसलिए हमको भाई-भाई के नाते मिलकर रहना चाहिए और आपस के भेदभाव का बलिदान करना चाहिए। हमें तीन काम करने हैं : हम सामाजिक एकता कायम करेंगे, आर्थिक समता लायेंगे और आध्यात्मिक उन्नति करेंगे।

खुद-रोजगारी

इन्हीं दिनों सुबह की यात्रा में एक भाई बाबा से शिक्षा पर चर्चा करने लगे। उन्होंने कहा कि तालीम का बहुत विकट सवाल है, इसका कोई इलाज ही समझ में नहीं आता।

बाबा ने जवाब दिया कि इतने डर की तो कोई बात नहीं है। अगर हम जरा धीरज और समझ से काम लें, तो इसका उपाय मिल सकता है।

'इसके लिए तो करोड़ों रुपया लगेगा।'

'दुःख की बात यह है कि आप लोग हमेशा रुपये की दृष्टि से ही सोचते हैं।'

'इसके अलावा और रास्ता भी कौन-सा है?'

'क्यों? क्या पढ़े-लिखे लोग इस काम को नहीं उठा सकते?'

'पढ़े-लिखे लोग तो मुश्किल से १५-१६ फी सदी या ५-६ करोड़ होंगे।'

'यह कोई छोटी तादाद नहीं है। छह करोड़ पढ़े-लिखे लोगों में तीन करोड़ तो अच्छे पढ़े-लिखे माने जा सकते हैं या कम-से-कम एक करोड़ तो जरूर ही।'

'जी, एक करोड़ में क्या शक है।'

'तब अगर एक आदमी साल भर में ३६ आदमियों को एक घंटा रोज समय देकर पढ़ा दे, तो एक साल में यह सवाल हल हो जाता है। एक आदमी साल भर में ३६ नहीं, तो १२ आदमियों को तो पढ़ा ही लेगा। इस तरह ज्यादा-से-ज्यादा तीन साल के अन्दर यह काम पूरा हो सकता है।'

थोड़ी देर रुककर बाबा कहने लगे कि 'आप लोग तो इस तरह करते ही नहीं। करोड़ों रुपया खर्च करना जानते हैं।'

'कल्याणकारी राज्य में फिर क्या किया जा सकता है?'

'इसका मतलब यही है कि आप जीवन के हर क्षेत्र पर नियंत्रण कायम कर देना चाहते हैं।'

'हाँ, कुछ है तो ऐसा ही।'

यह बड़ी भयानक बात है। मान लीजिये कि आज से लोग दाँत माँजना छोड़ दें, तो सरकार इस काम के लिए कारखाने खोल देगी? अगर एक आदमी का दाँत साफ करने में १५ मिनट लगे, तो दिन भर में एक कारीगर ३२ आदमियों से निबट सकेगा। यानी ३२ आदमियों पर कम-से-कम एक रुपये रोज का खर्च पड़ा। तो सारे देश के लिए एक करोड़ रुपये रोज की जरूरत पड़ेगी। यानी साल भर में लगभग ४०० करोड़ रुपये का बजट हो गया। तब बेचारे प्लानिंग कमीशन के सामने सवाल खड़ा हो जायगा कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और सफाई की यह योजना कैसे पूरी की जाय। लेकिन आप जानते हैं कि यह काम घर-घर में होता है। शुरू में माँ बच्चे के दाँत साफ कर देती है, बाद में वह खुद ही करने लगता है। एक पैसा भी खर्च नहीं होता।

यह सुनकर हम सब हँस पड़े। चर्चा करनेवाले मित्र भी अपनी हँसी न रोक सके। इसके बाद बाबा ने कहा कि इसी जगह आकर आधुनिक अर्थशास्त्र अटक जाता है। वह यह देख ही नहीं पाता कि खुद-रोजगारी (Self-employment) जैसी कोई चीज भी हो सकती है। अगर लोग खुद ही अपने को रोजगार दे लें, तो जमीन-आसमान का फर्क बढ़ जाय। हमारे कहने का मतलब यह है कि अगर हर पढ़ा-लिखा आदमी एक घंटा रोज देने लगे, तो सारा देश बगैर किसी खर्च के साक्षर हो सकता है। इसी प्रकार हम चाहते हैं कि जमीन का सवाल भी लोग खुद ही हल कर लें।

संथालियों के लिए कार्यक्रम

रविवार, तारीख ५ दिसम्बर को बाबा शहर गाँव में थे। उस दिन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने सन्थाली भाइयों के सामने छह कार्यक्रम रखे : रामनाम जपना, शराब छोड़ना, खेती करना, प्रेम से रहना, उद्योग चलाना और झगड़े मिटाना।

चाँद ही चाँद

शनिवार को पड़ाव गाँदो में था। इन दिनों बाबा ने सन्थाली भाषा सीखनी शुरू कर दी है। गाँदो में उन्होंने कहा कि इतने थोड़े समय में में इस भाषा का कोई पंडित तो नहीं बन सकता, परन्तु इसका बड़ा भारी उपयोग हमको मालूम हो रहा है। आपको पहचानने का मौका हमको मिलता है। एक शब्द है, जिससे हमको आपके अन्दर प्रवेश मिलता है। वह शब्द है 'चाँद'। आपकी भाषा में चाँद माने ईश्वर। यह हमको बहुत अच्छा लगा। सन्थाली में चाँद और सूरज के लिए कोई अलग-अलग शब्द नहीं हैं। चाँद को रात का चाँद और सूरज को दिन का चाँद कहते हैं और ईश्वर को भी चाँद कहते हैं। हरएक को अपना-अपना प्रकाश है। यह दिखाता है कि आपमें एकता का भाव बहुत ज्यादा है। ज्यादा अक्ल भी है। आप जंगल में रहते हैं, फिर भी "सौम्य" भाव है। अगर ऐसा नहीं होता, तो कोई प्रखर नाम भी रख सकते थे। इसलिए इनका विकास सौम्य से ही हो सकता है। इनके लिए श्रम करनेवाला चाँद, नाचनेवाला चाँद, दीप के प्रकाश में भी चाँद, यानी चाँद ही चाँद। सूरज के लिए भी चाँद। यह अजीब बात है। दूसरी कोई भाषा नहीं, जिसमें सूरज के लिए भी चाँद नाम रखा गया हो। जहाँ थोड़ा-थोड़ा प्रकाश होगा, उसमें भी ईश्वर का ही रूप दीखता है।

रविवार, तारीख १२ को हम लोग दुमका में थे, जो जिले का सदर मुकाम है। दोपहर को जिले भर के कार्यकर्ता जमा हुए। जिला-भूदान संयोजक श्री मोतीलालजी केजड़ीवाल ने बाबा से कहा कि आपके सामने

जो डायनमो रखा है, उसको ऐसा चार्ज कर दीजिये कि जिले भर में रोशनी फैल जाय।

सरकारी शक्ति बनाम जनशक्ति

बाबा ने लगभग पौन घंटे तक कार्यकर्ताओं के आगे प्रवचन किया। उन्होंने कहा कि कोई वजह नहीं है कि जो शक्ति हमें घुमा रही है, वह आप लोगों को न घुमाये। स्वराज्य के बाद देश की ताकत कहीं रुक गयी है। उसका मुख्य कारण यही है कि आज सबकी आँखें दिल्ली की तरफ हैं, पर ताकत देहातों में पड़ी है। हमको यह भास हो रहा है कि ताकत उस पानी में है, गर्मी उस पानी में है, जो चूल्हे पर तपाया जा रहा है। मगर असल में तो गर्मी उस अग्नि में है, जो चूल्हे में जल रही है। ऊपर का पानी तो ठंढ़ा ही है। नीचे गर्मी हो, तो पानी गरम हो ही जाता है। लेकिन जो यह समझते हैं कि गर्मी का स्थान पानी में है, वे भ्रम में हैं; गर्मी का स्थान नीचे चूल्हे में है। अगर वह मन्द पड़ जाय, तो पानी गरम नहीं हो सकता। देहात की गर्मी गरम हो सकती है। दिल्ली से देहात का यही काम बन सकता है कि अग्नि बुझेगी। इस बात को कोई इनकार नहीं करेगा कि स्नान के लिए वह पानी काम देगा। पर नीचे गर्मी रहे, तभी पानी गर्म रहेगा। हम यह नहीं कहते कि दिल्ली की कोई महिमा नहीं है। महिमा तो है, पर गौण है। आप जानते हैं कि एक पर शून्य रखने से दस बनता है। दस बनाने में शून्य का बहुत उपयोग है, पर शून्य का अपना मूल्य शून्य है। इसी प्रकार एक है जन-शक्ति, शून्य है सरकारी शक्ति। गणितज्ञ जानते हैं कि शून्य के संशोधन के बड़े-बड़े विभाग हैं। पर उसकी स्वतन्त्र शक्ति कुछ नहीं। लोकशक्ति, जनशक्ति के आधार पर वह बड़ी शक्ति बनती है, शून्य हटने पर भी एक तो रहता ही है। एक में अपनी ताकत है। इससे आपकी समझ में आयगा कि हम सरकारी शक्ति को क्यों गौण स्थान देते हैं और बुनियादी महत्त्व जनशक्ति को क्यों देते हैं।

मुश्किल यही है कि जनशक्ति बनाने का काम हो नहीं रहा है। अगर एक बार इसके महत्त्व का ज्ञान हो जाय, तो आपकी निष्क्रियता चली जायगी और आप मेरी तरह चैन नहीं लेंगे।

नयी पीढ़ी, नया आदर्श

उस दिन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा कि हर पीढ़ी के साथ कोई-न-कोई नया विचार भी पैदा होता है। यह विचार पीढ़ी को प्रेरणा देता है। कभी-कभी यह होता है कि पुराने लोग, बुजुर्ग लोग यह पहचान नहीं पाते कि नयी प्रेरणा आयी है, नया युग आया है। तब वे शिकायत करते हैं कि जवानों में अनुशासन नहीं रहा। नयी प्रेरणा, नये अवतार की पहचान पुराने पीढ़ीवालों को नहीं होती। दोनों में नाहक संघर्ष पैदा होता है।

पुराणों में आपने देखा होगा कि परशुराम एक अवतार थे। अवतार माने उनमें भगवत्-प्रेरणा काम कर रही थी। इसके कारण उन्होंने इक्कीस बार संघर्ष किया।

लेकिन इतना बड़ा शख्स भी यह पहचान ही न सका कि राम का नया अवतार हो गया। आखिर जब परशुरामजी ने राम का प्रभाव देखा, तो सिर झुकाया। प्रणाम करके चले गये। राम ने उनकी मर्यादा रखी। लक्ष्मण बोल रहा है, राम तटस्थ हैं। लेकिन राम भी कह देते हैं :

"राममात्र लघु नाम हमारा।
परसु सहित बड़ नाम तुम्हारा॥"

ऐसा वाक्य राम के मुँह से निकला। बड़े-से-बड़े लोग नये जमाने की प्रेरणा नहीं पहचान पाते हैं, तो अपना पानी खोते हैं। अगर पहचान जायँ और आशीर्वाद दे दें, तो नये लोग वीर की तरह काम करेंगे। पुराने लोग धनुष के समान हैं। नौजवानों का उत्साह और पुरानों का ज्ञान-अनुभव, इनका योग होने पर बड़े-बड़े काम होते हैं।

नया जमाना, नयी माँग

नये युग की नयी माँग होती है। आज का युग समानता का है। जमाना बोल रहा है कि सबको समान मिलना चाहिए, लेकिन युनिवर्सिटी और कॉलेजवाले बोल रहे हैं कि हमको सबसे ज्यादा मिलना चाहिए, क्योंकि हम अमेरिका की या विलायत की डिग्री लाये हैं। इनकी क्या इज्जत लड़कों में होगी? इनसे उन्हें क्या प्रेरणा मिलेगी? क्या कोई उनका अनुशासन मानेगा? हमें तो इसी बात का आश्चर्य होता है कि लड़के इतना भी अनुशासन कैसे मानते हैं? क्योंकि हिन्दुस्तान की बड़ी खानदानी है। मैं निन्दा नहीं कर रहा हूँ, दुःख के साथ बोल रहा हूँ।......इस ढंग से नौजवानों को प्रेरणा नहीं मिल सकती। नया युग आया है, नया विचार आया है। उस विचार को लेकर समाज में जाइये, तो लोग उल्लसित होंगे। सबमें स्फूर्ति आयगी और सब काम में लग जायँगे।

अगले दिन तेरह मील चलकर हम लोग रानी घाघर पहुँचे। शाम को जब बाबा प्रार्थना के लिए मंच पर बैठने लगे, तो सबने जोर से जयनाद किया: "हमारे गाँव में बिना जमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा।" बाबा ने पूछा कि बेजमीनों को जमीन कौन देगा? जमीन कहाँ से आयगी? अगर लोग यह समझते हों कि हम लोग नारा लगाते जायँगे और सरकार या और कोई दूसरा आकर जमीन देने का इन्तजाम कर देगा, तो यह कहना होगा कि उन्होंने ठीक से नारे का मतलब ही नहीं समझा। इस नारे का मतलब यही है कि हम अपने गाँव का हिसाब करके, सब आपस में मिलकर जमीन बाँट लेंगे। इस तरह अगर गाँव-गाँव के लोग इस बात का जिम्मा उठा लें, तो काम फौरन होगा, ऐसा हमें विश्वास है।

संतों की राह पर

प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने कहा, "संथाल कौन?" "संतों की राह पर

चलनेवाले संथाल।" जब ये लोग कुदरत के साथ काम करते हैं, तो संतों की राह पर चलते हैं। विद्वान लोग संथाल का क्या अर्थ लगायेंगे, पता नहीं। पर मैं यह अर्थ लगाता हूँ कि संतों की राह पर चलनेवाले लोग—"संथाल"।

कई रोज से बाबा के स्वास्थ्य पर इस पहाड़ी इलाके की यात्रा का असर साफ दिखाई पड़ता था। आज जब वे प्रार्थना से लौटे, तो उनको बुखार था। रात भर बुखार रहा। सुबह साथियों ने उनसे प्रार्थना की कि आज आप पैदल यात्रा न करके किसी सवारी में बैठ जायँ। बाबा ने मुस्कराते हुए इनकार किया और कहा, जो आदमी चलता रहता है, उसका भाग्य भी चलता है।

बुखार की परवाह किये बिना बाबा ने यात्रा जारी रखी। साढ़े सात बजे हम लोग फतेहपुर पहुँच गये। बाबा को आज भी दिन भर बुखार रहा। शाम को प्रार्थना के लिए चले, तो १०० डिग्री के ऊपर बुखार था। उसी हालत में उन्होंने प्रवचन भी किया। ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उन्होंने कहा कि हमारा शरीर आज ठीक नहीं है, तो भी जैसा तय है, हम आपकी सेवा करेंगे। यह आग्रह हमने अपने मन से नहीं उठाया। भूदान-यज्ञ का यह कार्यक्रम जो हमने शुरू किया, वह जैसे तय करके कोई कार्यक्रम शुरू करते हैं, वैसे शुरू नहीं किया। जो आदेश हुआ, उसे हम टाल नहीं सके।

इन्सान का बुनियादी हक

बाबा ने आगे बताया कि पाँच करोड़ एकड़ की जो माँग है उसके पीछे आधार क्या है। उन्होंने कहा, मनुष्य के कुछ हक हैं और वे हक कबूल ही करने होते हैं। हमारे यहाँ माना गया है कि हर भूखे का हक है कि या तो उसे खाना मिले या काम मिले। अगर उसे काम नहीं दिया जाता, तो उसे खिलाना समाज का कर्तव्य है। उसी तरह हरएक का हक

है कि जिस ढंग से चाहे, ईश्वर की उपासना करे। उसी प्रकार हर बच्चे के लिए तालीम का इन्तजाम होना चाहिए। ये हक मानने होंगे।

वैसे ही हमारा कहना है कि जो शख्स जमीन की सेवा करने की इच्छा रखेगा और कहेगा कि मुझे जमीन दे दो, मैं उस पर काश्त करना चाहता हूँ, तो उसे माँगने का हक है। जो उसके हिस्से की जमीन है, वह उसे मिलेगी। आजकल लोगों ने कई तरह के ढोंग फैला रखे हैं। कोई कहता है कि एक टुकड़ा दस एकड़ से कम नहीं होना चाहिए। हम पूछते हैं कि आप यह तय करनेवाले होते कौन हैं? आज देश में छत्तीस करोड़ आदमी हैं। मान लीजिये कि कल छत्तीस सौ करोड़ हो जायँ, तो वे जैसा चाहेंगे, करेंगे। लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि भूमि की सेवा करने का हक कुछ को देंगे और बाकी को नहीं। आप रोकनेवाले कौन हैं? जो मिट्टी से पैदा हुआ है, जो मिट्टी की सेवा करना चाहता है, उसे मिट्टी की सेवा का हक है। वह हक कबूल करना होगा। यह ठीक है कि जो लोग दूसरा उद्योग करना चाहें, उन पर जमीन लादने की बात नहीं है। पर जो भी जमीन की काश्त करना चाहेगा, उसे जमीन पाने का हक है। ज्यादा जमीन हो, तो ट्रैक्टर चलेगा, उससे कम हो, तो बैल चलेगा। उससे कम हो, तो कुदाली चलेगी और उससे भी कम हो, तो खुरपी।

भू-सेवा से उपासना

इसके बाद बाबा ने कहा कि जमीन की सेवा करना इबादत है, उपासना है। उपासना के और दूसरे प्रकार भी हो सकते हैं। पर जमीन की सेवा करके जो उपासना करना चाहे, उसे इसकी आजादी होनी चाहिए। यह बुनियादी हक माना जाय। इसलिए हम कहते हैं कि जमीन पाने का अधिकार हर किसीको है। इसी वास्ते यह आन्दोलन है।

रात को बाबा की तबीयत काफी सँभल गयी। दूसरे दिन बाबा ने देवघर सबडिवीजन में प्रवेश किया और चित्रा नामक गाँव में पड़ाव डाला। देवघर में सितम्बर १९५३ में जो कांड हुआ था, उसकी चर्चा

करते हुए बाबा ने कहा कि हम आशा करते हैं कि पुरुषार्थ से वह कालिमा धोयी जायगी और कम-से-कम इस सबडिवीजन के लोग दो बातें जरूर करेंगे : एक तो वे छुआछूत का भेद कतई मिटा देंगे और दूसरे, सामाजिक विषमता के साथ-साथ आर्थिक विषमता पर भी प्रहार करेंगे।

समाज का कलंक

बाबा ने कहा कि आज हृदय-शुद्धि की जरूरत है। प्रचार की उतनी जरूरत नहीं, जितनी आचार की है। हरिजन को न सिर्फ मंदिर में, बल्कि हृदय-मंदिर में भी स्थान मिलना चाहिए। यह हरिजन छात्रावास तो खतम हो ही जाना चाहिए। हर छात्रावास में उन्हें समान स्थान मिलना चाहिए।

बाबा आगे बोले कि कहा जाता है कि भगवान् ने हरिजन को मेहतर बनाया है। धर्म के नाम पर उसके खिलाफ आर्थिक मोर्चा कायम किया गया। साथ ही यह भी कहते हैं कि यह काम परमेश्वर ने उसे जन्मजात सौंपा है। पूर्वजन्म के कारण उसे सजा मिली है, जो भोगनी चाहिए।

मैं आपसे एक बात सहज ही कह देना चाहता हूँ कि महाराष्ट्र के पचीस-तीस जिलों में ऐसा एक भी मेहतर नहीं, जिसकी मातृभाषा मराठी हो। वे अब मराठी बोल लेते हैं, लेकिन क्या परमेश्वर ने मराठी भाषा-वालों के लिए गैर-मराठी भाषावाले मेहतर बनाये? कारण क्या है? बात यह है कि जब मराठों का राज्य था, तो भिन्न-भिन्न जगहों से क्षत्रिय पकड़कर लाये जाते थे। इन क्षत्रियों को, इन राजवंशियों को पकड़कर जेल में डाल दिया जाता था और मेहतर का काम दे दिया जाता था। मुगलों ने या उनके पहले मुसलमानों ने यह शुरू किया। जेलों में क्षत्रियों ने यह काम किया। समाज तो बेवकूफ था ही। उनको अछूत बनाकर रखा और तब से उनको यही काम करना पड़ा। आज भी मेहतरों में बहुत से राजवंशी मिलते हैं। मैं यह नहीं कहता कि सभी मेहतर इसी तरह मेहतर बने, पर वे पकड़कर जरूर लाये गये। आज

हिन्दुस्तान के आजाद होने पर भी मेहतर की हालत पहले जैसी है। हम सोचते नहीं कि हम आजादी का नाम लेते हैं, लेकिन गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने को राजी नहीं।

भंगी और स्वराज्य

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच जो अन्धाधुन्ध दुश्मनी हो गयी, तो सिन्ध से तमाम हिन्दुओं को भगा दिया गया। वहाँ जो मेहतर थे, वे भी हिन्दू थे और वे हिन्दुस्तान आना भी चाहते थे। लेकिन उनको यहाँ नहीं आने दिया। सिन्ध अहिन्दू बने, यह उन्हें मंजूर था। उन्होंने यह किया भी। पर मेहतरों को रोक लिया, यह कहकर कि वे 'जरूरी खिदमत' (Essential Services) हैं। उन्हें आखिर वहीं रहना पड़ा। क्या यह आजादी है? क्या आजादी के यही माने हैं कि सत्ता अंग्रेज के हाथ में न रहकर हमारे चन्द लोगों के हाथ में आ जाय। जो मूल्य समाज में चलते हैं, वे चलते ही रहें।

समझने की बात है कि जहाँ हमने उनको अछूत माना, वहाँ सामाजिक विषमता ही नहीं, आर्थिक विषमता भी आ गयी। इसका परिणाम यह है कि आज हिन्दुस्तान में आर्थिक विषमता और सामाजिक विषमता ताने-बाने की तरह बुनी गयी है। दोनों मिलकर एक हो गयी हैं। इस वास्ते भूमिहीनों का जो मसला हमने उठाया है, वह आपको भी उठाना चाहिए। भूमि सबको मिलनी चाहिए।

पूँजीवाद और साम्यवाद

बाबा ने आगे कहा कि एक दफा हमारे एक साथी ने कहा कि विनोबा का काम पूँजीवाद से लड़ने का मोर्चा है, पूँजीवाद से उसकी दुश्मनी है। ठीक बात है। लेकिन पहला पूँजीवादी दुश्मन अपना शरीर है, जो कि पूँजीवादी व्यवस्था में पला है। शरीर को कुछ आदतें पड़ गयी हैं, जो छोड़नी होंगी। अपने हाथ से काम करना होगा। पहला मोर्चा अपने घर का ही है। पूँजीवाद अनेक तरह का होता है। पूँजीवाद

माने पूँजी बनाना। यह काम विकेन्द्रित रूप से नहीं होता। केन्द्रित ग से किया जाता है। आजकल जो अपने को 'कम्युनिस्ट' कहते हैं, वे भी पूरी तरह पूँजीवादी हैं। कम्युनिस्ट उत्पादन में पूँजीवाद चाहते हैं और बँटवारे में समानता चाहते हैं। ऐसे मोह में पड़े हैं कि उत्पादन केन्द्रित हो और बँटवारा समान करें। वे पूँजीवाद के बेटे हैं। उसकी प्रतिक्रिया हैं। वे स्वतन्त्र विचारक नहीं। जीवन का उनका स्वतंत्र दर्शन नहीं। पूँजीवाद से यूरोप में जो बुराइयाँ आयीं, उनकी प्रतिक्रिया-स्वरूप वह पैदा हुआ। वह 'सिन्थैसिस' नहीं, 'एण्टी-थीसिस' है। पूँजीवाद की 'थीसिस' के खिलाफ 'एण्टी-थीसिस' है। 'सिन्थैसिस' तो वह होगा, जिसमें जीवनतत्त्व पूरा हो। इसलिए उसमें उत्पादन के लिए पूँजीवाद को कबूल कर लिया। लेकिन हमारा काम प्रतिक्रियारूप विचार से नहीं चलेगा। हमको तो जीवन की बुनियाद बनानी होगी और इसके आधार पर सारा महल खड़ा करना होगा।

विरोधी भक्ति नहीं

यह प्रतिक्रियावादी, जिनका ध्यान करते हैं उनमें तन्मय हो जाते हैं। जैसे रावण की राम-विरोधी भक्ति, कंस की कृष्ण-विरोधी भक्ति। परिणाम क्या आया? यही कि रावण राम में समा गया, रामरूप बन गया और कंस कृष्णरूप बन गया। इसीको विरोधी भक्ति कहते हैं। कुछ हरिजन कहते हैं कि हमारे लिए खास नौकरियाँ रखो। हम कहते हैं कि कैसे मूर्ख हो। खास हक माँगने के माने हैं कि अपना जो रूप आज कायम है, वह हमेशा बना रहे। माने, अपनी जो कमी थी, उसीको कायम रखना चाहते हैं। हम कहते हैं कि हमको तो हरिजन-परिजन का भेद ही मिटाना है। कोई हरिजन-परिजन नहीं। सब भारतीय। सब हिन्दुस्तान के नागरिक। सबको समान भाव से हक मिलना चाहिए। पिछड़े हैं, उन्हें उठाने के लिए ज्यादा कोशिश करनी चाहिए। माता सबको समान प्यार करती है। इसके माने यही हैं कि वह कमजोर की

तरफ ज्यादा ध्यान देती है। कमजोरों की तरफ ज्यादा ध्यान देना समझ में आता है। पर प्रतिक्रियारूप एक तत्त्व उठा लेते हैं, तो जातिवाद के मुकाबले प्रति-जातिवाद पैदा होता है और वह उसका स्थान ले लेता है।

एक और मिसाल लें। कांग्रेसवाले हैं और प्रजा-समाजवादी हैं। जितने सत्तापरायण कांग्रेसवाले हैं, उससे कम सत्तापरायण प्रजा-समाजवादी नहीं। फर्क यह है कि एक हैं, सत्ताधारी और दूसरे हैं, सत्ताभिलाषी। सत्तावादी दोनों हैं। परिणाम यह होता है कि जितनी बुराइयाँ कांग्रेस में हैं, उतनी ही प्रजा-समाजवादी पक्ष में हैं। अगर कांग्रेस जातिवाद पर जोर देती है तो वे भी देते हैं, क्योंकि चुनाव जीतना है। अगर चुनाव जीतना है, तो उनके हथकंडे हमें भी करने चाहिए। परिणाम यह होता है कि सामनेवाले की सारी बुराइयाँ अपने पक्ष में भी दाखिल होती हैं। सबके सब एक ही हैं। दोनों परस्पर लड़ते दीखते हैं, पर माद्दा एक ही है। इस वास्ते हमको देखना चाहिए कि भूदान-यज्ञ में क्या फर्क पड़ता है। जातिवाद मिटाने में हमें प्रतिक्रियावादी नहीं होना चाहिए। हमारा कहना है कि स्वतंत्र दर्शन बनाना चाहिए।

तारीख १६ को हमलोग करों में थे। यहीं श्री सखाराम देउसकर रहते थे। वे जन्म से महाराष्ट्रीय थे, लेकिन बंगला-साहित्य की उन्होंने इतनी सेवा की कि उसमें अमर स्थान बना लिया। १९१४ में वे इस दुनिया से कूच कर गये। उनकी बेटी और नाती ने बाबा से सुबह भेंट की। शाम को बाबा उनके घर गये और थोड़ी देर तक वहाँ रुके।

अगला पड़ाव पत्रिया में था। उस दिन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने अपील की कि राष्ट्र-धर्म के तौर पर शरीर-श्रम अपनाया जाय।

उन्होंने कहा कि अपने देश को आजादी मिल गयी है। इसलिए अपने तरीके से, अविरोधी ढंग से अपना देश बनायें, तो दुनिया के लिए नमूना हो सकता है। इसलिए अपने देश की ताकत क्या हो सकती है, उसके बनाने का ढंग क्या होगा, यह हमें देखना होगा।

श्रम-शक्ति की उपासना

पहली बात, अपने देश की ज्यादा-से-ज्यादा जन-संख्या देहात में रहती है और बहुत पुराने जमाने से रहती आयी है। देश देहातों में बँटा हुआ है। इसलिए यहाँ केन्द्रित सत्ता नहीं चल सकती। विभाजित, विकेन्द्रित सत्ता ही यहाँ काम करेगी। इसलिए यहाँ का सारा कारोबार विभाजित रखना होगा। कुछ बातें रखेंगे केन्द्र के लिए। जैसे रेल्वे हैं, थाने हैं, प्रान्त-प्रान्त का आपसी सम्बन्ध है। पर गाँव का सारा कारोबार गाँव के ही हाथ में होगा। गाँव अपने आप पर निर्भर होगा और अपना इन्तजाम देखेगा। यह अगर हो, तो देश जल्दी-से-जल्दी तरक्की करेगा और बनेगा।

दूसरी बात सोचने की यह है कि यहाँ की मुख्य शक्ति श्रम-शक्ति है और जमीन का रकबा कम है। जिस देश में श्रम-शक्ति ज्यादा हो और जमीन का रकबा कम हो, वहाँ यंत्रों का स्थान सीमित ही होगा। जिस देश में जमीन ज्यादा हो और जन-संख्या कम हो, वहाँ यंत्रों के लिए ज्यादा मौका है। हमारी खास शक्ति श्रम-शक्ति है। उसकी पूर्ति में औजार चाहिए।

तीसरी बात यह है कि देश में जो श्रम-शक्ति है, वह आज बेकार पड़ी है। लोगों को काम करने की आदत न रहे और बहुत से लोग काम न करते हुए जीवन बितायें, तो देश नहीं चलेगा। इसलिए श्रम-शक्ति की उपासना करनी होगी। याने जैसे हम सरस्वती की पूजा करते हैं, तो महज कागजवाली नहीं, बल्कि विद्याभ्यास करते हैं, उसी तरह श्रम-शक्ति की उपासना हमको करनी चाहिए। यह नया धर्म हरएक को समझना चाहिए।

मिसाल के लिए हमारे यहाँ बिना स्नान किये कोई दोपहर का खाना नहीं खाता। यह विचार सारे देश में दृढ़ हो गया है। यह बहुत ही अच्छा विचार है। इस वास्ते हमारे यहाँ हर काम में स्नान चलता है।

गुरु के स्नान कराने पर विद्यार्थी स्नातक बनता था। स्नान दूसरे लोग भी करते हैं, पर स्नान को एक उपासना का रूप हमारे यहाँ ही दिया गया है। जैसे यह विचार हिन्दुस्तान में रूढ़ हुआ, वैसे ही आज के जमाने में यह विचार रूढ़ करना चाहिए कि बिना श्रम किये खाना नहीं है।

शनिवार को हम जामतारा में थे। पड़ाव पर पहुँचते ही एक लड़के ने बाबा को एक गुण्डी सूत पेश किया, जो निहायत कच्चा, असमान और गंदा था। बाबा को यह देखकर बड़ा दुःख हुआ। बोले, कितनी भयंकर निष्क्रियता और संस्कारहीनता हम सब पर सवार है, इसका भान इस सूत से मिलता है। सफाई तो अत्यन्त महत्त्व की चीज है। पहले सफाई, बाद में उपासना।

दोपहर को एक कार्यकर्ता बाबा से मिले और कहने लगे कि आप कानून के द्वारा भूमिहीनों को भूमि क्यों नहीं दिला देते? यह सुनकर बाबा मुस्कराये, कितनी बार इस सवाल का जवाब मैं दे चुका हूँ! आप लोग कुछ पढ़ते ही नहीं! उस दिन शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने विस्तार से इस सवाल पर रोशनी डाली।

कानून की मर्यादा

बाबा ने कहा कि लोग मुझसे पूछते हैं कि आप कानून से काम क्यों नहीं करते? मैं जवाब देता हूँ कि सरकार आपकी है। आपने वोट देकर उसको चुना है। आप उससे काम करा लो। हम रोकते नहीं। परन्तु क्या सरकार कानून से लोगों के हृदय बदल सकती है? क्या जहाँ कठोरता है, वहाँ कानून से करुणा आ सकती है? जहाँ द्वेष है, वहाँ प्रेम पैदा हो सकता है? जहाँ बटोरने की वृत्ति है, वहाँ बाँटने की वृत्ति आ सकती है? जहाँ लेने की वृत्ति है, वहाँ देने की वृत्ति पैदा हो सकती है?

क्या कानून से, सत्ता से ये काम होते हैं? अगर कानून से विचार-

क्रान्ति हो सकती होती, राजसत्ता से क्रान्ति हो सकती होती, तो भगवान् बुद्ध के हाथ में राजसत्ता थी ही, फिर उन्हें उसका त्याग क्यों करना पड़ता ? उन्हें विचार सूझा कि लोग दुःख से भरे हैं, पर उन्होंने रास्ता ऐसा ही पकड़ रखा है कि उससे दुःख सतत बढ़ता ही रहे। जब यह बात उनको सूझी, तो उन्होंने सब-कुछ छोड़ दिया और गम्भीर एकान्त में जाकर तपस्या की, चिन्तन किया, मनन किया। यह जो गंगा बह रही है, उसे दूसरी दिशा में कैसे बहाना, इस पर उन्होंने चिन्तन किया। जहाँ निष्ठा पैदा हुई, वहाँ वह करुणा के रूप में निकल पड़ी। तब वह राजपुत्र पैदल-पैदल घूमने लगा और उसने दुनिया पर असर डाला। आज भी दुनिया महसूस कर रही है कि जो बात उन्होंने कही थी, उसीसे हमारी भलाई होगी। अगर बुद्ध भगवान् राज्य से चिपके रहते, कानून से काम करने की कोशिश करते, तो क्या होता ? परन्तु उन्होंने देखा कि जो मूल्य समाज में मान्य हैं, उनको अमल कराने में ही कानून की सारी ताकत खतम होती है। परन्तु जब कोई नया मूल्य लाना चाहते हैं, तो उसके लिए कानून क्या करेगा ?

भगवान् को भूख लगी है

आखिर में बाबा ने कहा कि पुराने लोग क्या करते हैं ? भोजन के पहले थाली भगवान् के सामने रखते हैं और फिर प्रसाद ग्रहण करते हैं। हम पूछते हैं कि प्रसाद ग्रहण करने का यह हक हमने जो कमाया है, भगवान् की शक्ति से ही कमाया है। जो कुछ है, उसीका है। क्या यह ठीक बात है ? इस पर वे 'हाँ' कहते हैं। हमने कहा कि आज तक भगवान् को भूख नहीं लगी थी। इसलिए वह आपकी पूरी थाली लौटाता था। लेकिन अब भगवान् को भूख लगी है। इसलिए वह एक हिस्सा खायेगा, तो उसे एक हिस्सा खिलाना चाहिए। इस तरह भगवान् को देते जाइये, देते रहिये और खाते रहिये। "त्यक्तेन भुञ्जीथाः !" इस तरह

भोग करोगे, तो भगवान् उस भोग से प्रसन्न होगा। जंगल में जाकर सिर नीचा करके पैर ऊपर टाँगने और तपस्या करने की जरूरत नहीं है। भगवान् को अर्पित करके फिर खाओ, तो वह खाना भी भक्ति है। प्रसाद ही पाओ। पहले दे और पीछे खा। तब वह खाना यज्ञ की आहुति बन जायगा।

● ● ●

बड़े सौभाग्य की बात है कि हिन्दुस्तान के पूरे इतिहास में—यह इतिहास छोटा नहीं, पाँच हजार साल का तो ज्ञात इतिहास है—बाहर के किसी देश पर कभी आक्रमण किया गया हो, ऐसा नहीं मिलता। ऐसे देश के लिए ईसामसीह का सन्देश उसकी अपनी बपौती मानी जायगी। हम कहेंगे कि अहिंसा का जो विचार इतना यहाँ फैला, ईश्वर की भक्ति में यहाँ के लोग रमे हुए हैं, हिन्दुस्तान में कहीं भी जाइये, ईश्वर के नाम पर लोग मुग्ध हैं—इस स्थिति में ईसामसीह का स्वीकार होना कोई नयी बात नहीं। ......हमारा दावा है कि इस भूदान-यज्ञ के जरिये ईसामसीह का पैगाम घर-घर फैलेगा।

जब बाबा बिहार से बिदा ले रहे थे, उन दिनों के आखिरी के दो प्रसंग बहुत याद आते हैं :

(१) बिहार की कोयले की खानों के मालिकों ने—भारतीय और यूरोपियन, दोनों ने—कुएँ बनाने के लिए साधनदान के रूप में पन्द्रह हजार टन कोयले का दान किया।

(२) एक दिन शाम को एक बंगाली जमींदार बाबा के पास सत्ताईस बीघा जमीन का दान लेकर आये। पाँच मिनट बाबा से उनकी बातचीत हुई। फिर वे ढाई सौ बीघे की एक छोटी-सी रियासत दान में देकर चले गये।

× × ×

सन्थाल परगना जिले में दो दिन और बिताकर २१ दिसम्बर को बाबा मानभूमि जिले में दाखिल हुए और कुमारडूबी की मजदूर-बस्ती में कयाम किया।

मूल पर प्रहार

उस दिन प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने जाहिर किया कि जो काम हमने उठाया है, वह सबसे पहले मजदूरों को ऊपर उठाने का काम है। हम मजदूरों का उत्थान करना चाहते हैं, तो हमने शुरुआत खेतों में काम करनेवाले मजदूरों से क्यों की, इसका एक राज है। जरा सोचेंगे, तो वह राज मालूम हो जायगा। जो सबसे पिछड़े लोग हैं, जिनकी आवाज उठानेवाला कोई नहीं है, वे हैं खेतों में काम करनेवाले मजदूर। शहरों में जो मजदूर हैं, वे भी देहात के ही हैं। वे वहाँ से भगाये गये हैं, पर मार भगाये नहीं गये हैं। लेकिन उनको भगाने का ढंग भी मार भगाने का ही ढंग है, क्योंकि उनके रोजगार छीने गये हैं। उनके कुटुम्ब वहीं देहात में रहते हैं और वे केवल पैसा कमाने के लिए शहरों में आते हैं। तो मूल में, जो उद्गम स्थान है, जो गंगोत्री है, वहीं पर पहला आघात, पहला आक्रमण करना है।

मालकियत तोड़ें

आज मालकियत को जिन्दा रखने में बड़े लोगों का ही हाथ नहीं है, छोटे लोगों का भी है। बड़ा अगर अपने को हजार एकड़ का मालिक समझता है, तो छोटा भी अपने को दो एकड़ का मालिक समझता है। एक एकड़वाला भी अपने को मालिक समझता है। दो एकड़वाला क्या करता है? अपने खेत की मेंड़ एक एकड़वाले के खेत में छह इंच घुसा देने पर मन-ही-मन खुश होता है, अपने को अक्लमंद समझता है कि दो एकड़ की जगह सवा दो एकड़ कर लिया। धीरे-धीरे दस-पाँच साल में आधा एकड़ बढ़ा लिया। यह चूसने का सिलसिला बड़े और छोटे, सबमें चला है। शहरवाले चूसते हैं देहातवालों को, अमीर लोग चूसते हैं गरीब को, गरीब चूसते हैं औरतों को, औरतें बैलों को। इस तरह शृंखला बन गयी है। हम कहते हैं कि इसे तोड़ना शुरू करो। कानून का अधिकार, कागज का अधिकार बड़ा भी दिखाता है, छोटा भी

दिखाता है। हम कहते हैं कि आपके पास जो ये छोटे-छोटे कागज हैं, एक एकड़ के, दो एकड़ के, इन्हें होली में सुलगा दो। कम-से-कम तुम लोग तो कहो कि यह मालकियत हमने छोड़ दी। फिर बड़े-बड़े मालिकों को हम समझा देंगे कि तुम भी छोड़ दो। नहीं छोड़ते हैं, तो सब छोड़ने की नौबत आयगी। लेकिन वे अक्लवाले हैं। जिस तरह राजाओं ने अक्ल से पहचान लिया और राज्य छोड़ दिये, अपनी इज्जत बचा ली, उसी तरह ये भी करेंगे। लेकिन इसके लिए हम पहले गरीबों को समझाते हैं। जब तक कुल जमीन गाँव की नहीं होती, तब तक हम चैन से बैठनेवाले नहीं हैं, न लोगों को चैन से बैठने देंगे।

हम चाहते हैं कि सब मजदूर अपनी आमदनी का एक हिस्सा व्यक्तिगत नाते दें। यूनियन के प्रस्ताव से नहीं। खुद दें! जरूर दें!! और मालिकों से तो हमारी माँग पहले से है ही।

श्रीमानों से भेंट

तीन दिन बाद हमारा पड़ाव धनबाद में था। यह इस जिले की सबसे मशहूर बस्ती है। यहाँ पर कोयले की खानों के मालिकों के दफ्तर और निवासस्थान हैं। देश भर में कोयले की यही सबसे बड़ी मंडी मानी जाती है। तीसरे पहर कोई सात-आठ कोयलेवाले बाबा से मिलने आये। बाबा ने उनसे कहा कि हम आपसे कोई चीज लेने नहीं आये हैं, बल्कि वे विचार आपको देने आये हैं, जो हमें लगातार कई बरस से घुमा रहा है। यह सुनकर उन सबका डर निकल गया। बाबा ने उनको संपत्तिदान-यज्ञ का रहस्य समझाया और उसका साहित्य पढ़ने की विनती की। चर्चा के आखिर में बाबा बोले कि मैं जानता हूँ कि एक बार यह विचार आपके दिल में बैठ जाय, तो आप खुद चैन लेनेवाले नहीं हैं। फिर तो आप मुझे न केवल अपना हिस्सा देंगे, बल्कि अपने मित्रों से भी दिलायेंगे।

इन व्यापारी भाइयों पर इस मीटिंग का बड़ा अच्छा असर रहा।

उनमें से एक सज्जन बाद में कहने लगे कि हम तो कुछ और ही समझ रहे थे। हमें पता नहीं था कि बाबा इस तरह व्यवहार करते हैं। हम तो डर रहे थे कि वह हमसे किसी कागज पर दस्तखत करायेंगे, लेकिन बात कुछ और ही निकली। एक दूसरे महाशय बोले कि अगर हमें इसकी खबर होती, तो हममें से छह-सात आदमी न आकर साठ-सत्तर आदमी आते!

इसी दिन हमारे पद-यात्री दल में गांधीजी के प्रसिद्ध अनुयायी, नव-जीवन ट्रस्ट के जन्मदाता और देश के वयोवृद्ध सेवक स्वामी आनन्द शामिल हुए। वे लगभग एक हफ्ते तक रहे।

तारीख २५ दिसम्बर—महात्मा ईसा का स्मरण-दिन। हमारा पड़ाव राजगंज में था। उस दिन प्रार्थना के बाद बाबा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुआ। समाधिस्थ होकर वे लगभग पौन घंटे तक भगवान् ईसामसीह और सर्व-धर्म-समन्वय पर बोलते रहे। इस प्रवचन को सुनकर स्वामी आनन्द कहने लगे कि ईसाई और इसलाम धर्म की महत्ता और भारत में उनके स्थान पर यह एक ऐतिहासिक घोषणा है।

मानव-पुत्र ईसा

बाबा ने अपने प्रवचन में कहा, आज का दिन बड़ा पवित्र है, आज महात्मा ईसा का स्मरण-दिवस सारी दुनिया में मनाया जाता है। इस तरह का रिवाज सब देशों, धर्मों और समाजों में मौजूद है। इन दिनों हमने धर्मों में भेद-भाव पैदा किया है। समाज-समाज एक-दूसरे से लड़ते भी हैं। देश-देश के बीच दुश्मनी चलती है, लेकिन इन सब बातों की तुच्छता दिखानेवाले कुछ महात्मा सारी दुनिया में हो गये हैं, जो किसी देश, पंथ, सम्प्रदाय या समाज-विशेष के नहीं कहे जाते। वैसे सत्पुरुषों में महात्मा ईसा की गिनती है। वे अपने को मानव-पुत्र कहते हैं। मानव-पुत्र कहने के माने हैं कि कोई संकुचित उपाधि, पदवी या दर्जा कबूल करने को वे तैयार नहीं। वे अपने आपको सारे मानव-समाज का प्रतिनिधि समझते हैं। मानव के बल के और उसकी दुर्बलता के भी वे

प्रतिनिधि थे। इसलिए महात्मा ईसा ने सारी मानव-जाति की शुद्धि के लिए बड़ा भारी प्रायश्चित्त कर दिया। उनका स्मरण जहाँ-जहाँ खिस्ती धर्म प्रचलित है, वहाँ तो होता ही है, उसके अलावा सारी दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी उनका स्मरण पवित्र माना जाता है।

भारत भूमि के लिए तो यह दिन विशेष पवित्र माना जाता है। सब लोग नहीं जानते कि ईसामसीह के कुछ ही दिन पीछे मलाबार के किनारे मिशन आया था। तब से खिस्ती धर्म के अनुयायी इस भूमि पर हैं। दुर्दैव की बात है कि खिस्ती धर्म के साथ अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तुगीज आदि राज्यों की राजनीति जुड़ गयी। उसके परिणामस्वरूप कई काम हिन्दुस्तान में भी हुए। पर उनसे जितनी प्रतिष्ठा खिस्ती धर्म की होनी चाहिए थी, वह नहीं हुई। एक प्रकार की प्रतिक्रिया ही हुई। अंग्रेजी शासन से जुड़ जाने के कारण खिस्ती धर्म के लिए एक मिथ्या भावना भी चली। पूर्वग्रह बना। यह बड़े दुःख की बात है। यह बात अब मिट रही है। बहुत-कुछ मिटी भी है और तैयारी है कि हिन्दुस्तान यह महसूस करे कि खिस्ती धर्म भी हिन्दुस्तान का एक धर्म है। मैं तो समस्त भारत की तरफ से कह सकता हूँ कि भारत को ईसामसीह कबूल है। उनके सन्देश को हम शिरोधार्य करते हैं। हम पूरी तरह से उसको अमल में लाने के लिए उत्सुक हैं। उनको हम अपने ही परिवार का सदस्य समझते हैं। हमारा दावा है कि ईसामसीह की तालीम का जितने व्यापक परिमाण में सामूहिक प्रयोग महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत ने किया, उतना कहीं नहीं हुआ। आज का पवित्र दिन हिन्दुस्तान के लिए और दुनिया के लिए अन्तःपरीक्षण का दिन होना चाहिए।

विज्ञान और धर्म

आज दुनिया की हालत ऐसी है कि सारी दुनिया में कशमकश चल रही है। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि जिन देशों ने एक-दूसरे के खिलाफ ज्यादा-से-ज्यादा पैमाने पर हिंसा का आयोजन किया, वे देश

भगवान् ईसा के अनुयायी कहलाये। हम समझते हैं कि यह बात बहुत ज्यादा दिन नहीं चलेगी और जैसे ईसामसीह ने आशा की थी कि प्रभु का राज्य, जो आसमान पर आच्छादित है, वह जमीन पर भी उतरेगा। उनकी भविष्यवाणी निकट भविष्य में सिद्ध होगी। हम ऐसी आशा करते हैं कि शस्त्रास्त्र बढ़ाने में ही अपनी और दुनिया की रक्षा समझनेवाले देश ईसा की तालीम के कारण नहीं, विज्ञान के कारण यह बात समझ जायँगे। विज्ञान के जमाने में यह चीज ज्यादा दिन नहीं चलेगी कि शस्त्रास्त्र बढ़ाते चले जायँ और शक्ति का संतुलन कायम रखकर शान्ति की कोशिश करें। शान्ति का अशान्त उपाय ज्यादा दिन नहीं चलेगा। विज्ञान औजारों को सीमित नहीं रहने देगा। इस वास्ते मनुष्य के लिए सोचने का मौका विज्ञान ला देगा। मनुष्य जब शस्त्रास्त्र का परित्याग करेगा और परस्पर प्रेम और सहयोग से जीना सीखेगा, दूसरों के लिए जीना सीखेगा, देने में ही सुख का अनुभव करेगा, तभी बेड़ा पार होगा, यह विज्ञान से प्रत्यक्ष सिद्ध होगा।

ख्रिस्ती-धर्म, इसलाम और ब्रह्मविद्या

भारत भूमि का सौभाग्य है कि यहाँ के लोग विचार में, चिन्तन में भेद-भाव नहीं करते। यहाँ की जनता को राष्ट्रवाद भी मुश्किल से कबूल होता है। उसे अन्तर्राष्ट्रवाद समझना आसान है। अगर यहाँ के किसी आदमी को समझाया जाय कि तुम बिहारी हो, बिहार का अभिमान रखो, बाहरवालों के साथ दूसरा व्यवहार करो, थोड़ा-थोड़ा फर्क रखो, तो यह बात उसकी समझ में नहीं आयगी। पर यह बात कि प्राणीमात्र पर प्रेम करो, सिर्फ मानव पर ही नहीं, सब पर प्रेम रखना धर्म है, तो इस बात को वह फौरन समझ लेगा। इस वास्ते मैं तो आशा रखता हूँ कि भारत ने ईसामसीह को कबूल ही कर लिया। हमारे ख्रिस्ती भाई यहाँ की पृष्ठ-भूमि को कबूल करें, तो ख्रिस्ती-धर्म में परिपूर्णता आयेगी। सब धर्मों को चिरपूर्णता आयेगी, सबका संगम ही हो जायगा। इसलिए यहाँ के मुसलमान,

यहाँ के खिस्ती, जिनकी परम्परा भारत के बाहर भी है, उसको वे अपने धर्म का और अपने जीवन का अंग समझें। पड़ोसी पर प्यार करो, दुश्मन पर प्यार करो; क्यों करो ? इसका उत्तर हिन्दुस्तान की ब्रह्मविद्या देती है। उस ब्रह्मविद्या का यहाँ के खिस्ती, मुसलमान मान करें, तो ये जो चाहते हैं, उसे बल मिलेगा, जो प्रचार वे चाहते हैं, वह सहज होगा।

एक प्रकार का भाईचारा इसलाम में है। यह सबको कबूल है। सेवामय काम करने की प्रवृत्ति खिस्ती-धर्म की विशेषता है। यह भी सबको कबूल है ये दोनों चीजें हम जल्द करना चाहते हैं। इन दोनों के कारण हम अपने को मुसलमान, खिस्ती कबूल करते हैं। भारत के हिन्दू के नाते, मैं कहना चाहता हूँ कि इसलाम और खिस्ती-धर्म मुझे कबूल हैं। लेकिन यह कबूल करने से मेरा हिन्दुत्व नहीं मिटता, बल्कि वह खिलता है और प्रकाशित होता है। क्योंकि इस भूमि में जो ब्रह्मविद्या बनी, वह ब्रह्मविद्या एक बहुत मजबूत चीज बन जाती है। इसलाम धर्म के भाई-चारे के लिए और खिस्ती-धर्म की सेवावृत्ति के लिए यहाँ का एक विशेष खिस्ती-धर्म सिद्ध होगा, एक विशेष इसलाम-धर्म होगा। भारत भूमि के रंग से उसमें एक विशेष बल आयेगा, उसकी प्रभा विशेष आकर्षक होगी।

मेरी यह भी मान्यता है कि अब समाज को इस तरफ बढ़ना होगा कि हम अपने जीवन के लिए किसी पशु की हत्या नहीं करेंगे, पशु को अपना भक्ष्य नहीं समझेंगे। अगर हम उनकी रक्षा नहीं कर सकते, तो कम-से-कम उनको भक्ष्य न बनायें। यह भारत का विशेष सन्देश है, जो यहाँ की ब्रह्मविद्या से निकला है। इसलिए यहाँ के जितने धर्म हैं, वे सब इस बात पर पहुँचे कि मानव के लिए सबसे उत्तम आहार फला-हार, शाकाहार होगा। मुझे मालूम है कि आज दुनिया में इतना अन्न नहीं है, अन्न की कमी है। पर मानवता के विकास के लिए, मानव की परिपूर्णता के लिए, यह जरूरी है कि मानव को मांसाहारी नहीं रहना चाहिए।

भारत को ईसा कबूल है

मैंने एक दावा किया कि खिस्ती-धर्म पर अमल करने का दावा हिन्दुस्तान को हासिल है। दूसरा एक और नम्र दावा है। मेरी आत्मा कहती है कि यह जो भूदान-यज्ञ चला है, इसमें ईसामसीह का आशीर्वाद मुझे सतत हासिल है। बुद्ध-भूमि गया में मैंने कहा था कि पड़ोसी के जीवन से अपने जीवन को अलग मानें, पड़ोसी की चिन्ता को अपनी चिन्ता न समझें, तो यह कोई मानवता है? इसलिए भूमि पर आज जो मालकियत चल रही है, वह हम मिटाना चाहते हैं। इस तरह की मालकियत का दावा करना अभक्ति अथवा नास्तिकता का दर्शन है। 'ईश्वर' शब्द का अर्थ ही है प्रभु, मालिक, स्वामी। इसलाम में मालिक कहा है। खिस्ती-धर्म में 'लार्ड' कहा है, हम 'प्रभु' कहते हैं। तीनों का एक ही अर्थ है कि स्वामी वह है। अगर हम मालकियत का दावा करते हैं, तो नास्तिक बन जाते हैं। मालकियत हाथ में रखकर दूसरों पर थोड़ी दया करना, थोड़ा प्यार करना, विज्ञान के युग में नहीं चलेगा। अब तो पूरा प्रेम करना होगा।

नानक पूरा पाइयो, पूरे के गुण गाऊँ।
पूरा प्रभु अराधिया, पूरा आकर नाऊँ॥

अधूरा प्रेम कबूल न होगा। जैसे कबीर ने कहा था:

कहे 'कबीर' मैं पूरा पाया,
सब घर साहिब दीठा।

कबीर ने 'साहिब' शब्द का उपयोग किया है, ईश्वर को याद किया है। प्रभु, लार्ड, मालिक को याद किया है। साहिब भी वही है। पूरा दर्शन हो गया। हमें अगर पूरा दर्शन होता है, तो पूरा प्रेम कर सकते हैं। विज्ञान के युग में अधूरा दर्शन नहीं चलेगा। कुछ लोग कहते हैं कि विज्ञान का युग अश्रद्धा लायेगा। मेरा उल्टा मत है कि विज्ञान से सच्ची श्रद्धा आयेगी। जो भक्तिमार्ग अधूरा है, वह पूरा होगा। यह तभी होगा,

जब कि हम अपनी मालकियत मिटाकर सामूहिक मालकियत मानेंगे। आज जो 'कम्युनिस्ट' शब्द निकला है, वह ईसा के अनुयायियों से ही आया है। वे अपना 'कम्यून' बनाते थे। याने मिलकर एक साथ रहते थे। व्यक्तिगत मालकियत नहीं रखते थे। यह बात ईसा के अनुयायियों में ही नहीं, हिन्दुस्तान में भी मानी जाती है। भारत भूमि का दावा भी यही है।

परमेश्वर की बड़ी कृपा है कि हिन्दुस्तान में इसलाम भी आया, खिस्ती-धर्म भी आया, पारसी-धर्म भी आया और यहाँ से बुद्ध-धर्म का विचार दूसरे देशों में फैला। बुद्ध-धर्म के प्रचारक हाथ में तलवार लेकर नहीं निकले। राज्यसत्ता चलाने की बात उन्होंने नहीं कही, केवल ज्ञान की बात की। बड़े भाग्य की बात है कि हिन्दुस्तान की तरफ से पूरे इतिहास में—जो इतिहास छोटा नहीं, पाँच हजार साल का तो ज्ञात इतिहास है—बाहर के किसी देश पर आक्रमण किया गया हो, ऐसा कहीं नहीं मिलता। ऐसे देश के लिए ईसामसीह का सन्देश उसकी बपौती मानी जायगी। हम कहेंगे कि अहिंसा का जो यह विचार इतना यहाँ फैला, उसका यही कारण है कि ईश्वर की भक्ति में यहाँ के लोग रमे हुए हैं। हिन्दुस्तान में कहीं भी जाइये, ईश्वर के नाम पर लोग मुग्ध हैं। इस स्थिति में ईसामसीह का स्वीकार होना कोई नयी बात नहीं है। यह जरूर है कि हमारे आचरण में गलती है। हम माँगते हैं क्षमा उस प्रभु की······(बाबा कुछ देर के लिए शान्त रहे)······वह हमें क्षमा करेगा। जब ईसामसीह ने उस शख्स पर क्षमा की, जिसने उसे शूली पर चढ़ाया······प्रभु अत्यन्त क्षमाशील है······(बाबा का गला भर आया और वे एक मिनट शान्त रहे)······वह हमारे ऊपर क्यों क्षमा नहीं करेगा ? हम नहीं कहते कि हम पुण्यवान हैं, हम बहुत पापी हैं। पर यह जो विचार है, वह शुद्ध विचार है। ईसा का सन्देश सहजग्राह्य है।

भाइयो, ईसा का जन्म गोशाला में हुआ। हमारी भाषा में 'ह्युमेनिटी' का तरजुमा करना मुश्किल होता है। इसलिए नहीं कि कोई शब्द नहीं

मिलता, बल्कि इसलिए कि 'ह्युमेनिटी' शब्द में छोटा विचार है। यहाँ चलता है 'भूतदया'। 'भूतदया' में मानव-दया आ ही जाती है। इसलिए हमारा हृदय ईसामसीह के सन्देश के लिए खुला है......(बाबा का गला रुँध गया और वे कुछ देर शान्त रहे)......आज के पवित्र दिन हम उनका स्मरण करते हैं।

भूदान से ईसा का पैगाम फैलेगा

मुझे इस बात की खुशी है कि मलाबार के गिरजाघरों में सबने जाहिर कर दिया कि भूदान-यज्ञ का कार्य ईसामसीह की राह पर चल रहा है। इसलिए सबको इस पर चलना चाहिए। उन्होंने यह बात ठीक ही कही। हमारा दावा है कि इस यज्ञ के जरिये ईसामसीह का पैगाम घर-घर फैलेगा। ईसामसीह का कहना था कि नाम में सार नहीं। कोई हिन्दू कहलाये, कोई मुसलमान कहलाये, कोई खिस्ती, उसमें क्या रखा है? इसलाम के माने हैं, शान्ति। इसलाम ने चाँद को आदर्श माना है। जिस मनुष्य के आचरण में दया न हो, शान्ति न हो, वह कैसे मुसलमान कहा जायगा? जिसके आचरण में दया हो, चाहे वह मुसलमान न हो, उसे कैसे मुसलमान न कहा जायगा? इसलिए ईसा-मसीह ने कहा था कि जो किसी भूखे को खिलाता है, वह ईश्वर को ही खिलाता है। जो किसी प्यासे को पानी पिलाता है, वह ईश्वर को ही पिलाता है। जो ठंढ में ठिठुरनेवाले किसीको कपड़ा पहनाता है, वह प्रभु को ही पहनाता है। वे धर्म, पंथ, सम्प्रदाय आदि जानते ही नहीं थे। वे मानव-पुत्र थे। मानव-पुत्र के नाते ही हमने यह काम शुरू किया है। इससे ही सारी मानवता प्रफुल्लित होनेवाली है। न ज्यादा कहने की जरूरत है, न लायकी है। प्रभु से यही प्रार्थना है कि हमारी वाणी में करुणा, दया, प्रेम भर दे, तो प्रभु का काम सम्पन्न होगा।......

तारीख २६ दिसम्बर को जब हम मालकेरा में थे, तो श्री जयप्रकाश बाबू भी वहाँ पहुँच गये। मालकेरा में एक सभा में व्याख्यान देने के बाद

वे झरिया चले गये, जो हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा कोयला-उत्पादन केन्द्र है। वहाँ के कुछ कोयले की खानवाले बाबा से मिलने आये। भूदान और सम्पत्तिदान आन्दोलनों का परिचय देने के बाद बाबा ने उनसे कहा कि मुझे जो जमीन मिलती है, वह भूदान की कामयाबी का माप नहीं है। मुझे तो सिर्फ यही फिक्र रहती है कि हमारे कार्यकर्ता किस तरह इस काम को अपना समझकर करने लग जायँगे। इस काम के लिए सबको मिलकर जोर लगाना चाहिए। आज तो स्थिति यह है कि मैं कुछ काम कर रहा हूँ, जिसमें मैं आपकी मदद ले लेता हूँ। लेकिन होना उल्टा चाहिए। काम आप करें और मेरी कुछ मदद ले लें। अब यह आपके ऊपर है कि आप यह कह सकें कि यह आन्दोलन आपका है और आप इसे व्यवस्थापूर्वक चला रहे हैं।

तारीख ३० को हम लोग रघुनाथपुर में थे। अब बिहार में बाबा दो रोज के ही मेहमान हैं, इसलिए मिलनेवालों का ताँता बढ़ रहा था। बिहार-भूदान-यज्ञ-समिति की भी आज बैठक थी, जिसमें बाबा शरीक हुए।

खेती की खोज

शाम को प्रार्थना-प्रवचन में बाबा ने बताया कि खेती की तरह सत्याग्रह का भी आविष्कार हिन्दुस्तान में हुआ। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान में यह बोला गया कि 'दुर्लभं भारते जन्म मानुषं तत्र दुर्लभम्।' भारत भूमि में जन्म लेना दुर्लभ वस्तु है, परंतु मनुष्य का जन्म पाना बहुत ही दुर्लभ है। अर्थात् हिंदुस्तान में कीड़े-मकोड़े का जन्म लेना भी भाग्य है, खुशकिस्मती है। उसका कारण मैंने यह समझा है कि इस देश में सर्वप्रथम मनुष्य ने मानव-धर्म सीखा और उसे अहिंसा के तरीके से जीने का बोध हुआ। मानव पहले शिकार करता था और जैसे दूसरे प्राणी रहते हैं, वैसे ही रहता था। उसके लिए हिंसा अनिवार्य थी। उससे छुटकारा पाने की तरकीब मानव को हिन्दुस्तान में ही सबसे पहले सूझी थी। यहाँ से मानव दूसरे देश गया और यह

तरकीब लेकर गया। इसलिए यह उद्‌गार निकला है कि इस भूमि में जन्तु बनकर पड़े रहना भी भाग्य की वस्तु है।

वह तरकीब कौन सी थी, जिसके कारण हमारा जीवन हिंसा से बच गया और हमने मानवता से जीना सीखा? वह तरकीब थी, खेती। आज हमें यह मालूम नहीं कि खेती में इतना बड़ा आध्यात्मिक रहस्य छिपा हुआ है। परन्तु दो-चार दाने बोकर उसमें से सौ दाने पैदा करना और फिर हम जैसा चाहते हैं, वैसा जीवन निर्वाह करना, यह एक विशेष ही वस्तु मानव को सूझी थी। तब से हिन्दुस्तान में लोगों को अहिंसक जीवन का मार्गदर्शन मिला।

उसके बाद मांसाहार-त्याग का आन्दोलन चला। जैनों ने उसमें पूर्णता प्राप्त की। बुद्ध भगवान् ने उसके साथ अहिंसा और करुणा जोड़ दी और वैदिकों ने उसके साथ खेती की उपासना जोड़ दी। इस तरह एक-एक कदम आगे बढ़ते-बढ़ते हिन्दुस्तान का समाज अहिंसा की खोज में आगे बढ़ता गया। लेकिन अहिंसा की जो यह प्रथम खोज हुई, वह हिन्दुस्तान में ही हुई। मेरा वेदों का जो अभ्यास है, उस पर से मैं यह कह सकता हूँ।

वेदों में वर्णन आता है कि देवता आये। उन्होंने हाथ में परशु लिया और जंगल काटकर जमीन बनायी। इसका वर्णन बहुत आदर के साथ वेदों में आता है। कृषि के लिए बैल, गायों के लिए इतना निस्सीम आदर दिखाई देता है, जिसकी तुलना में दुनिया की किसी भी दूसरी भाषा में वर्णन नहीं मिलेगा। हमारे सर्वोत्तम ऋषि का नाम 'ऋषभ' रखा गया है, जिसके मानी हैं, 'उत्तम बैल'। हमारे यहाँ महान् बुद्ध भगवान् का नाम था 'गौतम', जिसके मानी हैं, 'उत्तम बैल'। इस तरह अपने लड़कों को बैल की उपाधि देने में यहाँ के लोगों को इज्जत मालूम होती थी, क्योंकि उस बैल की मदद से हमें अहिंसक जीवन का दर्शन हुआ था।

हमारी सभ्यता में बैल-गाय के लिए बहुत आदर है। हिन्दुस्तान की

भाषा में 'गौ' के बीसों अर्थ हैं : वाणी, पृथ्वी, बुद्धि आदि। उसका इतना जो आदर दीखता है, इसका कारण यही है कि शिकारी जीवन से मुक्ति पाने में और दूसरे प्राणियों को खाकर जीने से मुक्ति पाने में खेती की जो खोज हुई, वह हिन्दुस्तान में ही हुई। इसलिए इस भूमि को पुण्य-भूमि माना गया है और इसकी मिट्टी में जन्तु का भी जन्म पाना पवित्र माना गया है।

सत्याग्रह का आविष्कार

आगे चलकर बाबा ने कहा कि जैसे यह बात हुई, वैसे ही दूसरी भी एक बात हुई, जो हमारे लिए सौभाग्य की है। दुनिया में हिंसक तरीके चलते थे, उनके परिमाण में खेती का तरीका अहिंसक माना जायगा। परिमाण में इसलिए कि खेती में भी कुछ हिंसा हो ही जाती है। परन्तु खेती में पहले की अपेक्षा अहिंसा के लिए बहुत अवकाश मिला। जैसे वह एक खोज हुई और उससे जीवन के तरीके में फर्क हुआ, वैसे ही इस जमाने में जो मसले पैदा हुए, विज्ञान के कारण परस्पर सम्बन्ध, व्यापार, व्यवहार आदि सीमित और संकुचित नहीं रहा, व्यापक बन गया, आमदरफ्त के साधन तेज हो गये, जनसंख्या बढ़ गयी—इन सबके फलस्वरूप जो मसले और संघर्ष पैदा हुए, वे सीमित नहीं रहे और देश-व्यापी हो गये। उन्हें हल करने के लिए आज दुनिया को शस्त्रास्त्रों के सिवा दूसरी कोई चीज नहीं सूझ रही है। ऐसी हालत में हिन्दुस्तान में एक खोज हुई। वह चीज है, 'सत्याग्रह'। उससे देश के, समाज के और विश्वव्यापी मसले भी हल किये जा सकते हैं। इसकी खोज अर्वाचीन काल में हिन्दुस्तान में हुई, इसलिए हम फिर से कह सकते हैं कि 'दुर्लभं भारते जन्म, मानुषं तत्र दुर्लभम्।'

आज मैंने एक आदि की बात बतायी, दूसरी अन्त की। इन दो बिन्दुओं को जोड़कर आप बीच का सारा इतिहास जान सकते हैं। यह जानकर कि सत्याग्रह की शक्ति का विकास कैसे किया जाय, इस पर सोचना

चाहिए। उस शक्ति को विकसित करने का बोझ, जिम्मेवारी, मिशन परमेश्वर ने हम पर सौंपा है, इसलिए हम छोटा दिल न रखें। दिलों को व्यापक बनायें, अपना दिल हम व्यापक और ऊँचा बनायें। हम सत्याग्रह की शक्ति के विकास के लिए निरन्तर सोचते जायँ, नित्य चिन्तन करते जायँ और सेवा करते जायँ।

विहार में अन्तिम दिन

शुक्रवार, ३१ दिसम्बर १९५४। बाबा का बिहार में आखिरी दिन। पड़ाव पुरुलिया सबडिवीजन में ढेंकसिला नामक छोटे-से गाँव में था। सुबह ४-१० पर रघुनाथपुर से चलकर साढ़े दस मील की मंजिल तय करके हम लोग ७-३८ पर ढेंकसिला पहुँचे। बिहार के बहुत-से कार्यकर्ता बाबा के स्वागतार्थ मौजूद थे। बाबा ने कहा कि हमको एक-एक चेहरे में एक-एक जिला दीखता है। बड़ा सुन्दर दृश्य था। अनोखी शान्ति थी। बाबा को सहज बोलने की प्रेरणा हुई। उन्होंने कहा कि अक्सर चर्चा चलती है कि सारा प्रवाह हमारे खिलाफ है, अपने काम से समाज में हम कोई परिवर्तन ला सकेंगे, यह मानने के लक्षण नहीं दीख रहे हैं। हम कहना चाहते हैं कि प्रवाह विरुद्ध नहीं, बहुत ही अनुकूल है। हमारा जो काम है, उसे कालपुरुष चाहता है। विज्ञान के ज़माने में अलग-अलग टुकड़े नहीं टिक सकते। पुराना समाज इसे समझ नहीं रहा है। इसलिए वह डटकर पूरी ताकत से इसका विरोध करेगा। यों यह दीखेगा कि आज के प्रवाह के खिलाफ हम जा रहे हैं; लेकिन कल के प्रवाह के अनुकूल जा रहे हैं। कल की दुनिया हमारे लिए है। सामने चाहे लाखों की सेना खड़ी हो, पर उसमें से एक-एक व्यक्ति हममें मिलता जा रहा है। इसलिए हमको अपना कर्म-प्रवाह जारी रखना चाहिए। धीरज और सातत्य के साथ अपने काम में लगे रहना चाहिए। ईश्वर की इच्छा साफ जाहिर है।

इसके बाद बाबा अपने रोज के कार्यक्रम के अनुसार नहाने चले गये। उसके बाद नाश्ता किया। फिर कार्यकर्ताओं से भेंट-मुलाकात और

चिट्ठी-पत्री के काम शुरू हो गये। दस से ग्यारह बजे तक श्री जयप्रकाश बाबू से बातचीत हुई। उसके बाद खादी के वयोवृद्ध सेवक श्री विट्ठलदास जेराजाणी से कोई आधे घंटे तक खादी सम्बन्धी चर्चा चली। थोड़ा विश्राम किया था कि बिहार मंत्रिमंडल और बिहार प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी की तरफ से बिहार सरकार के सूचना-मंत्री श्री महेशप्रसाद सिंह बाबा से मिलने आये। इसके बाद बाबा प्रान्तीय भूदान-समिति की बैठक में सम्मिलित हुए।

बिहार से विनोबा का नाता

तीन बजे से प्रार्थना शुरू हुई। रवि बाबू के एक भजन के बाद श्री लक्ष्मी बाबू (बिहार प्रान्तीय भूदान-समिति के संयोजक) ने पिछले सवा दो साल के भूदान-कार्य की झाँकी बताते हुए कहा कि आज का दिन आत्म-शक्ति के विकास में और अहिंसा की पद्धति के विकास में एक खास महत्त्व रखता है। इन सवा दो सालों में बाबा ने जाड़ा, गर्मी और बरसात में जो तकलीफें सहीं, उनके बावजूद उनके शरीर का आज भी कायम रहना आश्चर्य की बात है। इस पद-यात्रा के सिलसिले में कितने ही नये मंत्र इस देश को मिले। जैसे दण्डनिरपेक्ष, शोषण-विहीन, शासनमुक्त-समाज, विचार-क्रांति, विचार शासन, भूदान-यज्ञमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति आदि। आज सारे बिहार में यह शब्द गूँज रहा है : "हमारे गाँव में बिना जमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा, धरती सबकी माता है।" इन सबको हम ईश्वर का वरदान मानते हैं। हमारा उत्साह और स्फूर्ति बढ़ती ही गयी है। यह उत्साह बाबा की शारीरिक अनुपस्थिति में कायम रहेगा और अहिंसा के रास्ते पर हम लोग कदम बराबर बढ़ाते जायेंगे, यही हमारा विश्वास है। लक्ष्मी बाबू ने कुछ आँकड़े भी दिये। उन्होंने बताया कि १४ सितम्बर, १९५२ से ३१ दिसम्बर, १९५४ तक बाबा की पदयात्रा में ८५,४४१।।।)। का साहित्य बिका। इसमें गीता-प्रवचन की ५५,०४१ प्रतियाँ बिकीं। साप्ताहिक

अखबार "भूदान-यज्ञ" के ३,६६७ और मासिक "सर्वोदय" के २२३ ग्राहक बने। इसके अलावा प्रान्तभर में लगभग तीस हजार रुपये का भूदान-साहित्य और बिका। भूमि-प्राप्ति करीब २३ लाख एकड़ हुई और दानदाता संख्या २,८०,३१७ रही। कुल-के-कुल गाँव २२ मिले। आखिर में लक्ष्मी बाबू ने कहा कि बिहार का जो नाता बुद्धदेव से है, जो महात्मा गांधी से है, वही सन्त विनोबा के साथ भी कायम हो गया।

आश्वासन की दो चिट्ठियाँ

इसके बाद सूचना-मंत्री श्री महेशप्रसाद सिंह ने दो चिट्ठियाँ पढ़कर सुनायीं। एक चिट्ठी बिहार के मुख्य-मंत्री श्री श्रीकृष्ण सिंह की बाबा के नाम थी और दूसरी चिट्ठी में वह प्रस्ताव था, जो बिहार प्रदेश कांग्रेस-कमेटी की प्रबन्ध समिति की २८ दिसम्बर, १९५४ वाली बैठक में पास हुआ। श्री बाबू ने लिखा कि आपकी इच्छा के अनुसार भूमि नहीं मिली। इसकी पूर्ति के लिए आपके यहाँ से बिदा होने के बाद भी हम लोगों को सतत प्रयत्नशील रहना है। राज्य के अन्दर आपकी यात्रा ने लोगों के भूमि सम्बन्धी विचारों में जो हलचल पैदा कर दी है, वह स्वयं भी एक बड़ी बात है। उन्होंने यह भी लिखा था कि मेरी सदा इच्छा रही कि महात्मा गांधी सरीखा इस देश को पुनः एक महापुरुष मिलता, जो स्वयं आदर्श बनकर हम लोगों के कानों में अच्छा मनुष्य बनने की आवाज पहुँचाता रहता। आपकी यात्रा ने मेरी इस कामना को पूरा किया और संतोष का कारण रहा।

बिहार कांग्रेस का जो प्रस्ताव श्री अनुग्रहनारायण सिंह, प्रधानमंत्री, प्रदेश कांग्रेस की तरफ से भेजा गया था, उसमें कहा गया कि सन्त विनोबा ने अपने गत साढ़े सत्ताईस मास के पैदल भ्रमण में इस प्रदेश की जनता के बीच नवीन समाज-व्यवस्था के निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया है, लोगों में अपने पड़ोसियों के लिए उत्सर्ग और त्याग की वृत्ति को जगाया है तथा प्रेम और सद्भाव का प्रचार किया है। यह समिति बिदाई

के अवसर पर विनोबाजी को यह विश्वास दिलाना चाहती है कि उन्होंने जिस विचार का बीजारोपण इस प्रदेश में किया है, वह उनके यहाँ से चले जाने के बाद भी दिनानुदिन प्रगति करता हुआ फलता-फूलता रहेगा और इस प्रदेश का कांग्रेस-संगठन इस कार्य की सिद्धि में यथा-शक्ति सहायक बना रहेगा।

रामरूप का दर्शन

इसके बाद बाबा कई मिनट तक समाधिस्थ रहे। फिर कोई सतरह मिनट तक उनका बड़ा भावपूर्ण और ओजस्वी प्रवचन हुआ। बाबा ने कहा कि आज सिर्फ मैं इतना ही कहना चाहता था कि मनसा, वाचा, कर्मणा, आप लोगों के बीच व्यवहार करते हुए जो अपराध हुए, उन सबके लिए आप सबसे मैं क्षमा माँगता हूँ। बिहार में घूमते हुए ईश्वरीय प्रेम का साक्षात्कार हुआ, यह मैं कह सकता हूँ। यहाँ की जनता की सरलता, उदारता हृदय को छुए बिना नहीं रह सकती। प्रान्तीय भावना हम जिसे कहते हैं, वह बिहार के लोगों में दूसरे प्रान्तों की तुलना में मुझे बहुत कम मालूम हुई। यहाँ के लोगों ने मुझे आत्मीय भाव से माना, बहुत प्रेम दिया। अधिक प्रेम-सम्पन्न होकर मैं यहाँ से जा रहा हूँ। इतना अनुग्रह यहाँ के समाज का, मित्रों का मुझ पर हुआ है। इस प्रेम को मैं सदा याद रखूँगा। उनकी हृदय की विशालता मुझे सदा याद रहेगी। मैं तो अपने को इस पद-यात्रा के परिणामस्वरूप बहुत अधिक शक्तिशाली पाता हूँ। अब कल परमेश्वर की कृपा से बंगाल की भूमि में प्रवेश होगा। यहाँ के भाइयों की सेवा के लिए मैं सदा प्रस्तुत रहूँगा।

आगे चलकर बाबा ने कहा मुझे विश्वास है, मैं आशा करता हूँ कि 'भूदान-यज्ञमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति' बिहार की भूमि में होकर ही रहेगी। इसी भूमि में गौतम बुद्ध घूमे हैं, यहाँ महावीर का विहार हुआ है, यहाँ जनक राजा ने कर्मयोग का उदाहरण दिखाया है। यह गांधी जी की प्रिय भूमि, प्रयोग भूमि भी रही है। गंगा और

हिमालय की संगति में यहाँ के लोग जीवन बिताते हैं। मैं अपने को बहुत धन्य मानता हूँ कि इस भूमि में इतने दिन विचरने का सौभाग्य मिला। यहाँ के कण-कण में, आँख भर-भरकर मैंने परमेश्वर का दर्शन पाया है। मैंने कहा कि कई दोष मन और वाणी के हुए। परन्तु आत्मा से आवाज निकली है कि जितने लोग यहाँ हमारे सम्बन्ध में आये, सबके चेहरों में हमने रामरूप देखने की कोशिश की। मेरे सामने मेरे स्वामी रामजी का चित्र रहता है, जो चौदह साल सतत घूमे थे। अगर भगवान् को चौदह साल कष्ट उठाना पड़ा है, जिनके केवल संकल्प-भाव से सृष्टि बनती है, तो हम जैसे तुच्छ भक्तों को तो यह कष्ट ही महसूस नहीं होना चाहिए। एक भी दिन ऐसा याद नहीं, जब भान हुआ हो कि आज कुछ कष्ट हुआ। बहुत आनन्द और अपार शान्ति का अनुभव हुआ। मनुष्य की आत्मा केवल आनन्द-ही-आनन्द है, जितना व्यापक आकाश है, उतना ही व्यापक आनन्द है। इस भूमि में वह आनन्द हमने खूब लूटा। आकाश के समान विशाल भारतीय हृदय का सर्वत्र स्पर्श हुआ, इसलिए इस यात्रा को हम "आनन्द-यात्रा" कहते हैं। हम आपको भक्ति-भाव से प्रणाम करते हैं।

बड़ा ही मार्मिक दृश्य था। लोगों की आँखों से मोती जैसे आँसुओं की धारा बह रही थी। बाबा ने एक बार फिर प्रणाम किया। "सन्त विनोबा की जय हो!" "हमारे गाँव में बिना जमीन कोई न रहेगा! कोई न रहेगा!!" ध्वनि से आसमान गूँज उठा। बाबा ने बिदा ली।

अपने डेरे पर जैसे ही बाबा पहुँचे कि बिहार के मालमंत्री श्रीकृष्ण-वल्लभ सहाय उनसे मिलने आये। शाम को साढ़े पाँच बजे सब कार्यकर्ता बाबा से दुबारा मिले। लक्ष्मीबाबू ने प्रान्तीय भूदान-समिति के कुछ निश्चय जाहिर किये। फिर कहा कि कार्यकर्ता भाई-बहन जो सवाल पूछना चाहें, पूछें। एक के बाद एक भाई-बहन उठकर सवाल पूछने लगे। लगभग बीस सवाल पूछे गये। ये सब प्रत्यक्ष काम के बारे

में ही थे। बाबा को ये सवाल सुनकर बड़ी खुशी हुई। बोले : मेरा सुझाव है कि ऐसे सब प्रश्न लिख लिये जायँ और प्रान्तीय समिति की तरफ से उन सब प्रश्नों के उत्तर एक पत्रक में छाप दिये जायँ, ताकि कार्यकर्ताओं को पूरा मार्गदर्शन मिले। सर्वसामान्य दृष्टि से बाबा ने दो बातें उस समय पेश कीं।

बाबा ने कहा कि बेजमीनों का कोई आन्दोलन चले या नहीं, इस बारे में हमने कई मर्तबा कहा है। ऐसा आन्दोलन चलाने का काम परिस्थिति देखकर ही हो सकता है। लेकिन एक विचार मेरे सामने आता है कि खास श्रीमानों के पास पहुँचकर व्यापक परिमाण में हमने काम किया हो, ऐसा नहीं लगता। सुव्यवस्थित तौर पर यह चीज नहीं उठायी गयी। इस तरफ ध्यान देना चाहिए। हमने जब से बिहार में प्रवेश किया था, तभी से जाहिर किया था कि भूमिवाले इसे अपना आन्दोलन समझ लें। अगर वे छठा हिस्सा दे दें, तो कानून की जरूरत नहीं रहेगी। लेकिन सरकार अपना काम करे या न करे, हम शक्ति ऐसी बनायें कि लोग खुद ही यह काम कर लें।

नये कार्यकर्ताओं का स्रोत

इसके बाद बाबा ने कहा कि हर आन्दोलन का मुख्य आधार कार्यकर्ताओं पर है। सवाल यह है कि सतत काम करनेवाले कार्यकर्ता कहाँ से मिलें? एक समय था, जब गृहस्थ घर से अलग होकर समाज-सेवा में लग जाता था। लेकिन यह वृत्ति मिट गयी है। सरकार के लोग या जनसेवक कुछ काम करते हैं। लेकिन ऐसा काम क्रान्तिकारक हो ही नहीं सकता। नया मूल्य स्थापित करने का काम उनसे बनेगा ही नहीं। फुरसत से क्रान्ति नहीं होती। तो कैसे काम हो, यह मेरे मन में आता है। बिहार में बार-बार अनुभव किया कि गृहस्थाश्रम का आधार लेने पर भी जो कार्यकर्ता संयम की निष्ठा बढ़ायेंगे—इस मामले में गांधीजी ने नया मार्ग-दर्शन दिया—तो वे

अच्छी तरह से सेवा कर सकते हैं। वानप्रस्थ आश्रम जो ग्रहण करें, वे तो सेवा कर ही सकते हैं। लेकिन ब्रह्मचारी भी विद्याध्ययन के बाद, गृहस्थ होने के पहले, एक-दो साल समाज को अपनी सेवा दे सकता है। इस तरह तीन प्रकार से कार्यकर्ता मिल सकते हैं। एक तो विद्याध्ययन के बाद, गृहस्थाश्रम की पूर्व तैयारी के तौर पर सेवा देनेवाले लोग। दूसरे घर छोड़कर वानप्रस्थ लेनेवाले लोग और तीसरे घर में रहते हुए निर्लिप्त जीवन बितानेवाले प्रयत्नवादी वानप्रस्थी। इन धर्म-निष्ठावान लोगों को सन्तति हो भी गयी, तो वह हरिप्रसाद स्वरूप होगी, वीर्यवान होगी, चरित्रवान होगी। ऐसे सेवकों से समाज को सतत स्फूर्ति मिलती रहेगी। बापू की आत्म-कथा में इसकी चर्चा भी है।

जीवनदानी सोचें

बाबा ने कहा कि यहाँ जो भाई-बहन बैठे हैं, इन तीनों में से जो प्रकार उन पर लागू होता है, उसके लिए वे तैयारी करें। उनके काम में तेजस्विता आयेगी। वरना उनका काम टिकेगा नहीं। विषय-वासना में जो लगते हैं, उनके मन में क्रान्तिवासना भी हो, ऐसा सम्भव नहीं; क्योंकि क्रान्ति-देवी सौत सहन नहीं करती। विषयासक्ति तो ऐसी विलक्षण वस्तु है, जो एकाग्रता चाहती है। इस पर आप लोग सोचें। जो जीवनदानी हो गये हैं वे सोचें कि वे किस कोटि में आते हैं? अगर विषयासक्ति में रहें, तो उनका जीवनदान पार उतरेगा नहीं।

इसके बाद मानभूम जिले के संयोजक, श्री लालबिहारी सिंह ने भारी आवाज में कहा कि पिता के मौजूद रहने पर लड़के अपनी जिम्मेवारी नहीं समझते, लेकिन जब पिता घर के बाहर चला जाता है, तब लड़के काम सँभाल लेते हैं। हम बाबा को विश्वास दिलाते हैं कि हम लोग चैन नहीं लेंगे और सतत काम जारी रखेंगे। इस बैठक की समाप्ति के बाद सब लोग नित्य-कर्म में लग गये। रात को दो-तीन और मुलाकातों के बाद बाबा नौ बजे के करीब सो गये।

विदा !—प्रणाम !

अगले दिन सुबह पौने तीन बजे ही हम लोग उठ बैठे । साढ़े तीन बजे प्रार्थना हुई । बिहार में बाबा की मौजूदगी में यह आखिरी प्रार्थना थी । सबका गला भरा हुआ था । प्रार्थना के बाद बाबा उठे और चार बजकर बारह मिनट पर बाबा ने ढेंकसिला से प्रस्थान किया । तेज ठंडी हवा चल रही थी । नीले आसमान में शुक्र प्रेम का सन्देश देता हुआ इस बिदाई में हमारा साक्षी बनकर खड़ा था । शनि भी अपनी मन्द गति की लज्जा के कारण कुछ धीमा-सा दीख पड़ता था । बाबा तेजी से चले जा रहे थे । उनकी दायीं तरफ जयप्रकाश बाबू थे और बायीं तरफ बाबा के दण्ड की तरह, लालटेन लिये, बिहार-यात्रा में बाबा को अचूक साथ देनेवाले रामदेव बाबू थे । सैकड़ों कार्यकर्ता पीछे-पीछे चल रहे थे ।

पाँच बजकर चालीस मिनट पर बाबा बिहार और बंगाल की सरहद पर पहुँच गये । मंगल गान के साथ बंगाल की बहनों और भाइयों ने बाबा का स्वागत किया । श्री महादेवी ताई ने एक भजन गाया और पदयात्री-दल की तरफ से बिहारवालों को धन्यवाद दिया और भूल-चूक के लिए क्षमा माँगी । इसके बाद बिहारवालों की तरफ से जयप्रकाश बाबू ने मार्मिक शब्दों में अपना कलेजा खोलकर रख दिया । उन्होंने कहा कि "बाबा, आपने इस यात्रा को 'आनन्द-यात्रा' कहा है । लेकिन हम लोग ही जानते हैं कि आपको हमने कितना कष्ट दिया है ! सबसे अधिक कष्ट इस बात का दिया कि हमने अपने संकल्पों की पूर्ति नहीं की । हमने आपको वचन दिया था, किन्तु उसे पूरा करने में असफल रहे । इसलिए हम आपसे क्षमा चाहते हैं । आपने हमारा बड़ा गौरव किया कि सारे देश में भगवान् बुद्ध और तीर्थङ्कर के नाम पर आपने बिहार को चुन लिया और कहा कि इसे हम प्रयोगशाला बनायेंगे । आज आप बिहार से बिदा हो रहे हैं । तो अपने साथियों की तरफ से हम वचन देते हैं कि आपकी यह प्रयोगशाला खूब चलती रहेगी । जितना विचार बिहार में फैला है,

उस पर मैं मानता हूँ कि कम-से-कम छठे भाग के सम्बन्ध में बिहार में अब ऐसी परिस्थिति निर्माण हुई है कि राज्य को जनमत के आधार पर उस पर कानून की मुहर लगानी होगी। मैं आशा करता हूँ कि बिहार राज्य यह काम करेगा। इसके बाद निर्माण का जो चित्र सामने है, उसमें हम आगे बढ़ेंगे।' जयप्रकाश बाबू का गला भर आया। बोलते नहीं बनता था। आखिर में उन्होंने कहा कि जैसे कल लाला बिहारी बाबू ने कहा था कि जब तक पिता घर में होता है, तो पुत्रों को जिम्मेवारी कम महसूस होती है। आज हम सभी, जो आपके पुत्र हैं, आपकी गैर-मौजूदगी में, अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह सँभालेंगे, ऐसा हमें आशीर्वाद दीजिये।

बाबा ने भक्तिपूर्वक हाथ जोड़कर सबको प्रणाम किया और वे तेजी से पूरब की तरफ कदम बढ़ाने लगे। उषा की किरणें प्रकट हो रही थीं। १९५५ के नये साल का नया दिन निकल रहा था।......स्वतंत्र जनशक्ति के इतिहास का एक अध्याय पूरा हो चुका......दूसरा अध्याय शुरू हो रहा था......लोक-शक्ति की मधुर तान सुनाई पड़ रही थी।......

परिशिष्ट : ख
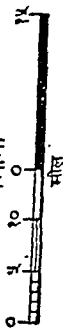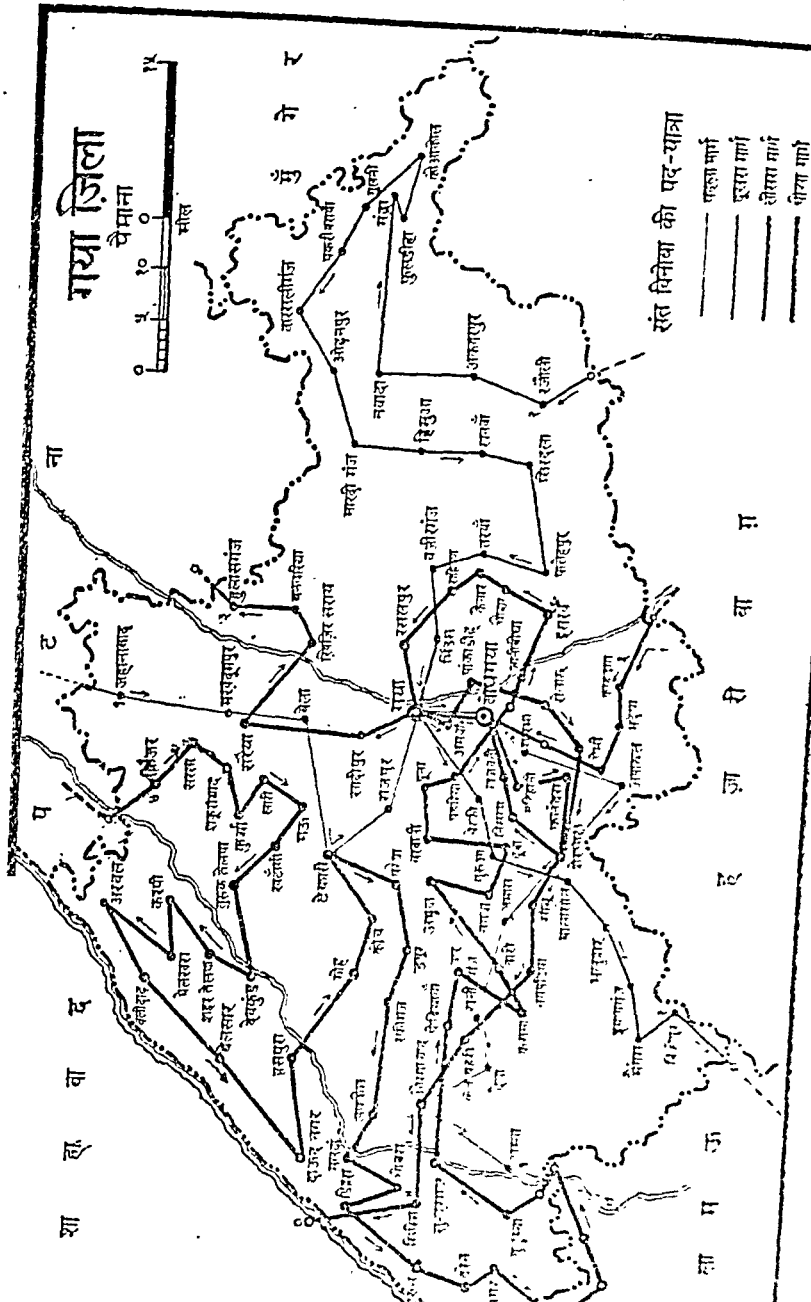
बिहार में भू-दान-प्राप्ति के आँकड़े

[११ सितम्बर, १९५२ से ३१ दिसम्बर, १९५४ तक बिहार की यात्रा में जिलेवार पदयात्रा, दान-पत्र व भूदान-प्राप्ति का ब्यौरा]

क्रम	जिलों के नाम	यात्रा के दिन	यात्रा (मीलों में)	दान-पत्र	प्राप्त भूमि (एकड़ में)
१	गया	१४४	६३७	६३,०८०	१,०७,५६२
२	चम्पारन	३०	२०५	५,७६४	५,३७०
३	दरभंगा	४६	३६२	३८,२३५	३१,८४५
४	पटना	४१	२६०	२,८२५	३,१२५
५	पलामू	५१	४३३	२७,५८४	२,५६,४१७
६	पूर्णिया	५२	३६१	२६,४०६	६०,७५१
७	भागलपुर	३२	२४२	७,१५२	१३,६०६
८	मानभूम	१११	२०८	५,३८७	३२,२३८
९	मुजफ्फरपुर	५५	३७७	१५,५१०	८,६२१
१०	मुंगेर	५३	३२६	११,२८१	४६,५२०
११	रांची	३८	२६०	१०,६३६	१,०२,१२८
१२	शाहाबाद	४६	३६८	३,६७२	६६,६७३
१३	सहरसा	२५	२२१	२७,८५३	३८,१७०
१४	सारन	२६	२३३	१३,१३४	१,०५,३३४
१५	सिंहभूम	१०	६२	८०६	१३,७४६
१६	संथाल परगना	३५	३०६	१५,३२३	४,६३,५०१
१७	हजारीबाग	३८	२६६	८,१३६	८,१२,६३१
	जोड़	८३९	५,५४७	२,८६,४२०	२२,३२,४७४

उप-शीर्षकों की अकारादि अनुक्रमणिका

सर्वोदय और भूदान साहित्य